अप्रैल (द्वितीय) 1997, रुपए 12.00

सरिता



उ.प्र. में मायावती सरकार

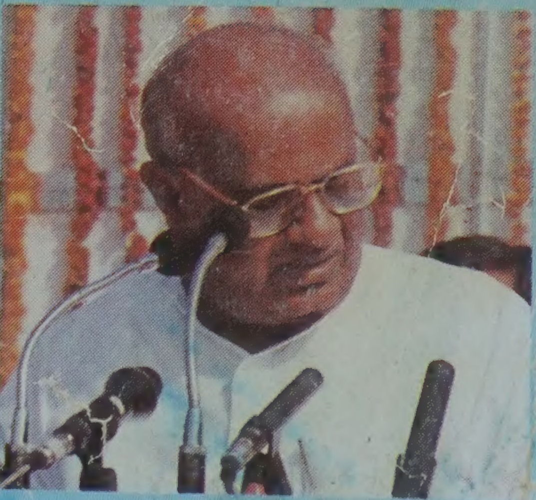
आंखमिचौली का खेल खत्म

आयु में बड़ा पति

निभाना सीखें

मन बहलाएं

अपनों के बीच

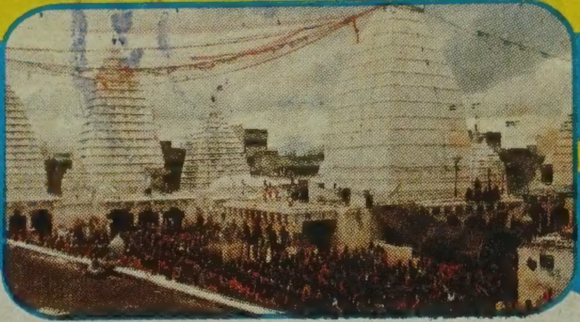


सरकारों का स्थायित्व: बेमतलब का

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 1008 अप्रैल (द्वितीय) 1997



लेख

कथा साहित्य



स्तंभ

कविताएं



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–110055.
अन्य कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रमरोड, **अहमदाबाद-380009.** जी–3, एचवीएस कोर्ट, 21 कनिंघम रोड, **बंगलौर–560052.** 79–ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **मुंबई–400021.** तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113 पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता–700016.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **मद्रास–600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद–500003.** फ्लैट नं. बी–जी/3, 4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001.** 111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना-800001.** जी-7, पायोनियर टावर्स. 1, मेरीन ड्राइव, **कोचीन-682031.** 12 बी, महाराणा प्रताप नगर, जोन-I, भोपाल-462011.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली- 110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं.
विदेशों में मूल्य : एक प्रति 48 सेंट अमेरिकी डालर, डाक व्यय अतिरिक्त.
वार्षिक : 25 अमेरिकी डालर (समुद्री डाक से), 50 अमेरिकी डालर (हवाई डाक से); रजिस्टर्ड डाक 10 अमेरिकी डालर अतिरिक्त.

मूल्य : एक प्रति 12 रुपए. वार्षिक : 288 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, दीमापुर, करीमगंज, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में


"झलके
तो बस
मेरी
ख़ूबसूरती.
मेरा
मेकअप नहीं."
LAKMÉ
LAKMÉ
ULTRASHEER
NATURAL MAKE-UP
अल्ट्राशियर फ़ेस मेकअप ने तो मेकअप के बारे में मेरे विचार ही बदल दिये. यह हल्का-सा कुदरती मेकअप, मेरी त्वचा में एक-सा निखार और ख़ूबसूरती लाता है. इसका अनोखा चिपचिपाहटरहित फॉर्मूला छिद्रों को खुला रखकर मेरी त्वचा को सांस लेने देता है.
अल्ट्राशियर का खास डी-पैन्थेनॉल मेरी त्वचा की सुरक्षा करता है और मॉइश्चराइज़र्स उसे कोमल-मुलायम बनाये रखते हैं. यह मेकअप इतना कुदरती है कि मेरे चेहरे पर दिन भर ताज़गी और रौनक नज़र आती है. और मेरे सिवाय इस राज़ को कोई भी नहीं जान पाता. ज़रा-सा अल्ट्राशियर लगाकर देखिए. आपकी ख़ूबसूरती झलक उठेगी.
LAKMÉ
ULTRASHEER
NATURAL MAKE-UP
Ambience/LU/115/Hin

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मार्च/प्रथम

अंगरेजी भाषा पर आप की टिप्पणी से मैं सहमत हूं. आप का यह कहना भी उचित है कि संविधान में हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा माना गया है अतः इसे पढ़ने, लिखने व बोलने पर किसी प्रकार की पाबंदी नहीं होनी चाहिए. आज हमारा देश इस विदेशी भाषा के भंवर में इस तरह फंसा हुआ है कि उसे अपनी मातृभाषा को अपनाने में भी शर्म महसूस हो रही है.

इस से शर्मनाक बात और क्या हो सकती है कि जिस हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने व मान्यता दिलाने में अनेक राष्ट्रीय नेताओं, साहित्यकारों, कवियों, गीतकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया उसी सुंदर व सरल भाषा को विनाश के गर्त में ले जाने का षड्यंत्र रचा जा रहा है. –सुदेश कृष्णे 'हिंदपुत्र'

*

अंगरेजी माध्यम के स्कूलों में हिंदी के प्रति कुंठित रवैए के विषय में आप के विचार पढ़े.

वास्तव में प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चे को अंगरेजी माध्यम के विद्यालयों में भेज स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है और भ्रम में रहने लगता है कि उस के बच्चे मानसिक स्तर हिंदी माध्यम के विद्यालय में वाले बच्चे के मानसिक स्तर से ऊंचा है, ज सच तो यह है कि अंगरेजी माध्यम से नर्सरी शि प्राप्त करने वाले बच्चे को विद्यालय एवं घर परस्पर विपरीत वातावरण मिलता है जिस में को भाषा की बारीकियों की जानकारी नह पाती और उस की आदत हिंदी व अंगरेजी मि भाषा बोलने की हो जाती है. और विडंबना है कि आजकल अधिकतर लोग ऐसी ही बोलने व सुनने के आदी हो चुके हैं.

–सत्यप्रकाश अग्नि

*

अंगरेजी माध्यम के स्कूलों में हिंदी बो पर प्रतिबंध लगना वास्तव में अनुचित है. दूसरी भाषाओं का आदर अवश्य करना चा परंतु इस का मतलब यह तो नहीं कि हम अ मातृभाषा व राष्ट्रभाषा का अपमान करें.

–सुभाषिनी अग्र

*

अंगरेजी भाषा पर आप की टिप्प बिलकुल सही है. आजकल अधिकतर माता अपने बच्चों को अंगरेजी माध्यम से ही शि दिलवाते हैं जबकि बच्चों को इस से कठि होती है. और अगर वह नर्सरी व के.जी. के पहली कक्षा में हिंदी माध्यम लेता है तो सभी विषय तो कर लेता है परंतु गिनती व प समझने और याद करने में उसे मुश्किल होत और वह पिछड़ जाता है.

पब्लिक स्कूलों का वातावरण पूर्ण अंगरेजीमय होता है. बच्चों को अंगरेजी न बो

51 गौरवशाली वर्ष
सरिता
जनवरी (प्रथम) 1997
1001 वां अंक

चमक उठी है सरिता

सरिता का 1001वां अंक (जनवरी/प्रथम) पढ़ा. सभी कहानियां, लेख व स्तंभ ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायक लगे.

51 वर्षों तक संघर्ष करने के बाद सरिता आज ठीक वैसे ही चमक उठी है जैसे सोने को आग में तपाने पर उस की चमक बढ़ जाती है.

उपन्यास 'मर्यादा' बहुत ही मर्मस्पर्शी आज भी अगर नारी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ले तो से बुरे पुरुष को भी सही मार्ग पर ला सकती

–र

*

जो किया मातृभूमि के लिए किया

कहानी 'शंबूक वध' (जनवरी/प्रथम) कर अफसोस हुआ कि आप किस प्रकार से महापुरुष के चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा देते है आप की इस बात से पूरी तरह सहमत हूं कि एक महान योद्धा होते हुए भी समाज की झूठी मर्यादाओं को तोड़ने का साहस नहीं



डैंड्रफ़ को दूर रखें
जड़ों को पोषण दें...
ऑर्गेनिक्स पेश करते हैं ब्यूटी शैम्पू जो डैंड्रफ़ हटाए... डैंड्रफ़ शैम्पू जो बालों को ख़ूबसूरत बनाए... एक साथ! नया ऑर्गेनिक्स डैंड्रफ़ ट्रीटमेंट शैम्पू. इसका ख़ास डैंड्रफ़ फ़ॉर्मूला कोमलता से डैंड्रफ़ हटाए, उसकी रोकथाम करे और ग्लूकसिल™ करे जड़ों का पोषण. अब डैंड्रफ़ नहीं. सिर्फ़ ख़ूबसूरत बाल.
NEW
ORGANICS
ROOT NOURISHING SHAMPOO
Dandruff Treatment
ELIDA HAIR INSTITUTE
ऑर्गेनिक्स
पेश करते हैं
नया
डैंड्रफ़ ट्रीटमेंट शैम्पू
जड़पोषक ग्लूकसिल™ युक्त
बालों में लाए नई जान और ख़ूबसूरती
HTA.1447.97

पर दंडित भी किया जाता है. ऐसे में जब सब कुछ अंगरेजीमय है तो अध्यापिकाओं की पोशाक साड़ी क्यों है? उन्हें मिनी स्कर्ट पहननी चाहिए.

लेख 'बिहार में रेलें: आतंक के साए में' (मार्च/प्रथम) पढ़ कर रोंगटे खड़े हो गए. जिन यात्रियों ने इस त्रासदी को झेला है उन की स्थिति को समझ पाना कठिन है.

बिहार में रेलों में डकैतियां इस बात का प्रमाण हैं कि राज्य सरकार बिलकुल निष्क्रिय और निकम्मी हो चुकी है. केंद्र सरकार को भी इस के लिए माफ नहीं किया जा सकता. यदि कोई अतिविशिष्ट व्यक्ति होता तो कितनी ही कमेटियां व आयोग बैठा दिए जाते लेकिन बात क्योंकि जनसाधारण की है इसलिए कोई काररवाई नहीं की गई.

अभी हाल ही में कालका मेल में पड़ी डकैती के बाद रेलमंत्री ने घोषणा की कि उन मार्गों से गाड़ी नहीं चलाएंगे जहां डकैती की आशंका होती है. क्या यही समस्या का समाधान है? इस से निबटने के लिए तो सख्ती बरतनी होगी. इस के अलावा सरकार को चाहिए कि अपने सभी मंत्रियों व विधायकों की हवाई यात्रा पर पाबंदी लगा कर उन्हें रेल से सफर करने को कहे ताकि उन्हें भी आम आदमी की परेशानियों का पता चले.

आरक्षित डब्बों में स्थानीय और अतिरिक्त लोगों को यात्रा करने की अनुमति भी नहीं देनी चाहिए वरना वह दिन दूर नहीं जब बिहार के चप्पेचप्पे पर कश्मीर की तरह सशस्त्र सैनिक खड़े करने होंगे. —कुमकुम भौमिक

*

उम्मीद बढ़ी है

लेख 'पाकिस्तान में नवाज शरीफ की सरकार' (मार्च/प्रथम) पढ़ा. शरीफ की अप्रत्याशित जीत से भारतपाक संबंधों में मधुरता की उम्मीद बढ़ी है. उन को अपनी शराफत दिखानी ही चाहिए.

इन चुनावों में सब से फिसड्डी साबित हुए इमरान खान की सभी 9 स्थानों पर करारी हार ने उन की लोकप्रियता का बखान कर दिया है. पाकिस्तान की जनता ने उन्हें राजनीति के अयोग्य करार दिया है. —कमल नागपाल 'राजा'

*

महत्त्वपूर्ण नियम

लेख 'पब्लिक स्कूलों में दाखिले की 'समस्या' (मार्च/प्रथम) पढ़ा.

अधिकतर पब्लिक स्कूल केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली से मान्यता प्राप्त हैं और उन पर बोर्ड के मान्यता नियम लागू होते हैं. इन नियमों में फीस, फंड्स और दाखिले आदि का विवरण है. बहुत से अभिभावक इन नियमों से अपरिचित होते हैं. अभिभावकों की जानकारी के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण नियम दिए जा रहे हैं :

- स्कूलों द्वारा फीस छात्रों को दी जाने वाली सुविधाओं को ध्यान में रख कर ली जाए, अनावश्यक रूप से नहीं.
- फीस शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित मदों के लिए ही ली जाए. फीस के लिए अपनी ओर से फालतू मद न बनाए जाएं.
- फीस शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के वर्गीकरण के आधार पर ली जाए.
- दाखिले के लिए डोनेशन आदि न लिए जाएं.
- जो परिस्थितियां वश में न हों उन के उत्पन्न होने पर समुचित फीस लौटाई जाए.
- गैर सहायता प्राप्त स्कूल फीस बढ़ाने

सके जो उस समय समाज में प्रचलित थीं. लेकिन अगर रामायण को एक ऐतिहासिक ग्रंथ मान कर उस का राजनीतिक दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि राजा राम ने जो भी कार्य किया, वह अपने देश एवं मातृभूमि के लिए ही किया.

लेख में यह दर्शाया गया है कि शंबूक का वध महज इसलिए किया गया क्योंकि उस ने शूद्र होते हुए भी तप करने का साहस किया था. महर्षि वाल्मीकि भी तो शूद्र थे लेकिन उन्हें तो राम ने काफी सम्मान दिया था. इस के अलावा राम ने वनवास के दौरान भीलनी के जूठे बेर भी खाए थे. —ओम प्रकाश

*

सरिता का 1001वां अंक (जनवरी/प्रथम) पढ़ कर काफी कुछ जानकारी मिली. कहानी 'बेटियों वाली' दिल को छू गई. हमारा समाज ऐसी संकीर्णताओं से भरा पड़ा है. बेटियों का होना बहुत बुरा माना जाता है. कहते हैं बेटे के बिना घर सूना हो जाता है, जोकि गलत है. मेरी भी बेटियां हैं. दामाद हमारे ही शहर में रहते हैं जिस से घर में रौनक बनी रहती है. दामाद जब बेटा बन कर जिम्मेदारी निभाता है तो बहुत अच्छा लगता है. —चित्रलेखा



पेश हैं
सिलेक्ट II
शान, शक्ति और कार्यकुशलता में नया शिखर.
एल एम एल प्रस्तुत करते हैं नया सिलेक्ट II. इसमें है भारत का सबसे शक्तिशाली स्कूटर इंजन (150 सीसी, 7.5 बी एच पी). इससे आपको मिले सबसे तेज पिक-अप (सिर्फ 8.7 सेकंड में 0 से 60 किमी/घंटा की रफ्तार) और चमत्कारी पैट्रोल-किफायत (80 किमी/लीटर स्टेंडर्ड टेस्ट स्थिति में और 60 किमी/लीटर सामान्य ड्राइविंग में). साथ ही बेहतर सस्पेंशन. गियर बदलने में आसानी. आधुनिक डिज़ाइन की हैडलाइट. ज्यादा जगह वाला आकर्षक ग्लव कम्पार्टमेंट एक विशेष यूटिलिटी ट्रे के साथ. एक उपयोगी कैरियर. आपके आराम के लिए डिजाइन की गई विशेष सीट. गद्दीदार बैकरेस्ट. और शान ऐसी कि देखे तो ठहरे नज़र
LML
In partnership with
PIAGGIO
WITH
80
KMPL
SUPERIOR RIDE
BRIGHTER
HEADLIGHT
OPTIONAL
ELECTRIC
START
Select II

से पहले अभिभावकों के प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श करें.

● स्कूल सामुदायिक सेवा भाव से काम करें, व्यवसाय के रूप में नहीं.

टिप्पणी : विस्तृत जानकारी के लिए सीबीएसई के फीस संबंधी नियम देखें.

–ओ.पी.शर्मा

*

लालू प्रसाद के इशारे पर

लेख 'बिहार में रेलें : आतंक के साए में' (मार्च/प्रथम) पढ़ा. यह कैसी विडंबना है कि बिहार सरकार लूटखसोट, बलात्कार जैसी घटनाओं पर मौन है. यह भी स्पष्ट है कि ये सारी घटनाएं लालूप्रसाद यादव के इशारे पर ही हो रही हैं क्योंकि उन्हें इन सब में सामाजिक न्याय नजर आता है. रेलमंत्री रामविलास पासवान चूंकि बिहार से संबद्ध हैं इसलिए वे रेलयात्रियों को सुरक्षा प्रदान कर के लालू प्रसाद यादव को नाराज नहीं करना चाहते. –संदेश सामंत

*

लेख 'बिहार में रेलें : आतंक के साए में' पढ़ कर रोंगटे खड़े हो गए.

जिस तरह डाकुओं ने लड़कियों को बेइज्जत किया व विरोध करने पर लोगों को मार डाला वह आदिम युग की कथाओं को भी मात करता है. भुखमरी तो बिहार में पहले से ही थी जिस के कारण चोरियां और डकैतियां होती थीं. पर अब राज्य की कानून व्यवस्था ही छिन्नभिन्न हो गई है. पुलिस की बंदूक केवल निर्दोषों के लिए ही उठती है. वह गुंडों के सामने भाग खड़ी होती है.

राज्य सरकार को चाहिए कि घटना की जगह उपस्थित पुलिस वालों को बरखास्त कर दे.

–अरुण कुमार मिश्र

*

लेख 'बिहार में रेलें : आतंक के साए में' सत्यता से भरा है. बिहार में केवल रेलों में ही आतंक नहीं है बल्कि सारा बिहार ही बारूद के ढेर पर बैठा है. वहां राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक डकैतों की कमी नहीं है. आज अगर बिहार के राजनीतिक परिदृश्य पर नजर डालें तो कोई ऐसा जनप्रतिनिधि नहीं मिलेगा, जो आपराधिक मामले में न फंसा हो. दर्जनों घोटाले यहां हो चुके हैं. शासक वर्ग देवों की तरह स्वयं की पूजा कराने में लगा है. लोगों ने वहां निजी सेवाएं भी संगठित कर रखी हैं जिन्हें प्रभावशाली लोगों का आश्रय प्राप्त है. –डोरीलाल जायसवाल

*

क्या निष्कर्ष निकालें

लेख 'सामाजिकता का निर्वाह करें' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. समझ में नहीं आया कि इस का क्या निष्कर्ष निकालें क्योंकि एक तरफ तो सरिता में 'राम' के विरुद्ध लिखा जाता है और दूसरी तरफ आप ने परिचितों को दीवाली की शुभकामनाएं देने को कहा है. आखिर यह त्योहार भी तो उस राम से संबंधित है.

–डा. सुखविंदर सिंह

दीवाली, होली, रक्षाबंधन जैसे त्योहार आपसी संबंधों के त्योहार हैं जिन में किसी देवीदेवता की पूजा अनिवार्य नहीं है. इन का प्रारंभ क्यों हुआ था और इन के साथ कौन सी कहानियां जुड़ी हैं, यह अप्रासंगिक है. देखना यह है कि त्योहार का वर्तमान रूप कैसा है. जहां तक पौराणिक कथाओं और पौराणिक शास्त्रों की बात है, हमारी उन के बारे में राय वही है.

–संपादक ●

सराहनीय कार्य

काफी प्रतीक्षा के बाद सरिता का 1001वां अंक (जनवरी/प्रथम) मिला. 51 वर्ष बाद का आत्मनिवेदन पढ़ कर किसी भी सच्चे देशभक्त के खून में गरमी आ सकती है. सभी पुराने लेख कहानियां, कविताएं तथा उपन्यास अच्छे लगे.

अंत में यही कहना चाहूंगा कि जिस लगन से आप नई पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं, वह सराहनीय है. –रामपाल सिंह पटेल रवि

*

सरिता के 1001वें अंक (जनवरी/प्रथम) के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई. यह एक शानदार अंक है. इस के माध्यम से 1945 से अब तक प्रकाशित चुनिंदा कहानियों, लेखों व सरित प्रवाह को पढ़ने का अवसर मिला. इन के अतिरिक्त महात्मा गांधी को श्रद्धांजलिस्वरूप प्रकाशित कविता 'महाप्रयाण' पढ़ कर मन भर आया. –राकेश कुमार व्यास

*

सरिता का 1001वां अंक प्रकाशित करने पर बधाई. अपनी कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा व ध्येय के प्रति जागरूक रहने का प्रतीक है यह अंक.

–के. नारायण

सरित प्रवाह

आखिर एक दिन वही हुआ, जिस की संभावना दिखाई दे रही थी. कांग्रेस ने केंद्र में संयुक्त मोरचा सरकार से अपना नाता तोड़ने का नोटिस दे दिया. और कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम केसरी राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा के यहां पहुंच गए कि 'श्रीमान, मैं देवगौड़ा के संयुक्त मोरचा को तलाक की अरजी पेश कर रहा हूं. अब घरबार मुझे सौंपने का मौका दें.'

हालांकि संयुक्त मोरचा काफी सूझबूझ से गठित किया गया था, पर लगता है, देवगौड़ा प्रधानमंत्री और मोरचा अध्यक्ष के ऊंचे, कंटीले, और इतने महत्त्वपूर्ण पद के लिए उपयुक्त नहीं थे. उन्हें चाहिए था कि जिस दल की सहायता से वह राज कर रहे थे, उसे मना कर, संतुष्ट कर के रखते. यदि संयुक्त मोरचा का लोकसभा में बहुमत होता, तब तो सब कुछ चल सकता था, मोरचा और उस के नेता मनमरजी से चलफिर सकते थे. पर जब उस की नींव ही कांग्रेस की दया पर टिकी थी, तब तो संभल कर चलना अत्यंत ही आवश्यक था.

सीताराम केसरी कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद से बराबर चेतावनी दे रहे थे कि कांग्रेस का समर्थन कोई अनिवार्य आवश्यकता या मजबूरी नहीं है. सरकार चलाने में हम से भी सलाहमशवरा लिया जाए अन्यथा कांग्रेस अपना समर्थन वापस ले लेगी. पर प्रधानमंत्री देवगौड़ा अपने अहंकार में यह सोचते रहे कि अगर कांग्रेस समर्थन देना बंद करेगी तो उसे लोकसभा के नए चुनाव लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जहां उस की जीत की कोई आशा दिखाई नहीं देती. इसलिए चाहे सीताराम केसरी रोज सुबह उठते ही समर्थन वापस लेने की तोतारटंत दोहराते रहें, परंतु वह कभी भी संयुक्त मोरचा से समर्थन वापस ले कर आत्महत्या करने की जुर्रत नहीं करेंगे.

और यह सब चलता भी रहता, यदि देवगौड़ा सरेआम, सार्वजनिक रूप से यह बयान न देने लगते कि संयुक्त मोरचा कांग्रेस की मेहरबानी पर नहीं टिका है, कांग्रेस में हिम्मत हो तो समर्थन वापस ले ले. अब अगर सीताराम केसरी को अपने मानसम्मान व अपने कांग्रेस अध्यक्ष पद की गरिमा कायम रखनी थी तो उन्होंने वही किया जिस के लिए देवगौड़ा ने उन्हें मजबूर कर दिया.

वर्तमान लोकसभा की स्थिति ऐसी है कि बिना तीनों दलों में से–कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी व संयुक्त मोरचा–2 के साथ मिले बगैर सरकार नहीं बन सकती, न ही चल सकती है. और नए चुनाव कराए जाने से भी स्थिति में कोई अंतर पड़ने की संभावना फिलहाल दिखाई नहीं पड़ती.

इन पंक्तियों के लिखे जाने तक स्थिति साफ नहीं है. 11 अप्रैल को क्या होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता. पर इतना जरूर है कि नेहरू खानदान के शासन के समय का कांग्रेस को मिलने वाला विशाल बहुमत अब किसी दल या संगठन को नहीं मिल सकता क्योंकि भारतीय जनसाधारण अब बहुत से टुकड़ों में बंट गया है. इतने स्वार्थ और आकांक्षाएं पैदा हो गई हैं कि वोटों का बिखराव एक मजबूरी बन गया है. कोई ऐसा नेता या पार्टी नहीं है जो देश के बहुमत को पकड़ सके. अब तो साझेदारी की सरकारें ही बनेंगी. धर्म, मजहब, जाति, स्थानीय लगाव वगैरह इस देश को लगभग वैसी

स्थिति की ओर ले जाते दिखाई दे रहे हैं जैसी अंगरेजों के भारत पर कब्जा करने के पहले थी. हर 100-150 मील के बाद एक नया राज्य, नई बादशाहत थी.

ऐसी स्थिति की अब संभावना तो कतई नहीं है, क्योंकि यातायात, उद्योगव्यापार व सेना, जो केंद्र के अधीन है, यह नहीं होने देंगे. पर सरकारें अवश्य मिलीजुली बनेंगी और राजनीतिबाजों को अपनी आकांक्षा और स्वार्थ पर अंकुश रखने पड़ेंगे.

*

राजनीतिबाजों व राजनीतिक व धार्मिक पृष्ठभूमि वाले संगठनों के सोचविचार में अब नए पैंतरे कितने आवश्यक हो गए हैं, इस का सब से ताजा उदाहरण पंजाब में भारतीय जनता पार्टी और अकाली दल में हुए मेलमिलाप और उत्तर प्रदेश में भाजपा और मायावतीकांशीराम की जागीरदारी वाली बहुजन समाज पार्टी में हुए गठबंधन में देखा जा सकता है. कुछ दिन पहले तक ये लोग एकदूसरे से घृणा करते थे, पास बैठने को तैयार नहीं थे. लेकिन आज दोनों राज्यों में साझा सरकारें चला रहे हैं.

पंजाब में तो अकाली दल स्वयं अपनेआप बहुमत से जीता और भाजपा उस की पुछल्ला बनी. उत्तर प्रदेश में यद्यपि भाजपा के पास बसपा से दोगुनी सीटें हैं लेकिन वहां भी सत्ता का बंटवारा आधाआधा हुआ है. और विचित्र बात यह तय हुई कि पहले मायावती 6 महीने मुख्यमंत्री बनेंगी. दूसरे आधे बरस भाजपा का नेता गद्दी संभालेगा.

मायावती ने उत्तर प्रदेश में गद्दी पर बैठते ही अपनी पुरानी प्रवृत्ति का परिचय दिया है, यानी प्रशासन व पुलिस के अफसरों का बड़े पैमाने पर तबादला. उन का कहना है कि उन की नीतियों का सही तौर पर पालन करने के लिए उन की जातियों के अफसरों का महत्त्वपूर्ण स्थानों पर बैठना जरूरी है.

पर जब भाजपा के कल्याण सिंह या और कोई मुख्यमंत्री बनेगा तो दोबारा इस प्रकार का उलटफेर करेगा?

कहा जाता है, अफसरों के उत [...] में ऊपर वाले को काफी पैसा हाथ [...] है–पिछली बार मायावती जब मुख्यमं[...] तो उन्हीं की पार्टी ने आरोप लगाया थ[...] मायावती ने लगभग 200 करोड़ रुपए [...] हैं. अब की बार क्या हो रहा है, इस[...] ब्योरा तो बाद में ही पता लगेगा.

पर मुख्य बात यह है कि [...] राजनीतिबाज, जो दूसरों को अब तक [...] समझते रहते थे, सत्ता में आने के [...] 'भाईजी' और 'बहनजी' कहने पर म[...] हा रहे हैं.

उत्तर प्रदेश में मायावती ने गृह [...] वित्त विभागों के अलावा अन्य 13 महत्त्[...] विभाग अपने पास रखे हैं और भाजपा [...] साधारण व पेचीदा विभाग दिए हैं. इ[...] शुरू ही से मनमुटाव होने की संभावन[...] मायावती को चाहिए कि वह होशिया[...] सूझबूझ से काम लें, क्योंकि भाजपा [...] चाहे उन के पांव तले की जमीन खि[...] सकती है.

सत्ता के लोभ के कारण भाजपा [...] कड़वा घूंट पी रही है. पर हर चीज क[...] होती है. और समझदार व्यक्ति उसे ल[...] की कोशिश नहीं करता.

भाजपा पंजाब और उत्तर प्रदे[...] अल्पसंख्यकों की सरकारों को सहाय[...] कर, उन के साथ रिश्ते जोड़ कर कोई [...] काम नहीं कर रही है. इस से उसे दूर[...] फायदे होंगे. हालांकि दोनों जगह व सर[...] में अधिकार के मामलों में वह कमजो[...] पर राजनीति में युद्ध व शतरंज की [...] की तरह, जीत के लिए आगे बढ़ना [...] पीछे हटना, दोनों तरह की चालें च[...] आवश्यक होता है.

*

अफगानिस्तान में रूस द्वारा सम[...] सरकार के पतन के बाद अमेरिक[...] पाकिस्तान द्वारा स्थापित की गई तालि[...] सरकार ने लगभग तीनचौथाई देश पर क[...] कर लिया है.

अफगानिस्तान में रूसी सेना अमे[...]

और पाकिस्तान के भारी सैनिक साजसामान के समक्ष टिक न सकी. उस की हार के साथ ही रूस द्वारा समर्थित सरकार भी गिर गई. और जिस के कारण स्वयं सोवियत संघ का भी विघटन हुआ. अब रूस, ईरान, तुर्की इत्यादि पड़ोसी देशों के लिए तालिबान सरकार की सफलता एक बड़ा सिरदर्द बन गई है.

यह धर्मांध लोगों की सरकार है, जहां इसलामी सामाजिक कानूनों को, अपनी परिभाषा में ढाल कर, हर रोज नए कानून बनाए जा रहे हैं. महिलाओं का काले बुरके से पूरे शरीर को ढके बगैर घर से बाहर निकलना गैरकानूनी करार दे दिया गया है. उन के स्कूल बंद कर दिए गए हैं. सिनेमा और टेलीविजन पर पाबंदी लगा दी गई है–क्योंकि तालिबान के अनुसार, कुरानशरीफ में इन की मनाही है. (पर पड़ोसी मुसलिम देश इस को नहीं मानते और स्त्रियों, सिनेमा, टेलीविजन इत्यादि पर पाबंदी को भी स्वीकार नहीं करते.)

खैर, इस धर्मांधता से जो जनून पैदा हो रहा है, उस से रूस में बेचैनी फैल रही है क्योंकि अफगानिस्तान पर पूरा कब्जा करने के बाद तालिबान अपने पड़ोसी देशों पर भी कब्जा करने की सोच सकता है. इसलिए रूस और 3 अन्य पड़ोसी देश अफगानिस्तान की सीमा पर फौज खड़ी कर रहे हैं.

अफगानिस्तान की तालिबान सरकार से भारत को भी खतरा हो सकता है. उस के सिपाही पाकिस्तान के सिखाने, पैसा देने और इसलाम की दुहाई देने पर भारतीय कश्मीर में आतंकवादी घुसपैठ कर सकते हैं.

कश्मीर के मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला द्वारा यह कहना कि कश्मीर में अब सेना की जरूरत नहीं है और स्थानीय पुलिस आतंकवाद से निबट सकती है, एक गलत सोचविचार होगा. अभी हाल में कश्मीर के एक गांव में 13 कश्मीरी पंडितों की बिना कारण, जानबूझ कर गोलियां मार कर हत्या कर देना, इस ओर एक दुखद संकेत करता है कि धर्मांधता द्वारा उत्पन्न आतंकवाद को दबाने के लिए अभी काफी दिनों तक सेना की जरूरत रहेगी.

उधर अमेरिका और पाकिस्तान को भी सोचनासमझना चाहिए कि तालिबान को समर्थन देते रहना स्वयं उन के हितों के लिए कहां तक लाभदायक है. धर्म के नाम पर तालिबान अपनी बंदूकें और तोपें अमेरिका और पाकिस्तानी हितों की ओर भी मोड़ सकता है.

*

बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने पटना में एक बड़े रैले–रैली का पुंल्लिग, जिस से कि उन का बड़प्पन साबित हो–का आयोजन किया. लेकिन किसलिए? इसलिए कि वह दिखाना चाह रहे थे कि देखिए, मेरी कितनी साख है, जनसमर्थन है और मेरे खिलाफ चारा घोटाले में जो अभियोग लगाए जा रहे हैं, वे सब बेकार हैं, झूठे हैं.

पर इस से कोई बेवकूफ व्यक्ति भी प्रभावित होगा, इस में संदेह है. राजनीतिबाजों द्वारा आयोजित इन रैले/रैलियों की पोल अब खुल चुकी है. उलटे, जनसाधारण में भी, विशेषतः जिन क्षेत्रों में ये आयोजित किए जाते हैं, इन के विरुद्ध जनआक्रोश पैदा होने लगा है.

आज सब जानते हैं कि इन रैलेरैलियों में आदमी और औरतों को जबरदस्ती पैसे दे कर पकड़ कर बुलाया जाता है. इन को ढोने के लिए ट्रक व बसें जबरदस्ती छीन ली जाती हैं. रेलगाड़ियों में बिना टिकट घुसाया जाता है और टिकट के पैसे खर्च कर के यात्रा करने वाले मुसाफिरों को अकसर बाहर फेंक दिया जाता है. स्टेशनों पर खानेपीने के स्टालों से जबरदस्ती खानापीना छीन कर खिलाया जाता है. छीने हुए वाहनों के लिए पेट्रोल पंपों से जबरदस्ती पेट्रोल भरवाया जाता है–लालू प्रसाद के रैले के दिनों में पटना और आसपास के इलाके में पेट्रोल पंप वालों ने पंप ही बंद कर दिए थे.

इस के ऊपर अगर रैलेरैलियां सत्तारूढ़

राजनीतिबाजों द्वारा आयोजित किए जाते हैं तो सरकार का सारा अमला इस काम में जुट जाता है और अनापशनाप पैसा भी खर्च किया जाता है. इस प्रकार ये रैलेरैलियां जनसमर्थन का प्रतीक बनने के बजाय जनसाधारण पर राजनीतिबाजों द्वारा की जाने वाली जबरदस्ती का प्रतीक बन गए हैं और इन का महत्त्व इसी प्रकार आंकना चाहिए. बजाय अपने नेताओं का समर्थन करने के अधिकांश लोग इन्हें अब वास्तव में जनशोषक समझने लगें तो कोई गलती नहीं होगी.

*

सरकार के पास नागरिकों से भूमि अधिग्रहण कानून (नागरिकों से जबरदस्ती, पर मुआवजा दे कर) के अंतर्गत जमीनजायदाद छीन लेने का अधिकार है. अकसर इस लगभग गैरकानूनी कानून के अंतर्गत नागरिकों से जरूरत से ज्यादा जमीन और जायदाद छीन ली जाती है. और फिर वह सड़ती, गिरती, पड़ती रहती है. अकसर तो सरकारी अमले की साजिश से गरीब होने के नाम पर लोग ऐसी जमीन पर कब्जा कर लेते हैं और फिर झुग्गीझोंपड़ी और कच्चेपक्के मकान व दुकानें बना कर उन के मालिक बन बैठते हैं. इस प्रकार जनता पर टैक्स लगा कर वसूल किया हुआ पैसा चालाक लोगों की जायदाद व मिल्कीयत में बदल जाता है.

प्रकाश सिंह बादल की पंजाब सरकार ने अनुमान लगाया है कि उस के पास इस प्रकार की अधिगृहीत की हुई 1,000 करोड़ रुपए के मूल्य की जमीनजायदाद है, जिस का वह कोई उपयोग नहीं कर पा रही है. इसलिए इसे क्यों न बेचा जाए.

यह कदम उचित है. इस से एक तो जिन लोगों ने इस सरकारी जमीनजायदाद पर गैरकानूनी कब्जा कर रखा है, उन्हें इसे खाली करना पड़ेगा, और कुछ हद तक सरकारी पैसे की किल्लत भी दूर हो जाएगी.

पर सरकार को, चाहे पंजाब में हो चाहे अन्यत्र, यह समझ लेना चाहिए कि यह काम आसान नहीं होगा. कब्जा किए हुए लोग आसानी से उसे छोड़ेंगे नहीं. अदा
से स्थगन आदेश (स्टे आर्डर) ले अ
सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत दे
सरकारी रिकार्ड नष्ट कराएंगे, सिफा
पहुंचाएंगे. पर इस सब के बावजूद कोि
तो करनी ही चाहिए ताकि जनसाधारण
वसूल किए हुए टैक्सों के रुपए का
यार लोग क्यों फायदा उठाएं.

दूसरे, सरकार को जमीन का अधिग्र
तभी करना चाहिए जब उस पर काम क
की योजना पूरी तरह तैयार हो. और उस
तत्काल काम शुरू किया जा सके.

रेलवे विभाग और फौज के पास
हजारों एकड़ जमीन बेकार पड़ी है. इस
भी यदि तत्काल काम शुरू नहीं हो सक
तो इसे भी या तो बेच दिया जाए या कि
पर उठा दिया जाए ताकि कुछ आमदनी
सिलसिला शुरू हो जाए और जरूरतमंदों
जमीन मिल सके.

*

आंध्र प्रदेश में शराब बेचने, पीने पर
पाबंदी पूर्व मुख्यमंत्री रामाराव ने,
मुद्दे पर चुनाव जीत कर, लगाई थी,
उन के दामाद और वर्तमान मुख्यमंत्री चंद्र
नायडू ने रद्द कर दिया है. उन का क
है, इस से सरकार को सालाना 600 क
रुपए का घाटा हो रहा है और नाजायज श
बाजार में बिक रही है, दी जा रही है.

रामाराव ने महिलाओं द्वारा एक
आंदोलन के चलाए जाने के बाद शराब
लागू की थी. महिलाओं का कहना था
उन के मर्द शराब पी कर कुटुंब की आम
नष्ट करते हैं और फिर उन्हें पीटते
रामाराव को इसी मुद्दे पर महिलाओं
वोटों ने मुख्यमंत्री की गद्दी पर बैठाया

सरकारी घाटे के कारण शराब
कानून को रद्द करना केवल एक बहाना
सरकार की आमदनी कम हो गई है
जरूरत इस बात की है कि सरकारी
घटाया जाए, न कि खुलेआम शराब
जाए. जहां तक अवैध शराब की बिक्री
प्रश्न है, तो वह तो हमेशा बिकती रह

और शराबबंदी रद्द करने पर भी बिकती रहेगी, क्योंकि खुली बिक्री की शराब पर भारी सरकारी टैक्स लगता है और अवैध शराब टैक्स मुक्त होती है.

और अगर सरकार को किसी भी तरह उचित या अनुचित ढंग से पैसा कमाना है तो चोरी, डकैती, मादक पदार्थ, जैसे चरस, स्मैक इत्यादि की भी खुलेआम बिक्री की इजाजत दे दे. उस में भी काफी आमदनी हो जाएगी.

पहले जमाने में, और शायद अभी भी, अनेक जगह पर बिना लुटेपिटे यात्रा करने, सामान लाने ले जाने पर वहां के अधिकारी, नवाब, राजे मोटी रकमें वसूल करते थे. जो नहीं देता था, उस का सामान लूट लिया जाता था.

असली बात तो यह है कि शराब बनाने वाली कंपनियों और सरकारी अफसरों व राजनीतिबाजों (जिन को पीनेपिलाने की आदत पड़ी है) की बहुत शक्तिशाली लाबी है, दबाव डालने वाले गुट हैं, जो शराबबंदी को चलने नहीं देते.

इस विषय में अंगरेजी पत्रपत्रिकाओं का भी काफी हाथ है. इन के संवाददाताओं, संपादकों व लेखकों को मुफ्त की शराब पीने की बुरी आदत है. क्योंकि इन का काफी दबदबा है इसलिए जब ये लोग रोज यह लिखते हैं कि शराबबंदी बेवकूफी है, घाटे का सौदा है, अवैध शराब धड़ल्ले से बिक रही है तो राजनीतिबाज (जैसा ऊपर कहा गया है), जो स्वयं पीने वाले होते हैं, शराबबंदी को समाप्त करा देते हैं.

अब यह महिला आंदोलनकारियों पर निर्भर करता है कि वे शराब की खुली बिक्री पर दोबारा पाबंदी कैसे लगवाती हैं. उन्हें आंदोलन करना चाहिए कि कोई स्त्री उस व्यक्ति को वोट न दे जो शराबबंदी के विरुद्ध हो, क्योंकि आधे वोट महिलाओं के होते हैं इसलिए उन के हाथों में यह बहुत बड़ा अस्त्र है.

*

केंद्र के नए बजट में आइसक्रीम व्यवसाय को बड़े औद्योगिक घरानों के लिए खोल दिया गया है. अब तक यह केवल लघु उद्योगों के लिए था.

वैसे तो जितने सरकारी प्रतिबंध कम हों, अच्छा है. पर शायद एकदम से किसी छोटे उद्योग को बड़े, वह भी विदेशी, उद्योगों की श्रेणी में शामिल करने में थोड़ी हिचकिचाहट होनी चाहिए.

अब तक 3-4 छोटे आइसक्रीम उद्योग, जैसे क्वालिटी इत्यादि फलफूल रहे थे. अब धीरेधीरे बड़ी, विदेशी/अंतर्राष्ट्रीय, कंपनियां इस मैदान में कूद रही हैं. क्वालिटी तो बिक ही गई है, दूसरी छोटी कंपनियां भी बिकने, बंद होने के कगार पर हैं.

आइसक्रीम व्यवसाय कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय नहीं था, जिसे लघु उद्योगों के संरक्षण से बाहर कर दिया जाए. यदि हर शहर में कोई अलग आइसक्रीम बना कर बेचना चाहता है तो उसे थोड़ीबहुत सुरक्षा तो मिलनी ही चाहिए. सारे देश में एक या दो कंपनियां आइसक्रीम बनाएं और बेचें, यह कोई बहुत आवश्यक या जनहित में नहीं है.

वैसे अब यह हो सकता है कि हर हलवाई, मिठाई वाला अपनी अलग आइसक्रीम बनाए और अपनी दुकान पर मिठाई की तरह बेचे. मिठाई अभी अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के ध्यान में नहीं आई है. पर किसी दिन आ भी सकती है. नमकीन तो एक बड़ी अमेरिकन कंपनी ने बनाने और बेचने शुरू कर दिए हैं.

बजाय आइसक्रीम खाने के कुलफी खाई जाए तो स्वास्थ्य के लिए ज्यादा लाभदायक रहेगी क्योंकि आइसक्रीम में उसे अधिक समय तक ताजा रखने के लिए कुछ रासायनिक पदार्थ अवश्य मिलाने पड़ते होंगे. एक बड़ी कंपनी तो साफतौर पर कहती है कि उस की आइसक्रीम वनस्पति तेलों ही से बनती है. कुलफी में इन की जरूरत नहीं पड़ती. पर कुलफी भी अच्छे कुलफी वालों के यहां ही खानी चाहिए—आजकल दूध भी सिंथेटिक (यूरिया, वनस्पति तेल इत्यादि से) बनने लगा है. ●

सरकारों का स्थायित



लेख • अरविंद चतुर्वेदी

देवगौड़ा सरकार के बजट पर टिप्पणी करते हुए एक विपक्षी राजनेता ने कहा कि यह बजट देश के आर्थिक विकास को ध्यान में रख कर नहीं बनाया गया बल्कि अल्पमत वाली सरकार की उम्र लंबी करने के लिहाज से बनाया गया है. वर्तमान केंद्र सरकार की स्थिरता को ले कर पिछले 9 महीनों से लगाई जा रही अटकलों पर यह सटीक टिप्पणी है. यह भी

कहा जा रहा है कि 13-14 छोटीछो
पार्टियों वाली इस अल्पमत सरकार से अधि
अपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी. बजट
पूर्व भी सरकार के ढुलमुल होने तथा कु
विशेष न कर पाने जैसी टीकाटिप्पणी हो
पिछले 9 महीनों से बदस्तूर जारी है. ज
1996 में, जब से देवगौड़ा सरकार ने कार्यभ

बेमतलब का है



संभाला तभी से जैसे हफ्तेहफ्ते की लीज पर चलने वाली इस अस्थिर सी दिखने वाली सरकार ने लंबा समय गुजार लिया है. इस के साथ अल्पमतीय होने की लाचारी मानो चिपकी हुई है.

केंद्र में ही इस के पूर्व 1989-91 के 18 महीनों में बनी 2 अल्पमत सरकारें, 1979 की चंद महीनों की चरणसिंह सरकार तथा विभिन्न प्रदेशों में अस्थिर सरकारों पर भी ऐसी ही टिप्पणिया की जाती रही थीं. तो क्या यह मान लिया जाए कि 'स्थिर' या 'बहुमत' वाली सरकारें ही विकास की द्योतक रही हैं या हो सकती हैं?

यह सत्य है कि केंद्र में जबजब अल्पमत की सरकारें बनीं, उन्होंने अपना कार्यकाल कभी पूरा नहीं किया. जबजब ये सरकारें गिरीं तबतब स्थिर सरकार बनाने के नाम पर देश के मतदाताओं ने दूसरे पक्ष को अवसर

अल्पमत की सरकार अस्थिर रहेगी या बहुमत क[ी] सरकार स्थिर ही होगी, इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता. दलों के भितरघा[त] जैसे कारणों से अच्छे बहुमत वाली सरकारें भी गिरती देखी गई हैं.

प्रदान किया. 1977 में कांग्रेस को हटा कर पहली बार केंद्र में विपक्ष की स्थिर सरकार बनी परंतु वह भी अपना कार्यकाल पूरा न कर सकी और इस के बाद एक अल्पमत की सरकार बनी. चौ. चरणसिंह की इस सरकार के बहुमत सिद्ध न कर पाने के बाद इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने 'स्थायित्व' का नारा देते हुए मतदाताओं से अपील की कि 'चुनिए उन्हें जो सरकार चला सकें'. मतदाताओं ने भी स्थिरता को ही चुना और इंदिरा गांधी को दोबारा सत्ता में आने का अवसर दिया. कम से कम केंद्र सरकार के बारे में यह सही प्रतीत होता है कि देश का

दिवंगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी : स्थिरता के नारे के कारण दोबारा सत्ता पर काबिज होने में कामयाब रहीं.

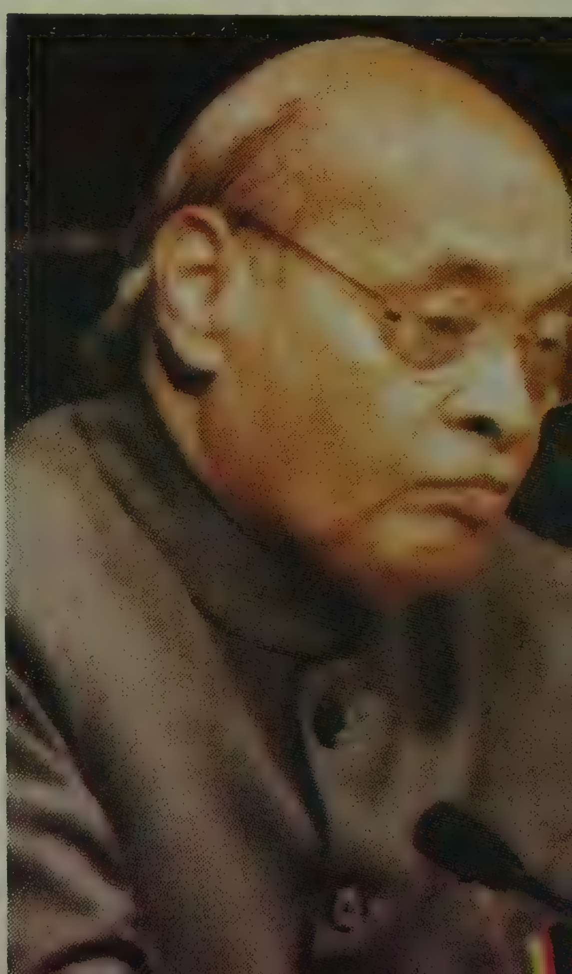


मतदाता एक स्थिर सरकार चाहता है.

भारतीय लोकतंत्र का अब तक [...] इतिहास बताता है कि 'अल्पमत' का [...] सदैव 'अस्थिर' नहीं होता तथा 'बह[...] सरकार' भी 'स्थिर' हो, इस की गारंटी [...] है. 1991 में कांग्रेस ने पी.वी. नरसिंह [...] के नेतृत्व में अल्पमत की सरकार बनाई [...] उस ने जैसेतैसे बहुमत हासिल किया [...] 5 वर्ष पूरे किए. दूसरी तरफ केंद्र में ज[...] पार्टी की 1977 में बहुमत सरकार तो [...] पर स्थिर नहीं रही.

अभी हाल का गुजरात का उदाह[...] भी यही दर्शाता है. कई प्रदेशों में भी [...]

पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव : केंद्र में [...] वर्ष तक सरकार तो चलाई पर देश की उन्न[...] की बजाय घोटालों का साम्राज्य रहा.



कुछ केंद्रीय सरकारों की स्थिरता व सफलता के सूचकांक

(आधार : पूर्णांक=दस)

अवधि	पार्टी	प्रधानमंत्री	स्थिरता सूचकांक	सफलता का सूचकांक	विशेष टिप्पणी
1971-77	कांग्रेस	इंदिरा गांधी	7	4	विपक्ष के आंदोलन के दमन हेतु आपातकाल लागू किया गया.
1977-79	जनता पार्टी	मोरारजी देसाई	6	7	महंगाई पर रोक, नागरिक स्वतंत्रता की बहाली, पड़ोसी देशों से बेहतर संबंध.
1980-84	कांग्रेस	इंदिरा गांधी	6	5	आतंकवाद का प्रारंभ, लोकतांत्रिक संस्थाओं का दमन, प्रदेशों में अस्थिरता
1984-89	कांग्रेस	राजीव गांधी	9	5	विदेशी कर्ज बेतहाशा बढ़ा, बोफोर्स सौदे में दलाली के आरोप, लिट्टे को शह, विदेश नीति विफल.
1989-90	जनता दल	विश्वनाथ प्रताप सिंह	4	4	जनअपेक्षाओं को पूरा करने में विफल, मंडल कमीशन, जातिवादी हिंसा, आतंकवाद रोकने में विफल, सांप्रदायिकता बढ़ी.
1990-91	सजपा	चंद्रशेखर	1	5	हिंसा पर काबू, धार्मिक उफान शांत, तमिलनाडु में दृढ़ता दर्शा कर सरकार बरखास्त, खाड़ी युद्ध में अमेरिका को रिफ्यूलिंग की सुविधा.
1991-96	कांग्रेस	पी.वी. नरसिंह राव	6	3	भ्रष्टाचार की चरम सीमाएं, आतंकवाद की पराकाष्ठा, उद्योग में हताशा, आर्थिक सुधार विफल, पड़ोसी देशों से अनबन.
1996-अब तक	संयुक्त मोरचा	एच.डी. देवगौड़ा	3	5	समन्वय का पूर्ण अभाव, खोखली घोषणाएं, दामों में वृद्धि, ढुलमुल नीतियां, जनवितरण प्रणाली में क्रांतिकारी कदम.

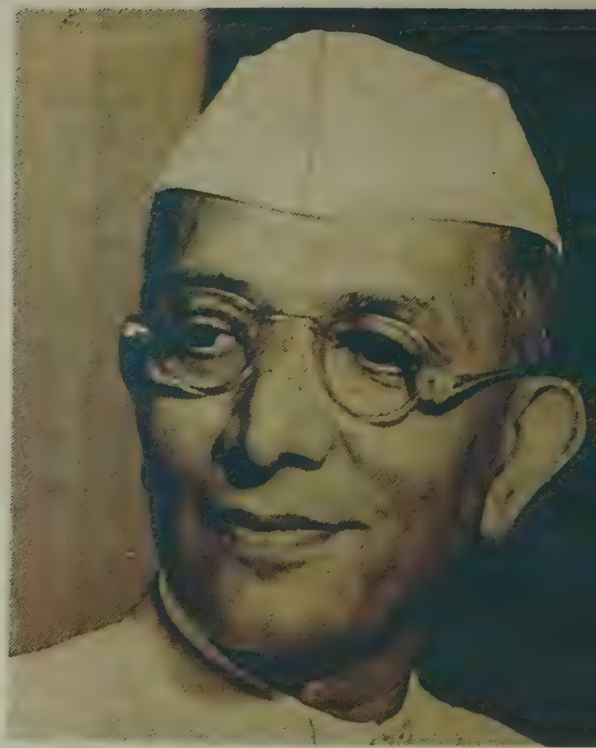
कई बार हुआ है कि 'बहुमत' वाली सरकारें असमय गिर गईं तथा 'अस्थिरता' पैदा हो गई. प्रदेशों में भी अल्पमत की सरकारों ने अपना कार्यकाल पूरा किया है और उन में स्थिरता रही है. 1990 में बिहार में जब लालूप्रसाद यादव के नेतृत्व में सरकार बनी तो अल्पमत की सरकार थी, परंतु उस ने 5 वर्ष पूरे किए. इस से स्पष्ट है कि अल्पमत

या बहुमत का स्थिरता या अस्थिरता से प्रत्यक्ष दृढ़ संबंध नहीं है.

मूल प्रश्न स्थिरता या अस्थिरता का नहीं बल्कि प्रशासन के सफल या असफल होने का है. उस स्थिर सरकार का क्या लाभ जो संख्या की दृष्टि से मजबूत होने के बावजूद जनकल्याण तथा विकास के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य कर के न दिखा पाए? ऐसी 'स्थिर' सरकार से तो वह 'अस्थिर' सरकार अच्छी जो भले ही कम अवधि के लिए शासन में रहे लेकिन कुशलता से कार्य कर सके.

स्थायित्व की दृष्टि से सरकारें 4 प्रकार की होती हैं : 1. अत्यधिक बहुमत की सरकार, 2. स्पष्ट बहुमत की सरकार, 3. मामूली अल्पमत की सरकार, जो कुछ अन्य दलों के साथ मिल कर बहुमत बना लेती है तथा 4. अत्यंत अल्पमत सरकार, जो बड़े दलों के बाहरी समर्थन पर टिकी होती है.

केंद्र में व प्रदेशों में उक्त चारों प्रकार



पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई : जनता को एक स्वच्छ प्रशासन दिया.

की सरकारें आती रही हैं. यदि इन सभ सरकारों में कुछ साझा तत्त्व रहा है तो व

अंततः देवगौड़ा सरकार भी अल्पमत में

जिस नाटकीय राजनीतिक घटनाक्रम के अंतर्गत विगत 30 मार्च को कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम केसरी ने केंद्र पर काबिज 10 महीने पुरानी 13 पार्टियों की देवगौड़ा सरकार से अपना समर्थन वापस ले कर संयुक्त मोरचा सरकार के नेताओं को असमंजस में डाल दिया है, वह अनपेक्षित नहीं था. कांग्रेस द्वारा अपना समर्थन वापस ले लिए जाने से देवगौड़ा सरकार भले ही अल्पमत में आ गई हो लेकिन उसे विश्वास है कि राष्ट्रपति द्वारा 11 अप्रैल तक का जो समय विश्वास का मत प्राप्त करने के लिए दिया गया है उस में वह अपना बहुमत सिद्ध कर सकेंगे. लेकिन जिस तरह से कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस लिया है वह हास्यास्पद ही लगता है. कांग्रेस और माकपा ने देवगौड़ा सरकार को बाहर रह कर बिना शर्त समर्थन देने का निर्णय लिया था लेकिन नीतिगत मुद्दों पर उन के आपसी मतभेद सामने आते रहे. अंततः कांग्रेस ने यह कह कर कि मोरचा सरकार देश में बढ़ती सांप्रदायिकता को नहीं रो पाई है और न ही यह सरकार महंगाई तथा कानू व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति को थाम सकी अपनी उधार दी हुई बैसाखियां ले लीं.

लेकिन हकीकत यह है कि जिस कांग्रे ने हमेशा 'फूट डालो और राज करो' की नीति के साथसाथ हमेशा दलबदल को प्रोत्साहि किया और अंततः जिसे जनता ने भी राजनी के मंच पर परदे के पीछे धकेल दिया, उ कांग्रेस की पंजाब विधानसभा के आम चुनावो महाराष्ट्र के नगरपालिका चुनावों, दिल्ल नगरनिगम के चुनावों और राजस्थान में नागौ व मध्य प्रदेश में छिंदवाड़ा संसदीय क्षेत्र क उपचुनावों में हुई शर्मनाक हार से उस का मनोब इस कदर टूट गया था कि अंततः उस ने कें में मोरचा सरकार को पटखनी दे कर अपन दमखम दिखाने का प्रयास किया.

यह ठीक है कि देवगौड़ा सरकार कांग्रेस नेताओं पर चल रहे मुकदमों की गति धीमी कर

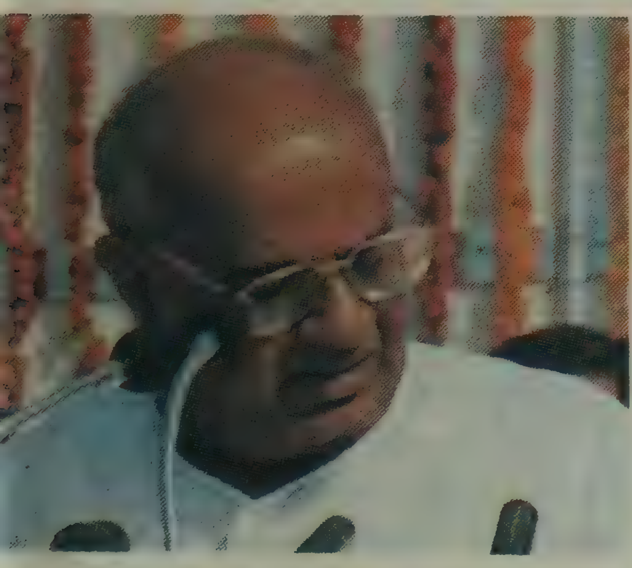
यह है कि सभी सरकारें मूलतः नौकरशाही की बदौलत चलती हैं और उसी पर आश्रित रहती हैं. अत्यंत स्थिर, मामूली रूप से स्थिर सरकार हो या नितांत अल्पमत वाली अस्थिर सरकार, सभी के नकारात्मक व सकारात्मक परिणाम रहे हैं.

सरकार का स्थायित्व अपने-आप में न विकास की गारंटी है, न भ्रष्टाचार के खात्मे की. ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि स्थिर सरकारें बेहतर कानून व व्यवस्था को अंजाम दे सकती हैं या गरीबी मिटाने में अधिक सफल रह सकती हैं.

'स्थिरता' की स्थिति में मतदाता की अपेक्षा रहती है कि ऐसी सरकार बिना किसी राजनीतिक बाधा के अपना कार्यकाल पूरा करेगी तथा प्रदेश/देश के विकास में सफल हो कर आम नागरिकों को एक बेहतर जीवन और रहनसहन की सुविधाएं देगी. किंतु जो अब तक देखने में आया है, उस के अनुसार सरकारों के स्थायित्व का सीधा संबंध न विकास से रहा है, न भ्रष्टाचार उन्मूलन से. स्थिर सरकारें कानून व व्यवस्था की स्थिति में विशेष सुधार लाई हों, ऐसा भी नहीं है.

जहां तक भ्रष्टाचार का संबंध है, अब तक का अनुभव बताता है कि स्थिर सरकारों के दौरान भी इसे खूब बढ़ावा मिला है. तमिलनाडु की जयललिता सरकार ने, जिस के पास मित्र दल को मिला कर 98 प्रतिशत बहुमत था, भ्रष्टाचार के तमाम रिकार्ड तोड़ दिए. लगभग यही बात नरसिंह राव के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के संबंध में कही जा सकती है. यह पहले अस्थिर थी, बाद में साम, दाम, दंड, भेद के सिद्धांत अपनाकर बहुमत में आ तो गई परंतु उस का वह बहुमत भी छलावा सिद्ध हुआ. इस सरकार ने अपने कार्यकाल के 5 वर्ष पूरे अवश्य किए परंतु जितने भ्रष्टाचार के मामले इन 5 वर्षों के दौरान सामने आए वे हैरत में डालने वाले हैं.

इस के विपरीत कुछ अल्पमत वाली



का वादा पूरा नहीं कर पाई, पर फिर भी उस की नीतियां व कार्यक्रम लगभग उन्हीं सरकारों जैसे ही रहे जो पहले सत्ता में रह चुकी हैं. इसलिए मोरचा सरकार के स्थायित्व के बेमतलब हो जाने पर भी यह साफ नहीं है कि केंद्र में नया विकल्प कैसा होगा.

इतिहास जब अन्य सरकारों के साथ देवगौड़ा सरकार के कामकाज की समीक्षा करेगा तो वह भी शायद यही कहेगा कि नरसिंह राव की 'अल्पमत' वाली सरकार की भांति देवगौड़ा 'बहुमत' वाली सरकार बनाने में भले ही 10 महीनों तक ही समर्थ रहे लेकिन उन के शासनकाल में भी गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और बढ़ती जनसंख्या आदि की समस्याएं बदस्तूर कायम रहीं. देवगौड़ा सरकार भी इन समस्याओं का समाधान नहीं निकाल सकी.

देवगौड़ा सरकार से अपना समर्थन वापस ले कर कांग्रेस ने सरकार बनाने का दावा पेश किया है लेकिन ऐसा नहीं लगता कि भाजपा की 161 सीटों से कम, 140 सीटों वाली कांग्रेस बिना खरीदफरोख्त किए सत्ता में आ सकती है. इसलिए फिलहाल सब की निगाहें राष्ट्रपति के फैसले पर लगी हैं और केंद्र की स्थिति भी लगभग उत्तर प्रदेश जैसी ही हो गई है जो आगे चल कर राजनीतिक गतिरोध का रूप ले सकती है.

अब देखना यह है कि केंद्र में अपनी सत्ता की खिचड़ी पकाने के लिए कौन सी पार्टी दूसरी पार्टियों में सेंध लगाती है और स्थायित्व के नकली नारों से लोकतंत्र को भरमाती है.

कुछ प्रदेश सरकारों की प्रगति का लेखाजोखा

प्रदेश	अवधि	पार्टी	मुख्यमंत्री	सफलता सूचकांक				
				स्थिरता सूचकांक	भ्रष्टाचार उन्मूलन	कानून व्यवस्था	प्रदेश की आर्थिक प्रगति	क्षेत्रीयत जातिवा सांप्रदा यिकता पर नियं
हरियाणा	1987-91	जनता	चौ. देवीलाल	7	5	4	3	5
	1991-96	कांग्रेस	भजनलाल	6	3	5	5	5
उ.प्र.	1991-92	भाजपा	कल्याणसिंह	6	5	7	4	1
	1992-93	–	राष्ट्रपति शासन	–	5	6	5	5
	1993-95	सपाबसपा	मुलायमसिंह	5	3	3	1	2
	1996-97	–	राष्ट्रपति शासन	–	4	3	2	4
बिहार	1990-95	जनता दल	लालूप्रसाद यादव	4	4	4	3	4
	1995	जनता दल	लालूप्रसाद यादव	5	2	2	3	3
तमिलनाडु	1989-91	द्रमुक	करुणानिधि	7	5	5	3	4
	1991-96	अ.द्रमुक	जयललिता	9	0	1	3	4
मध्य प्रदेश	1990-92	भाजपा	सुंदरलाल पटवा	6	5	6	5	3
	1992-93	–	राष्ट्रपति शासन	–	5	6	5	5
	1993	कांग्रेस	दिग्विजयसिंह	6	4	5	5	5
राजस्थान	1993	भाजपा	भैरोंसिंह शेखावत	5	5	6	6	5

* उ.प्र.=हाल ही में मायावती मुख्यमंत्री बनी हैं.

ऐसी अस्थिर सरकारों ने न केवल भ्रष्टाचार पर अपने कार्यकाल के दौरान काबू पाया बल्कि उन के कार्यकाल में किसी मंत्रालय/विभाग में कोई ऐसा घोटाला सामने नहीं आया. संविद सरकारों के युग में जब उत्तर प्रदेश में चौ. चरणसिंह मुख्यमंत्री बने तो उन की पार्टी के 425 सदस्यीय सदन में मात्र 17 सदस्य थे. अन्य दलों के सहयोग से बनी सरकार अधिक चली तो नहीं, परंतु सरकारी कर्मचारियों/अधिकारियों में उन की स्वच्छ व ईमानदार छवि ने दहशत सी फैला दी थी. केंद्र में मोरारजी देसाई की सरकार हो, विश्वनाथ प्रताप सिंह की 1989-90 की सरकार–किसी में भी न तो कोई घोटाला सामने आया और न भ्रष्टाचार के कोई आरोप ही लगे. जाहिर है कि स्वच्छ व ईमानदार प्रशासन के लिए 'स्थिरता' कोई आवश्यक शर्त नहीं है.

तमाम आर्थिक सुधारों का ढिंढोरा पीटने वाली नरसिंह राव सरकार की उदारीकरण नीति से आम भारतीय नागरिक की स्थिति में कोई प्रत्यक्ष सुधार नहीं हुअ इस के पहले राजीव गांधी की सरकार व आर्थिक प्रगति की घोषणाएं भी खोखली साबित हुईं. गरीबी बढ़ी, बेरोजगारी बढ़ उद्योगपति हतोत्साहित रहे, महंगाई लगात बढ़ती रही और जनता भी त्रस्त रही. बहुम वाली राजीव गांधी व नरसिंह राव की सरक उद्योग जगत में वह हलचल पैदा न कर सव जो अल्पमत वाली देवगौड़ा सरकार के ह के बजट ने पैदा की.

अब इस के दूरगामी परिणाम कै होंगे, यह तो भविष्य ही बताएगा, पर उद्योगजगत से मिली सराहना से तो लग है कि जहां तथाकथित स्थायी सरक असफल रहीं, वहीं अस्थायी सरकार सफलता के झंडे गाड़ दिए. इसी प्रक कीमतों को स्थिर रखने में जहां विश बहुमत की चिरस्थायी लगने वाली सरक सफल न हो सकीं वहीं मोरारजी देसाई व अपेक्षाकृत कम बहुमत की सरकार 1977-78 में यह कर के दिखा दिया. अत्

गरीबों को सस्ते दामों पर अनाज देने की योजना भी अंततः अपेक्षाकृत कमजोर कही जाने वाली देवगौड़ा सरकार ने ही लागू की.

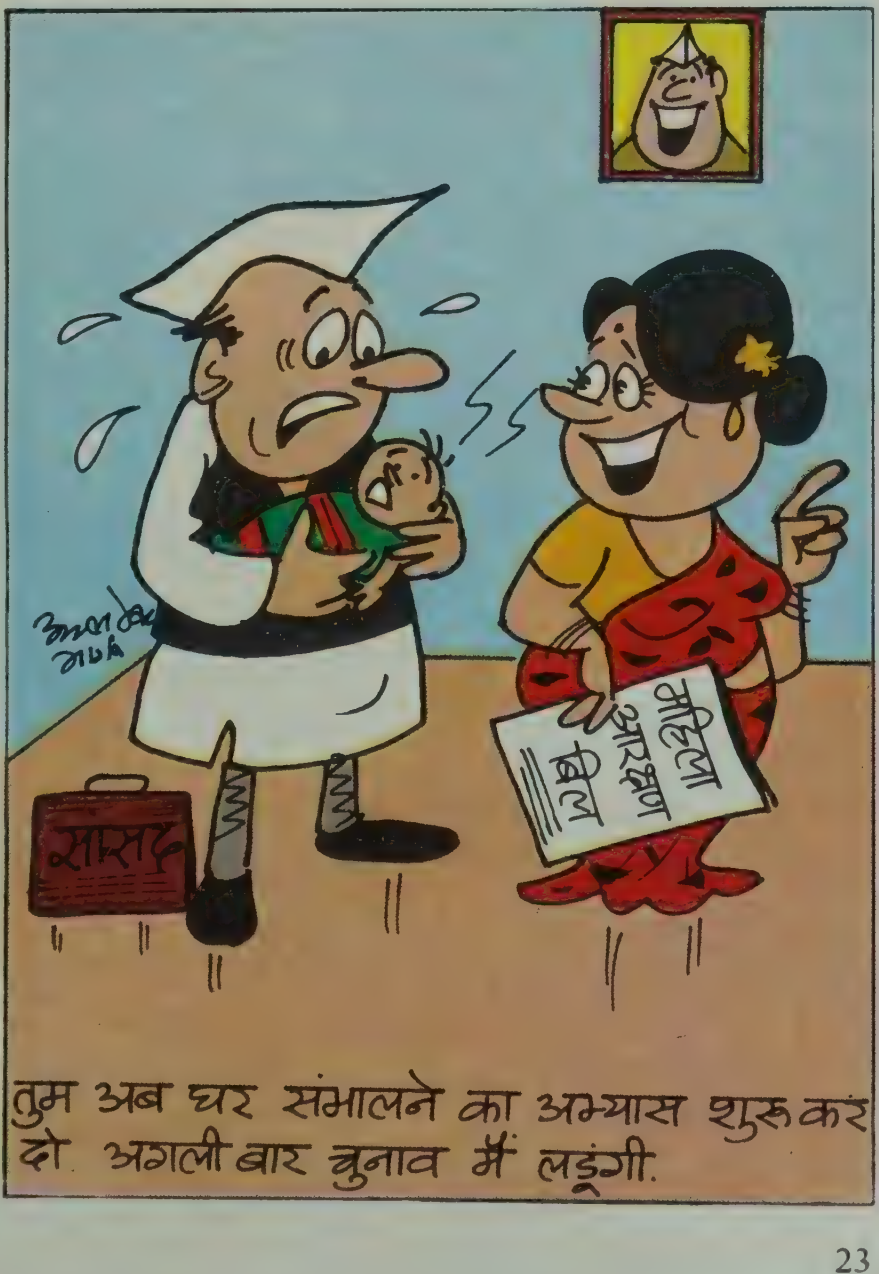
पिछड़े वर्ग की सरकारी नौकरियों में आरक्षण देने हेतु मंडल आयोग का गठन तो 1978 में ही हो गया था जिस की सिफारिशें इंदिरा गांधी व राजीव गांधी के नेतृत्व में बनी स्थायी सरकारें लागू करने से कतराती रहीं. विश्वनाथ प्रताप सिंह की अल्पमत वाली सरकार ने ही इस महत्त्वपूर्ण निर्णय को लागू किया, भले ही इस के पीछे राजनीतिक कारण अधिक रहे हों.

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चाहे भारतीय खिलाड़ियों ने अभूतपूर्व सफलताएं अर्जित की हों या कलाकारों ने, या फिर फिल्म, शिक्षा, चिकित्सा, वैज्ञानिक अनुसंधान, हर क्षेत्र में सफलताओं व उपलब्धियों का संबंध किसी सरकार की स्थिरता से नहीं रहा. ठीक इसी प्रकार, क्षेत्र समाज सुधार का हो, कानून का अथवा आर्थिक निर्णयों का, किसी का भी सरकार के स्थायित्व से प्रत्यक्ष संबंध नहीं है.

जहां तक देश की समस्याओं का संबंध है, गिरता नैतिक स्तर, बढ़ता भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, जनसंख्या आदि की समस्याएं उसी प्रकार बदस्तूर कायम हैं. सरकारें आईं और गईं, इन में स्थायी सरकारें भी रहीं और कुछ माह चलने वाली अस्थिर सरकारें भी. जिस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में देश की प्रगति का संबंध सरकारों के स्थायित्व से नहीं रहा, उसी तरह इन समस्याओं से निबटने में स्थायी सरकारें भी कुछ विशेष योगदान नहीं कर सकीं. प्रदेश की सरकारों पर भी यही तर्क लागू होता है.

यदि मतदाता चुनाव के वक्त किसी दल विशेष को इसलिए मत देता है कि वह स्थिर सरकार बनाने में सक्षम है तो यह मात्र उस का भ्रम ही कहा जाएगा. स्थिरता देने वाली बहुमत की सरकार किसी मध्यावधि चुनाव से बच कर राष्ट्रीय खजाने से होने वाले खर्च को बचाएगी, यह आधार भी खोखला साबित होने लगा है क्योंकि दलों में भितरघात, तोड़फोड़ और बड़े पैमाने पर दलबदल के रहते अब इस बात की भी गारंटी नहीं रही.

कुल मिला कर सरकारों का स्थायित्व एक छलावा ही सिद्ध हुआ है. अतः बेहतर तो यह है कि मतदान करते समय स्थिर सरकार का सपना देखने के बजाय बेहतर प्रत्याशी या दल को चुना जाए. ●



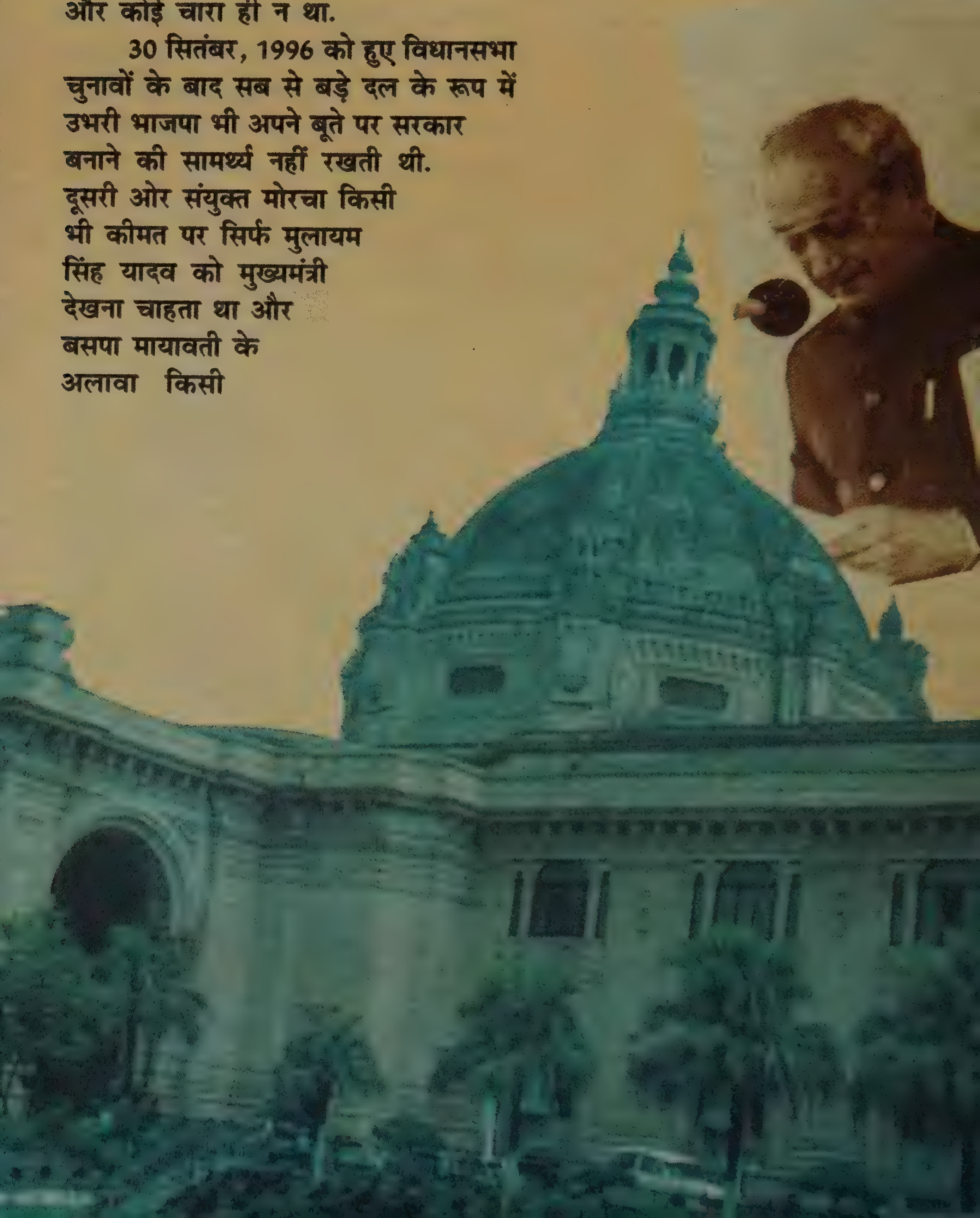
उत्तर प्रदेश में मायाव

उत्तर प्रदेश में पिछले 6 महीनों से सत्ता कब्जाने की आंखमिचौली का खेल आखिरकार खत्म हुआ. यहां भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी ने मिलीजुली सरकार बना ही ली. उत्तर प्रदेश में भाजपा और बसपा का यह गठबंधन वैचारिक एकरूपता का नहीं, राजनीतिक मजबूरी का रिश्ता है क्योंकि इस के अलावा और कोई चारा ही न था.

30 सितंबर, 1996 को हुए विधानसभा चुनावों के बाद सब से बड़े दल के रूप में उभरी भाजपा भी अपने बूते पर सरकार बनाने की सामर्थ्य नहीं रखती थी. दूसरी ओर संयुक्त मोरचा किसी भी कीमत पर सिर्फ मुलायम सिंह यादव को मुख्यमंत्री देखना चाहता था और बसपा मायावती के अलावा किसी

लेख • जगदीश चावल

और को मुख्यमंत्री के रूप में समर्थन दे
तैयार नहीं थी. सभी दल अपने स्वार्थ
दुराग्रहों के घोड़ों पर सवार थे. किस
दल को इस बात की चिंता नहीं थी कि
करोड़ की आबादी वाले इस बड़े



सरकार



मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण करते हुए मायावती : राजनीतिक दांवपेच से बेखबर नहीं.



राज्य में किसी सरकार के न बनने से राज्य का आर्थिक, सामाजिक ढांचा चरमरा जाएगा और राष्ट्र के बारे में गलत संकेत जाएंगे सो अलग.

राजनीतिक दल तो सत्ता हथियाने के लिए जीतोड़ मेहनत करते रहे और उत्तर प्रदेश में राजनीतिक परिदृश्य पूरे 6 महीने तक अनिश्चय और संशय के कुहरे में डूबा रहा. कोई भी राजनीतिक दल राज्यपाल को सरकार बनाने लायक पूरे विधायकों की गिनती नहीं करा सका. सभी दल एकदूसरे को नंगा करने की चेष्टा में ही लगे रहे.

राष्ट्रपति शासन के अंतर्गत जैसी बुरी हालत इस प्रदेश की राजनीति की हो गई थी उसे देखते हुए इन दोनों पार्टियों का आपसी मेलजोल या गठबंधन काफी मायने रखता है.

राज्यपाल रोमेश भंडारी के कार्यकाल में नौकरशाही तो अपनी मनमानियां चलाती ही रही, दूसरी तरफ यहां बढ़ते अपराधों की तसवीर भी इतनी भयावह हो चुकी थी कि गृहमंत्री इंद्रजीत गुप्त तक को यह कहना पड़ा कि उत्तर प्रदेश तो अराजकता, अव्यवस्था और विनाश की ओर जा रहा है. यह अलग बात है कि बाद में गृहमंत्री भी अपने बयान का अजीबोगरीब स्पष्टीकरण देते नजर आए और राज्यपाल रोमेश भंडारी भी उन के इस बयान का सार्वजनिक खंडन कर कानून-व्यवस्था को चुस्तदुरुस्त बनाने से दरकिनार रहे.

बात दरकिनार रहने तक ही होती तो गनीमत थी, हालात इतने गंभीर हो गए कि राज्यपाल रोमेश भंडारी के दौर में ही निर्दोष लोगों की हत्याएं, बलात्कार, डकैती और अपहरण आदि की नृशंस घटनाएं घटित हुईं. इन हालात ने भी भाजपा और बसपा को अपनी रणनीति तैयार करने का बहुत कुछ आधार दिया है. अतः इस गठबंधन को अब कानूनव्यवस्था को दुरुस्त करने की पहल करनी होगी.

राष्ट्र, राज्य और लोकतंत्र के हित में

उत्तर प्रदेश में पिछला राष्ट्रपति शासन कब से कब तक

समयावधि	दि
फरवरी 25, 1968 से फरवरी 26, 1969 तक	36
अक्तूबर 2, 1970 से अक्तूबर 18, 1970 तक	1
जून 13, 1973 से नवंबर 7, 1973 तक	14
नवंबर 30, 1975 से जनवरी 21, 1976 तक	5
फरवरी 18, 1980 से जून 9, 1980 तक	11
दिसंबर 6, 1992 से दिसंबर 4, 1993 तक	36
अक्तूबर 17, 1995 से अक्तूबर 17, 1996 तक	36
अक्तूबर 18, 1996 से मार्च 20, 1997 तक	15

भाजपा और बसपा का मिलजुल कर काम करने का यह प्रयास गलत नहीं है. यदि एक तथाकथित ब्राह्मणवादी पार्टी ने एक अछूत दलित पार्टी से गठबंधन किया है तो उस की सराहना की जानी चाहिए कि सदियों से चलते वैरभाव, भेदभाव और घृणा को मिटाने का यह अभूतपूर्व मौका दोनों को

6 माह की उठापटक व अनिश्चय के बाद उत्तर प्रदेश में लोकप्रिय सरकार का गठन हो ही गया. हालांकि यह दोनों दलों की राजनीति व मजबूरी का नतीजा है. लेकिन जिस तरह से राज्य अराजकता की ओर बढ़ रहा था उसे देखते हुए इसे एक सार्थक प्रयास कहा जा सकता है. अब देखना है कि यह सरकार प्रदेश की व्यवस्था को चुस्तदुरुस्त करने में क्या पहल करती है?

मिला है. एक दलित स्त्री को राज्य की
सौंप कर भाजपा ने यही जताने की
की है कि उन की पार्टी नारी जाति के
केवल कथनी में नहीं, करनी में भी वि
करती है. संसार में कोई भी चीज मुफ्त
मिलती. यदि यह समझौता एकदूसरे
परस्पर मानसम्मान दे कर और बिना विध
की खरीदफरोख्त के किया गया है त
का तहेदिल से स्वागत किया जाना चा

ऐसा नहीं है कि मायावती प्रशास
दांवपेचों को नहीं जानती या उस की
को लोग बिलकुल नहीं जानते. जहां
बसपा की बात है, वह सभी दलों के
प्रमुखता वाली पार्टी कही जाने लगी है
कई राज्यों में इस की हिस्सेदारी के
सत्ता पाना भी जटिल हो जाता है. बसप
'सुप्रीमो' कांशीराम अपने वक्तव्यों मे
व्यवहार में कैसे भी अक्खड़ हों ले
कानून की छात्रा रही मायावती में
अक्खड़पन नहीं है. मायावती पहली
1977 में तब चर्चा में आई जब दिल्ली
रैली में उस ने 'हरिजन' शब्द पर अ
आपत्ति जताते हुए कहा, "तो क्या
दुर्जन हैं?" इस के बाद डाकतार विभा
कर्मचारी की इस बेटी में कांशीराम ने
महत्त्वाकांक्षाएं जगाईं, उसी से वह 198
पहली बार बिजनौर से सांसद चुनी गई
बाद में भाजपा के बाहरी समर्थन से



उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती राज्यपाल रोमेश भंडारी और अपने नवगठित मंत्रिमंडल के साथ : कारगर और सफल नेतृत्व देने में सफल रहेंगी?

प्रदेश की मुख्यमंत्री भी बनी. यह अलग बात है कि मायावती को समर्थन देने पर भी जब

उत्तर प्रदेश में विधानसभा की दलीय स्थिति	
(20 मार्च 1997 को) कुल सीटें 425	
भाजपा	176
बसपा	67
समता	2
समाजवादी पार्टी	109
कांग्रेस	33
भाकिका पा.	8
जनता दल	7
तिवारी कांग्रेस	4
कम्यूनिस्ट (मा.)	3
कम्यूनिस्ट	2
निर्दलीय व अन्य	14

भाजपा दलितों में अपना प्रभाव पैदा नहीं कर सकी और न ही उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव के वर्चस्व को कम कर पाई तो मायावती की कार्यशैली को मुद्दा बना कर भाजपा ने अपना समर्थन वापस ले लिया.

मगर तब से अब तक प्रदेश की राजनीति में काफी पानी बह चुका है और बारीबारी से मायावती और भाजपा के किसी व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाए जाने की घोषणा से अब इस सांझा सरकार ने राष्ट्रपति शासन को अलविदा कह दिया है. इस तरह मुख्यमंत्री बनी मायावती ने अब अपने मंत्रिमंडल का विस्तार भी कर लिया है. अब यह देखना होगा कि भ्रष्टाचार, अपराध, जातीय विद्वेष से ग्रस्त और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ रहे उत्तर प्रदेश के लिए वह कितना कारगर और सफल नेतृत्व दे पाती है.

उत्तर प्रदेश में भाजपा और बसपा के मेल से जहां कांग्रेस की केंद्र व राज्य में दुर्गति हो रही है वहीं मुलायम सिंह यादव को भी इस शुरुआती झटके से यह लगने लगा है कि आखिर केंद्र पर काबिज संयुक्त मोरचे की सरकार भी कब तक उन की चौधराहट को स्वीकार करती रहेगी, खास-

कर उस स्थिति में जबकि यहां इस गठबंधन वाली सरकार ने उन का राजनीतिक कद और भी बौना बना दिया हो.

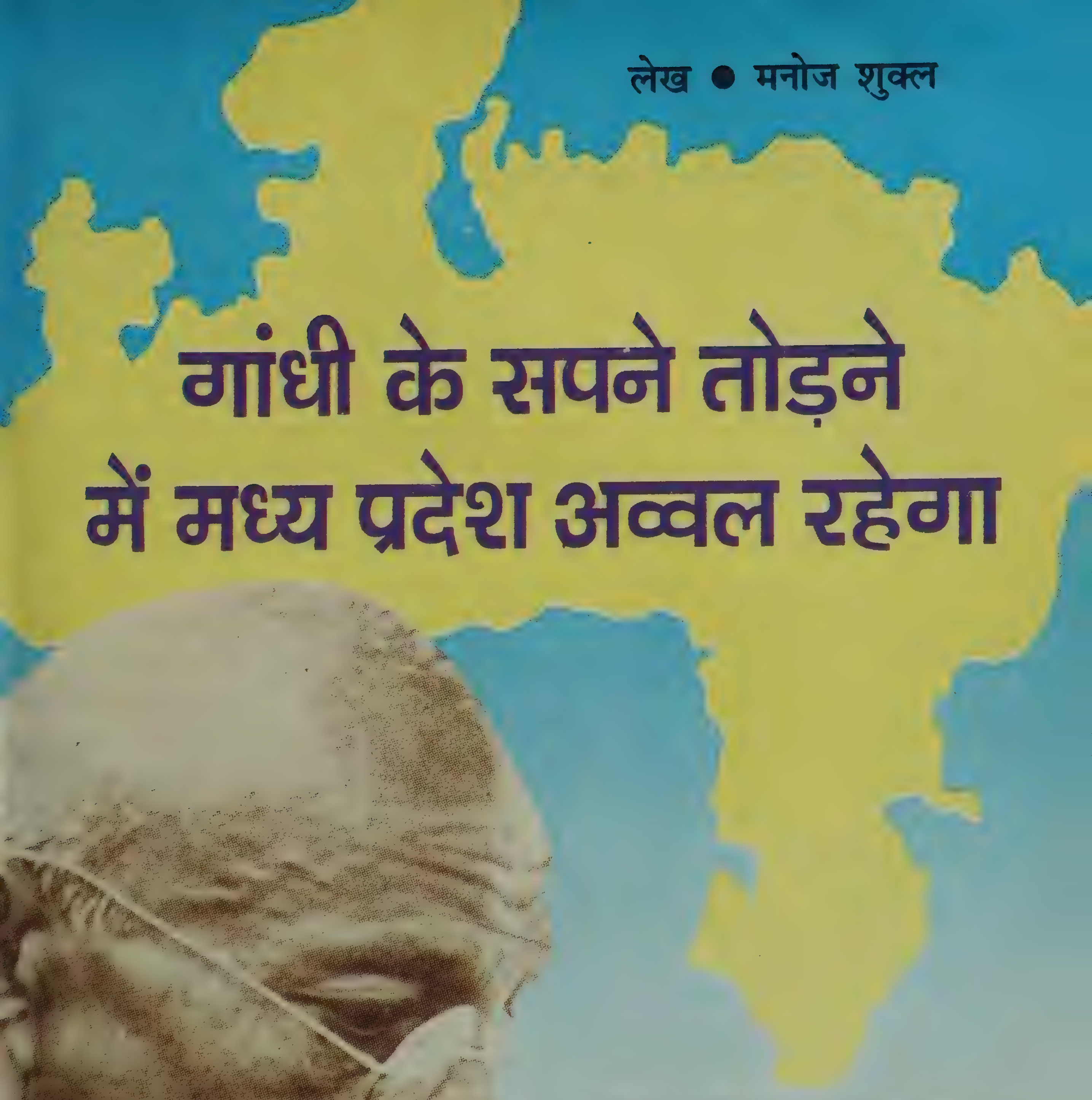
उत्तर प्रदेश में मायावती के मुख्यमंत्री बनने से इटावा के शेर कहे जाने वाले मुलायम सिंह यादव को 1993-95 में उन के मुख्यमंत्रित्व काल में जनमे विवाद उन्हें अब फिर से परेशान कर सकते हैं. 32 करोड़ रुपए की अतिरिक्त निकासी के आयुर्वेद घोटाले की जांच में लगी सी.बी.आई. भले ही मुलायम सिंह यादव को बख्श दे पर रमेश चंद्र समिति रिपोर्ट पर अमल का खतरा उन के लिए बुरा साबित हो सकता है. इस रिपोर्ट में यह आरोप लगाया गया है कि जून 1995 में उन्होंने राज्य अतिथिगृह में टिकी मायावती और उन के समर्थकों पर हमले की योजना बनाई थी.

हालांकि इस मामले में मायावती ने अपने रुख को बदलते हुए यही कहा है कि इस कांड के साथ मुजफ्फरनगर कां मामला अभी अदालत में विचाराधीन है इस का फैसला अदालत ही करेगी. मु सिंह को यह जताने की चेष्टा भी की वह उन के जैसी गैरकानूनी हरकतों में नहीं रखती. पर मुलायम सिंह के द्वारा में राज्य के 40 करोड़ से ज्यादा की को नेताओं, पत्रकारों व अफसरों पर की फिर से चर्चा कर वह मुलायम को छका सकती है.

मुलायम सिंह के विवेकाधीन को इतनी बड़ी राशि की बंदरबांट की खब सब से पहले मायावती सरकार ने ही उ की थी. और इस मामले में दायर की जनहित याचिका की सुनवाई जब शुरू तो मुलायम से यह अवश्य पूछा जाएग उन्होंने मुख्यमंत्री के विवेकाधीन कोष बजट 26.6 लाख से बढ़ा कर 43.2 व कैसे किया?

लेख ● मनोज शुक्ल

गांधी के सपने तोड़ने में मध्य प्रदेश अव्वल रहेगा



महात्मा गांधी का सपना 'पंचायतीराज' कभी साकार होगा या यों ही ग्रामीणों के हाथ सत्ता सौंप कर मजाक बनता रहेगा. वैसे भी नेहरू ने सत्ता की बागडोर संभाल कर हर पल उन के सपनों को तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी. नेहरू के बाद भी नेहरू परिवार की उंगली पकड़ कर प्रगति के नाम पर देश घिसटता ही रहा है.

जैसेतैसे स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदार बनी जनता के एक हिस्से के लिए सत्ता के सब से निचले स्तर पर सत्ता की बागडोर संभालने का अवसर आया है तो नौकरशाही उसे भी अपनी करतूतों से नाकाम करने की दिशा में प्रयासरत है. नौकरशाहों को अपना

महात्मा गांधी सत्ता में आम जनता की हिस्सेदारी चाहते थे इसी जब मध्य प्रदेश ने इस दिशा में पहल की तो उसे खूब सराहा गया. लेकिन आज जिस तरह से वहां शोषक वर्ग सत्ता काबिज है क्या उसे देख कर यह नहीं लगता कि गांधी के सपने को तोड़ने में भी यह प्रदेश अव्वल रहेगा?

अस्तित्व खतरे में जान पड़ता है. इसलिए उन के द्वारा अपने अस्तित्व को मजबूती प्रदान करने के कारण पंचायतीराज को न सही दिशा मिल पा रही है और न संतोषजनक गति. उन्हें मालूम है, इस देश का नेता उन की बैसाखी के बिना नहीं चल सकता.



पंचायतीराज व्यवस्था में केवल कहने भर को जनता का शासन है.

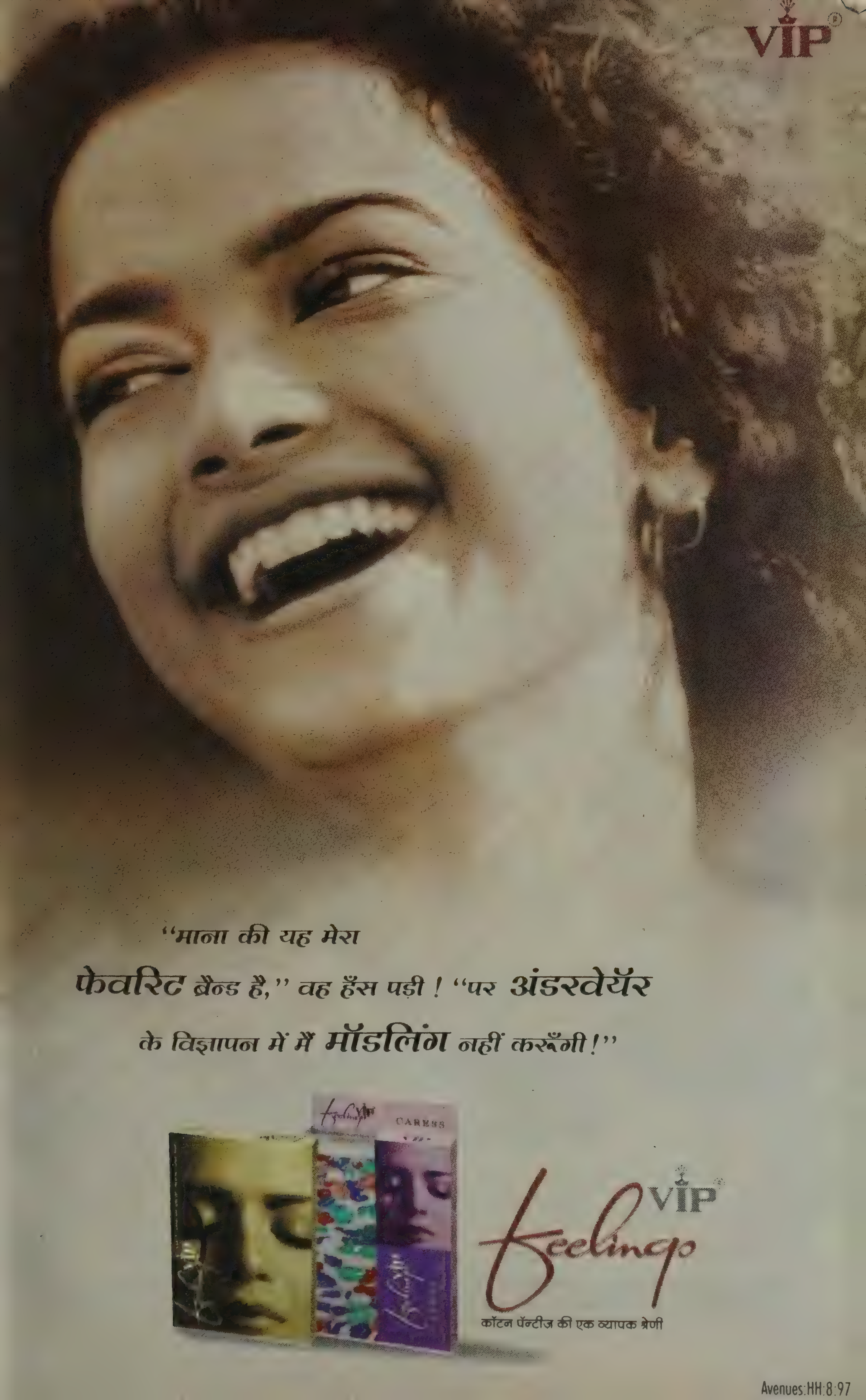
सत्ता के विकेंद्रीकरण में नौकरशाही एक बड़ा रोड़ा है. हमारा मध्य प्रदेश गांधी के सपनों का भारत बनाने के प्रयास में अग्रणी साबित हुआ. उस ने अन्य प्रांतों से पहले पंचायत व्यवस्था लागू कर वाहवाही लूट ली. लेकिन यह नहीं सोचा कि नौकरशाह रूपी कांटे हर कदम पर बिखरे हैं.

मध्य प्रदेश में सत्ता विकेंद्रीकरण के कदम तो बढ़ा लिए गए लेकिन इस सत्ता पर वे ही लोग काबिज हो गए जिन्हें शोषण करने की पहले से आदत रही है.

गांवों में आज भी शिक्षा का है. इसलिए ग्राम पंचायतों से ले कर पंचायत तक शोषक वर्ग का राज च है. कहीं बीड़ी सेठों का, कहीं मा का तो कहीं ठग ठेकेदारों का राज प रहा है. दूसरी तरफ नौकरशाह स्व राज को प्रश्रय नई व्यवस्था का करने पर तुले शासन की मंश त्रिस्तरीय प अध्यक्षों तक पहुं नहीं देते. वैसे अध्यक्ष जिलाधी कठपुतली बन गए हैं.

लोक स्वास्थ परिवार कल्याण के प्रमुख सचिव शरण शुक्ल जन सोच के धनी थे. उन्होंने अपने कार्य अनेक पत्रों के माध्यम से जनहित में म दिशानिर्देश दिए जो आम जनता के को कम करने में सहायक सिद्ध लेकिन पंचायतों की स्थापना के 2 सा भी स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य विभा कार्यों का क्रियान्वयन नहीं हो पा रह

इस बात की जीतीजागती मिस मध्य प्रदेश के जिला अस्पतालों में ला कल्याण समितियां. पंचायत स्थापना के प्रमुख सचिव ने मध्य प्रदेश के अस्पत प्रबंधन में सुधार के संदर्भ में पत्र लि उन्होंने प्रबंधन के प्रति क्षोभ व्यक्त कि और कहा था कि जिन संस्थानों से


VIP
"माना की यह मेरा
फेवरिट ब्रैन्ड है," वह हँस पड़ी ! "पर अंडरवेयर
के विज्ञापन में मैं मॉडलिंग नहीं करूँगी !"
CARESS
VIP
feelings
कॉटन पॅन्टीज़ की एक व्यापक श्रेणी
Avenues:HH:8:97

जनता जुड़ी हो, उन में विशेष रूप से त्वरित सुधार किया जाए. यह उल्लेख अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक 2181/17/1 म.प्र. शासन, भोपाल 12 अप्रैल, 94 में किया गया था.

कछुए की चाल चलते हुए इस दिशा में 2 साल बाद ऐसा लगा कि कुछ होगा. लेकिन खेद की बात है कि म.प्र. में अभी भी पूरे जिलों में रोगी कल्याण समितियां नहीं बनी हैं और जहां पर बनाई गई हैं वहां शासन और प्रमुख सचिव की मंशा के विपरीत कार्य हो रहा है.

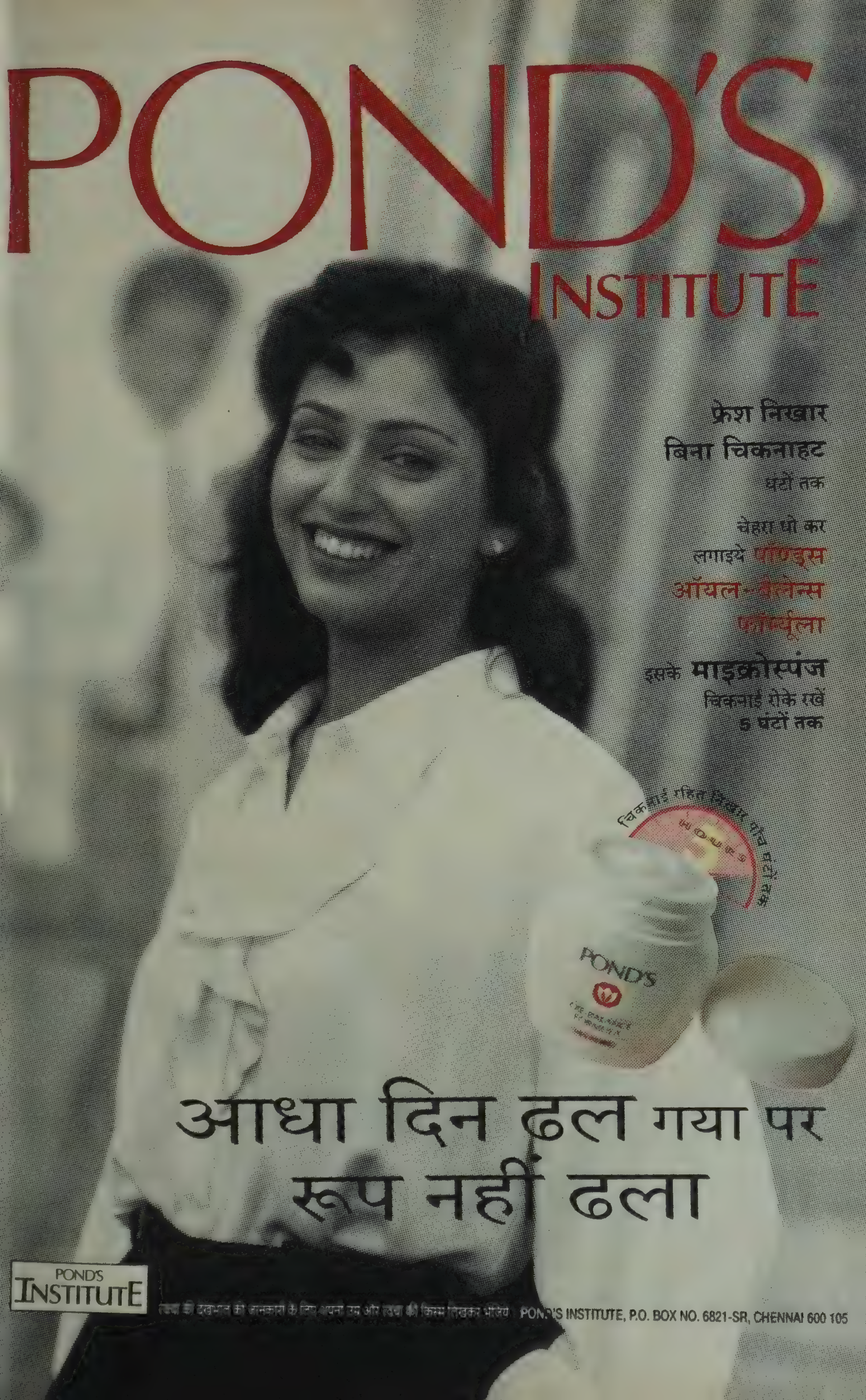
उन्होंने अस्पताल प्रबंधन के पत्र में लिखा है कि प्रत्येक जिले में रोगी कल्याण समितियां गठित करें, जिस से ग्रामीण भूमिहीन महिलाओं के लिए संचालित आयुष्मति योजना का क्रियान्वयन हो सके, साथ ही अन्य रोगियों की सहायता में भी समिति स्वैच्छिक दानराशि का उपयोग कर सकेगी. उल्लेखनीय है कि राज्य शासन की वित्तीय स्थिति के कारण सभी सुविधाओं के लिए धनराशि पर्याप्त नहीं होती. इसलिए दानदाताओं का संकोच मिटाने और जनसहयोग के माध्यम से रोगी कल्याण के लिए समिति बेहतर सुविधाएं दे सकेगी. साथ ही, भवन के रखरखाव, दवाइयों, उपकरणों एवं आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति में भी सहायता मिलती रहेगी.

लेकिन 20 जून, 96 को सागर जिले में गठित समिति सारे नियमकानूनों को ताक में रख कर जनता से खिलवाड़ कर रही है.

समिति ने विपरीत उद्देश्यों को
चिकित्सा सुविधा का व्यवसायीकर
दिया है जबकि प्रमुख सचिव की म
कि आम जनता को जन सहयोग
पहुंचाई जाए. आश्चर्य तो इस बात
कि जब डा. आलोक शुक्ल लोक
एवं परिवार कल्याण विभाग में उ
थे, तभी प्रमुख सचिव का पत्र जार
था. लेकिन जब वह स्वयं वर्तम
जिलाधीश हैं तो उस पल को बिस
खुलेआम लूट कर रहे हैं.

यहां आ कर पंचायती व्यवस
सपना धूलधूसरित होने लगता है.
सभापति स्वदेश जैन भी कम उम्र के
सेठ हैं, जिन्हें बचपन से ही शोषक
प्रतिनिधित्व मिला है. वह अपनी राज
अस्मिता बचाने, शहर से गांव की स
ले कर इस व्यवस्था में शोषितों का
करने में मशगूल हैं. बीड़ी सेठों का ग
के कारण 'सागर' में इन का बोलबा
जिस का नाजायज फायदा उठा
नौकरशाहों को कठपुतली बना दिय
है.

एक तरफ नौकरशाह अपनी अ
के लिए पंचायती व्यवस्था को कोस
दूसरी ओर पंचायतीराज वे
सिपहसालारों की बदौलत उन के
साकार हो रहे हैं. जिलाधीश सभापि
मार्गदर्शक (सचिव) होता है. यदि स
नाकारा हो तो शासन की मंशा से
नमकहरामी न करें.



POND'S
INSTITUTE
फ्रेश निखार
बिना चिकनाहट
घंटों तक
चेहरा धो कर
लगाइये
ऑयल
फॉर्मूला
इसके माइक्रोस्पंज
चिकनाई रोके रखें
5 घंटों तक
आधा दिन ढल गया पर
रूप नहीं ढला
POND'S
INSTITUTE
INSTITUTE, P.O. BOX NO. 6821-SR, CHENNAI 600 105

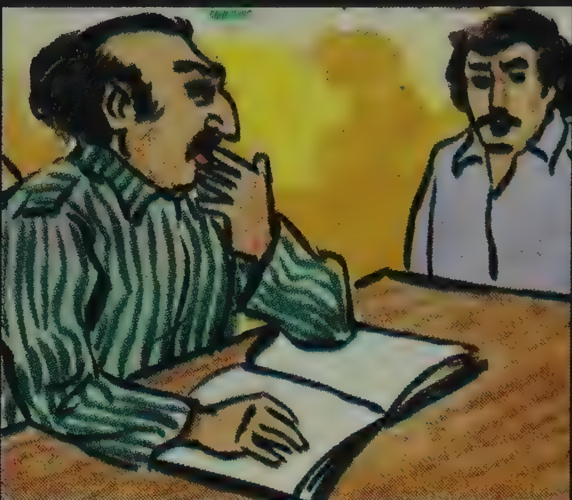
मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

अपनी शिकायतें निम्न पते पर भेजें : सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.



मुझे शिकायत है उन नौजवानों से
खुद तो नशा करते ही हैं, अपने दोस्तों
बच्चों को भी नशे की लत लगा कर
का एवं देश का भविष्य बिगाड़ते हैं.
–धीरेंद्र



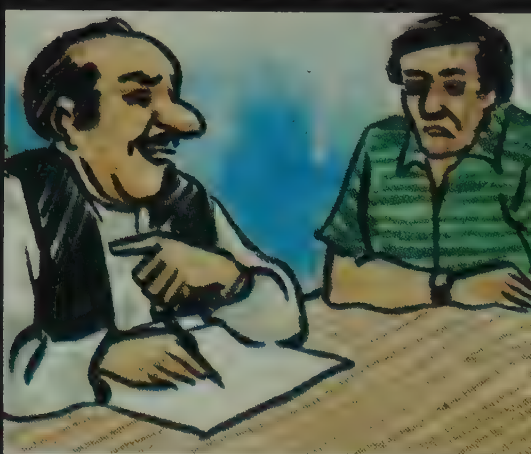
मुझे शिकायत है उन लोगों से जो मुंह से थूक लगा कर नोट गिनते हैं अथवा किताबों के पन्ने पलटते हैं. –मुक्ति भाटिया



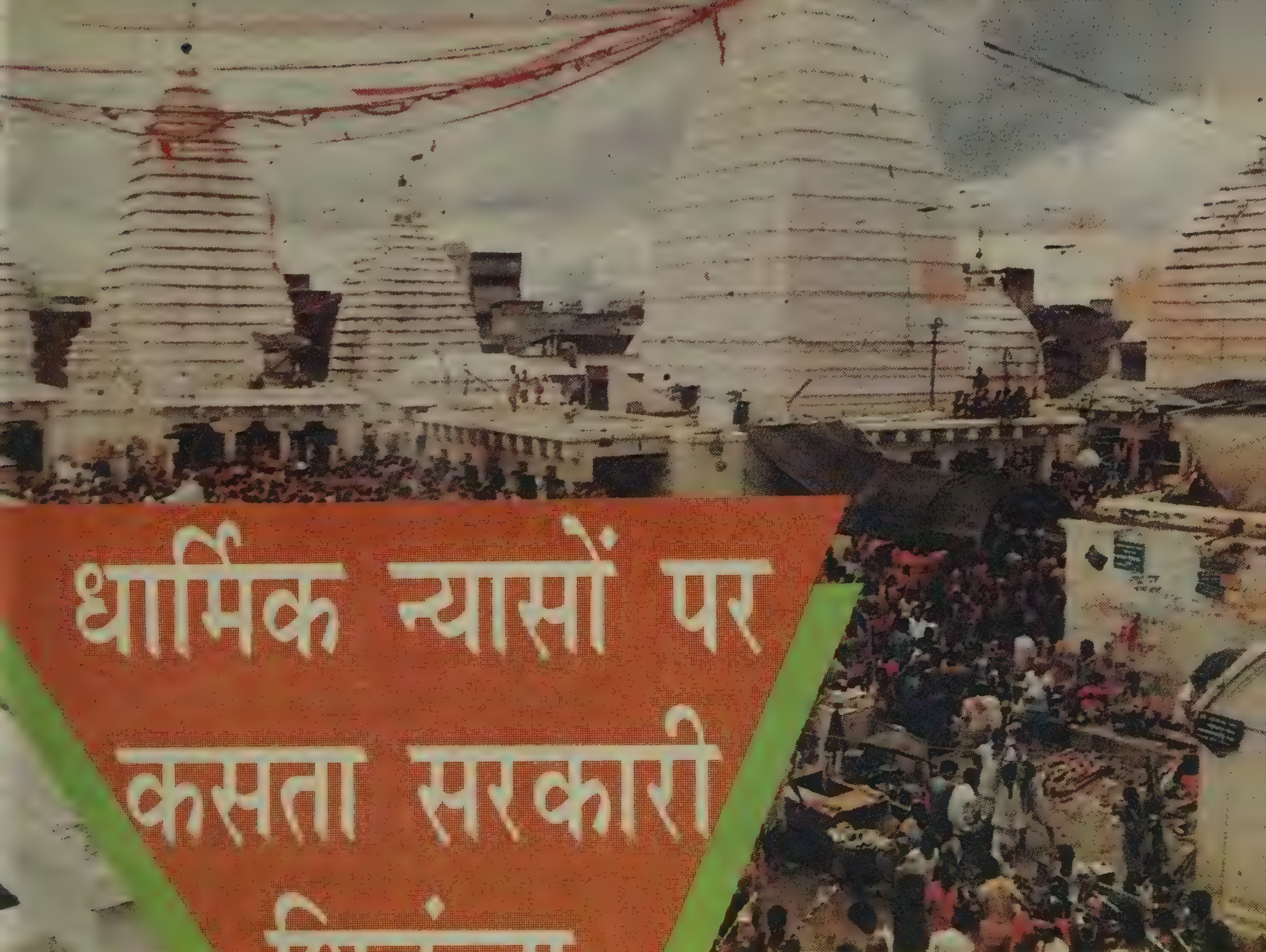
मुझे शिकायत है उन अधिकारियो
जो सरकारी फोन का अनावश्यक इस्तेम
करते हैं. –मंजुल श्रीवास्तव 'सं



मुझे शिकायत है उन अध्यापकों से जो विद्यार्थियों से अपने घर का काम करवाते हैं. –संजीव गोयल 'गुड्डू'



मुझे शिकायत है उन लोगों से
दूसरों के कामों में बेमतलब दखल देते
और उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक कोई कार्य नहीं क
देते. –अखिलेश अ



धार्मिक न्यासों पर कसता सरकारी शिकंजा

लेख ● प्रदीप कुमार झा

जमींदारी उन्मूलन के बाद बड़े जमीन मालिकों ने धर्म का सहारा ले कर हजारोंहजार एकड़ जमीन पर परोक्ष रूप से कब्जा बनाए रखा. हुआ यह कि मठमंदिरों के नाम ढेरों जमीनें कर दी गईं. इन में से कुछ का ही रजिस्ट्रेशन कराया गया, बाकी जमीनों को बिना रजिस्ट्रेशन के ही धार्मिक न्यास के नाम पर रखा गया. जिन बड़े लोगों ने ऐसे न्यास बनाए अथवा बनवाने में मदद की, उस न्यास पर उन्हीं जमीन मालिकों का पूरा प्रभाव रहा. जमीन से होने वाली आमदनी का एक हिस्सा यदि मंदिरमठ या अन्य पूजाघरों पर खर्च होता रहा तो उस आमदनी का एक बड़ा हिस्सा संबंधित जमीन मालिकों या न्यास पर दबदबा रखने वालों की जेब में जाता रहा.

कमोबेश यही स्थिति मुसलमानों और ईसाइयों के मामले में भी रही. जिन बड़े जमीन मालिकों की जमीनें हदबंदी कानून के तहत सरकार द्वारा छीनी जा रही थीं उन्होंने धर्म का सहारा लिया और अपने द्वारा कथित रूप से दान दी गई जमीन का परदे के पीछे से उपभोग करते रहे.

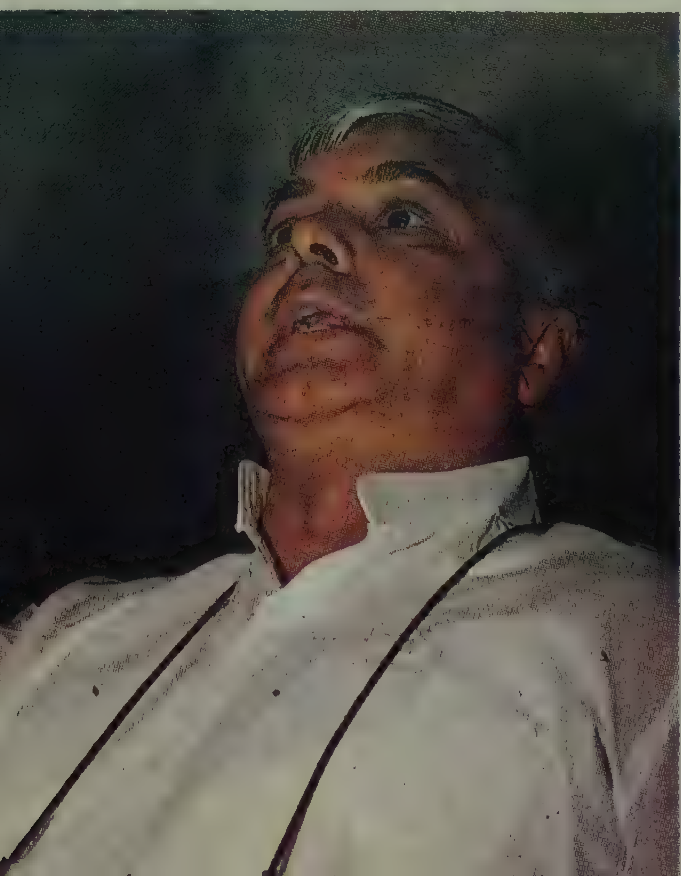
इस तरह धार्मिक न्यासों के पास काफी जमीनें हो गईं. न्यासों ने ऊपरी तौर पर तो अपने घोषित कार्यक्रमों में जमीन की उपज की आमदनी का एक बड़ा हिस्सा जनकल्याण पर खर्च करने की बात कही, पर हकीकत में ऐसा कम ही हुआ. धर्म के ठेकदारों ने मिलबैठ कर 'आमदनी' की खूब बंदरबांट की. चूंकि मामला धर्म का था, इसलिए विगत में किसी भी सरकार ने न्यास रूपी बर्रों के

बिहार में जमीन मालिक धार्मिक न्यासों को कथित रूप से अपन जमीन दान कर के सरकार की आंखों में धूल झोंकते रहे हैं. धर्म का मामला होने के कारण किसी सरकार की भी हिम्मत नहीं पड़ी इस में हाथ डालने की. लेकिन अब न्यासों की भूमि निर्धारण का अध्यादेश जारी कर इन पर सरकारी शिकंजा कस जा रहा है. परंतु यह कानून केवल गांवों के लिए ही क्यों?

छत्ते में हाथ डालने की कोशिश नहीं की.

लेकिन पिछले दिनों मुख्यमंत्री लालू प्रसाद ने इस मामले को गंभीरता से लिया. 8 सितंबर 1995 को राज्यपाल ने एक अध्यादेश को मंजूरी दे दी, जिस के तहत धार्मिक न्यास सिर्फ 'एक यूनिट' जमीन ही अपने पास रख पाएंगे. अध्यादेश के अनुसार, तमाम धार्मिक समुदाय के न्यास, जिन में हिंदू मठमंदिर, मुसलिम वक्फ बोर्ड, क्रिश्चियन मिशनरी के ट्रस्ट शामिल हैं, अब बिहार भूमि सुधार अधिनियम 1962 (अध्यादेश 1995) के तहत सिर्फ 'एक यूनिट' यानी 15 से 45 एकड़ तक जमीन ही अपने पास रख पाएंगे. उन न्यासों के पास बाकी जो भी जमीन बच जाएगी, उसे 'फाजिल जमीन' समझा जाएगा तथा ऐसी जमीन को सरकार अपने कब्जे में ले लेगी.

राज्यपाल द्वारा स्वीकृत अध्यादेश में



बिहार भूमि सुधार (अधिकतम सीमा निध एवं अधिशेष भूमि अर्जन) अधिनियम 19 धारा 29 में संशोधन कर दिया गया. 29 की उपधारा (2) के खंड (क) उपखंड (ii) द्वारा अब किसी भी धा संस्था को किसी प्रकार की कोई छूट मिलेगी. यह नियम बिहार में 9 सितंबर 19 से लागू हो गया है.

ध्यान रहे कि बिहार में नए हद कानून के तहत सिंचित एवं असिंचित ज के बीच भेद मान कर जमीन की एक यू को 15 एकड़ से ले कर 45 एकड़ तक गया है. इसलिए कौन सा धार्मिक न्यास यूनिट जमीन के तहत कितनी जमीन रखे इस का फैसला सिंचित क्षेत्र व असिंचित के हिसाब से किया जाएगा.

बिहार में हिंदू मठमंदिरों से सं रजिस्टर्ड धार्मिक न्यासों की संख्या क 5,700 है, जबकि मुसलिम वक्फ बोर्ड जुड़ी 1,700 संस्थाएं और क्रिश्चियन 347 हैं. राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री सिंह नामधारी के अनुसार सरकार को बात की पक्की सूचना है कि करीब 4, ऐसे न्यास हैं जो पंजीकृत नहीं हैं. ये हिंदू न्यास हैं. मंत्री के अनुसार तमाम धा न्यासों के पास कुल मिला कर अनुमा 67 हजार एकड़ जमीन है. जहां तक अध्यादेश के मुताबिक 'फाजिल जमीन' सवाल है तो इस बात की पक्की सू समीक्षा के बाद ही दी जा सकती है.

मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव : न्यास रूपी बरों के छत्ते में हाथ डालने की कोशिश.

अध्यादेश जारी करते वक्त इस बात की पक्की व्यवस्था की गई है कि किसी भी परिस्थिति में न्यासों से जुड़े लोग 'फाजिल जमीन' खोज निकालने में अड़चन पैदा नहीं कर सकें. इसलिए भूमि सुधार अधिनियम की धारा 37 को समाप्त कर दिया गया है. इस धारा में प्रावधान था कि हदबंदी के अस्पष्ट मामलों में जिला अधिकारी सुनवाई और फैसला दे सकते थे. अधिनियम की धारा 45 (बी) में भी संशोधन कर दिया गया है जिस के तहत जमीन हदबंदी संबंधी निबटाए गए मामले की फिर से सुनवाई करने के जिला अधिकारी के अधिकार को समाप्त कर दिया गया है. पहले ऐसा था कि सरकार और समाहर्ता दोनों जमीन के निबटाए गए मामले की फिर से सुनवाई कर सकते थे, लेकिन अब यह अधिकार सिर्फ राज्य सरकार के पास होगा या फिर राज्य सरकार द्वारा प्राधिकृत समाहर्ता के पास. सरकार की यह सोच इस बात पर आधारित है कि फाजिल जमीन को खोजने के रास्ते में जो भी संभावित बाधाएं हैं, उन्हें दूर किया जाए.

लेकिन धार्मिक न्यासों के बारे में लिया गया यह फैसला अपनेआप में पूरा नहीं है. क्योंकि यह अध्यादेश सिर्फ ग्रामीण सीमाओं की जमीन पर ही लागू होगा. शहरी भूमि इस अध्यादेश के दायरे में नहीं आएगी, भले ही वह शहरी जमीन किसी भी धार्मिक न्यास के अधीन क्यों न हो.

उल्लेखनीय है कि शहरी जमीन हदबंदी कानून केंद्र सरकार के अधीन है तथा बिहार में केंद्रीय शहरी जमीन हदबंदी कानून सिर्फ 4 शहरों यानी पटना, रांची, जमशेदपुर तथा धनबाद में ही लागू है. इन 4 शहरों को छोड़ कर धार्मिक न्यासों के अधीन आने वाली शहरी जमीन पर न तो केंद्र का शहरी जमीनी हदबंदी कानून लागू है और न ही बिहार सरकार का ही कोई कानून. तुलना कर के देखा जाए तो गांवों में न्यासों की जमीन की अपेक्षा शहरों में न्यासों की जमीन की कीमत कहीं ज्यादा है और तथाकथित 'बाबाओं' की इस से चांदी बन रही है. ●

फ्लाप रहीं क्रांतिकारी नीतियां व विशेष पैके

लेख • कपिल अग्रवाल

बजट में मिली तमाम रिआयतों के बावजूद शेयर बाजारों की बेढंगी चाल बरकरार है. सूचकांक एक दिन 60-70 अंक चढ़ता है और फिर अगले ही दिन 50-60 अंक गिर जाता है. यानी जो हाल बजट से पूर्व था वही अब भी है. इस के बावजूद बेमतलब और रिआयतें बांट दी गई हैं. हालत यह है कि शेयर बाजारों पर सरकार व सेबी की सारी की सारी 'क्रांतिकारी नीतियां व विशेष पैकेज' फ्लाप हो चुके हैं पर राग अब भी पुराना अलापा जा रहा है. एक के बाद एक समितियां बनाई जा रही हैं तथा सुझाव व सलाहें ली जा रही हैं. एक समिति की रपट आती नहीं दूसरी समिति बना दी जाती है. बजट को पेश हुए एक महीना भी नहीं बीता, सेबी ने कुछ और रिआयतें शेयर बाजारों को दे दीं. एक समिति ने अपने क्रांतिकारी बहुमूल्य सुझाव सेबी को सौंपे और उसी समय 2 और विशेषज्ञ समितियों का गठन कर दिया गया. मजे की बात यह कि जिस दिन ऐसा हुआ उसी दिन सारे बाजार लुढ़क गए.

पिछले दिनों संपन्न हुई एक अति महत्त्वपूर्ण बैठक में सेबी ने सुधारों व रिआयतों का एक और दौर पूरा किया. मौजूदा बदला प्रणाली में बदलाव की मांग को मंजूरी देते हुए एक कार्यदल के गठन की घोषणा की गई. स्टाक आप्शन की समीक्षा के लिए एक अलग से कार्यदल गठित करने का फैसला लिया गया व पूंजी बाजार में उतरने वाली कंपनियों पर लागू होने वाले 3 साल के लाभांश रिकार्ड संबंधी नियम को और परिष्कृत किया गया. इस के अलावा प्रवर्तकों को 'अंडर सब्सक्राइब्ड' हिस्से में निवेश की इजाजत दे दी गई. नए इश्यू की बाबत सेबी कार्ड की अवधि बढ़ा कर एक साल कर दी गई तथा राइट इश्युओं में प्रवर्तकों पर से लाक इन पीरियड समाप्त कर दिया गया.

बदला प्रणाली पर गत 4 साल में आधा दर्जन समितियां बन चुकी हैं, नतीजा आज शून्य है. सब से पहले बदला प्रणाली उपयोगिता की बाबत समिति बनी, फिर स करने या न करने पर बनी. फिर नई व संश प्रणालियों पर समितियां बनीं और अब संश की बाबत फिर एक समिति गठित कर दी जो कि अंततः घूमफिर कर पुरानी प्रणाली ही स्थापित करेगी.

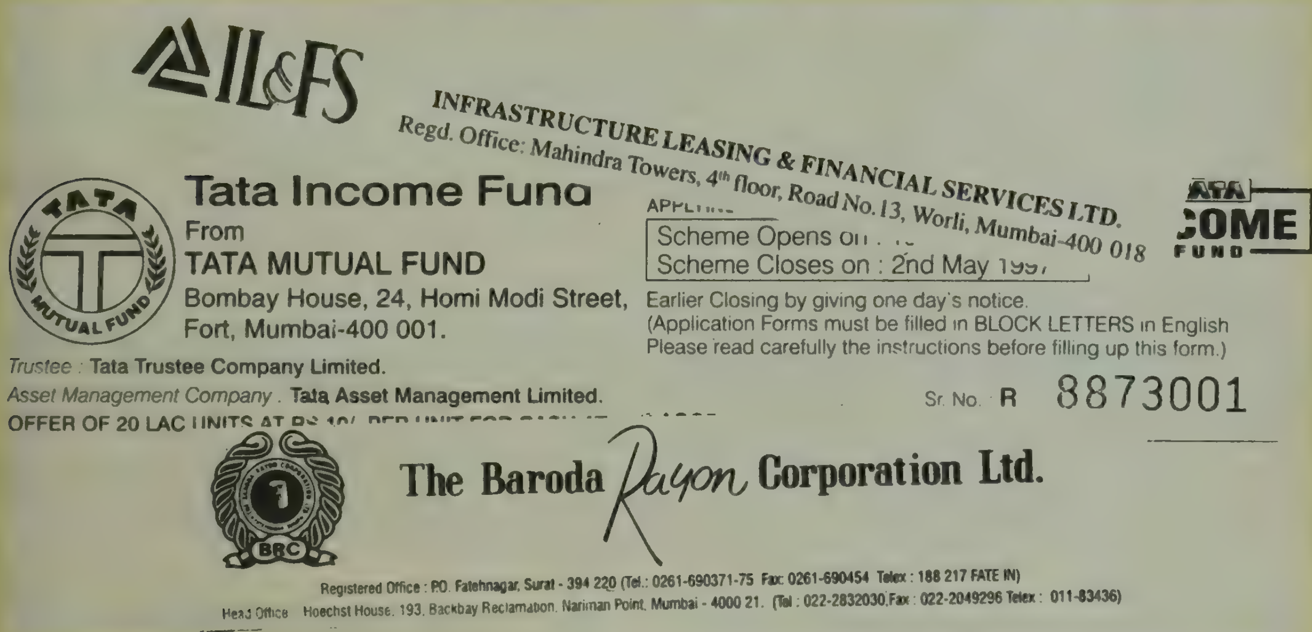
प्रवर्तकों के लिए अब लाक इन पी के कोई मायने नहीं रह गए हैं. पहले ज पूंजी बाजार से लाभ कमाने को तमाम तर हथकंडे अपनाया करते थे वहीं अब हर तर काम वे कर सकते हैं. निवेशक इस से ज्यादा व भारी नुकसान उठाएंगे. इसी प्र प्रवर्तक सीधे अपने ही इश्यू में निवेश क अब बड़े पैमाने पर काला धन सफेद कर स अंडर सब्सक्राइब्ड हिस्से में सीधे निवेश क वे जनता से पैसा मांगने की मशक्कत क करेंगे. खुद पैसा लगा कर दिखाया यही ज कि जनता से सबस्क्रिप्शन लिया गया है.

सेबी के इस नए रद्दोबदल का निष्कर्ष है कि वह अभी भी प्रवर्तकों को मुख्य निवेशकों को गौण मानता है. पिछले 5 साल कई दर्जन बैठकें सेबी कर चुका है पर निवे की लाखों शिकायतों व कंपनियों की धोख की बाबत एक बार भी चर्चा नहीं की गई. पूरे भारत में एक भी कंपनी ऐसी नहीं है के निवेशक परेशान न हों या न हुए हों. दरअ सेबी इन सब मुद्दों को छोटेमोटे व महत्त्वहीन कर टालता है.

लगता है, पूंजी बाजार व इश्यू की ब सरकार को भी सेबी की भांति समझ नह पहले एक निर्णय ले लिया जाता है, फिर

कारण बता कर रद्द कर दिया जाता है और अंत में वही पुराना स्तर ले कर खुशियां मनाई जाती हैं. आज सरकार पूर्व की अपेक्षा कम दाम पर विदेश संचार निगम लि. के शेयर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेच कर प्रसन्न है. तय लक्ष्य 850 से 950 रुपए प्रति शेयर के मुकाबले 1,000 रुपए का एक शेयर बेचा गया है. मई 1994 में एक शेयर के 1,150 रुपए मिल रहे थे पर इश्यू रहस्यमय अंदाज में घाटे में करार दे कर रद्द कर दिया गया था. इस हिसाब से सरकार को कई अरब का चूना लगा है. यह बिलकुल उलटी व बेसिरपैर की नीति का परिणाम है.

इस बार के इश्युओं में कई राइट इश्यू हैं. अभी पब्लिक इश्युओं का बाजार ठंडा पड़ा हुआ है. प्रवर्तक प्राइवेट प्लेसमेंट व राइट से ही काम चला रहे हैं. राइट में भी बारबार बंदी तारीखें बढ़ानी पड़ रही हैं. लगभग हर राइट में प्रीमियम रखा गया है पर हालत यह है कि बाजार में वही शेयर उस से कम या समान भाव पर आराम से उपलब्ध है. दो नए म्यूचुअल फंड भी पेश किए गए हैं. टाटा फंड में थोड़ाबहुत निवेश किया भी जा सकता है पर विदेशी बैनर का दूसरा फंड निवेश योग्य नहीं है. पहले भी एक बड़ा विदेशी नाम भारतीय निवेशकों को लूट चुका है.



बड़ौदा रेयन कारपोरेशन लि.

गत 2 सालों से हानि उठा रही यह कंपनी अब अपने विस्तार व आधुनिकीकरण में लगी हुई है. इस के तहत पालिस्टर पी ओ वाई क्षमता 10,777 टी पी ए से बढ़ा कर 15,000 टी पी ए की जाएगी. कुल प्रोजेक्ट लागत 103.17 करोड़ रुपए आंकी गई है. वित्त पोषण के लिए 23.80 करोड़ रु. राइट इश्यू के माध्यम से, 20 करोड़ वित्तीय संस्थानों से, 16 करोड़ लीज फाइनेंसिंग से, 7 करोड़ आंतरिक स्रोतों से तथा 35 करोड़ की संपत्तियों की बिक्री का सहारा लिया गया है. अब तक कुल प्रोजेक्ट पर 78 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं.

राइट इश्यू पर 5 रु. प्रीमियम व 1 : 2 अनुपात रखा गया है. करीबकरीब 15 रु. का यही भाव बाजार में भी है. एक समय कंपनी का शेयर 320 रुपए तक पहुंच गया था पर निरंतर खराब हालत ने भाव गिरा दिए. इस के कई कारण हैं. कंपनी का प्रोजेक्ट करीबकरीब साल भर से भी ज्यादा लेट है. इस से लागत में कम से कम 9-10 करोड़ रु. की वृद्धि हुई है. विभिन्न कर व तमाम संदिग्ध दायित्व की राशि 5 करोड़ से ज्यादा है. 1991-92 में कंपनी ने करीब 17 करोड़ का रिकार्ड घाटा उठाया और 1995-96 में 8 करोड़ का घाटा उठाया गया.

कंपनी में सब से ज्यादा खलने वाला तथ्य यह है कि इस ने न तो ऋणपत्रों की परिपक्वता राशि चुकाई है और न ही विभिन्न संस्थानों को उन के ब्याज आदि की 38 करोड़ की परिपक्वता राशि चुकाई गई है. करीब 19 करोड़ चुकाने की बाबत कंपनी को एक अन्य कंपनी का अलग से नोटिस भी मिल चुका है. कंपनी को पी एन बी एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. तथा कैनबैंक फाइनेंशियल सर्विसेज लि. से ऋणपत्र भुगतान की बाबत नोटिस भी मिल चुका है.

कंपनी के खिलाफ निवेशकों की जबरदस्त शिकायतें हैं. करीब 55 फीसदी निवेशक ऐसे हैं

कंपनी का नाम	वर्ष	बिक्री/आय (लाख रु. में)	शुद्ध लाभ/हानि (लाख रु. में)	लाभांश (%)	ई.पी.एस. (रु.)	शेयर मूल्य (रु.)	प्रीमियम (रु.)	इश्यू खुलने/बंद होने की तिथियां	बाज मूल् ऊंचा/नी
बड़ौदा रेयन कारपोरेशन लि. (राइट, 1-2 अनुपात)	94	39503	3123	–	9.50	10.00	5.00	14 फरवरी/ 12 अप्रैल	–
	95	39612	692	–	2.10				
	96	46444	-795	–	–				320.00 1
टाटा इनकम फंड (म्यूचुअल फंड)	–	–	–	–	–	10.00	–	19 मार्च/2मई	सूचीबद्ध
पायनियर एलाय कास्टिंग लि. (राइट, 3-1 अनुपात)	96	2043	168	–	–	10.00	–	19 मार्च/ 16 अप्रैल	
	96 (6 माह)	1286	65.66	–	–				70.15 3
इस्पात इंडस्ट्रीज लि. (राइट, 1-2 अनुपात, ऋणपत्र)	96	142498	9020	–	5.64	100.00	–	अप्रैल/मई	26.00 1
	96 (6 माह)	71491	5679	–	3.55				
आई.एल. एंड एफ.एस. (एफ.डी.)	94	–	2451.81	18	–	5000	–	ओपन एंडेड	लागू
	95	–	3968.18	12	–				
	96	–	4277.68	12	–				
डी.एस.पी. मेरिल लिंच फंड	–	–	–	–	–	10.00	–	7/15 अप्रैल	सूचीबद्ध
अलफलाह ब्लोसम्स लि.	96	2.62	0.80	5	0.51	10.00	–	7/17 अप्रैल	पहला
	96 (6½ माह)	4.46	2.73	–	0.12				

जिन को इस कंपनी में किए गए निवेश पर पर्याप्त या संतोषजनक रिटर्न नहीं मिला. निवेशकों की गंभीर स्थिति को देखते हुए ही प्रीमियम कम रखा गया है तथा इस इश्यू को 1 बार स्थगित किया गया और 2 बार बंदी तारीख खिसकाई गई है.

टाटा इनकम फंड

टाटा म्यूचुअल फंड ने लगभग हर वर्ग को ध्यान में रखते हुए दो स्कीमें बाजार में पेश की हैं. इस के तहत प्रति यूनिट मूल्य 10 रुपए रखा गया है तथा कुल 2 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखा गया है. स्कीमों में 2 आप्शन रखे गए हैं. आप्शन 'ए' के तहत रेगूलर इनकम आप्शन है जिस में 15 फीसदी ब्याज दर रखी गई है. एप्रीसिएशन आप्शन के तहत पूंजी संवर्द्धन आय रखी गई है. हर आप्शन में 3 योजनाएं हैं. योजना 'एक' में कोई भी लाक इन पीरियड नह योजना 'दो' में 3 साल का लाक इन पी है. योजना 'तीन' में 7 साल का लाक इन पी रखा गया है.

विश्वसनीयता की दृष्टि से फंड f योग्य है. रेगूलर इनकम आप्शन के 'सेफ्टीनेट' सुविधा भी रखी गई है. इस में वित्तीय वर्ष के लिए 15 फीसदी के रिटन गारंटी दी गई है.

पायनियर एलाय कास्टिंग लि.

मद्रास की इस कंपनी की स्थापना ज 1976 में की गई थी. कंपनी ग्रेफाइट, अ व ग्रे आयरन कास्टिंग आदि बनाती है. व आंध्र प्रदेश की इस की तिरुपति यूनिट की 8 9,000 एमटीपीए है. अब मद्रास के f

11,000 एमटीपीए क्षमता की नई यूनिट लगाई जा रही है. कुल लागत 12 करोड़ रुपए है जिस में से आई डी बी आई ने 7 करोड़ का कर्जा दिया है. कंपनी ने पूंजी बाजार की खराब स्थिति को देखते हुए 3.37 करोड़ के समभाव पर राइट इश्यू निकाला है. एक शेयर पर 3 शेयर का अनुपात रखा गया है.

कंपनी के प्रवर्तकों को अपने धंधे का गहरा अनुभव है. प्रवर्तकों से संबद्ध 5 अन्य कंपनियां काटन व ब्लेंडेड यार्न, एक्वाकलचर सिविल एंड स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग, रियल एस्टेट आदि में अच्छा कारोबार कर रही हैं.

कंपनी के ग्राहकों में महिंद्रा एंड महिंद्रा, आइशर ट्रैक्टर, अशोक लीलैंड व टैल्को शामिल हैं. निर्यात क्षेत्र में भी कंपनी की भागीदारी बहुत अच्छी है.

कंपनी को गत 1 साल में कीमतों आदि का बहुत फायदा हुआ है. निर्यात के बदले कुछ आयात भी कंपनी बगैर शुल्क के कर लेती है. कच्चे माल की कीमतें गिरने से लागत में भारी कटौती हुई है. इसीलिए कारोबार के लिहाज से भी कंपनी ठीकठाक चल रही है. वर्ष 1995-96 में 20.43 करोड़ की बिक्री पर 1.68 करोड़ रु. के सकल लाभ प्राप्त किए गए हैं.

कंपनी के नए प्लांट में व्यावसायिक उत्पादन जून 1997 तक शुरू हो जाने की उम्मीद है. कंपनी के शेयर का मूल्य इन दिनों 30 रु. के आसपास घूम रहा है. समभाव पर निवेश का यह अच्छा प्रस्ताव है.

इस्पात इंडस्ट्रीज लि.

इस कंपनी का पूर्व नाम निप्पन डेनरो इस्पात था. कंपनी एम.एल. मित्तल वाले इस्पात समूह से संबद्ध है. यह आयरन, स्टील व अन्य संबंधित उत्पाद बनाने में संलग्न है. कलकत्ता की यह कंपनी अपने नागपुर स्थित संयंत्र का आधुनिकीकरण व महाराष्ट्र के डोलवी क्षेत्र में हाट रोल्ड स्टील कायल संयंत्र स्थापित कर रही है. कुल प्रोजेक्ट लागत 4,792 करोड़ रुपए है. कंपनी राइट आधार पर 100 रुपए फेसवैल्यू के पूर्णतः परिवर्तनीय ऋणपत्र 1:2 अनुपात में जारी कर रही है. इस इश्यू से करीब 800 करोड़ एकत्र किए जाएंगे.

कंपनी ने ऋणपत्रों की बाबत दो विकल्प रखे हैं. विकल्प 'एक' में 17 फीसदी की रिटर्न दर रखी गई है. विकल्प में 15 से 30 रुपए की कीमत में ऋणपत्र का एक भाग कई शेयरों में 1½ साल के भीतर परिवर्तित हो जाएगा. विकल्प 'दो' में 17 व 10 फीसदी की ब्याज दर रखी गई है. 1½ साल बाद इसे भी कई शेयरों में परिवर्तित कर दिया जाएगा. निवेशकों को ब्याज की राशि शेयरों में परिवर्तित करने की छूट है. इस के अलावा इस में 3 साल बाद पैसा वापस करने का प्रावधान भी रखा गया है.

कंपनी के सभी प्रोजेक्टों में व्यावसायिक उत्पादन 2 साल के भीतर शुरू हो जाएगा. कुल उत्पादन का आधा भाग निर्यात किया जाएगा. इस बाबत सिंगापुर व जापान की कंपनियों से करार किया गया है.

कारोबार के लिहाज से कंपनी ठीकठाक है. वर्ष 1995-96 में 1366.34 करोड़ रुपए की बिक्री पर 100.53 करोड़ के सकल लाभ अर्जित किए गए हैं.

वर्ष 1996-97 की पहली छमाही में 712.62 करोड़ की बिक्री पर 56.79 करोड़ के सकल लाभ अर्जित किए गए हैं.

कंपनी के शेयर का बाजार भाव 15 रुपए के आसपास घूम रहा है. कंपनी के आफर मूल्य व बाजार मूल्य में करीबकरीब दोगुने का अंतर है. कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि 3-4 साल बाद भावों की क्या स्थिति रहेगी. निवेश में जोखिम ज्यादा व रिटर्न मध्यम है.

आई.एल. एंड एफ.एस.

इस कंपनी का प्रवर्तन सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, यू.टी.आई. व एच.डी.एफ.सी. ने सितंबर 1987 में किया था. कंपनी ढांचागत परियोजनाओं, सिक्योरिटीज मैनेजमेंट, वेंचुर कैपिटल आदि क्षेत्र में लगी हुई है. कंपनी ने 2 तरह की फिक्स्ड डिपाजिट स्कीमें पेश की हैं. फिक्स्ड यानी निश्चित आय के तहत 16 से 16.50 फीसदी ब्याज दर रखी गई है. न्यूनतम जमाराशि 5,000 रु. है. कम से कम 380 दिन की जमा पर 16 फीसदी की ब्याज दर रखी गई है.

इसी प्रकार क्यूमुलेटिव स्कीम के तहत 4½ साल में पैसा दोगुना हो जाने का प्रावधान रखा गया है. यानी पूरे 5 साल में 5,000 रु. बढ़ कर 11,345 रु. हो जाएंगे. रेटिंग एजेंसी केयर ने इसे 'ए ए ए' रेटिंग दी है. इस का मतलब पर्याप्त सुरक्षा व भुगतान से है. कंपनी का दावा है कि वह ब्याज के अग्रिम चैक देगी.

कारोबार के लिहाज से कंपनी मध्यम है तथा बकाया वसूलने के लिए उसे कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है. कंपनी का अभी भी कई बड़ी कंपनियों पर करोड़ों का बकाया है. हाल के वर्षों में कंपनी पर ढांचागत परियोजनाओं की बाबत फाइनेंसिंग का दबाव बढ़ा है जिस से इस की सकल लाभप्रदता घटी है. पर इस के बावजूद कंपनी की साख अच्छी व मजबूत है.

इस तरह की कंपनियों में हलका निवेश किया जा सकता है. यह कंपनी ब्याज व मूलधन चुकाने की बाबत विश्वसनीय है.

डी.एस.पी. मेरिल लिंच फंड

डी.एस.पी. मेरिल लिंच म्यूचुअल फंड ने 2 ओपन एंडेड म्यूचुअल फंड स्कीमें–डी.एस.पी. मेरिल लिंच बांड फंड व डी.एस.पी. मेरिल लिंच इक्विटी फंड जारी की हैं. दोनों ही स्कीमों में न्यूनतम 5,000 रुपए का निवेश है.

बांड फंड में दो विकल्प हैं. पूंजी संवर्द्धन के साथ अभिवृद्धि तथा लाभांश परक नियमित आय. दोनों में ही करीबकरीब 15-16 फीसदी कर रिटर्न है और एन.ए.वी. की सुविधा है. स्कीमों की लक्ष्यराशि न्यूनतम 15 करोड़ रु. रखी गई है. स्कीम से प्राप्त कुल राशि का 75 फीसदी ऋण प्रतिभूतियों में लगाया जाएगा. इस के बाद 10 फीसदी हिस्सा घरेलू इक्विटी में तथा 15 फीसदी मुद्रा बाजार की प्रतिभूतियों में विनियोजित किया जाएगा. इस लिहाज से इस में जोखिम कम है.

इक्विटी फंड में न्यूनतम लक्ष्य राशि 5 करोड़ रुपए रखी गई है. इस में लगभग सभी को आवंटन दिया जाएगा. फंड की 90 फीसदी राशि इक्विटी में निवेश की जाएगी और इ
भारी जोखिम रहेगा. दोनों फंड एन ए वी आध
हैं.

निवेश की दृष्टि से दोनों ही फंडों में
खास आकर्षण नहीं है. इस तरह की कई
आजकल चल रही हैं और 1-2 को छोड़
सभी की एन.ए.वी. बहुत खराब स्थिति
निवेशकों को विदेशी नाम के लालच में
पड़ना चाहिए. मोरगन स्टैनले के फंड का
सब को मालूम ही है. इस की एन ए वी
रुपए यानी 10 रुपए से भी नीचे चल रह
इस के लाखों निवेशक आज रो रहे हैं.
लिंच बैनर तो निसंदेह बहुत ऊंचा है पर भा
परिस्थितियों में सफल हो पाएगा इस में संदे

अल फलाह ब्लोसम्स लि.

नई दिल्ली की इस कंपनी का प्र
जावेद अहमद सिद्दिकी ने अक्तूबर 1995 में
था. प्रवर्तक मुजफ्फरनगर जिले के कांडला
में कट फ्लावर, ग्लेडियोलस फ्लावर आदि
संयंत्र लगा रहे हैं. कुल प्रोजेक्ट लागत 962
रुपए है. प्रवर्तक स्वयं 2.50 करोड़ लगाने
दावा कर रहे हैं. जनता से भी इतनी ही
समभाव पर एकत्र की जा रही है. परियोजन
60 फीसदी राशि प्लांट व मशीनरी तथा प्ल
सामग्री पर खर्च की जा रही है.

अनुभवहीन प्रवर्तकों का यह पहला
इश्यू व प्रोजेक्ट है. प्रवर्तकों की योग्यता
शैक्षिक व व्यावहारिक ज्ञान इस लाइन में बिल
शून्य है, तब भी उन के दावे बहुत ऊंचे
करीब 60 फीसदी राशि खर्च कर चुके है
व्यावसायिक उत्पादन कब शुरू होगा कुछ
नहीं. प्रवर्तकों के नाम अभी न तो आवा
जमीन की रजिस्ट्री हुई है और न ही बिल्डिंग
वैधानिक रूप ले पाया है. पैसे का पर्याप्त बंदो
होते हुए भी प्रोजेक्ट 4-5 माह लेट क्यों है
बात समझ के बाहर है.

कुछ मुख्य प्लांट व मशीनरी का अ
अभी तक नहीं दिया गया है. कार्यशील पूंजी
व्यवस्था भी प्रवर्तक अभी तक नहीं कर पा
यानी कुल लागत का 75 फीसदी इंतजाम
के बावजूद अभी प्रोजेक्ट कागजों तक ही सी
है. प्रोजेक्ट पर गंभीरता से काम करने के ब
प्रवर्तक पिछले 1 साल में अन्य कंपनियां स्थ
करने में लगे रहे और एक के बाद एक
कंपनियां बना डालीं.

धार्मिक कर्मकांडों में फंसे दिग्विजय सिंह



लेख • अवध श्रीवास्तव

शिवरात्रि के पर्व पर अखबारों में और खबरों के साथ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का दौरा कार्यक्रम भी छपा था. इस शासकीय विज्ञप्ति के अनुसार शिवरात्रि दिनांक 7 मार्च को दिग्विजय सिंह शासकीय हेलिकाप्टर से मध्य प्रदेश के 8 मंदिरों पर अभिषेक व दर्शन करने के लिए गए. इन कार्यक्रमों का पूरा खर्च मध्य प्रदेश शासन के खजाने से लिया गया. इसी तारीख के अखबारों में एक खबर और थी कि प्रदेश के सरगुजा क्षेत्र में भूख से मरते आदिवासी अभी भी बंदर मार कर खाने के लिए मजबूर हैं. इन दो विरोधाभासी खबरों के बीच ही मध्य प्रदेश की पूरी शासन-व्यवस्था चल रही है.

दिग्विजय सिंह एक हद तक धर्मांध मुख्यमंत्री हैं. मध्य प्रदेश का एक भी ऐसा चर्चित मंदिर व मठ नहीं है जहां उन्होंने अनुष्ठान न कराया हो. इस समय भी दिग्विजय सिंह की ओर से राजनीतिक सफलता व स्थिरता के लिए मध्य प्रदेश के 8 तांत्रिक अनुष्ठान कथित सिद्धपीठों व

बाबाओं के यहां करवाए जा रहे हैं. 7 मार्च को प्रातः भोपाल से हेलिकाप्टर द्वारा मुख्यमंत्री मुरैना जिला स्थित शनिदेव के प्रसिद्ध मंदिर 'शनीचरा' गए. वहीं से वे पवैया के प्रसिद्ध मंदिर के दर्शन कर के राजकीय विमान से ही इंदौर के नजदीक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर शिवलिंग के दर्शन करने व अभिषेक करने गए. वहां से खंडवा के पास नवचंडी के मंदिर गए.

इस पूरी यात्रा को एक साधारण यात्रा कह कर टाला नहीं जा सकता. यह देश के सब से बड़े प्रदेश के जिम्मेदार मुख्यमंत्री की व्यक्तिगत स्वार्थसाधन के लिए निजी धार्मिक कार्यों हेतु सरकारी यात्रा थी. इस यात्रा से सरगुजा के भूखे मर रहे आदिवासियों के लिए क्या मिला या अस्पतालों की सरकारी अव्यवस्था का आलम इन अभिषेकों से कितना सुधर जाएगा, यह चर्चा का विषय हो सकता है.

अजमेर के दरगाह शरीफ में चादर चढ़ाने, गुना के पास प्रसिद्ध मंदिर में भंडारा कराने वाले मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के सरकारी आवास पर एक शंकराचार्य लगभग प्रतिमाह सरकारी मेहमान होते हैं. उन्हें मुख्यमंत्री पद पर स्थिर बने रहने का आशीर्वाद देते हैं.

दिग्गी राजा मध्य प्रदेश का महत्त्वपूर्ण सरकारी कामकाज छोड़ कर तांत्रिकों व सिद्धसाधुओं का चरणचुंबन कर के सरकार चला रहे हों तो वहां बिजली, पानी और अन्न के संकट से 'त्राहित्राहि' तो होनी ही है.

किसी भी नेता का आस्थावान होना या धार्मिक होना आपत्तिजनक नहीं चाहिए. किंतु किसी जिम्मेदार पद पर व्यक्ति का धर्मांध होना व अंधी आस्थ चक्कर में सरकारी कामकाज छोड़ना का विषय है.

मध्य प्रदेश की चर्चित महिला सरला मिश्रा की मृत्यु संदिग्ध परिस्थि में आग से जल कर हो गई. इस हत्या आत्महत्या से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षतः मुख्य दिग्गी राजा का नाम जोड़ा जाने लगा इस आकस्मिक हमले से घबरा कर 15-16 फरवरी को बजाय इस के कि स मिश्रा प्रकरण में अपना व अपनी सर का बचाव करते एक तांत्रिक अनुष्ठान व्यस्त हो गए. इस प्रतिनिधि ने जब मुख्य के सूचना प्रकाशन अधिकारी से बार फोन से संपर्क किया व मध्य प्रदेश श के सफल 3 साल मुद्दे पर चर्चा करनी च तो एक सूचना अधिकारी ने अत्यंत त स्वरों में कहा, "साहब, वह तो अज्ञातव पर हैं."

अपने सूत्रों से जब पता किया तो चला दिग्विजय सिंह एक प्रसिद्ध तां क्षेत्र, उज्जैन में एक महत्त्वपूर्ण तां अनुष्ठान में व्यस्त हैं. दिग्गी राजा बचावमुहिम के तहत यह तांत्रिक अनुष्ठ इसलिए किया था कि सरला मिश्रा प्रक में उन्हें न घसीटा जाए.

एक तांत्रिक डा. अंबरीश ने बता "दिग्गी राजा के राज में हम साधुसंतों मौज है. पहले के मुख्यमंत्री तो हमें सूंघते नहीं थे किंतु अभी जब मैं दिग्विजय सिंह

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह राज्य की समस्याओं नहीं मंदिर, मठों के अनुष्ठानों में उलझे हुए लगते हैं. यही नहीं, तांत्रिकों के सहारे राजनीतिक विरोधियों के लिए मारण मंत्र का धुआंधार प्रयोग हो रहा है. इस तरह की तंत्रमंत्रों के अंधविश्वासों के भरोसे चल रही सरकार से प्रशासनिक कुशलता की अपेक्षा रखी जा सकती है?

मिला तो उन्होंने मेरे चरण स्पर्श कर मुझे 10 हजार रुपए भेंट दिए व कहा कि महाराज मेरी स्थिरता के लिए प्रयास करते रहें."

उज्जैन में प्रसिद्ध तांत्रिक मौनीबाबा और अर्जुन सिंह के संबंध तो जगजाहिर हैं, किंतु दिग्विजय सिंह ने मौनीबाबा को छोड़ कर उज्जैन के एक अन्य तांत्रिक की सेवाएं ली हैं. माह में 1 बार दिग्विजय सिंह या तो स्वयं उज्जैन जाते हैं या फिर अपने खास आदमी डा. महावीर वशिष्ठ के द्वारा भेंट भिजवाते हैं.

जितने तंत्र जानने वाले सरकारी अफसर हैं आजकल उन की मौज है. ऐसे तमाम अधिकारी मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के नजदीक हैं जो तंत्रमंत्र के ज्ञाता हैं. ये सब अधिकारी कमाई की जगह पर नियुक्त किए गए हैं. रायसेन के पास पातरी नाम की जगह में दिग्विजय सिंह दिनरात चल रहे एक तांत्रिक अनुष्ठान के लिए पैसा भेजते हैं. इस अनुष्ठान में उन के राजनीतिक विरोधियों के लिए मारण मंत्रों का धुआंधार प्रयोग हो रहा है.

दिग्विजय सिंह की धर्मांधता से पीड़ित एक सरकारी आला अफसर का कहना है कि हमें महत्त्वपूर्ण सरकारी कामकाज के नाम पर राजा साहब की तरफ से एक खास मंदिर में जल चढ़ाने जाना पड़ता है.

कहा जाता है कि तंत्रों की सिद्धि शव पर बैठ कर होती है. यह अघोरी साधना कहलाती है. देखा जाए तो मध्य प्रदेश को राजनीतिक प्रमाद ने मुरदा हालत में ही ला दिया है. मध्य प्रदेश रूपी शव पर बैठ कर अघोरी साधना करने वाले तांत्रिक रूपी मुख्यमंत्री इस तरह से तो 3 साल क्या 30 साल भी निकाल सकते हैं. क्योंकि प्रदेश की जनता को तो उन्होंने कराहने लायक भी नहीं छोड़ा. ऐसे में तंत्रमंत्रों के भरोसे चल रही सरकार से किसी प्रशासनिक कुशलता की अपेक्षा करना व्यर्थ है. ●

हमारी बेड़ियां

कुछ दिन पहले की बात है. मेरी मौसेरी बहन रूपा ने बैंक की प्रोबेशनरी अधिकारी की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की. उस के बाद वह दोगुने उत्साह से साक्षात्कार के लिए मेहनत कर रही थी. उसे पूरा भरोसा था कि उस का चयन हो जाएगा.

आखिरकार साक्षात्कार का दिन भी आ पहुंचा. लेकिन जैसे ही वह साक्षात्कार देने जाने के लिए घर से निकलने लगी, उस की नौकरानी से ट्रे में रखे 1-2 कांच के गिलास टूट गए.

हमारी दादी ने फौरन ऐलान कर दिया कि घर से निकलते समय कांच का टूटना जाने वाले की मृत्यु को दर्शाता है, इसलिए अब घर से बाहर नहीं जाया जा सकता.

रूपा के पिता ने उन्हें काफी समझाया पर दादी की जिद के आगे उन की एक न चली. उन्हें समझातेसमझाते ही रूपा के इंटरव्यू का समय निकल गया और व्यर्थ के अंधविश्वासों के कारण रूपा के हाथ से उज्ज्वल भविष्य का एक सुनहरा अवसर निकल गया.

–कु. अलका शर्मा

*

हमारी पड़ोसन बहुत ही अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी विचारों की है. एक दिन उस ने गली से गुजरते दो साधुओं को अपने घर बुलाया. उन साधुओं ने उस से कहा, "आप के घर में जितने भी गहने हैं वह इस पोटली में डाल दो. इन गहनों में शैतान घुस गया है. आगे चल कर यह तुम्हारे पति पर भारी पड़ेगा. मैं मंत्र पढ़ कर उस शैतान को भगा देता हूं."

पड़ोसन उन के झांसे में आ गई और उस ने सभी गहने उस पोटली में डाल दिए. कुछ देर बाद उन साधुओं ने उसे पोटली वापिस लौटा दी तथा शाम तक उसे न खोलने के लिए कह गए. जब शाम को हमारी पड़ोसन ने वह पोटली खोली तो उस में लोहे के कंगन थे. –संदीप कुमार

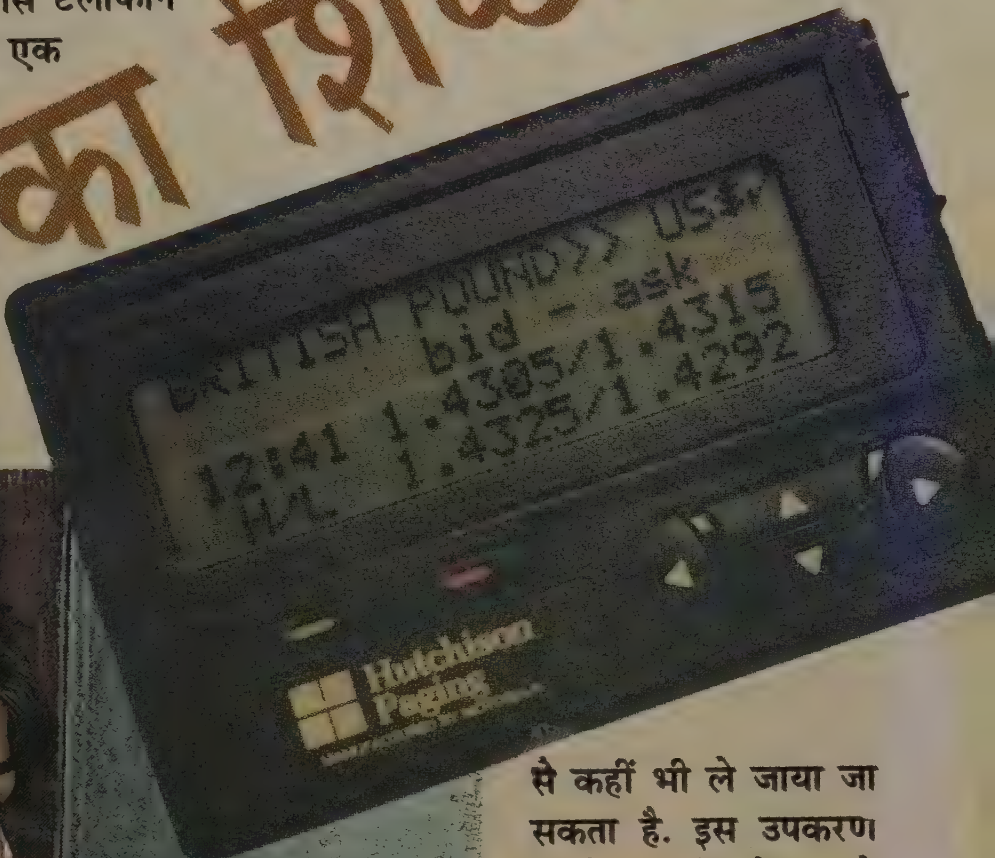
इस स्तंभ के लिए आप अपने, मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लेख ● डा. राजेश अग्रवाल

पेजर का शिष्टाचार

किसी व्यक्ति के पास पेजर है यह उस के परिचितों के लिए हर्ष की बात है, परंतु उस के लिए सिरदर्द. क्यों भला, यह क्या बात हुई? इस की वजह है अनावश्यक पेजिंग.

'पेजर' एक ऐसा उपकरण है जिस की सहायता से आप पेजरधारी व्यक्ति को एक निश्चित दूरी तक टेलीफोन द्वारा वांछित सूचना दे सकते हैं. इस के लिए आप के पास पेजर एवं पेजरधारी के पास टेलीफोन होना जरूरी नहीं है. यह पेजर एक छोटा सा उपकरण होता है जिसे आसानी





से कहीं भी ले जाया जा सकता है. इस उपकरण पर पेज यानी संदेश आने पर एक आवाज सुनाई पड़ेगी और आप अपना पेजर चालू कर के संदेश पढ़ लीजिए. पेजर पर आप सिर्फ संदेश दे सकते हैं, पेजरधारी से बात नहीं कर सकते.

पेजर पर संदेश देने के लिए आप को उस कंपनी को सिर्फ एक फोन करना होता है जिस कंपनी का पेजर पेजरधारी के पास हो और फिर वांछित व्यक्ति का पेजर नंबर बता कर जो संदेश

आप देना चाहें उसे दे सकते हैं. फिर वहां से यह संदेश आप के पेजरधारी को स्थानांतरित कर दिया जाएगा. अब यह तो हुई सुविधा, तो फिर इस में सिरदर्द किस बात का?

पेजर के मामले में एक तरह की बंदिश या असुविधा यह है कि इस का उपयोग जरूरी हो तभी करें. सिर्फ सुविधा उपलब्ध है इसलिए इस का उपयोग न करें.

इसे आप एक उदाहरण से समझ सकते हैं. एक डाक्टर (जिस के पास पेजर था) अपने घर से अस्पताल मरीज देखने जा रहा था. अचानक पेजर पर संदेश आया. उस ने गाड़ी रोकी और संदेश पढ़ा–'तुरंत घर पर संपर्क साधें.' डाक्टर चिंतित हो गया कि जरूर घर पर कोई आकस्मिक दुर्घटना हो गई होगी क्योंकि अभी 5 मिनट पहले तो वह घर से निकला ही था. वह वापस गाड़ी

व्यक्ति तक उस से संबंधित संदेश फौरन पहुंच जाए, इस से बढ़िया बात भला और क्या हो सकती है? पेजर सुविधा भी इसीलिए है. परंतु ध्यान रखें कहीं यह उल्टा सिरदर्द न बन जाए...

मोड़ ही रहा था कि उस ने सोचा कि चलो फोन कर के पूछ लें क्या बात है. घर पर संपर्क साधा तो पता चला कि वहां से कोई संदेश ही नहीं दिया गया था. यानी या तो किसी ने परेशान किया या पेजर कंपनी ने गलत नंबर पर संदेश दे दिया.

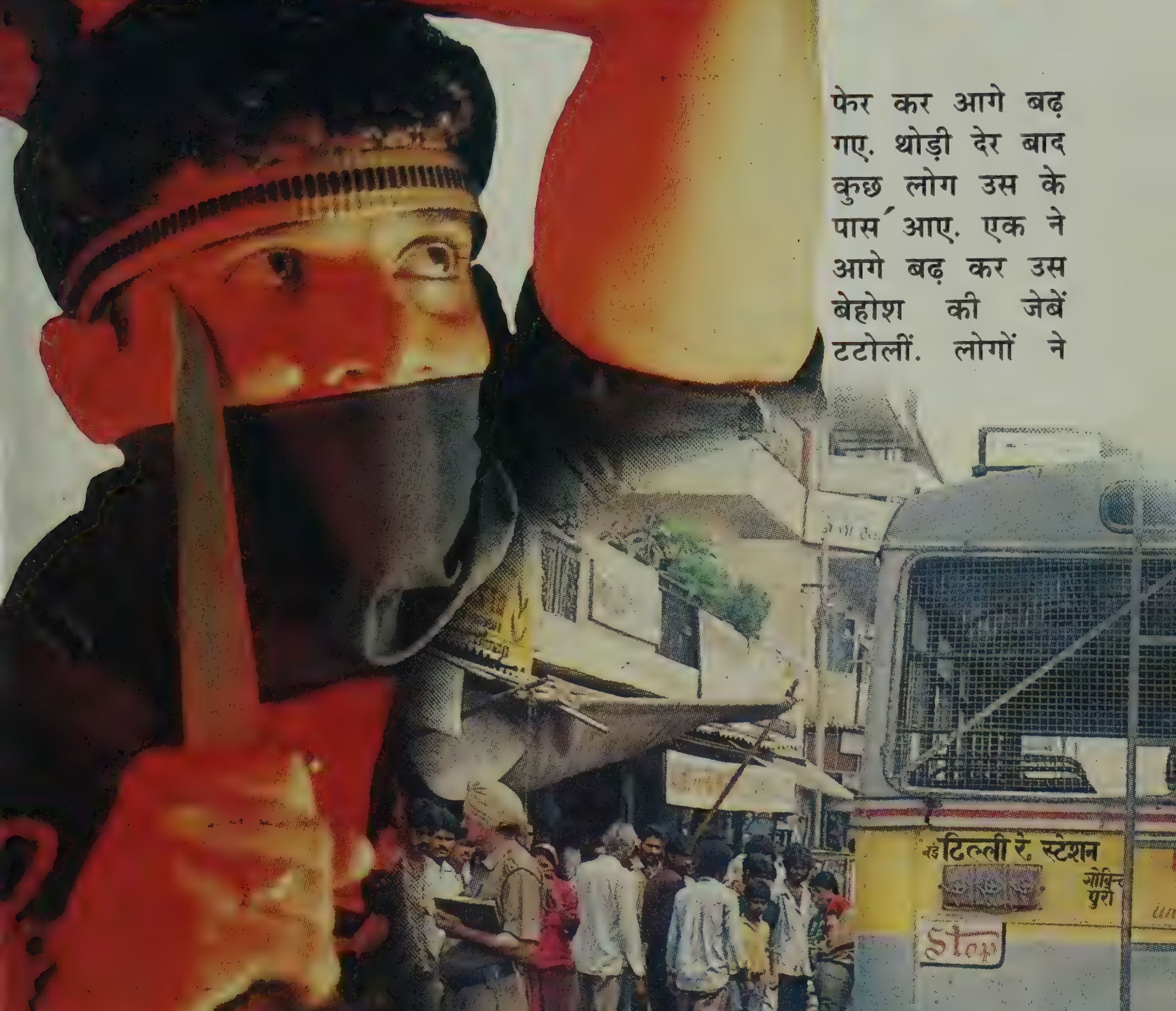
ऐसे एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं. एक बार एक व्यक्ति को संदेश मिला, 'शाम को 5 बजे फलां जगह मिलो. सुनीता.' यह संदेश उस की पत्नी ने पढ़ लिया. अब आगे की स्थिति का अंदाज आप स्वयं लगा सकते हैं, जबकि यह एक गलत नंबर पर दिया गया संदेश था.

एक चिकित्सक को संदेश मिला, ' बात करें–टेलीफोन नं... ' उन्होंने बात संदेशवाहक सिर्फ यह पूछना चाहता थ चिकित्सक कितने बजे परामर्श कक्ष मिलेगा. अब यही बात वह फोन पर भी सकता था. यदि चिकित्सक नहीं भी मि तो उस के घरवाले इस बात की जान दे देते.

ऐसे एक नहीं हजारों उदाहरण जाएंगे, जब पेजर का दुरुपयोग किया है. तो फिर क्या पेजर का उपयोग न या पेजर न रखें? ऐसा नहीं है, पेजर अवश्य रखें पर उस का उपयोग करते निम्न बातों का ध्यान रखें:

- पेजर पर संदेश तभी दें जब आवश्यक हो, और फोन पर संपर्क नही पा रहा हो.
- पेजर किस कंपनी का है यह अ मालूम कर लें क्योंकि अलगअलग कंपनी संदेश देने के फोन नंबर अलगअलग हैं.
- जिसे संदेश देना है उस का नंबर ठीक से बताएं और नंबर और नाम पुष्टि संदेश देने के पहले कर लें.
- यदि बहुत आवश्यक हो पेजरधारक को 'अतिआवश्यक' 'इमरजेंसी' कर के संदेश दें. क्योंकि सकता है जहां पेजरधारक हो वहां फोन सुविधा उपलब्ध ही न हो.
- पेजर कंपनी के संदेशवाहक संदेश देने वाले से इन बातों की पुष्टि लें कि वांछित व्यक्ति और बताया गया नंबर ठीक है.
- भाषा की अज्ञानता भी आड़े आए क्योंकि अधिकतर देखा गया है पेजर कंपनी वाले जितने भी आप रखते हैं वे सभी अंगरेजी में बात हैं और कई बार हिंदी के संदेश अनुवाद कर के दे दिए जाते हैं. अधि पेजर अंगरेजी में ही संदेश देते हैं. भी सिरदर्दी का एक बहुत बड़ा का है.

पतन की पराकाष्ठा



लेख ● जगदीश पंवार

पिछले साल जयपुर में पोलोविक्टरी सिनेमाहाल की पिछली गली में एक बस ने एक स्कूटर सवार को टक्कर मार दी. स्कूटर वाला नौजवान बुरी तरह जख्मी हो गया. स्कूटर सवार को खून से लथपथ बेहोशी की हालत में छटपटाता देख बस वाला भाग खड़ा हुआ.

राह से गुजरने वाले लोग भी उसे जिंदगी और मौत के बीच झूलते देख मुंह फेर कर आगे बढ़ गए. थोड़ी देर बाद कुछ लोग उस के पास आए. एक ने आगे बढ़ कर उस बेहोश की जेबें टटोलीं. लोगों ने कहा, 'हांहां देखो, कौन है, कहां का है. कोई नाम, पताठिकाना मिले तो खबर करो.'

जेब टटोलने वाले ने बेहोश व्यक्ति का बटुआ निकाला और भाग गया. तभी एक और आदमी आगे बढ़ा. उस ने घड़ी खोली और वह भी पास की गली में घुस गया.

तीसरे ने गले की चेन पर झपट्टा मारा और भाग कर गलियों में गायब हो गया.

आसपास के लोग तमाशबीनों की तरह खड़े देखते रहे. शायद देख रहे थे कि अब कोई और आएगा और इस लाचार, बेबस, बेहोश नौजवान के बदन से कपड़े उतार कर ले जाएगा. फिर शायद कोई आंखें, गुरदे भी निकाल कर ले जाए.

अब तक काफी भीड़ जुट गई थी. उस भीड़ में से 2-3 भले आदमी निकले और उन्होंने उसे सवाई मानसिंह अस्पताल में ले जा कर भरती कराया पर बाद में इस युवक की मौत हो गई.

इसी तरह हाल ही में दिल्ली और मेरठ के बीच जीटी रोड पर परतापुर गांव के पास

प्रगति करना उच्च लालसाएं रखना, धन कमाना हर कोई व्यक्ति चाहता है पर आज इन सब के लिए हत्या, लूटमार की ऐसीऐसी घटनाएं देखनेसुनने को मिलती हैं कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं. व्यक्ति की चारित्रिक पतन की यह पराकाष्ठा समाज में भला क्या आदर्श स्थापित कर पाएगी?

एक बस व ट्रक में जबरदस्त टक्कर हुई. इस में कुछ लोग मारे गए और कई घायल हो गए. मौके पर बड़ा कुहराम मच गया. एक तरफ 'बचाओबचाओ' की चीखपुकार मची हुई थी तो दूसरी तरफ शरारती लोग घायलों और मरने वालों की जेबों और उन के सामान पर हाथ साफ करने में लगे थे.

कई घायलों ने अपना सामान पर्स, चेन, घड़ी आदि गायब होने की शिकायत की. खून से लथपथ एक औरत गुड्डी ने मेरठ सिटी के एडीएम से शिकायत की कि के गले की चेन निकाल ली गई. एक औरत ने भी अपने कानों की बालियां होने की शिकायत की.

'आदमी' की यही 'आदमियत' दिनों सोमवती अमावस्या के मौके पर ह व उज्जैन में मची भगदड़ के दौरान भी गई. खबरें थीं कि भगदड़ में गिरेमरे का रुपयापैसा और अन्य मालअसबाब असामाजिक लोगों और साथ ही पुलिस ने लूट लिया.

जब पवित्र कहलाए जाने वाले ध तीर्थस्थलों पर दुर्घटना के वक्त लूट क आलम था तो साधारण जगहों की बा क्या? अब यह बात सौ फीसदी सच हो है कि लोग मुरदे का कफन तक नहीं छो यह आदमी के चरित्र व आचरण की गिर की सब से बड़ी मिसाल है. यह पतन इंतहा है.

इस की सब से बड़ी वजह है पैसे भूख ज्यादा बढ़ना और मेहनत के नाम निखट्टू बने रहना. आदमी बिना काम सब कुछ पा लेना चाहता है. वैसे भी के लिए आज धन पा लेना और ऐश, अ के साधन जुटा लेना ही आखिरी मकसद गया है. इस के लिए वह चाहे किसी की काटे, धोखा दे, जान से मार दे या फिर हुए का माल लूट ले जाए. नैतिकता फर्ज के माने एकदम बेमानी हो गए हैं. धन आना चाहिए. मेहनत से नहीं, 'ऊपर' से, बिना कुछ किएधरे. उस की हरदम पराए माल पर ही टिकी रहती है. वह उसे हड़प लेना चाहता है, डकार चाहता है, फिर चाहे वह जमीनजाय नगदी, गहने, भैंस, बकरियां हों या बहूबेटी.

दिल में दूसरे के प्रति दर्द, दुख, संवे नाम की चीज ही नहीं बची. मेह ईमानदारी, फर्ज, नैतिकता और जिम्मे जैसे शब्द फकत किताबी बन कर रह हैं. असल जिंदगी से इन का कोई लेना नहीं रह गया है.



पैसे की ऐसी भी क्या भूख कि दूसरे की गरदन पर छुरी फेरने में भी हिचक महसूस न हो.

धोखे से ही कोई किसी का गुरदा निकाल रहा है तो कोई आंखें निकाल रहा है. निकाल ही नहीं रहा बल्कि पैसे के लिए गुरदे, जिगर, आंखें और खून तक बेच भी रहा है. यह सब मेहनत न करने वालों के कारनामे हैं. यह नहीं कि देश में रोजगार, धंधों की कमी है, नौकरियां नहीं हैं. यह हालत तो इस देश के निकम्मों के कारण है जिन्होंने तमाम अच्छी चीजों को बैठेबिठाए सब कुछ पाने की खातिर, यहां तक कि आदमियत को भी सलीब पर टांग दिया है. ऐसे में कोई किसी घायल बेबस या मरे हुए को लूट रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं है.

लालसाएं रखना, धन कमाना कोई बुरी बात नहीं है मगर बिना मेहनत किए, किसी का गला काट कर या घायल व मरे हुए का माल लूट कर पैसा इकट्ठा करना निकृष्टतम, घिनौना कारनामा है. कहने को तो हम सभ्यता के नए जमाने में रह रहे हैं लेकिन इस तरह की घटनाएं बर्बर जमाने की घटनाएं हैं. हरेक मनुष्य का एकदूसरे के प्रति घर, समाज, गांव और देश के प्रति फर्ज होता है. अगर हम किसी बीमार, घायल या मरे हुए के लिए कुछ कर नहीं सकते तो कम से कम उस की जेब और माल पर तो अपनी नजर न रखें. हम किसी का दर्द, पीड़ा, टीस कम नहीं कर सकते तो और ज्यादा तो न बढ़ाएं. किसी के घावों को सहला नहीं सकते, मरहम नहीं लगा सकते तो उसे खुरचें तो नहीं.

कोई भी आदमी मेहनत से ही तरक्की कर सकता है. साथ ही उसे कुछ भी पाने की उम्मीद सिर्फ मेहनत के बूते पर ही रखनी चाहिए. यही नहीं, मेहनत के बल पर कमाने के बाद, हमारे दूसरों के प्रति भी कई फर्ज हैं. ऐसा नहीं होगा तो फिर आदमी और शैतान में फर्क ही क्या रह जाएगा. इस तरह लूटने वाले लोग समाज और देश पर कलंक हैं, धरती पर भार हैं. ●


बाज़ार
आज जल्दी लौट आना बाजार जाना है.
मारे गए! लगा दो चार हजार का चूना.
ओह! मुझे तो दफ्तर में देर हो जाएगी. तुम आज कार्यक्रम टाल दो.
क्यों न शाम का शो देखा जाए. घर पहुंचा तो श्रीमतीजी बाजार चलने की फरमाइश कर देंगी.
रोज़ाना चार शो
तीसरे दिन
तुम भी क्या याद करोगे मित्र. चलो होटल में खाना खिलाता हूं.
कम से कम शापिंग से तो सस्ता ही है.


चौथे दिन
खेद है, व्यस्तता के कारण तुम्हें बाजार न ले जा सका.
वह तो मैं उसी दिन हो आई थी! रेखा के साथ.
हैं!! क्याक्या ले आई?
लक्की ड्रा में एक मुफ्त गिफ्ट वाउचर निकला था. उस से तुम्हारे लिए यह टी शर्ट.
हाय! मैं व्यर्थ ही समय और पैसा बरबाद करता रहा!!
?

सखी

कहानी ● डा. मंजु ि

"बात शायद बनी नहीं?" पत्नी ने पूछा.

"अब बात कभी नहीं बनेगी. हर तरफ दहेज के लोभी अजगर के समान



भयानक जबड़े फैलाए बैठे हैं. लड़की के रंगरूप, शील, स्वभाव की तो चर्चा ही नहीं करते, बस छूटते ही सवाल दागते हैं कि दहेज के लिए कितना अनुमान लगाया है? आज तो मैं ने भी कह दिया है कि मेरे पास किसी घोटाले का अरबोंखरबों नहीं है, जो 50-60 लाख नकद दे सकूं...रखिए अपना बिकाऊ बेटा अपने पास," प्रोफेसर बिंदा बिहारी ने झल्लाते हुए कहा.

दोनों की बातचीत सुन कर दमे की मरीज 80 वर्षीय वृद्धा कमरे में आ गईं. उन



के चेहरे पर असंख्य झुर्रियां थीं, मगर आंखों में अद्‌भुत तेज था. प्रोफेसर साहब ने खिसकते हुए बगल में उन के बैठने लायक जगह बनाते हुए कहा, "आओ अम्मां, बैठो, मेरे पास."

"मैं तो सदैव तुम्हारे पास ही होती हूं...मांबेटे का संबंध ही ऐसा होता है. तुम रघुनंदन प्रसाद के यहां गए थे...वे लोग कल तक तो बिना दहेज की शादी की रट लगाए बैठे थे, आज अचानक यह 'लाखाजार' कहां से लग गया," अम्मां ने बैठते हुए तनिक मुसकरा कर बेटे से पूछा.

प्रोफेसर साहब की पत्नी गिलास में पानी ले आई थीं. बिना कुछ बोले उन्होंने पानी का गिलास पति की ओर बढ़ा दिया. बिंदा बिहारी एक ही सांस में गटगट पानी पी गए, मानो पानी पी कर जीवन की तपन को शांत कर लेना चाहते हों. फिर पत्नी को गिलास थमाते हुए उन्होंने बरामदे में कपड़ों पर इस्तिरी करती बेटी को निहारा. उस एक दृष्टि में विवशता, मायूसी, आक्रोश, क्षोभ, ग्लानि और न जाने क्याक्या सिमट आया था. क्षण भर में ही उन्होंने दृष्टि फेर ली.

फिर मां के प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व उन्होंने गहरी सांस ली और कहा, "अम्मां, लाखाजार कहो या लोभाजार, पर इस शब्द ने अपना साम्राज्य खड़ा कर लिया है. एक ओर मुझ जैसे हजारों शिक्षक हैं, जिन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता और 2-3 माह बाद 1 माह का वेतन भी मिलता है तो आधाअधूरा, मानो जलते हुए तवे पर 2-4 बूंद पानी..."

"तुम लोग हाईकोर्ट में केस क्यों नहीं कर देते? कल पड़ोस वाले वकील साहब कह रहे थे कि आधाअधूरा वेतन ले कर प्रोफेसर लोग इस भ्रष्ट सरकार को एक तरह से शाबाशी दे रहे हैं. कानूनन किसी को भी अपना पूरा वेतन, भत्ता पाने का अधिकार है," अम्मां ने बेटे के उदास चेहरे की ओर निहारते हुए सलाह दी.

"अंधों की नगरी में आईना बेचने से क्या लाभ? हमारा समाज एक जंगल में तबदील होता जा रहा है. हजारों कौओं की 'कांवकांव' में एक निरीह चिड़िया का स्वर कौन सुनेगा? आधी रात को जहां कार्यपालिका, विधायिका से एकाकार हो कर न्यायपालिका का आलिंगन करती हो, वहां फरियाद क्या और न्याय कैसा?"

"तो हम लोग क्या करें? 3-3 बेटियां कुंआरी बैठी हैं. आप की तनख्वाह से भोजन, वस्त्र भी पूरा नहीं होता. आप के नेता न जाने कहां से इतनी दौलत लाते हैं कि उन्हें

'अभाव' या 'अकाल' जैसे शब्द ही ज्ञात नहीं. इस बुढ़ापे में दूसरी नौकरी भी तो नहीं मिलेगी. अब तो लगता है, सपरिवार गंगा में समाधि ले लें," पत्नी ने भर्राए स्वर में कहा और उठ कर रसोई में चली गई.

प्रोफेसर कालोनी के एक सिरे पर बांस की पट्टियों से बने व फूंस का छप्पर धारण किए इस 'मातृ सदन' का निर्माण दशकों पूर्व पंडित राधाकांत ने करवाया था. वह विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक थे. घर भले ही फूंस का था, पर लक्ष्मी देवी जैसी सुंदर, सुशीला, संस्कारी पत्नी जहां रहती हो, वह तो विद्वान पंडित को ताजमहल से भी ज्यादा मनोहारी लगता.

ज्ञान की आभा से आलोकित, प्रेम एवं समर्पण से भरी पत्नी के पति होने का गौरव तो पंडितजी को था ही, जब बिंदा बिहारी के रूप में पुत्र की प्राप्ति हुई तो उन की खुशी का ठिकाना न रहा. परंतु पंडितजी की खुशियां प्रकृति से देखी न गईं. पुत्र साल भर का भी नहीं हो सका कि वह स्वयं मातृसदन को अलविदा कर इस संसार से कूच कर गए.

पति स्वभाव से संत थे, संचय की वृत्ति थी ही नहीं. घरखर्च के अलावा जो भी राशि बचती, निर्धन छात्रों की मदद में खर्च कर देते. परंतु वैधव्य ने लक्ष्मी देवी को लक्ष्मी की महत्ता का भान करा दिया. कुछ दिन तक लोग आतेजाते रहे, संवेदना प्रकट करते रहे, फिर सब सामान्य हो गया. उन का होना, न होना विश्वविद्यालय परिवार के लिए अर्थहीन हो गया.

स्वयं भूखी रह कर लक्ष्मी देवी बिंदा

लछमन हलवाहे की अनपढ़ गंवार लड़की बेदमियां जो क शोभना के पीछे सखीसखी कहती डोलती थी, आज इस मकाम पर पहुंच गई कि शोभना की सहायता कर सके. लेवि जो सहायता उस ने की वह वास्तव में किस की थी, उस की स्वयं की या शोभना की?

को खिलातीं, स्वयं आंसू बहा कर बच्चे मुसकराना सिखातीं. फूंस की इस झोंपड़ उन्होंने तपोभूमि बना कर बेटे को विश्वविद्यालय में पिता के विभाग प्राध्यापक बनने का सुख प्राप्त करवाय

बहुत यत्न कर के भी बिंदा इस का उद्धार न कर सके. विपत्तियों से हुई माता का शरीर रोगों का निवास हो चुका था. कमाई का एक हिस्सा उ इलाज पर और शेष घरगृहस्थी के हव में समा जाता.

धीरेधीरे सरकारें शिक्षा के प्रति अ संवेदनहीन होती चली गईं. पहले भत्ते हुए, फिर सरकार ने भत्तों को भविष्य में डालने का आश्वासन दिया और ब वेतन के रूप में इतनी अल्पराशि मिलत बाहर का कोई यकीन ही न करता. व की पढ़ाई व मां की दवाइयों का खर्च रसोईघर की छाती पर नश्तर चलाता. हड़ हुईं, पर सरकार ने स्पष्ट कहा, 'शि बेकार की चीज है, अमीरों का चोंचल पढ़ने से आज तक कोई बड़ा आदमी है क्या? बंद कर दो कालिजों को...'

फिर बस इतनी सी राहत पर हड़ टूट गई कि 3 माह का वेतन 1-2 मा दे दिया जाएगा. उस के बाद कुछ अक्ल ने दुकानें खोल लीं, कुछ ने गाएं पाल और दूध का धंधा शुरू कर दिया. एक ने समझाया, 'अरे बिंदा बाबू, ज्ञानदा कर क्या मिलेगा, टीबी पकड़ लेगी. प्रांत में ज्ञान नहीं दूध बेचिए, दूध.'

ट्यूशन करने वाले तो जी रहे थे, संस्कृत में ट्यूशन पढ़ने वाले प्रायः



"बाप रे, इतना पैसा ले कर हम क्या करेंगे?" शोभना हैरानी से बोली.

गरीब थे, वे इंजीनियर, डाक्टर बनने वालों की तरह पैसों से भरे नहीं थे. नंगा क्या नहाए, क्या निचोड़े. गरीबी की टीस बिंदा जानते थे, परपीड़ा कैसे देते? लिहाजा जिंदगी की गाड़ी चरमराती रही.

कहने को वह प्रोफेसर थे, पर नुक्कड़ का दुकानदार हंस कर कहता, "प्रोफेसर साहब, इस से तो हम गुमटी वाले ही भले हैं. कम से कम घुटन तो नहीं होती कि सरकार ने हमारा वेतन रोक लिया या काट लिया. सरकार बेचारी क्या करे...घोटालों से फुरसत हो, तब तो गुरुओं को वेतन देने की सोचे. वैसे भी गुरुओं से सरकारों को खतरा होता है, गुरुघंटाल चाणक्य को ही लीजिए न..." दुकानदार ने ठहाका लगाया.

बिंदा बिहारी खामोश ही रहे. सोचा, यह नाराज हो गया तो भूखों मरना होगा. 2-3 माह के लिए उधार देने वाला थोड़ा उपहास भी करे तो क्या, और फिर उपहास कैसा, बात तो सच्ची ही कह रहा है.

कुंडी जोरजोर से खड़की तो मालकिन की तंद्रा भंग हुई. बाहर जा कर देखा तो उन का ममेरा भाई गोपाल खड़ा था. खादी का कुरतापाजामा, कंधे पर खादी का झोला लटका हुआ था. प्रणाम करने के साथ उस ने उछल कर कहा, "दीदी, मिठाई खिलाओ हमें...मुंह मीठा कराओ...तुम्हारे लिए खुशियों की सौगात लाया हूं."

"भैया, इस घर से तो खुशियों की दुश्मनी है. इन की रिटायर होने की उम्र हो गई, पर खुशहाली नहीं देखी. अरे, बिहार अब 'भिखार' (भिखारी) हो गया है और भिखार के घर में खुशी कैसी?" शोभना ने उदास स्वर में कहा.

"तुम बेदमियां को भूल गई होंगी. अरे, वही बेदमियां, जो तुम्हें 'सखी'...'सखी' पुकारती रहती थी और तुम हंस देती थीं."

"अरे, वह लछमन हलवाहे की बेटी बेदमियां...सांवली सी लड़की, चेचक के दागों से भरा चेहरा..."



नींद

बे-दर-ओ दीवार का ही सही
था तो वह प्यार का जहां,
अब इन सोनेचांदी की दीवारों में
नींद भी जाने गई कहां?

–निर्मला जौहरी

"हां वहीं...जानती हो, अब वह उपमुख्यमंत्री की पत्नी है, बादामी देवी. आज की तारीख में वह बिहार के सब से दबंग, सर्वाधिक ताकतवर नेता की पत्नी है. दीदी, मेरी तो जिंदगी ही संवर गई. धड़ल्ले से उन के बंगले पर जाता हूं, रहता व खातापीता हूं और विधायकों पर रोब गांठता हूं. उधर उपमुख्यमंत्री 'साले बाबू'...'साले बाबू' की रट लगाए रहते हैं..."

बात को बीच में ही काटते हुए प्रोफेसर ने कमरे में आते हुए कहा, "साले, तुम हो ही भुक्खड़ सांड़...जहां भोजन मिला, डट गए. चाहे कोई 'साला' गाली दे कर ही तुम्हें भोजन क्यों न दे."

"अरे नहीं जीजाजी, वह वैसे नहीं हैं. आज जब मैं ने एकाएक दीदी की चर्चा कर दी तो बादामी उदास हो गई."

"वह उदास हो गई और तुम बंदरों की तरह उछलते हुए चल पड़े दीदी को यह संदेश देने कि देखो, तुम भले झोंपड़ी में रह कर जीवन के दिन गिन रही हो, विद्वान की पत्नी हो कर भी कंगाल हो, मगर तुम्हारे ननिहाल की अनपढ़, गंवार बेदमियां महा बन गई है. यही कहने आए हो न? तो लो, जिस देश में शिक्षक भूखा होता है, संस्कृति भी मर जाती है और तब देश नष्ट होने में ज्यादा समय नहीं लगता. देना जा कर अपने प्रिय जीजाजी से," शो ने उत्तेजित हो कर कहा और बांस फाटक धकेलते हुए आंगन की ओर लगी.

"सुनो तो, दीदी. उन्होंने अपने ही स के बेटों के साथ तुम्हारी दोनों बेटियों शादी तय कर दी है. तुम्हें कल ही बुल है."

झोंपड़े का एकएक कोना मेघम गा उठा. बांस की सड़ी हुई गांठों से म गीत गूंजने लगे. शोभना, बिंदा बाबू, ल देवी और गोपाल ने पूस की ठिठुरती बातों ही बातों में काट दी.

गोपाल जैसे फटीचर से इस गंभीर की कतई उम्मीद नहीं थी, पर उस पंक्तियों का पत्र दे कर सारी शंकाओं दूर कर दिया था. पत्र में लिखा था, 'स देखने में तुम्हारी तरह अद्वितीय, पढ़ने में की तरह तेजस्वी, स्वभाव में दादी की त सुशील बेटियों की शादी, हमारे सेक्रेटरी बेटों से हो जाएगी, चिंता मत करो–बा देवी.'

सुबहसुबह चिड़ियों का चह शोभना ने शायद बरसों बाद सुना. भोर उजाला भी बड़ा अजनबी सा लग रहा ऐसा लग रहा था, रास्ता भटक कर झोंपड़ी में परियों की शहजादी आ ग फटाफट नहाधो कर दोनों पतिपत्नी गो के साथ पटना चल दिए.

बादामी के बंगले में पहुंच कर शो की आंखें चौंधिया गईं. महलों का ठाट था, देखने को नहीं मिला कभी. कोठी एहाते में इतने फूल थे, इतने पौधे थे, के नाम भी वह नहीं जानती थी. मैट्रिक जिले में प्रथम आने वाली शोभना जिंदग बहुत पिछड़ गई थी. तन को कोई सुख

मिला, मगर मन को संतोष था. यहां सब के तन फैले हुए, चमचमाते, झकझक करते कपड़ों में लिपटे थे, मगर सब के मन असंतुष्ट थे. जो भी आता, वह 'आमदनी वाली मेज' या 'आमदनी वाले विभाग' की अंतहीन लालसा लिए ही आता.

बादामी देवी ने खूब स्वागतसत्कार किया, मगर उस स्वागत में स्वागत से ज्यादा अपने अहं का प्रदर्शन था. शब्दों में सहजता नहीं, दयाभाव था. ऐसा लग रहा था जैसे वह चीखचीख कर कह रही हो, 'देखा, इसे कहते हैं वक्त...आज मैं दाता हूं, तुम भिखारी.'

स्वाभिमानिनी शोभना ने कहा, "शादी तय करवा कर दिन तय कर दो बादामी, अगर तुम इन का तमाम बकाया वेतन एकमुश्त दिलवा दो तो मैं आजीवन तुम्हारी ऋणी रहूंगी. जानती हो, पहले इन्हें 10 हजार मिलते थे, फिर घट कर 7 हजार मिलने लगे...अब मात्र 5,500 मिलते हैं. इतने कम पैसों में 7 लोगों का परिवार चलाना पड़ता है. हम लड़के वालों को ज्यादा नहीं दे सकेंगे."

"दिनेश की मजाल है जो तुम से पैसा मांगे...हमेशा इन के आगेपीछे दुम हिलाता रहता है. अभी बुलवाती हूं, देख लो..."

1970 बैच के आई.ए.एस. अफसर सामने खड़े थे. उपमुख्यमंत्री ने कुरते के अंदर हाथ घुसा कर खुजलाते हुए कहा, "दिनेश, ई प्रोफेसर साब हमारे साढ़ू लगते हैं...इन्हीं की बेटियन से विआह तय किया है हम ने तुम्हारे बेटवन का. हम से दहेज मांगने का साहस है तुम में...बोलो?"

"कैसी बातें करते हैं सर, आप का दिया इतना कुछ है कि 7 पुश्त खाएंगे..."

"बस, तो ठीक है...खैनी लगाओ और हमें खिलाओ. हमें तो तुम्हारी हथेली पर रगड़ी गई खैनी ही अच्छी लगती है."

अचानक फोन की घंटी बज उठी. उपमुख्यमंत्री 'हां'...'हूं' करते रहे. फिर पत्नी से कहा, "मुख्यमंत्री के साथ आवश्यक बैठक है, अभी जाना है. रासबिहारी को सी.बी.आई. गिरफ्तार कर जेल ले गई."

"कौन रासबिहारी?" बादामी देवी ने पूछा.

"अरे, वही रासबिहारी, जो पिछली बार हमारा सेक्रेटरी था. साला घोंचू निकला...कहे थे कि आराम से अमेरिका रहो, खाओपीओ, मौज करो, मगर उसे तो कुत्ता



काटे हुए था, भाग आया इंडिया...अब सड़ो जेल में. हम तो साफ कह देंगे कि वह हमारा आदमी न था."

दिनेश ने अपने हाथों से 'शुभविवाह...मेरे पुत्रों, विशाल एवं वैभव का कुमारी अल्पना एवं बंदना से ता. 22-2-97 को फलदान, तिलक 17-2-97 को...' लिख कर बिंदा बाबू को दे दिया.

बादामी देवी के आदेश पर दोनों लड़के बुलाए गए. उन्हें प्रोफेसर दंपती ने शकुन देते हुए कहा, "'गरीब का आशीर्वाद' अमूल्य धरोहर है...हमारे पास तुम्हें देने के लिए यही एक चीज है."

"और परी जैसी दुलहनें क्या बेमतलब हैं? इन्हें तो मेरे पैर धो कर चरणामृत लेना चाहिए, जीजाजी," कह कर बादामी हंस पड़ीं. गर्वीली व कामयाब हंसी.

शाम होते ही वे चल पड़े. बादामी ने एक ब्रीफकेस में कुछ साड़ियां और लिफाफे में 25 हजार रुपए देते हुए कहा, "इसे हमारी ओर से शादी में उपहार समझ लीजिए. आजकल हाथ कुछ खाली है, वरना और मदद करती. एरियर तो आप का मुश्किल है...एक को देने से सब टीचर भूंकने लगेंगे. खजाने में अभी पैसा नहीं है, फिर भी यह देखेंगे."

बिंदा बाबू का मन तो किया कि कह दें, 'खजाने को गाएं व भैंसें चर गईं क्या? दीमक चाट गई क्या? सारा खजाना तो तुम मंत्री लोग हड़प गए,' पर एहसानों से दबी कमर विद्रोह में उठने वाला सीना कहां से लाती. चुटकी में बेटियों की शादियां तय करवा कर उन लोगों ने जो उपकार किया था, उसे इन का मन कैसे भूलता. नमस्कार कर विदा हो गए.

आधी रात को एक ट्रक आ कर रुका. झोंपड़ी का फाटक खोल कर अंधेरे में 3-4 आदमी अंदर आए. एक ने कहा, "प्रोफेसर साहब, दरवाजा खोलिए, हम शोभनाज़ी की सखी की सौगात ले कर आए हैं."

"सखी की सौगात?" चौंकते हुए पतिपत्नी बाहर आए.

भीतर आने वाला वही इंस्पेक्टर जो बादामी की कोठी पर तैनात था. संकेत दिया और सिपाहियों ने दर्जनों सू उतार कर अंदर रख दिए. फिर बोरों प उतारे जाने लगे. बांस की झोंपड़ी ठ भर गई. आननफानन में ट्रक अलमारियां, 3 पलंग, 2 सोफे उतार सिपाहियों ने नीचे रख दिए. फिर इंस ने एक लिफाफा दे कर कहा, "हम हैं, किसी को कुछ कहिएगा मत."

आश्चर्यचकित दंपती ने पत्र खोला..

'प्रिय सखी, तुम गरीबी भोग थीं...2 करोड़ रुपए व 30 लाख के आ भेज रही हूं, मकान बनवा लो और करो.'

"बाप रे, इतना पैसा हम क्या करें शोभना मानो चक्कर खाती हुई बोल

"फेंक दो सारा पैसा...यह हराम कमाई है," वृद्धा लक्ष्मी देवी ने कहा.

"और उन्हें नाराज कर के कुं बेटियों को उम्र भर घर में बैठाए रखो," ने तमक कर कहा.

"काले धन से विवाह होगा?" आंखें तरेरीं.

"यह जनता जनार्दन का पैसा है जनता के पास आया है...मगर यह परि कैसे?" छोटी बेटी ने हीरे का हार उठा गले में डालते हुए कहा.

सुबह हो गई. अखबार वाला अख डाल गया. मुखपृष्ठ पर खबर 'सी.बी.आई. का उपमुख्यमंत्री के घर छापा...मगर तलाशी में कुछ भी नहीं मि

अंतिम पृष्ठ पर रासबिहारी का ब छपा था, 'उपमुख्यमंत्री के पास, अ रुपए.'

शोभना के बेटों ने चहकते हुए "बाकी पैसा किसकिस के पास भेजा एक रात में?"

तभी हवा का झोंका तेजी से आया तो शोभना ने द्वार बंद कर लिया.

पासा पलट गया

हमारी जनरल स्टोर की दुकान पर एक महिला सामान लेने आई. मैं अन्य ग्राहकों को सामान देने में व्यस्त था. उस ने मौके का फायदा उठाया और 4-5 बड़े साइज की धागे की रीलें चुरा कर अपने बैग में डाल लीं. यद्यपि उसे लगा कि उस ने हमारी आंख बचा कर यह कार्य किया है, पर हम ने उसे चोरी करते हुए देख लिया था.

कुछ देर बाद जब उस ने बाकी खरीदारी की और हम से कुल रुपए पूछे तो मैं ने कुल



बिल में 25 रुपए और जोड़ दिए. उस ने अनजान बनते हुए पूछा, "ये 25 रुपए किस बात के हैं?" मैं ने कहा, "जो सामान आप ने बैग में डाल लिया है, यह उस की कीमत है."

जब उसे लगा कि उस की चोरी पकड़ी गई है तो वह झेंप गई और सारे पैसे चुका कर तुरंत चलती बनी. –दर्शन गोयल

*

हमारे महल्ले में एक स्थानीय नेताजी रहते थे. वह अपने घर का सारा काम महल्ले के बच्चों से ही कराते थे. किसी से कुछ मंगाते, किसी से कुछ. हम सब उन की इस आदत से तंग आ चुके थे.

एक दिन हम ने उन्हें सबक सिखाने की योजना बनाई. जब नेताजी ने मुझ से चीनी लाने के लिए कहा तो मैं बाजार से चना ले आया. दूसरे लड़के से उन्होंने आलू मंगाए तो वह प्याज ले आया. तीसरे लड़के ने भी ऐसा ही किया. वह गेहूं के बदले गुड़ ले आया. इस प्रकार सभी ने नेताजी का काम उल्टापुल्टा कर दिया. तब से नेताजी हम लड़कों से सामान मंगाना छोड़ स्वयं बाहर जाने लगे. –नेयाज अहमद

*

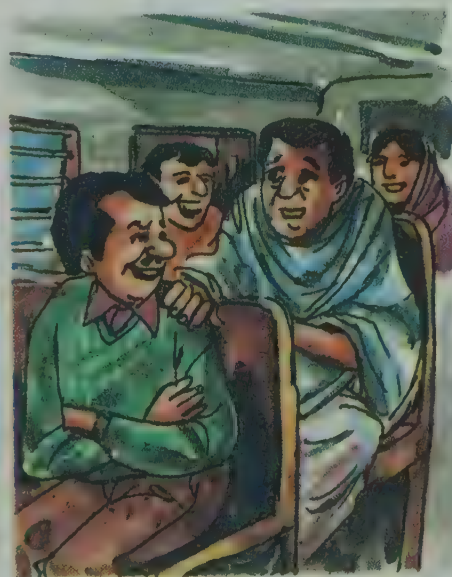
मेरे एक दोस्त को झूठ बोलने की बहुत बुरी आदत थी. हम ने उसे सबक सिखाने की ठान ली.

जब परीक्षा परिणाम घोषित हुआ तो हम ने उस से उस का परिणाम पूछा. उस ने फिर से अपनी आदतानुसार बताया कि वह प्रथम श्रेणी में पास हुआ है. हम ने उसे मिठाई खिलाने को कहा तो वह फौरन तैयार हो गया.

हम ने खूब मिठाई खाई और खाने के बाद उस से कहा, "द्वितीय श्रेणी में पास होने के लिए बधाई." दरअसल वह द्वितीय श्रेणी में पास हुआ था और हम उस का परिणाम पहले ही देख चुके थे.

अब तो हमारे उस मित्र का चेहरा वास्तव में देखने लायक था. –अभिषेक बंसीवाला

एक बार की बात है, मैं सर्दियों के मौसम में बस से दिल्ली जा रहा था. बस की सभी खिड़कियां ठंड की वजह से बंद थीं. इसी बीच पिछली सीट पर बैठे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने धूम्रपान करना शुरू कर दिया. हवा न निकल पाने के कारण बस में धुएं से घुटन होने लगी. उन महाशय पर अनुनयविनय का भी प्रभाव न पड़ा. मुझे एक तरकीब सूझी. मैं ने अपनी सीट वाली खिड़की खोल दी. परिणामस्वरूप बर्फीली हवा अंदर आने लगी.



कंपकंपी छूटने का सा माहौल हो गया.

अब पिछली सीट पर बैठे महाशय की हालत खराब हो रही थी. अब अनुनयविनय करने की बारी उन की थी, सो उन का चेहरा देखने लायक था.

रणजीत एस. शर्मा ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

रिफंड या उपहार

· व्यंग्य ● गोपाल शेखरन

जनवरी 1985 की बात है. मैं उन दिनों दिल्ली में आयकर अधिकारी था. मेरे ऊपर पूरी रेंज के प्रशासन का भार था.

मैं लंच में हाथ धोने के लिए कमरे से बाहर निकला तो देखा कि एक बेंच पर एक सरदारजी बैठे कुछ बड़बड़ा रहे थे और उन के हाथ और गरदन कांप रहे थे.

मैं ने उन से पूछा, "सरदारजी, आप को क्या तकलीफ है? लगता है आप कुछ कहना चाहते हैं...क्या बात है, मुझे बताओ? कुछ काम हो तो या काम न हो रहा हो तो..."

सरदारजी बोले, "मैं प्रातः 10 बजे से यहां भटक रहा हूं. मेरा यहां 4 हजार का रिफंड 2 साल से रुका पड़ा है. मुझे अभी तक नहीं मिला. बाबू कहता है कि फाइल नहीं मिल रही..."

मैं ने देखा कि बात करते समय सरदारजी के हाथ जोरजोर से कांप र उन के मुंह से जो बात निकली थी, व टूटीफूटी थी. मैं तुरंत समझ गया कि क्या तकलीफ है. अतएव मैं ने उन से "आप का तो सारा शरीर कांप रहा है हुआ आप को?"

सरदारजी का रिफंड जारी करवाने के लिए आयकर अधिकारी ने काफी भागदौड़ की थी. उस ने इस चक्कर में लंच तक नहीं किया था. लेकिन फिर भी यह सब आयकर अधिकारी के लिए महज कर्तव्य का पालन था परंतु सरदारजी के लिए तो किसी उपहार से कम नहीं था.

वह बोले, "मैं पिछले कई व 'पर्किंसन' बीमारी से पीड़ित हूं. पि नवंबर 1984 को मेरे साथ एक और ह हुआ, जिस से मैं अभी तक उबर नहीं हूं."

मैं ने पूछा, "क्या आप के पास भरने की उस साल की रसीद है जि आप का रिफंड बनता है?"

सरदारजी ने कांपते हाथों से दाईं से एक रसीद निकाली, जो मेरे हाथ हुए नीचे गिर गई.

मैं ने रसीद को पढ़ा. 1983-84 रिटर्न सरदारजी ने ठीक समय पर भ थी और उन का लगभग 4 हजार का बनता था. यह केस जिला 2 (10) क इतनी देर में वहां 1-2 चपरासी और 2 भी आ चुके थे. मैं ने वहां खड़े हरिकृष्ण कहा, "हरिकृष्ण, जिला 2 (10 सुभाषजी को बुला कर लाओ."

हरिकृष्ण फुरती से दूसरी ओर नि गया.

"सरदारजी को आराम से हाथ पकड़ कर मेरे कमरे में ले आओ," खड़े चपरासी मातवर सिंह को कह क अपने कमरे में आ गया.

थोड़ी ही देर में मातवर सिंह सरद को ले कर मेरे कमरे में पहुंच गया.



मातवर सिंह से कहा, "सरदारजी के लिए कुछ नमकीन, बिस्कुट और बिना चीनी की चाय ले आओ."

तभी वहां जिला 2 (10) के क्लर्क सुभाषजी पहुंच गए. मैं ने उन्हें सरदारजी की रसीद दिखाते हुए तनिक रोब से पूछा, "यह रिटर्न क्यों नहीं मिल रही है...यह अभी 1 घंटे में मिलनी चाहिए...सरदारजी को रिफंड आज ही मिलना चाहिए."

सुभाषजी बोले "साहब, सरदारजी मेरे पास भी आए थे. इन की रिटर्न फाइल में नहीं है...लगता है ऊपर 1983-84 के बंडलों में



उन्होंने फाइल में देखा कि सरदार
कर निर्धारण हो चुका था और
रुपए का रिफंड जारी हो चुका

रखी है. मुझे 1-2 दिन का
दिया जाए...मैं ढूंढ़ दूंगा."

मैं ने कहा, "सरदारजी
रोज धक्के नहीं खा सकते...मैं
नहीं सुनना चाहता...तुम यह बताओ कि
अभी 1 घंटे में कैसे मिल सकती है?

वह बोले, "यदि आप 2 आदम
साथ और लगा दें तो मैं रिटर्न आज ह
दूंगा."

मैं ने कहा, "तुम अपने कमरे में प
मैं तुम्हारे साथ 3 आदमी और लगाता ह
इस रिटर्न को ढूंढ़ेगा, वह सर्वश्रेष्ठ काय

श

होगा."

सुभाषजी मुसकराते हुए चले गए. मैं उन के पीछेपीछे बाहर निकला. मैं ने अपने चपरासी द्वारा अपने दफ्तर से 3 आदमी और बुलाए. थोड़ी देर में तीनों बाबू आ गए. मैं उन्हें ले कर जिला 2 (10) के कक्ष में पहुंचा.

वहां जा कर मैं ने सुभाषजी से पूछा, "1983-84 की रिटर्नें कहां पड़ी हैं?"

उन्होंने एक रैक के ऊपर पड़े 5-10 बंडलों की ओर संकेत करते हुए कहा, "वे सारे बंडल 1983-84 के ही हैं."

मैं ने उन तीनों आदमियों यानी हरमहिंदर, सुरेश व राजेश से कहा, "आप तीनों सुभाषजी के साथ अभी लग जाओ...यह रसीद है...इस की रिटर्न अभी ढूंढ़नी है...ऊपर से कमिश्नर साहब की आज्ञा है कि यदि रिटर्न न मिली तो मेरी भी खैर नहीं...बड़ी बदनामी होगी हम सब की..."

यह सुन कर हरमहिंदर बोला, "हम चारों अभी लग जाते हैं, आप निश्चिंत रहें. अभी रिटर्न ढूंढ़ कर लाते हैं..."

तभी वहां एक चपरासी आ कर नमस्कार करते हुए बोला, "साहब बुला रहे हैं. आप का लंच ठंडा हो रहा है..."

मैं ने कहा, "कमिश्नर साहब की आज्ञा है कि लंच तभी करना जब सरदारजी की रिटर्न मिल जाए और रिफंड जारी हो जाए."

फिर मैं ने वहां खड़ेखड़े ऊपर रखे सभी बंडलों को नीचे उतरवाया और जब काम शुरू हो गया तो अपने कमरे में आते हुए रास्ते में जिला 2 (10) के अधिकारी योगेशजी के कमरे में घुस गया. वह उस समय लंच कर चुके थे और चाय पी रहे थे. मुझे देख कर बोले, "आओ राजेंद्रजी, ठीक समय पर आए हो...चाय पीओ."

मैं ने कहा, "आप से आज मुझे एक व्यक्तिगत काम करवाना है...मेरे कमरे में एक सरदारजी बैठे हैं, उन का एक रिफंड है, रिटर्न ढूंढ़ रहे हैं बाबू लोग...रिटर्न मिलते ही रिफंड जारी कर देना...यह आप का मेरे ऊपर व्यक्तिगत एहसान होगा..."

वह बोले, "रिटर्न मिल जाए तो मुझे क्या आपत्ति है...रिफंड वाउचर बुक ले जाओ...आप स्वयं रिफंड बनवा कर स्वयं हस्ताक्षर कर रिफंड जारी कर देना...यह आप का मेरे ऊपर व्यक्तिगत एहसान होगा..."

वहां उपस्थित सभी ने इस बात पर ठहाका लगाया. चाय पी कर मैं जिला 2 (10) के कक्ष में पुनः गया. देखा तो पाया कि सारे आदमी जोरशोर से काम में लगे हैं.

मुझे वहां आया देख हरमहिंदर फिर बोला, "साहब, आप चिंता न करें. हम अभी फौरन से पेश्तर रिटर्न ढूंढ़ कर आप के कमरे में लाते हैं..."

इस प्रकार आश्वस्त हो कर मैं अपने कमरे में आ गया. अब तक मेरे चपरासी ने सरदारजी को चाय पिला दी थी. सरदारजी चुपचाप बैठे थे. लगता था उन का केवल मुंह हिल रहा है. शायद गुरवाणी का पाठ कर रहे थे...

"मिल गई, मिल गई, सरदारजी की रिटर्न मिल गई..." तभी चारों बाबू उछलते हुए मेरे कमरे में आए.

मैं ने देखा कि रिटर्न पर सरदारजी का कर निर्धारण हो चुका था. 3,900 रुपए का रिफंड जारी हो चुका था.

तभी मैं ने देखा कि सरदारजी उन क्लर्कों को, मुझे और अपनी रिटर्न को ऐसे देख रहे थे जैसे यह कोई साधारण प्रकरण न हो कर कोई कमाल हो गया हो.

मैं ने सुभाषजी से कहा, "यहां लिखा है कि रिफंड जारी हो गया है...मैं ने उस दिन तुम्हारे कक्ष में कुछ बंडल देखे थे...तुम ने कहा था कि ये रिफंड वाउचर डाकिए ने वापस कर दिए हैं...मुझे लगता है सरदारजी का वाउचर भी वापस आ चुका है."

सुभाषजी वह रिटर्न ले कर वापस चले गए. लगभग आधा घंटा बाद वह सरदारजी का पुराने रिफंड का लिफाफा ले कर आ

गए, जिसे डाकिए ने 'पावती वाला बारबार जाने पर नहीं मिला' टिप्पणी के साथ वापस कर दिया था.

मैं सुभाषजी को ले कर सीधा योगेशजी के कमरे में गया. उन्हें रिटर्न और वापस आया वाउचर दिखाया. यह सब देख कर वह संतुष्ट हो गए. फिर उन्होंने रिफंड वाउचर बुक निकाल कर सुभाषजी से कहा, "यह वाउचर अभी बना कर लाओ."

थोड़ी ही देर में नया रिफंड वाउचर बन गया. योगेशजी ने झट से हस्ताक्षर कर व मोहर लगा कर मुझे दे दिया.

वाउचर ले कर मैं तुरंत अपने कमरे में आ गया. फिर उसे सरदारजी के सामने रख कर कहा, "बधाई हो सरदारजी, आप का रिफंड बन गया. पूरे 3,900 रुपए का है. सरकार ने ब्याज भी दिया है... पूरे 5 हजार हैं."

अन्याय

जो अन्याय करता है वह सहने वाले की अपेक्षा हमेशा अधिक दुर्दशा में पड़ता है. –प्लेटो

सरदारजी ने रिफंड वाउचर हाथ में ले कर उसे देखा. उन्हें जैसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा हो. वह लड़खड़ाती आवाज में बोले, "मेरे 3 सगे भाई हैं. मैं ने तीनों से प्रार्थना की थी कि इस दफ्तर में से मुझे रिफंड ला कर दें पर तीनों ने मना कर दिया. मैं समझ नहीं पा रहा कि किन शब्दों में आप का शुक्रिया अदा करूं."

मैं ने कहा, "सरदारजी, मैं ने तो अपने कर्तव्य का पालन किया है. आज मैं आप की सेवा कर अपनेआप को महान समझ रहा हूं."

यह सुन कर सरदारजी ने फिर कांपते हुए कहा, "मेरे एक भाई ने तो यहां इसलिए आने को मना कर दिया कि यहां के बाबू बहुत परेशान करते हैं...पर आज पता चला कि यहां ऐसे आदमी भी हैं, जो मानव का दुखदर्द, तकलीफ और मानवता के प्रति करुणा और सहानुभूति रखते हैं...मैं तो आप को देखदेख कर अभिभूत हुए जा रहा था...आप मेरे काम के लिए कभी इध रहे थे तो कभी उधर, जैसे यह आप काम हो...आप का एक बाबू मुझे य गया था कि साहब खुद आप की रि रहे हैं...उस ने यह भी बताया था वि के काम के लिए साहब ने आज ल नहीं किया है...आप ने चाय तक न कौन हो सकता है आज के युग आदमी..."

यह सुन कर मैं ने उन के साम जोड़ दिए, "सरदारजी, आप बहुत हो गए हैं...मैं तो जनता का सेवक ह जो किया है वह मेरा कर्तव्य था..."

फिर मैं ने चपरासी से कहा कि स का हाथ पकड़ कर नीचे ले जाओ अ को स्कूटर में बिठा कर आना.

कुछ देर बाद मैं ने भी नीचे ज निश्चय किया. मैं नीचे पहुंचा तो दे सरदारजी खड़े थे और चपरासी स्कूट गया था.

मुझे आता देख सरदारजी बोले, ने क्यों कष्ट किया. आप का यह च आप की तरह ही है. आप ने मुझे जो दिलवाया है, वह आप के दफ्तर से होने वाले लाखों में से एक है...आप के यह एक बूंद के समान है, पर मेरे लि सागर के समान है...आप नहीं जानते कि कितनी जरूरत थी इस की..."

तभी चपरासी स्कूटर ले कर अ मैं ने स्कूटर वाले को 20 रुपए अपन से निकाल कर दिए और कहा कि यदि लगें तो सरदारजी को कुछ वापस मत और यदि एकाध रुपया ज्यादा ल सरदारजी से ले लेना.

चपरासी ने हाथ पकड़ कर सर को स्कूटर में बिठाया. बैठते ही उन्हों मुझ से हाथ जोड़ कर कहा, "यह मेरे लिए रिफंड नहीं, प्रकृति का उपह यह मेरे लिए 5 हजार नहीं, 5 ला बराबर है..."

तभी स्कूटर आगे निकल गया.

दिन दहाड़े

मैं कैशकाउंटर पर बैठा कैश गिन रहा था, इतने में एक व्यक्ति आया और एक 100 की गड्डी के बदले में खुले मांगने लगा.

मैं ने उस की गड्डी गिन कर ले ली और उसे 50 की दो पैक गड्डियां दे दीं. वह उसे ले कर चला गया.

करीब 10 मिनट के बाद वह व्यक्ति पुनः आया और 50 की दोनों गड्डियां वापस लौटाते हुए कहने लगा, "भाई साहब मेरा काम नहीं हो पाया इसलिए प्लीज मेरी 100



रुपए वाली गड्डी ही दे दीजिए."

मैं ने उस आदमी की तरफ देखते हुए उन दोनों गड्डियों को ले कर, जिस पर पिन लगी व मेरे हस्ताक्षर किए हुए थे, रख लिया व 100 रुपए की गड्डी उसे दे दी.

बाद में डबल काउंटिंग करने पर उन्हीं दोनों गड्डियों में 2-2 नोट कम थे. मुझे तुरंत 200 रुपए भरने पड़े. –गोपाल कृष्ण (सूरज)

*

एक बार मैं अपने परिवार के साथ रात्रि की गाड़ी से दिल्ली जा रहा था. गाड़ी चलने के कुछ देर बाद 'किचनयान' का बैरा डिनर का आर्डर लेने आया.

अन्य लोगों के साथसाथ मैं ने 5 लोगों के डिनर लाने का आर्डर बुक कर दिया. बैरा आर्डर ले कर चला गया.

जब गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकी तो एक अन्य बैरा, जो उसी तरह की वर्दी पहने हुए था, कागज की प्लेटों में खाना ला कर सब से कहने लगा कि जिन सज्जनों ने डिनर का आर्डर बुक कराया था, वे अपनाअपना खाना ले लें. सब को खाना बांट कर खाने के 15-15 रुपए ले कर चला गया.

अभी गाड़ी कुछ ही दूर चल पाई थी कि एक दूसरा बैरा खाने की थालियां ले कर आया और



'बुक' कराई गई सीट नंबरों को देखदेख कर थालियां बांटने लगा. जब हम लोगों ने बताया कि खाना तो थोड़ी देर पहले ही आप के किसी सहकर्मी ने हम लोगों को ला कर खिला दिया है, तो वह चौंक कर बोला, "मेरी बुक की गई सीटों पर कोई दूसरा व्यक्ति खाना ला ही नहीं सकता."

सारा वाकया बताने पर भेद खुला कि वह हरकत स्टेशन के प्लेटफार्म के किसी 'वेंडर' की थी, जो अपने को किचनयानकर्मी बता कर आप सभी को 'सस्ता खाना' महंगे दामों पर खिला गया.

–ओ.पी. निगम

*

मैं कुछ मित्रों के साथ लखनऊ घूमने गया. 'भूलभुलैयां' देखने के लिए आए पर्यटकों को रास्ता बताने तथा समझाने के लिए वहां कई 'गाइड' उपस्थित थे.

वे गाइड पर्यटकों से 100 से 150 रुपए की मांग कर रहे थे. एक नवयुवक गाइड मात्र 20 रुपए में हमें घुमाने को तैयार हो गया.

अंदर जाने के बाद उस ने हम से 50 रुपए की मांग की. नहीं देने पर उस ने हमें वहीं भटकने के लिए छोड़ कर चले जाने की धमकी दी. मजबूरन उसे 50 रुपए देने पड़े.



इस के बावजूद वह हमें वहीं भटकता छोड़ न जाने किस रास्ते से वहां से रफूचक्कर हो गया. वहां हम देर तक भटकते रहे.

कुछ देर बाद एक अन्य गाइड ने हम लोगों को परेशान देख कर परेशानी का कारण पूछा. सही बात जानने के बाद उस ने हमें बाहर निकाला. –पंकज साहनी ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

चंदन के टीके पर लाल धां

गतांक से आगे

कहानी • नीलम कुलश्रे

दूसरे दिन नरेन घर में घुसते ही अपनी बेटी से जोर से कहने लगे, "मीता, आज एक गजब का समाचार है."

"क्या?"

"आज इशिता को सारे शहर के बैंक की टेबलटेनिस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है," उन्होंने कनखियों से देखा कि उर्मिला के कमरे के परदे बिना हिले बेजान पड़े थे.

उन की कोशिश जारी रही. बैंक से लौट कर वह मीता को इशिता का कोई न कोई किस्सा सुनाते रहते. कुछ दिनों के बाद उन्होंने बहुत रस ले कर जरा ऊंची आवाज में बताया, "आज तो इशिता ने पार्टी दी."

"अच्छा? आप ने क्याक्या खाया?"

"गुलाबजामुन, समोसे. इशिता यह सब स्वयं घर से बना कर लाई थी. इतने स्वादिष्ठ थे कि अभी तक मुंह में पानी आ रहा है," कहते हुए उन्हें लगा उर्मिला अपने कमरे के परदे के पीछे खड़ी हो गई है. वह उत्साहित हो कर कहने लगे, "इशिता की एक तारीफ है."

"वह क्या?" मीता ने पूछा.

"वह सलवारसूट पहने या साड़ जींस या फिर झालर वाला फ्राक, पोशाकें उस पर बहुत सुंदर लगती हैं, खुबसूरत."

परदे के पीछे खड़ी उन की पत्न रहा नहीं गया. वह परदा हटा कर तेज बाहर निकल आई, "जब एक युवा ल आधी नंगी टांगें दिखाए घूमेगी तो सुंद लगेगी ही."

उन्होंने चौंकने का अभिनय वि "शाम का समय तो तुम्हारे संध्या जाप है. तुम अपने कमरे से बाहर कैसे आ ग

"मैं बाहर इसलिए आ गई हूं कि नाम को सुनतेसुनते मेरे कान पक गए



पूर्व कथा

अमीर बाप की बेटी उर्मिला से नरेन का विवाह भी अपमानजनक ढंग से हुआ था. शादी की पहली रात ही उस ने नरेन को उस की गरीबी का एहसास करा दिया और बेरुखा व्यवहार रखा.

पहली बेटी मीता की पैदाइश के वक्त उर्मिला ने धार्मिक पुस्तकें पढ़नी आरंभ कर दीं और वक्त के साथसाथ घरगृहस्थी के कामों को छोड़ कर अपने को पूजापाठ में डुबो लिया. इस वजह से नरेन की जिंदगी सब कुछ होते हुए भी बेजार बन गई.

आफिस में इशिता नरेन की समस्या जान लेती है और उसे उर्मिला को सही रास्ते पर लाने के लिए उस की सौत बनने का नाटक करने का उपाय सुझाती है. तब नरेन घर आ कर अपनी बेटी मीता के सामने इशिता की जोरजोर से बड़ाई करता है ताकि उर्मिला सुन ले. अब आगे...

"कौन से नाम को सुन कर?"

"इशिता...इशिता..."

"लेकिन तुम्हें दुनियादारी की बातों से क्या मतलब है? न तुम्हें मुझ से मतलब है. पूजापाठ करते समय भी दुनियादारी की बातें सुनती रहती हो?"

"जब आप रोज ही एक नाम की माला जपोगे तो कैसे आवाज कान में नहीं जाएगी?"

"इशिता है ही ऐसी लड़की कि कोई भी उस के नाम की माला जपने लगेगा," वह शरारत से मुसकराए, "क्या तुम्हें जलन हो रही है?"

"मुझे क्यों जलन होगी?" पत्नी ने बेवजह सफाई दी, "मुझे क्या लेनादेना. तुम किसी की भी तारीफ करो," वह फिर अपने क्रोध को नियंत्रित करती अपने कमरे में जा कर जोरजोर से 'श्रीराम, सियाराम' का जाप करने लगी. उस की अस्थिर आवाज बता रही थी कि उस का चित्त शांत नहीं है.

नरेन ने अपनी आदत नहीं छोड़ी. रोज घर आते ही इशिता की बात करने लगते.



वह चुपचाप नोट कर रहे थे कि मनु भी पास की कुरसी पर बैठा उन की एकएक बात ध्यान से सुनता रहता है और जैसे ही उन की बात समाप्त होती है, वह तुरंत मां के कमरे में चला जाता है. वह मन ही मन मुसकराते हैं, 'अच्छा, तो उन के पीछे यह नन्हा जासूस लगा दिया गया है.'

जब एक दिन मनु बहुत ध्यान से उन की बात सुन रहा था तो उन्होंने जानबूझ कर कहा, "मनु, मेरी पैंट की जेब में से रूमाल निकाल कर स्नानगृह में रख आना."

मनु ने हैंगर से पैंट उतारी और जेब में हाथ डाला तो उस में से 2 रूमाल एकसाथ निकल आए. वह उन्हें देख कर चीखा, "मां...मां...पिताजी की पैंट की जेब से एक लड़की का रूमाल निकला है."

अपने कमरे में बैठी उर्मिला फफक पड़ी. मनु के हाथ से रूमाल ले कर वह उन्हें दिखा कर बोली, "तो अब आप की जेब से लड़कियों के रूमाल भी निकलने लगे हैं?"

"तुम जोगन बन गई हो लेकिन मैं तो जोगी नहीं बना," वह ढीठ हो कर मुसकराए.

"तो इस उम्र में लड़कियों के साथ इश्क फरमाओगे?"

"नहींनहीं, लड़कियों के साथ ऐसा करना मुमकिन नहीं है. हां, तुम्हारे जोगन बनने से एक लड़की से इश्क फरमाना जायज है."

उन की बात सुन कर मीता अंदर तक आहत हो गई. उसे अपने पिता से ऐसी उम्मीद नहीं थी. अब वह समझदार हो गई थी. वह चुपचाप मनु को ले कर घर से बाहर निकल गई.

"2 बच्चे हो गए हैं. आप का अभी दिल नहीं भरा?"

"बच्चे होने से क्या होता है, प्यार के लिए तो हमेशा दिल प्यासा ही रहता है."

को घर ले आए. इशिता पहले अपने घ
कर दादीमां की हिदायतानुसार खूब स
आई थी. उस ने गहरी लाल, पीली
लाइनों वाली जयपुर की लहरिया साड़ी
रखी थी. दोनों हाथों में 12-12 लाल च
थीं. बीच में सुनहरी चूड़ियां पहनी हु
ब्यूटी पार्लर जा कर अपने खुले बाल
घुंघराला करवाया हुआ था. गहरी
लिपस्टिक, चमकती सुनहरी बिंदी मे
किसी कंपनी की चलताफिरता माडल
रही थी.

नरेन ने अपने हाथ में लिए हुए
के पैकेट मीता को थमाते हुए कहा, "
जरा बढ़िया सी चाय बनाओ. तुम्हारी इ
आंटी पहली बार घर आई हैं."

इशिता को देख कर उस ने मुंह बि

उर्मिला के रूखे स्वभाव व दिनरात पूजापाठ में रमे रहने से न परेशान था. यही कारण था कि सब कुछ पा कर भी वह खुशियों से दूर तनहा था. ऐसे हालात में इशिता ने नरेन व जिंदगी को गुलजार करने की जो युक्ति ढूंढ़ी, क्या उस में वह सफल रही?

"मैं भी तो संयम से रह रही हूं."

"तुम अपने दिल पर हाथ रख कर कहो कि यदि इस संयम से तुम संतुष्ट हो तो इतनी बेरौनक क्यों हो उठी हो? क्यों तुम भावनाशून्य हो गई हो? क्यों तुम्हारी आंखें निस्तेज लगती हैं?"

"यह आप की गलतफहमी है. मेरा चेहरा हमेशा पवित्रता से ढका रहता है."

"ऐसी पवित्रता किस काम की जो अपने से जुड़े लोगों के लिए कष्टप्रद हो? तुम्हें नहीं लगता, हमारे बच्चों का विकास कितना गलत ढंग से हो रहा है. वह बाहर वालों के सामने हमेशा कुंठाग्रस्त हो सहमे रहते हैं."

"मेरा भगवान उन्हें संभालेगा."

"तो जा कर उसी भगवान की माला जपो."

इस बहस के दूसरे दिन ही वह इशिता

दिया. फिर बिना नमस्ते किए वह रसो
चाय बनाने चली गई. वे दोनों जानबूझ
लच्छेदार बातें करते रहे. दोनों इतनी ज
हंसते कि कमरे में बहती हवा तक फड़
उठती. मीता ने चाय व नाश्ते की प्लेटें
पर तो ला कर रख दीं लेकिन उसे उन
की हंसी जहर लग रही थी. वह मनु व
कर अपनी सहेली के यहां चल दी.

नरेन ने मुसकरा कर कहा, "2 वि
आउट."

"पूरे विकेट उड़ने चाहिए," कह
इशिता खिलखिला पड़ी.

इस हंसी ने अंदर कमरे में बैठी उर्मिल
तिलमिला दिया. वह तेजी से बाहर
आई.

नरेन ने परिचय करवाया, "इ
मिलो, यह हैं मेरी पत्नी उर्मिला."



"सच कहिए, कल जिस होटल में खाना खाया था उस से अच्छा है," उर्मिला नरेन को सजल आंखों से देखते हुए बोली.

इशिता ने नमस्ते करते हुए कहा, "तो यह हैं आप की पत्नी. आप से मिल कर मुझे बहुत खुशी हुई."

"लेकिन मुझे आप से मिल कर बिलकुल भी खुशी नहीं हुई है. वैसे भी आप बैंक में क्यों नौकरी कर रही हैं, किसी कंपनी में माडलिंग कीजिए."

इशिता उस की जलीकटी बात पर मन ही मन मुसकराई. फिर बोली, "आप की पारखी नजर की दाद देती हूं. बनना तो मैं माडल ही चाहती थी किंतु पिताजी तैयार नहीं थे इसीलिए मैं ने बैंक में नौकरी कर ली."

नरेन भी पत्नी की जलन का मजा ले रहे थे. इस से पहले बैंक से यदि कोई मिलने आता था तो कभी भी उर्मिला अपने कमरे से बाहर नहीं निकलती थी लेकिन आज अपने को रोक नहीं पाई थी.

"आप नौकरी तो अच्छी तरह कर लेती हैं, अपने बास को पटा कर रखती हैं..."

"हां, आजकल जमाना ही ऐसा है. यदि बास को न पटाओ तो तकलीफ पाओ," कहते हुए वह हंस पड़ी.

"जी?" उर्मिला उस की बेहयाई पर अवाक रह गई, "चाहे बास शादीशुदा ही क्यों न हो, चाहे उस का घर ही क्यों न बरबाद हो जाए?"

"शादीशुदा बास या कुंआरे बास से क्या फर्क पड़ता है. बास तो बास ही है. उसे सलाम तो ठीकठीक करना ही पड़ता है. इस में उस का घर कहां बरबाद होता है?" फिर वह नरेन को देख कर इतराई, "क्यों नरेनजी, मैं ठीक कह रही हूं न?"

नरेन ने बड़ी अदा से झुक कर कहा, "आप की यही अदा तो हमें अच्छी लगती है."

"शिव...शिव..." उर्मिला 'राम सियाराम' भूल कर सिसकने लगी, "तुम मेरा घर बरबाद करने क्यों चली आई हो?"

"आप का घर? नरेनजी तो कह रहे थे आप तो घर में रह कर भी नहीं रहतीं."

"क्या मतलब?"

"मतलब आप ने संन्यास ले लिया है घर में ही."

"संन्यास ही तो लिया है, कोई मर तो नहीं गई जो यह बाहर की लड़कियों के साथ गुलछर्रे उड़ाते फिरें," वह चीखी.

"नरेनजी, आज इन का मूड ठीक नहीं है, मैं चलती हूं. कल का कार्यक्रम तो आप को याद है न?"

"कौन सा? अच्छा, वह...याद है. चिंता मत करो."

इशिता नजाकत से अपना पर्स उठा कर वहां से चल दी. उस के जाते ही उर्मिला मेज पर तरहतरह की मिठाई को देख कर बिफर उठी, "कभी इतना बढ़िया नाश्ता हम लोगों के लिए भी लाए हो?"

"अरे संन्यासिनीजी, इतनी अशुद्ध भाषा मत बोलिए. आप संसार के मायाजाल से अपने को बचा कर कमरे में भजन कीजिए," कहते हुए नरेन सीटी बजाते हुए तौलिया ले कर स्नानगृह में घुस गए व वहां से उस की सिसकियों का मजा लेते रहे.

थोड़ी ही देर में उर्मिला दरवाजा खटखटाने लगी, "सुनिए...सुनिए."

"क्या?"

"वह कल के कार्यक्रम के बारे में क्या कह रही थी?"

"कौन?"

उसे उस का नाम लेने में भी घृणा हो रही थी, "वही, लाल कपड़ों वाली चुड़ैल."

"कौन सी चुड़ैल?"

"वही."

"पानी की आवाज में कुछ सुनाई नहीं दे रहा," नरेन पानी की बौछार में मस्ती में गुनगुनाते रहे और उर्मिला अपने कमरे में कुढ़ती हुई रोती रही.

"अब?" नरेन ने बैंक में इशिता
पूछा.

"आज आप जरा देर से घर जाइए
हम दोनों के संबंधों को ले कर उर्मिल
को जरा और भड़कने दीजिए."

नरेन उस शाम राहुल के यहां चले
वहीं से खाना खा कर रात को 10 बजे
पहुंचे. देखा पत्नी राम नाम भूल कर ब
के कमरे में ही बदहवास सी घूम रही
बच्चे अंदर कमरे में पढ़ रहे थे. उन्हें
कर वह चिल्लाई, "इस समय आप घर अ
हैं? इतनी जल्दी क्या थी."

"ओह, जरा देर हो गई."

"कहां गए थे?"

"हमारे बैंक के पास एक बहुत अ
होटल खुला है. उस में जाने का मूड
गया."

"ओह, तो इस का मतलब आज ख
भी घर पर नहीं खाओगे?"

"हां, वह क्या है कि इशिता ने इज
कर के इतना कुछ खिला दिया कि पेट
तरह भर गया है. तुम आराम से रात के अ
ध्यान पर बैठ जाओ, मेरी चिंता छोड़ द

"तुम्हारी चिंता कैसे छोड़ दूं? आ
पत्नी हूं तुम्हारी."

"पत्नी? हा...हा...हा...इतने वर्षों
आज कैसे याद आ गया?"

"याद आने की क्या बात है? और
होटल में खाना खाने के बाद कहां गए थे

"खाना खाने के बाद सीधे घर आ
हूं."

"तो कहीं और भी जा सकते थे?

"हां, मूड का और भविष्य का
ठिकाना," वह आंखें झपका कर बोले.

"मतलब यदि मूड हो तो तुम इशि
को ले कर होटल में भी ठहर सकते हो
उस ने लगभग रोआंसे हो कर पूछा.

"हो सकता है, लेकिन इशिता माने
सही."

सुन कर उर्मिला का मुंह खुला का खु
रह गया, "मतलब तुम किसी भी हद

पार कर सकते हो?"

"जोगनजी, आप अपना जोग धारण कीजिए. यह रोमांस, होटल में रुकने की बात आप के पवित्र मुख से शोभा नहीं देती."

"मेरे मुख से क्या शोभा देता है यह मुझे देखना है. पत्नी के होते हुए भी तुम किसी भी लड़की से संबंध बनाने को उत्सुक हो?"

"यार, छोड़ो इस बहस को. अभी संबंध बने तो नहीं हैं, जब बन जाएंगे तो बता दूंगा," वह कपड़े बदल कर अपने बिस्तर पर लेट गए. वह पीछे बकती, कुढ़ती रह गई. वह चादर ओढ़े चुपचाप मन ही मन मुसकरा रहे थे कि इशिता की दादी का बताया तीर सही निशाने पर लगा है.

इशिता के निर्देशानुसार वह अगले दिन समय से ही घर पहुंचे. दरवाजा खुलते ही आश्चर्यचकित रह गए. पत्नी दरवाजा खोल रही थी. आज उस ने लाल रंग की सुनहरी पतली बार्डर वाली साड़ी पहन रखी थी. सूनी कलाइयां 4-4 लाल रंग की चूड़ियों और कंगन से सजी हुई थीं. माथे पर चंदन के टीके के स्थान पर बड़ी लाल सुनहरी बिंदी थी. गरदन में तुलसी की माला के स्थान पर सोने की चेन चमक रही थी. उस की सिंदूर से भरी मांग व दमकते हुए चेहरे को देख कर मुग्ध हुए बिना न रह सके वह. लेकिन अनजान बने उसे अनदेखा कर आगे निकल गए और रोज की तरह पुकारने लगे, "मीता...मीता..."

दरवाजा बंद करते हुए पत्नी ने कहा, "मीता और मनु को 2 दिन के लिए उस की मौसी ले गई है. दीपू की वर्षगांठ है."

"अच्छा," कह कर वह हाथमुंह धो कर रसोई में जाने लगे.

"आप रसोई में क्यों जा रहे हैं?"

"चाय बनाने?"

"नहीं, आप बैठिए. चाय मैं बनाऊंगी."

"लेकिन तुम्हारा तो संध्या जाप का समय है?"

"वह तो बाद में भी हो सकता है."



नजरें

मिलना था जो हम से
तो खुल के मिले होते,
तुम ने नजरें चुराईं हम से
और दिल से जा मिले.

–कनक अग्रवाल 'कनुप्रिया'

उर्मिला चुपचाप चाय बना कर ले आई. वह यह देख कर अवाक रह गए कि चाय के साथ घर की बनी मठरियां भी हैं.

"आज तो मेरी मेहमानों जैसी खातिर हो रही है," वह उस के बनाए नाश्ते को चखते हुए बोले.

"कैसा बना है?"

"वाह, लाजवाब."

"सच कहिए, कल जिस होटल में खाना खाया था उस से अच्छा है," वह उन्हें सजल आंखों से देखते हुए बोली.

"हां, सच ही बहुत अच्छा है."

नाश्ता करने के बाद वह उठते हुए बोले,"तुम ने इतना पेट भर दिया है अब मैं वहां क्या खाऊंगा?"

"कहां?"

"अब तुम से क्या छिपाना. इशिता को चाइनीज खाने का बहुत शौक है. आज उसे चाइनीज खिलाने का वादा किया है. बच्चे घर पर नहीं हैं. मैं बाहर खा लूंगा. आज तुम

खाना बनाने के झंझट से मुक्त हो. आज तुम अपने वेदपुराण आराम से पढ़ सकती हो. एकांत में जाप कर सकती हो. चाहो तो अपनी मंदिर वाली सहेलियों को घर पर बुला कर कीर्तन कर लो."

"क्यों मजाक उड़ा रहे हैं? हर समय इशिता का ही नाम लेते रहते हैं. कभी मेरी परवाह करते हैं?" पत्नी की आंखें डबडबा आईं.

"तुम ने कभी मेरे बारे में गंभीरता से सोचा है? खैर, अब तो हमारे रास्ते अलग हो चुके हैं...मैं तो जा रहा हूं..."

"मैं आप को आज कहीं नहीं जाने दूंगी," कहते हुए उस ने अपनी दोनों बांहें उन के गले में डाल कर कस दीं.

बरसों बाद स्त्री देह की मादक गंध उन के इतनी निकट थी. उन की देह थरथरा उठी. उन्हें लग रहा था बरसों जिस रेगिस्तान की तपन में अकेले झुलसते रहे हैं, इस गंध को पा कर वह उस के खुमार में डूबे जा रहे हैं. उन्होंने कसी भुजाओं से अलग होने की कोशिश की लेकिन उस गिरफ्त से निकल नहीं पाए. उर्मिला ने उन की आंखों में आंखें डाल कर कहा, "मैं ने कहा न, मैं अ आप को कहीं भी नहीं जाने दूंगी."

सुबह उर्मिला ने कमरे की खिड़कि पर से परदे हटाए. हलकी सुनहरी आभ जैसे उन की पलकों पर दस्तक दी. उ वापस आ कर उन के पास बैठ गई. फिर मुसकराहट से उन से बोली, "सुनिए, बैंक से 2 दिन की छुट्टी नहीं ले सकते है

"सोचेंगे," ऊपर से बनते हुए उन कहा, वरना मन तो हुआ कि कहें 2 दिन क्या यदि कहो तो 1 महीने की छुट्टी ले

"सोचने की बात नहीं है. अभी ' कहिए."

"अच्छा, तो चलो 2 दिन की छुट्टी ले लेंगे," उन्होंने उसे अपने पास खींचते हुए क

"सच?" पत्नी का चेहरा खुशी से च उठा. उधर वह सोच रहे थे कि जिस इशि के चंगुल से उन्हें बचाने के लिए प जीजान से जुट गई है, वह तो एक ना भर था, यह जान कर वह कितनी खुश हो पर इस बात की गवाही उर्मिला को इशि की दादी ही देंगी.



चेहरा फूल स

दर्द उस को ही ये मिला होगा
प्यार का जिस का सिलसिला होगा

जिस के आते ही बिखर गई खुशब
चेहरा फूल सा कोई खिला होगा.

ये कौन रातों में आह भरता है
कोई मेरी तरह दिलजला होगा.

किस ने सोचा था मुझ से नाता ते
पानी का इक बुलबुला होगा.

तुझ से हम इतना प्यार करते हैं
ख्वाब में भी न कोई गिला होगा.

–अरविंद श्रीवास

बात ऐसे बनी

मेरी सहेली का भाई सब्जी में लाल मिर्च कम खाता था. घर वालों को वह हमेशा 'कम मिर्च' डालने या उस के लिए बिना मिर्च की सब्जी निकाल कर रखने के लिए कहता था. पर कोई उस की बात पर ध्यान नहीं देता था.

एक दिन उस ने चुपके से सब्जी में एक चम्मच लाल मिर्च मिला दी और घूमने चला गया. वापस आया तो सब की हालत खराब थी. सब शिकायत कर रहे थे कि पता नहीं आज इतनी मिर्च कैसे पड़ गई.

उस ने कहा, "मैं ने ही एक चम्मच लाल मिर्च डाल दी थी. क्या आप लोग एक दिन तेज मिर्च नहीं खा सकते? मैं तो इतने दिनों से खा रहा हूं." इस के बाद जब भी घर में सब्जी बनती है उस के लिए बिना मिर्च की सब्जी निकाल कर रख दी जाती है. –सतेंद्र साहनी

*

हमारा एक मित्र बहुत ही कंजूस था. जब भी हम कुछ दोस्त किसी रेस्तरां या बाजार में कुछ खातेपीते थे, तो वह पैसे देने के समय अपनी जेब टटोलने लगता था.

इस बीच हम में से कोई भी एक व्यक्ति पैसे दे देता था. धीरेधीरे हम सभी दोस्त उस की इस आदत से परिचित हो चुके थे. एक बार हम ने एक रेस्तरां में खाना खाया. हर बार की तरह इस बार भी उस ने अपनी जेब टटोलनी शुरू कर दी. यह देख कर हम सब ने अपनी जेबें टटोलते हुए उस की तरफ देखना शुरू कर दिया. वह झेंप गया और उस ने तुरंत पैसे चुका दिए. –राजेश माहेश्वरी

*

मेरा बेटा छुट्टियों के दौरान बहुत देर से उठता था. जब भी हम उसे जगाते थे, उस का जवाब होता, "अरे, अभी तो इतने ही बजे हैं," और वह फिर सो जाता. एक दिन सुबह 7 बजे उस का मैच था और उस ने हमें 6 बजे जगाने के लिए कहा था. मैं ने उसे 6 बजे जगाया तो, "अभी तो 6 ही बजे हैं," कह कर सो गया.

मैं भी भूल गई और जब वह सो कर उठा तो 8 बज चुके थे. समय से नहीं पहुंचने के कारण उसे टीम से निकाल दिया गया. उस दिन से उस ने अपनी आदत छोड़ दी.

–डा. मनोरमा अग्रवाल

*

मैं रोज ट्यूशन पढ़ने जाती थी. आनेजाने का रास्ता बाजार से हो कर था. एक दिन वापस आते समय एक व्यक्ति मेरे साथसाथ चलने लगा, फिर बोला, "रिकशा कर लें?" मैं किसी तरह घर पहुंची.

दूसरे दिन भी वह व्यक्ति आ कर बारबार रिकशा लेने के लिए कहने लगा. तभी मैं ने एक परिचित लड़के को देखा. मैं ने उस से पटना मार्केट चलने के लिए कहा. वह लड़का कुछ कहने ही वाला था कि मैं ने आगे बढ़ कर उस आदमी से कहा, "मैं रिकशा कर लेती हूं आप आनेजाने का किराया 20 रुपए दे दें." मैं पैसे ले कर रिकशे में बैठ गई. उस लड़के को रिकशे में बैठने के लिए कह कर मैं ने उस आदमी से कहा, "अगर और भाड़ा देना हो तो कल भी आ जाइएगा. कल भी मुझे पटना मार्केट जाना है."

वह व्यक्ति चुपचाप चला गया और फिर कभी मुझे नजर नहीं आया. –नीलिमा सिंह

हमारी 10वीं कक्षा के अध्यापक पढ़ाते तो बहुत अच्छा थे पर उन की एक आदत हमें बहुत बुरी लगती थी. वह सभी छात्रछात्राओं को 'जंतु' कह कर पुकारते थे, जैसे "जंतु, तुम इस का उत्तर बताओ", "जंतुओं, चुप रहो."

एक दिन हमें मालूम हुआ कि उन्हें 'पुत्र' हुआ है. दूसरे दिन जब वह कक्षा में आए तो हम ने तालियां बजानी शुरू कर दीं. उन्होंने आश्चर्य से हमें देखते हुए कारण पूछा. हम सब एकसाथ बोल पड़े, "क्योंकि आप के यहां एक 'जंतु' ने जन्म लिया है न?"

वह थोड़े झेंप से गए. उस के बाद उन्होंने 'जंतु' कहना छोड़ दिया. –पप्पू कुमार सोनी

*

हमारी काम वाली रोज सुबह काम करने के बाद वापस जाते हुए पोलीथिन में कभी चाय, कभी चावल चुरा कर ले जाती थी. हम सब उस की इस आदत से परेशान हो गए थे.

एक दिन मैं ने चावल के पैकेट को नीचे से काट दिया और सावधानी से कटा हिस्सा दबा कर रख दिया. मौका देखते ही वह चावल का पैकेट उठा कर जाने लगी तो चावल जमीन पर बिखरने लगे. तभी हम लोग वहां आ गए. वह एकदम से घबरा गई और क्षमा मांगने लगी. साथ ही उस ने भविष्य में चोरी न करने का वचन दिया.

–डी. सेंवाल ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

"आप ने यह भार मुझ पर डाला ही है तो पूरी छानबीन कर के बताऊंगा. स्नेहा जैसी आप की बेटी है, वैसी मेरी," शेखर बाबू ने अपने चचेरे भाई सत्येन से फोन पर हो रहे वार्त्तालाप के समय ये उद्गार प्रकट किए.

प्रत्युत्तर

कहानी • शकुंतला श

"पर हमें जानकारी जरा जल्दी चाहिए. बात यह है कि भावी वर चिंतन के मातापिता आजकल यहीं हैं और चाहते हैं कि उन के भोपाल लौटने से पहले बात पक्की कर दी जाए," सत्येन ने अपनी समस्या बताई.

"आप चिंता मत कीजिए...2 दिन बाद मैं स्वयं ही फोन करूंगा," शेखर बाबू बोले.

"क्या हुआ?" सत्येन की पत्नी बिमला, जो फोन के वार्त्तालाप पर ही ध्यान केंद्रित किए बैठी थीं, उत्सुक स्वर में बोलीं.

"कुछ नहीं... शेखर कहता है कि पूरी पूछताछ करने में 2-3 दिन का समय तो लग ही जाएगा. सारी बातें कर वह स्वयं ही फोन करेगा," सत्येन बोले.

"मैं तो कहती हूं बात पक्की कर दीजिए, स्नेहा व चिंतन एकदूसरे को पसंद करते हैं. परिवार भी भला लगता है. अधिक मीनमेख निकालना ठीक नहीं," वह बोलीं.

"समझ में नहीं आता कैसी मां हो तुम. सब कुछ जानेसमझे बिना कैसे 'हां' कर दूं. पूरे जीवन का प्रश्न है, 1-2 दिन की बात तो है नहीं, शेखर ने कहा तो है कि 2 दिन में सब कुछ पता कर के फोन करेगा. मैं छानबीन किए बिना कोई निर्णय नहीं लेने वाला."

"जैसी तुम्हारी मरजी, चिंतन यहां पिछले 3 वर्ष से नौकरी कर रहा है. 1 वर्ष तक तो हमारे ही घर में किराएदार रहा, पर न कभी ऊंची आवाज में बोलते
कभी ताकझांक करते देखा. फिर
सरकारी बंगला मिल गया है, क्या
क्या शिक्षा व नौकरी, हर तरह से
स्नेहा की जोड़ी जंचती है. आदमी क
समझ तो मुझे भी है," सत्येन क



बिमला बोलीं.

"तो मैं कब इनकार कर रहा हूं.
में कोई पहाड़ तो नहीं टूट पड़ेगा."

"चिंतन के मातापिता यहां अ
हैं...चाहते हैं कि उन के जाने के पह
संबंध पक्का कर दिया जाए."

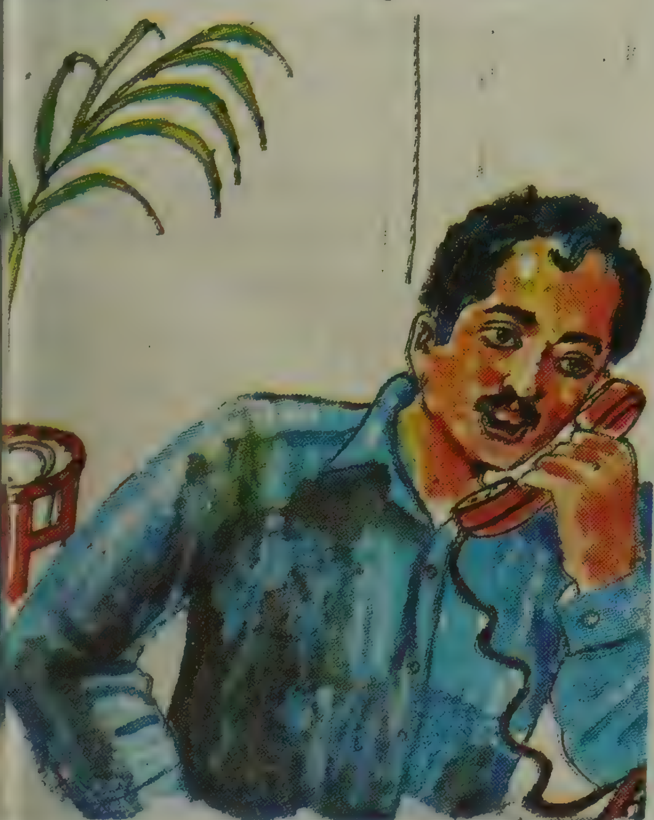
"कर देंगे. उस के मातापिता
पास और थोड़े दिनों तक रह सकते
भी उस के पिता रिटायर हो चुके हैं.
लिए जैसा हैदराबाद, वैसा भोपाल."

पर जब 1 सप्ताह बीत गया और शेखर बाबू ने फोन करने का नाम तक न लिया तो सत्येन ने स्वयं संपर्क किया.

"मैं तो 2-3 दिन से आप को फोन करने का प्रयत्न कर रहा था, पर फोन मिलता ही नहीं. आज भी सुबह से आप से संपर्क करने का प्रयत्न कर रहा हूं, पर बुरा हो टेलीफोन महकमे का," शेखर बाबू ने धाराप्रवाह बोलना प्रारंभ किया.

"ठीक है. छोड़ो इस फोनपुराण को और यह बताओ कि चिंतन और उस के परिवार के बारे में क्या पता किया? सब ठीकठाक है न? बात पक्की कर दें क्या?"

"नहीं, भाईसाहब, ऐसी भूल कभी मत कीजिएगा. यह तो अच्छा हुआ कि आप ने



चिंतन के संबंध में छानबीन करने का भार मुझे सौंप दिया, नहीं तो स्नेहा का जीवन बरबाद हो जाता," वह बोले.

"पहेलियां मत बुझाओ. यह बताओ कि बात क्या है."

"क्या बताऊं भाईसाहब, पर बिना बताए भी तो नहीं चलेगा. चिंतन के पिता ने अपनी पहली पत्नी को जला कर मार डाला और चिंतन की बहन ने 2 वर्ष पहले ही किसी विजातीय से विवाह किया है...और

चिंतन के मातापिता का स्वयं घर आ कर स्नेहा का हाथ मांगना उस के पिता सत्येन को पहले ही अटपटा लगा था, उस पर शेखर बाबू ने चिंतन के परिवार के विषय में ऐसी जानकारी दे दी कि उन्होंने इस विवाह से ही इनकार कर दिया. प्रत्युत्तर में चिंतन ने भी ऐसा खेल खेला कि उन की आंखें खुली की खुली रह गईं.

सब तो ठीकठाक है. चिंतन के बारे में हैदराबाद में ही छानबीन कर सकते हैं, वह तो वहीं रहता है," शेखर बाबू ने अपनी बात समाप्त की.

"अब उस की आवश्यकता नहीं रह गई है. ऐसे परिवार में स्नेहा का विवाह करने से तो अच्छा है कि मैं उसे कुएं में ढकेल दूं," सत्येन बुझे स्वर में बोले और रिसीवर रख दिया.

मेज पर नाश्ता लगा स्नेहा ने मातापिता को पुकारा. बिमला का ध्यान पति की ओर गया, जो हाथों में सिर थामे बैठे थे.

"क्या हुआ?" पत्नी ने घबरा कर पूछा.

"ऐसी कोई विशेष बात नहीं है, पर तुम यह समझ लो कि स्नेहा का संबंध चिंतन से नहीं हो सकता."

"क्यों?"

"प्रश्न मत पूछो, व्यर्थ के प्रश्नों का कोई लाभ नहीं है. मैं ने बहुत सोचसमझ कर स्नेहा के हित में यह निर्णय लिया है."

"पर बात क्या है?"

"बात जान कर क्या करोगी? बात जो भी है, इतनी गंभीर है कि उस घर में स्नेहा

के संबंध की बात मैं सोच भी नहीं सकता. एक बात और, स्नेहा को समझा दो कि चिंतन से बातचीत करने, मिलनेजुलने की आवश्यकता नहीं है," सत्येन ने अपनी बात स्पष्ट की.

स्नेहा द्वार की चौखट पकड़ कर स्तब्ध खड़ी सोचने लगी कि ऐसा क्या खोट है चिंतन के परिवार में? वह समझ नहीं सकी, पर पिता से पूछने का साहस न हुआ. वैसे भी उन की बात तो पत्थर की लकीर होती है, एक बार कुछ निर्णय ले लिया तो टस से मस नहीं होते.

चिंतन के मातापिता कुछ दिन प्रतीक्षा करते रहे. उन्हें स्नेहा बहुत भा गई थी. वैसे सुंदरता के सामान्य मापदंडों के अनुसार कोई विशेष बात नहीं थी उस में, पर व्यक्तित्व

"मैं तो केवल यह जानना चाहता हूं कि जो हुआ वह क्यों हुआ?" चिंतन ने स्नेहा से पूछा.



का आकर्षण देखने वाले को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता था. सब से बड़ी बात तो यह थी कि वह चिंतन को बहुत पसंद थी. पर जब स्नेहा के मातापिता ने बेरुखी दिखाई तो वर पक्ष का अभिमान जागा. सत्येन के मित्रों के माध्यम से उन्होंने यह बात भी उन तक पहुंचा ही दी कि उन के बेटे के लिए भला लड़कियों की कोई

कमी है?

स्नेहा की एम.एससी. अंतिम
परीक्षा करीब थी. अतः उस ने वि
बात ही दिमाग से निकाल दी और
की तैयारी में जुट गई.

अंतिम परीक्षा के बाद स्नेहा
प्रतीक्षा में खड़ी थी. स्नेहा के पास चि
स्कूटर आ कर रुका. पहले तो स्ने
ध्यान ही नहीं गया, पर जब उस के
स्वर ने वहां खड़े सब लोगों क
आकर्षित कर लिया तो स्नेहा ने भ
कर दृष्टि घुमाई.

"अरे चिंतन, तुम यहां," अ
मिश्रित स्वर में स्नेहा ने पूछा.

"अरे, यह प्रश्न तो मुझे पूछना
था. मैं तो रोज इसी राह से आताज
पर तुम यहां क्या कर रही हो?"
मुसकराया.

"मेरी परीक्षाएं चल रही थीं. य
ही अंबेडकर कालिज में
केंद्र था. आज अंतिम
के बाद यहां बस की
कर रही हूं और कोई
चाहिए तुम्हें," स्नेहा मुस

"नहीं, आज के लि
ही पर्याप्त है. मुझे तो
बात का है कि तुम यहां
देने आती रहीं और अ
पहले कभी मेरी दृष्टि
नहीं पड़ी," चिंतन भी
में मुसकरा दिया.

"देख रहे हो, इनसा
कैसा समुद्र लहरा रहा है
भीड़ में किसी परिचित व
पाना क्या आसान है," स्नेहा बोली.

"चलो, तुम्हें घर छोड़ दूं. इस
तुम्हें साढ़े 6 से पहले कोई बस नहीं
वाली," चिंतन ने प्रस्ताव रखा.

"नहीं, मैं चली जाऊंगी. आज
विशेष जल्दी नहीं है. अंतिम प्रश्नपत्र
आ रही हूं," स्नेहा ने टालना चाहा.

"व्यर्थ के बहाने बनाने की आव

नहीं है. हमारे साथ हालात ने जो भी खेल खेला हो, पर कम से कम हम आज भी मित्र तो हैं ही," चिंतन ने भीगे स्वर में कहा.

स्नेहा ने चौंक कर अपनी दृष्टि चिंतन के चेहरे पर टिका दी. वह एकाएक गंभीर हो गया था. चिंतन से उस की घनिष्ठता भौतिकी के माध्यम से बढ़ी थी. बी.एससी. में परीक्षा के समय चिंतन ने उस की काफी सहायता की थी. उस का सरल व सहज व्यवहार उसे घर में सब का प्रिय बना गया था. पर स्नेहा प्रभावित हुई थी उस के सभ्य व शालीन व्यवहार से उसे, नहीं याद कि चिंतन ने कभी कोई हलकी बात की हो.

रक्षाबंधन का वह दिन उस की याद में आज भी उतना ही ताजा है. 2 बहनों के परिवार में रक्षाबंधन आते ही घर अजीब सी उदासी से भर जाता था. चिंतन के किराएदार बन कर आने के बाद उस का मृदु व सरल व्यक्तित्व उसे कुछ इस तरह प्रभावित कर गया था कि वह इस भावना पर किसी संबंध की मुहर लगाने को बेचैन थी. वह बाजार जा कर सुंदर सी राखी खरीद लाई थी. वह जब थाली सजा कर चिंतन के कमरे में पहुंची थी तो वह प्रस्तर प्रतिमा बना खड़ा रह गया.

'यह सब क्या है?' कुछ क्षणों के बाद चिंतन ने ही मौन तोड़ा.

'आज रक्षाबंधन है न...मैं तुम्हारे लिए राखी लाई हूं.'

'ओह, तो आज रक्षाबंधन है, पर मैं इन सब ढकोसलों में विश्वास नहीं करता. फिर इस तरह दूसरों को भाईबहन बनाना क्या आवश्यक है? क्या हम में इतना साहस नहीं है कि अपनी मित्रता को किसी रिश्ते का नाम दिए बिना स्वीकार कर सकें?" चिंतन ने इतने गंभीर स्वर में कहा कि फिर स्नेहा राखी बांधने का साहस न कर सकी. पर उस दिन अपने कमरे में सब से छिप कर वह फूटफूट कर रोई थी.

उसी शाम जब वह बैडमिंटन खेलतेखेलते थक कर बैठ गई थी तो साथ के कोर्ट में खेलता चिंतन भी वहीं आ कर



अंधेरा

क्यों डरते हो
अंधेरों से इतना,
उजालों का साथ ही
कितना है,
ढूंढ़ लो हमदर्द कोई गैरों में
आखिर अपनों का
साथ ही कितना है?

–इंद्रजीत सिंह

बैठ गया था.

'क्या बात है, स्नेहा, आज बहुत रोई हो क्या? आंखें अभी तक सूजी हुई हैं,' उस ने पूछा.

'मैं रोऊं या हंसूं, आप की बला से...आप के लिए तो सब ढकोसला है.'

'तुम समझने का प्रयत्न तो करो, इस आधुनिक काल में क्या महत्त्व रह गया है ऐसे त्योहारों का? पुरुष वर्ग छाती ठोंक कर अपनीअपनी बहनों की रक्षा का व्रत लेता है, पर तर्कबुद्धि से सोचो तो कितना हास्यास्पद लगता है यह सब. मुझे तो लगता है, नारी को हीन व अबला साबित करने तथा पुरुष के अहंकार को और बल देने के लिए ही ऐसे त्योहारों को प्राचीन काल में प्रारंभ किया गया होगा.'

'पता नहीं तुम क्याक्या सोचते रहते हो. मेरी तो समझ में कुछ आता नहीं,' चिंतन के मुख से रक्षाबंधन की नई व्याख्या सुनते

ही स्नेहा सुबह की सभी बातें भुला कर मुसकरा दी.

कुछ ही दिनों बाद चिंतन को कंपनी की ओर से बंगला मिल गया और वह प्रकरण वहीं समाप्त हो गया.

फिर एक दिन अचानक ही चिंतन ने अपने मातापिता के साथ घर आ कर सब को चौंका दिया था.

'चिंतन आप सब की बहुत प्रशंसा करता है,' आते ही चिंतन के पिताजी बोले.

'आप का बेटा भी तो लाखों में एक है,' सत्येन ने भी औपचारिकता निभाते हुए कहा.

'फिर ठीक है. क्यों न आप उसे अपना बेटा बना लें,' चिंतन की माताजी बोलीं.

'जी, मैं समझा नहीं?' सत्येन तो एकदम से ही हड़बड़ा गए थे.

'हम चिंतन के लिए आप की स्नेहा का हाथ मांगने आए हैं,' वह पुनः बोलीं.

'ठीक है. हमें भला क्या एतराज हो सकता है,' बिमला पुलकित हो उठी थीं.

पर सत्येन को न जाने क्या बुरा लग गया था. वर पक्ष वाले स्वयं चल कर कन्या मांगने जाएं, ऐसा तो न देखा, न सुना. अवश्य ही दाल में कुछ काला है. उन्होंने पहले तो चिंतन के कार्यालय जा कर उस के बारे में पता लगाया और फिर उस के परिवार के संबंध में पता करने के लिए भोपाल निवासी अपने दूर के रिश्ते के चचेरे भाई शेखर बाबू को खोज निकाला. शेखर बाबू द्वारा दी गई सूचना के बाद तो वह टस से मस होने को तैयार नहीं थे.

तभी एक झटके के साथ स्कूटर रुका और स्नेहा की विचारशृंखला भंग हो गई. सोचतेसोचते ही वह कब स्कूटर पर बैठ गई थी, उसे पता ही नहीं चला था.

"क्या स्कूटर में कुछ गड़बड़ है?" उस ने प्रश्न किया.

"नहीं आओ, कुछ जलपान कर के चलते हैं," बोलते हुए चिंतन रेस्तरां की ओर बढ़ गया.

"मुझे देर हो जाएगी, पिताजी [illegible] होंगे," स्नेहा ने टालने का प्रयत्न कि[illegible]

"बैठो भी...10 मिनट में कौन स[illegible] टूट पड़ेगा."

स्नेहा को चिंतन के सामने की [illegible] पर बैठते हुए लगा कि उस की तीख[illegible] उस के चेहरे पर ही टिकी है. वह ब[illegible] सी हो उठी.

"कैसी हो, स्नेहा? अब आगे क्य[illegible] का कार्यक्रम है?"

"पता नहीं...शायद पीएच.डी. क[illegible] फिर कोई नौकरी मिल गई तो वही कर[illegible]

"उस के बाद?"

"उस के बाद क्या?"

"क्यों, विवाह आदि करने का [illegible] कोई विचार नहीं?"

"जो कुछ हुआ, उस के लि[illegible] सचमुच बहुत शर्मिंदा हूं," स्नेहा ने [illegible] झुका लीं.

"मैं तो केवल यह जानना चाहता [illegible] जो हुआ, वह क्यों हुआ?"

"वह सब भूल जाओ, चिंतन[illegible] एक से एक अच्छी लड़कियां मिल ज[illegible] कहीं और विवाह कर लो," स्नेहा [illegible] के बीच भी मुसकरा दी.

"काश, जितनी सरलता से तुम [illegible] दिया, उतनी ही आसानी से मैं तुम्हारी [illegible] पर अमल कर पाता."

"और चारा भी क्या है. मुझे [illegible] लगता, पिताजी अब मानेंगे."

"मैं तो केवल कारण जानना [illegible] हूं. शायद मैं तुम्हारे पिताजी की गलत[illegible] दूर कर सकूं," चिंतन ने पूछा.

"हमारे एक दूर के रिश्ते के च[illegible] हैं, भोपाल में...उन से पिताजी ने [illegible] परिवार के संबंध में पता करने को क[illegible] उन्होंने पता लगाने के बाद पता नहीं [illegible] से क्या कहा कि उन्होंने तुरंत अपना [illegible] बदल दिया," स्नेहा बोली.

"अच्छा, क्या कहा था उन्होंने[illegible] अपने परिवार के संबंध में मैं स्वयं भी[illegible]

ऐसी बात नहीं जानता कि जिसे जान कर तुम्हारे पिताजी को बुरा लगे."

"बात क्या थी, वह तो मैं नहीं जानती..."

"और जानने का यत्न भी नहीं किया?" चिंतन तनिक रुष्ट हो उठा.

"मैं ने सोचा, जान कर भी क्या होगा... जो होना था वह तो हो ही गया."

"हां, तुम्हें क्या पड़ी है कुछ जानने की...दीवानों की तरह तुम्हारे पीछे तो मैं पड़ा हूं."

"रहने भी दो, चिंतन. इन फिल्मी अदाओं में मेरा जरा भी विश्वास नहीं है. हो सकता है, तुम्हें मुझ से भी अच्छी जीवनसंगिनी मिल जाए."

"नहीं, स्नेहा, मेरे जीवन में अब तुम्हारा स्थान कोई नहीं ले सकेगा. यह स्थान सदैव रिक्त ही रहेगा," चिंतन भावुक हो उठा.

स्नेहा ने चिंतन को ध्यान से देखा, 'क्या सचमुच संसार में ऐसे लोग होते हैं, जो मजनू की तरह प्यार में दुनियाजहान को भूल जाएं,' वह सोचने लगी.

"क्या हुआ? इस तरह मौन क्यों हो गईं?" चिंतन ने पूछा.

"कुछ नहीं. मेरे पिताजी से चाचाजी ने क्या कहा, यह मैं पूछ कर बताऊंगी. चलो, अब चलें, देर हो रही है," स्नेहा उठ खड़ी हुई.

स्नेहा को चिंतन द्वार से कुछ दूर ही छोड़ कर चला गया.

"स्नेहा, तुम चिंतन के स्कूटर पर बैठ कर आई हो?" घर में घुसते ही मां ने प्रश्न किया.

"हां, मां. मैं बस स्टाप पर प्रतीक्षा कर रही थी. वह तो अच्छा हुआ कि चिंतन ने मुझे वहां खड़े देख लिया, नहीं तो न जाने कितनी देर बस की प्रतीक्षा करनी पड़ती. वैसे एक बात है मां, तुम्हारी दृष्टि बड़ी पैनी है. चिंतन तो मुझे दूर से ही छोड़ कर चला गया था, पर तुम ने ताड़ ही लिया."

"युवा बेटी की मां को चौकस रहना ही पड़ता है, स्नेहा. मुझे तो यही डर है कि कभी तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें चिंतन के साथ घूमते देख लिया तो पता नहीं क्या कर बैठें," मां ने अपना पक्ष प्रस्तुत किया.

"मां, ऐसावैसा कुछ नहीं है हम दोनों के बीच. फिर मैं क्या रोज चिंतन के साथ घूमती हूं कि पिताजी देख लेंगे?" उस ने स्पष्ट किया.

"क्या कहूं, सब वक्त का खेल है, नहीं तो ऐसा अच्छा घरवर था. ऊपर से स्वयं



"...कभी उस टेबल कभी इस टेबल पर हट कर कैसी कहानी लिख..."

"...इस बार फिल्म के लिए कुछ हट कर कहानी लिख रहा हूं."

चल कर तुझे मांगने आए थे. तुम्हारे पिताजी ने भी जिद ही ठान ली, नहीं तो अब तक तो विवाह हो गया होता," मां ने क्षोभ प्रकट किया.

"मां, चाचाजी ने ऐसी क्या सूचना दी थी जिसे सुनते ही पिताजी चिंतन के विरुद्ध हो गए थे?" स्नेहा मुसकराई.

"कहते थे कि चिंतन के पिता ने पहली पत्नी को जला कर मार डाला था और उस की बहन ने किसी विजातीय से विवाह कर लिया है," वह बोलीं.

"अच्छा?" स्नेहा की आंखें आश्चर्य से फैल गईं.

"क्यों...ऐसे चौंक क्यों गईं तुम?"

"बात ही चौंकने की है. चिंतन ने अपने परिवार के संबंध में ऐसी कोई बात कभी बताई नहीं," स्नेहा बोली.

"ऐसी बातें कौन बताता है बेटी. आजकल लोग केवल अपनी प्रशंसा करते हैं, कोई ऐसीवैसी बात हो तो साफ छिपा जाते हैं."

स्नेहा चुप रह गई, पर मन में हलचल मची हुई थी. अपनी प्रयोगात्मक परीक्षा समाप्त होते ही वह चिंतन से मिलने उस के कार्यालय जा पहुंची.

"तुम यहां..." चिंतन उसे देखते ही चौंक गया.

"मुझे तुम से जरूरी काम है," स्नेहा गंभीर स्वर में बोली.

"तो फोन कर लिया होता, यहां नहीं आना चाहिए था. देखो, सब कैसे घूर रहे हैं," चिंतन धीमे स्वर में बोला.

"ठीक है, तो मैं चली जाती हूं," नाराज हो कर स्नेहा जाने के लिए मुड़ी.

"तुम गेट के पास मेरी प्रतीक्षा करो, मैं 15 मिनट में आता हूं," चिंतन अनुनयपूर्ण स्वर में बोल कर पुनः अपने कार्यालय में विलीन हो गया.

जब स्नेहा खड़ीखड़ी उकता गई और लौटने की बात सोच ही रही थी कि चिंतन अपना स्कूटर ले कर आ गया.

"बहुत देर हो गई क्या?" चि
हौले से पूछा.

"पता नहीं," कहती स्नेहा स्कू
पिछली सीट पर बैठ गई.

"तुम ने बताया नहीं, तुम्हे
आवश्यक कार्य था," चिंतन ने पूछा

"कोई विशेष बात नहीं थी.
प्रयोगात्मक परीक्षा थी, सो तुम से
चली आई. तुम मुझे बस स्टाप पर छो
अपने कार्यालय जा सकते हो."

"तुम अभी तक नाराज हो," चि
एक रेस्तरां के सामने स्कूटर रोका.

"नहीं, मैं भला कौन होती हूं
होने वाली."

"देखो, जब तुम्हारे आने की
मिली, तब हमारी एक आवश्यक मीटिं
रही थी. कंपनी के सभी वरिष्ठ अ
वहां उपस्थित थे. अब जरा स्वयं को
कर यह बताओ कि इतनी महत्त्वपूर्ण
क्या थी, जिसे बताने का लोभ तुम
नहीं कर पा रही थीं?"

"आज मां ने बताया कि भोप
शेखर चाचाजी ने पिताजी को क्या सू
दी थीं..."

"क्या?"

"तुम्हारे पिताजी ने अपनी पहली
को जला कर मार डाला था और तुम्हारी
ने किसी विजातीय से प्रेम विवाह किया

"क्या कह रही हो? मेरे पिताज
केवल एक ही विवाह हुआ है और
एकमात्र बहन अभी बी.ए. में पढ़ रही है
मैं जातिपांति को अधिक महत्त्व नहीं
चिंतन आश्चर्यचकित स्वर में बोला.

"फिर चाचाजी ने ऐसा क्यों कि
स्नेहा हैरान हो उठी.

"वही तो मेरी समझ में नहीं अ
है. तुम्हारे परिवार से उन के संबंध कैसे

"संबंध?" हंसी स्नेहा, "जब मैं
कक्षा में थी तब वह एक बार यहां आए

"समझ में नहीं आता कि क्या
जाए. सोचता हूं, एक बार भोपाल

आऊं," चिंतन भी उलझन में था.

कुछ ही दिन बाद जब चिंतन घर आया तो स्नेहा ही नहीं, उस के मातापिता भी आश्चर्यचकित रह गए. सत्येन को तो उस के इस तरह घर आने की बिलकुल आशा नहीं थी.

"मैं कल भोपाल जा रहा हूं. सोचा, जाने से पहले आप लोगों से मिलता चलूं," चिंतन बैठते हुए बोला.

"कोई विशेष काम है या यों ही मिलने जा रहे हो?" बिमला ने पूछा.

"जी, कल पिताजी का फोन आया था. वह मेरा रिश्ता पक्का कर रहे हैं. यों तो उन्होंने निर्णय ले लिया है, पर लड़की के पिता आप के संबंधी हैं. अतः पिताजी ने कहा कि आप से मिल कर परिवार के संबंध में जानकारी प्राप्त कर लूं," चिंतन बोला.

"हमारे संबंधी? कौन हैं वे," सत्येन ने उत्सुकता से पूछा.

"कोई शेखरजी हैं...भोपाल में ही नेहरू नगर में रहते हैं...वहीं कालिज में व्याख्याता हैं," चिंतन ने बताया.

"यह नहीं हो सकता," एकाएक सत्येन नाराज हो उठे.

"क्या?"

"हमें उलटीसीधी पट्टी पढ़ा कर शेखर अपना उल्लू सीधा नहीं कर सकता," वह चिल्लाए, "कब जा रहे हो तुम भोपाल?"

"आज शाम..." चिंतन बोला.

"मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूं," उन्होंने अपना निर्णय सुनाया.

"क्या सचमुच तुम भोपाल जा रहे हो?" द्वार तक चिंतन को छोड़ने आई स्नेहा ने पूछा.

"हां."

"जो तुम ने कहा वह सत्य है?"

"मैं असत्य क्यों कहूंगा, स्नेहा? वैसे भी तुम्हें आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से. पर एक बात पक्की है... हमारा संकट टल गया है," चिंतन शरारत से मुसकराया तो स्नेहा भी संतुष्ट भाव से मुसकरा दी. ●



"मेघना बेटी, तुम से कोई मिलने आया है," मां की पुकार सुन उसे थोड़ी हैरानी हुई क्योंकि इतवार होने के कारण कालिज की कोई सहेली भी नहीं आ सकती थी. बैठक में आ कर देखा कि पिताजी के साथ सोफे पर रहमान बैठा हुआ है.

रहमान को देख कर मेघना के आश्चर्य का ठिकाना न रहा और थोड़ी घबराहट भी हुई कि अब क्या कह कर मातापिता से उस का परिचय कराएगी. कहीं वे नाराज हुए तो?

"तुम," उस ने अचकचा कर पूछा.

"तुम 2 दिन से कालिज नहीं आईं न, इसलिए चला आया," रहमान ने मेघना के चेहरे पर छाई परेशानी को देख लड़खड़ाते स्वर में सफाई पेश की.

"मुझे जरा बुखार था, इसलिए नहीं आ सकी, पर तुम..." बात अधूरी छोड़ उस ने रहमान की ओर सवालिया दृष्टि से देखा, मानो पूछ रही हो कि तुम्हें आने की क्या जरूरत थी?

"पिताजी, यह रहमान है, मेरे साथ ही पढ़ता है...मतलब सीनियर है. लेकिन हम पढ़ने में मदद लेते रहते हैं," मेघना ने बात को संभालने की कोशिश करते हुए कहा.

"अच्छाअच्छा, अपने मित्र को चाय नहीं पिलाओगी," उस के पिता ने वातावरण को सहज बनाने का प्रयास किया.

"जी, अभी लाई," कह कर वह उठने को हुई तो मां बोलीं, "तुम बैठो, बेटी, बेकार थकावट होगी, मैं ले आती हूं."

इस दौरान मेघना के पिता ने रहमान से उस के परिवार, उस की पृष्ठभूमि इत्यादि के बारे में अनेक सवाल कर डाले. रहमान समझ गया था कि कोई भी पिता अपनी बेटी के मित्र के बारे में पूरी जानकारी रखना चाहता है, इसलिए वह शिष्टता से जवाब देता रहा. उस की शालीनता से मेघना के पिता गंगादास प्रभावित हुए बिना न रह सके.

"अच्छा, तुम दोनों चाय पीओ, तब तक मैं जरा नहा लूं. इतवार को हर काम में देरी हो जाती है," कह कर गंगादास अंदर चले गए.

जब मां भी रसोई में चली गईं तो मेघना के सब्र का बांध टूट गया, "क्या जरूरत

खोखली मानसिकता

कहानी • सुमन बाजपेयी

थी तुम्हें आने की, कहीं मेरे मातापिता बुरा मान जाते और तुम्हारी बेइज्जती कर देते तो क्या होता?"

"और क्या करता, 2 दिन से तुम आ नहीं रही थीं. तुम जानती तो हो कि 1 दिन भी तुम्हें न देखूं तो अजीब सी बेचैनी होने लगती है. फिर आज नहीं तो कल उन्हें बताना ही पड़ेगा. प्यार कहीं छिपाया जा सकता है? मेरी नौकरी लग ही गई है, अब शादी की बात भी तो करनी ही है," रहमान ने प्यार से समझाते हुए कहा.

"बात छिपाने के लिए ही तो मुझे झूठ बोलना पड़ा कि तुम मेरे कालिज में पढ़ते हो."

"इस में झूठ कहां है? पढ़ता तो तुम्हारे ही कालिज में था," रहमान ने हंसते हुए कहा.

"अच्छा बाबा, अब जाओ."

"कल सुबह कालिज जाते समय मिल

रही हो न?"

"हां...पर अब जाओ," मेघना ने उसे लगभग धकेलते हुए कहा.

रहमान का आना मेघना को अच्छा लगा था, पर वह डर रही थी कि कहीं घर में डांट न पड़े. इसलिए चुपचाप जा कर अपने कमरे में लेट गई.

सीनियर होने के बावजूद भी रहमान और मेघना में बहुत जल्दी ही घनिष्ठता हो गई थी. इस घनिष्ठता की वजह यह थी कि रहमान कालिज का एक लोकप्रिय छात्र था. हर अवसर, हर समारोह में उस की उपस्थिति अनिवार्य थी. इन सब के अतिरिक्त उस के व्यक्तित्व व स्वभाव की शालीनता, अध्यापकों के प्रति आदर वगैरह ऐसे गुण थे, जो सहज ही सब को आकर्षित कर लेते थे.

मेघना के मातापिता को वैसे तो रहमान हर तरीके से योग्य व भला लड़का लगा. उस से मेघना की दोस्ती पर भी उन्हें एतराज नहीं था. परंतु विवाह की बात आते ही धर्म आड़े आ गया. इस खोखली मानसिकता में पड़ कर आखिर उन्होंने मेघना का क्या भला किया?

मेघना तो उस से मिलते ही उस की आंखों में खो गई थी, उस की योग्यता की कायल हो गई थी. पढ़ाई में एकजैसे विषय होने के कारण वह बारबार उस से मिलती. धीरेधीरे उन के बीच एक रिश्ता कायम हो गया, जिसे वे कुछ नाम दे पाते, इस से पहले ही कालिज में चर्चे होने लगे कि वे दोनों एकदूसरे के प्यार में डूबे हुए हैं.

इस प्यार में वे यह भी भूल ग
कि उन के मध्य मजहब की दीवार खड़ी
जिसे तोड़ने के लिए उन्हें कठिन प्रयास क
पड़ेंगे. रहमान की नौकरी लग जाने तक
उन्होंने यह सोच कर चुप ही रहने का फै
किया कि बेरोजगार युवक से विवाह क
को मेघना के मातापिता राजी न होंगे. ले
अब तो यह भेद खोलना ही था ताकि
शादी के बंधन में बंध सकें. जहां मन मि
हों वहां धर्म भी बौना लगने लगता है...

"मेघना, रहमान चला गया क्या
पिता की आवाज ने उस की तंद्रा तोड़ी.

"जी, हां," मेघना ने डरते हुए उ
दिया.

"बहुत भला लड़का है. इतनी सभ्
से बात करने वाले लड़के आजकल दि
ही कहां हैं."

उन की बात सुन उसे हैरानी ह
क्योंकि वह तो लड़कों से मेलजोल न र
के ऊपर भाषण सुनने की उम्मीद कर
थी.

"काफी होशियार भी है, नौकरी
अच्छी करता है, खानदानी लड़का है. भ
मुझे तो उस से मिल कर अच्छा लगा."

मेघना ने राहत की सांस ली कि व
से कम उन्हें रहमान पसंद तो आया, फि
विवाह की रजामंदी लेने में ज्यादा दिक्क
नहीं आएगी.

"मुझे तो मिलनसार भी लगा...एक प
में ही अपनों सा लगने लगा. तुम ने दे
नहीं, उस ने हमारे पांव छुए थे. क्या तहज
है, दूसरे धर्म का होने पर भी हमारे संस्क
की उसे परवाह है," मां ने पल्लू से ह
पोंछते हुए कहा.

"ठीक कहती हो," गंगादास ने भाव
स्वर में कहा, "उसे देख ऐसा लगा कि हम
बेटा जीवित हो सामने खड़ा हो गया है.

अपने जवान मृत बेटे की याद से दो
की आंखें नम हो गई थीं, जिस की गत
कार दुर्घटना में मौत हो गई थी.

वातावरण को सहज बनाने के खय
से मेघना बोली, "मां, जोरों की भूख ल



"कोई फायदा नहीं होगा, वे अपनी मानसिकता से जकड़े हुए हैं," मेघना बोलते हुए फफक उठी.

है, जल्दी से खाना दे दो."

अपनी खुशी के अतिरेक में वह भूल गई कि खाना खातेखाते वह रहमान की बहुत तारीफ कर गई है. अपनी आंखों में छिपे उस के प्रति अपने भावों को वह दर्शा गई है और उस की गुलाबी रंगत से उस के मातापिता यह समझ गए हैं कि यह मात्र मित्रता नहीं बल्कि मेघना रहमान से प्यार भी करती है.

अपने दिल की गहराइयों के सागर में हिचकोले खाने के बाद जब मेघना ने पानी का गिलास उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो ठिठक गई. उस के मातापिता उसे अपलक निहार रहे थे. वह न जाने कब से रहमान की प्रशंसा किए जा रही थी. इस मौन को भेदने का उसे साहस न हुआ. उसे किसी भयंकर विस्फोट की आशंका होने लगी.

"मेघना," मां का इतना गंभीर स्वर सुन वह असहज हो उठी.

"तुम रहमान के साथ चाहे कितना ही घूमो या पढ़ाई में मदद लो, हमें एतराज नहीं है क्योंकि वह एक शरीफ लड़का है. उस से कुछ सीख सको, यह तो और भी अच्छा होगा. वह घर भी आए, तब भी आपत्ति नहीं, लेकिन इतना हमेशा याद रखना कि अपनी इस दोस्ती को किसी रिश्ते का रूप देने की कभी कोशिश मत करना, वरना अंजाम अच्छा न होगा. बाद में तुम्हें दुख हो,

इस से बेहतर है, अपने मन को अभी से तैयार कर लो."

"तुम्हारी मां ठीक कह रही है," गंगादास ने सहमति जताते हुए कहा, "हमें लड़केलड़कियों की दोस्ती पर कोई एतराज नहीं, किंतु विवाह के मामले में हमें अपने संस्कारों व धर्म का सम्मान करना होगा. तुम्हारी शादी जब भी होगी, अपनी ही जातबिरादरी में होगी. इसलिए अगर तुम रहमान को ले कर ऐसा कुछ सोचती हो तो उसे भुला दो. हां, एक दोस्त की हैसियत से उस से मिल सकती हो."

मेघना को ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसे भट्ठी में झोंक दिया है और उस के मनप्राण झुलस गए हैं. दोहरी मानसिकता वाले अपने मातापिता पर उसे बेहद गुस्सा आया. रहमान की योग्यता, उस की तहजीब उन्हें पसंद है, उस से मिलनाजुलना भी नागवार नहीं लगता, लेकिन विवाह? धर्म का सवाल क्या इतना महत्त्वपूर्ण होता है कि कोई किसी को पसंद करने के बावजूद उस से बेटी का विवाह नहीं कर सकता? लेकिन वह और रहमान एकदूसरे के बिना नहीं रह सकते. इस के लिए चाहे उसे लाख विरोध सहना पड़े या स्वयं विरोध करना पड़े, वह करेगी. आखिर यह उस की जिंदगी का सवाल है.

अगले दिन सुबह रहमान से मिलते ही मेघना फफक उठी.

"क्या बात है मेघ, मातापिता ने कल कुछ कहा? गलती मेरी थी, मुझे यों नहीं आना चाहिए था," रहमान को अफसोस था.

"नहीं, वह बात नहीं है, उन्हें तुम्हारे आने पर कोई एतराज नहीं है, न ही हमारी दोस्ती से नाराज हैं. पर उन्होंने साफसाफ कह दिया है कि अगर मैं तुम से शादी करने का खयाल रखती हूं तो इसे मन से निकाल दूं क्योंकि वह विजातीय लड़के से विवाह कर नाक नहीं कटवाना चाहते..."

"ओह, अब क्या होगा, मेघ? खैर, उन्हें समझाएंगे कि हम एकदूसरे को कितना चाहते हैं."

"कोई फायदा नहीं होगा. वे अ
मानसिकता से जकड़े हुए हैं. उन के
किसी के अरमान या चाहत कोई माने
रखते."

"फिर क्या हल है इस का...मांबाप
मरजी के बिना कैसे विवाह होगा? वैसे
उम्मीद है, मेरे वालिद मान जाएंगे."

"एक ही रास्ता है...तुम मुझे भगा
ले चलो. हम शादी कर लेंगे...फिर वे हम
क्या कर सकते हैं. रहमान, मुझे तुम पर
विश्वास है, मैं तुम्हें सब कुछ अर्पण क
को तैयार हूं," मेघना ने एकांत का फा
उठा उस के सीने से लगते हुए कहा.

"मेघना," लगभग उसे परे धकेलते
रहमान गुस्से से चिल्लाया, "मुझे तुम से ऐ
उम्मीद नहीं थी. प्यार में अंधी हो कर
मानमर्यादा सब कुछ भूल गई हो. शादी
पहले मैं तुम्हें छूना भी गलत समझता हूं अ
तुम भागने की बात कर रही हो...शर्म अ
चाहिए तुम्हें. जो मांबाप इतने जतन और प्
से हमें पालते हैं, उन के साथ इस त
विश्वासघात नहीं किया जा सकता. उन
भावनाओं को ठेस पहुंचा कर क्या हम सु
हो पाएंगे?"

"मुझे माफ कर दो, रहमान. तुम्हें
देने के खयाल से ही मैं कांप गई थी...
अब होगा क्या?"

"पता नहीं, हम सिर्फ वक्त का ही इंतज
कर सकते हैं...या मांबाप की इच्छा के अ
झुकना पड़ेगा. अच्छा यही होगा कि
एकदूसरे से मिलना भी बंद कर दें."

रहमान की किसी भी बात को टाल
मेघना के बस की बात नहीं थी, इसीलि
वह अपनी दुनिया में सिमट गई. जब मातापि
यह कहते कि आजकल रहमान घर न
आता या तुम ने उस से मिलना क्यों छ
दिया तो उसे बहुत गुस्सा आता. आखिर उ
उन्हें रहमान अच्छा इनसान लगता है तो उ
दामाद के रूप में स्वीकारने में संस्कार अ
धर्म आड़े आ जाते हैं. समाज का भय सर्वो

बन जाता है. उस का मन करता, वह इन बंधनों को तोड़ दे. पर रहमान का खयाल आते ही वह अपने जज्बातों को काबू में कर लेती. उस ने अपना ध्यान पढ़ाई में लगा दिया था.

एक दिन खुशीखुशी पिताजी जब आफिस से लौटे तो मेघना से बोले, "बेटी, हमारे दफ्तर में एक नया लड़का नियुक्त हो कर आया है. मुझे तो भई बहुत अच्छा लगा. उड़तीउड़ती खबर भी सुनी है कि किसी कंपनी के मालिक का बेटा है और पिता चाहते हैं कि वह अलग जगह काम कर के अनुभव प्राप्त करे. मैं चाहता हूं कि तेरी शादी उस से हो जाए, हमारी ही बिरादरी का है. बस, अब सिर्फ तुम पर यह निर्भर करता है, मतलब उसे अपनी ओर आकर्षित..." उन्होंने अपनी बात अधूरी ही छोड़ दी.

मेघना का मन हुआ कि वह चिल्ला कर कहे कि साफ क्यों नहीं कह देते कि मुझे उसे पटाना होगा. उस का मन वितृष्णा से भर उठा.

"मेघना की मां, मैं ने इसी इतवार को उसे खाने पर बुला लिया है. खयाल रहे, इंतजाम बढ़िया होना चाहिए और मेघना, तुम से भी मैं अच्छे व्यवहार की उम्मीद रखता हूं."

पुनीत से मिल कर उसे लगा कि मानो वह किसी शातिर नेता के पास बैठी है, जिस की लच्छेदार बातों से मातापिता दोनों प्रभावित हो चुके हैं. लेकिन मेघना को वह अच्छा न लगा.

पुनीत की बातों से लग रहा था कि जैसे वह बारबार अपने पिता की दौलत का रोब डालने की कोशिश कर रहा है.

खाना खा कर अपने निराले अंदाज में, जो साफ बनावटी लग रहा था, उस ने भोजन की भरपूर प्रशंसा की और पिताजी से बोला, "अगर आप आज्ञा दें तो मैं मेघना को साथ ले जाऊं. दरअसल मुझे अपनी बहन के लिए एक उपहार खरीदना है."

"हांहां, क्यों नहीं," गंगादास को तो



प्यार का इनाम

रौनकें मुहब्बत की खामोश हो गईं
मुसाफिरों को रास्ते में शाम हो गई,
दूर तलक है मजबूरियों का सिलसिला
सिसकियां प्यार का इनाम हो गईं.

–शमा खान

जैसे मुंहमांगी मुराद मिल गई थी. वह तो चाहते थे कि मेघना उस के साथ घुलमिल कर दोस्ती बढ़ाए.

"मेघना ने प्रतिवाद के लिए मुंह खोला ही था कि मां बोल उठीं, "बेटी, जाओ थोड़ा घूम आओ...अपने लिए भी कोई पोशाक ले आना."

उस के बाद उसे अकसर किसी न किसी बहाने पुनीत के साथ घूमने भेज दिया जाता. उस दौरान वह चुप ही रहती और पुनीत बोलता रहता. उस का व्यक्तित्व रहमान के सामने उसे बौना प्रतीत होता और उस के हर भाव में नाटकीयता का एहसास होता.

परंतु धीरेधीरे वह उस के उपहारों, प्रेम, स्पर्श, चुंबन आदि से प्रभावित होती गई. मातापिता की खुशी देख कर उसे लगने लगा, यही सही है. एक दिन उन की सगाई कर दी गई. उस के बाद तो पुनीत जबतब उसे

रात में भी साथ ले जाने लगा. उसे वह चूमने की कोशिश करता, हाथ पकड़ सीने से चिपटाने की कोशिश करता तो वह चाह कर भी विरोध न कर पाती. कई बार उस ने ऐसा करने से रोका तो वह बोला, "ओह मेघना, आखिर हमारी शादी होने वाली...फिर यह झिझक क्यों?"

पुनीत की हरकतों का जिक्र उस ने कई बार मां से करना चाहा, पर शर्म के मारे कह न पाई.

एक दिन वह रात को फिल्म दिखाने के बहाने उसे एक घर में इसलिए ले गया कि वह अपना फ्लैट उसे दिखाना चाहता है. अकेलेपन का फायदा उठा, शादी जल्दी करने का वादा कर उस ने मेघना के साथ जबरदस्ती की.

मेघना रोतेरोते कहती रही कि यह बलात्कार है, पर वह माना नहीं. अगले दिन उस की अवस्था देख मातापिता को संदेह हो गया. लेकिन फिर भी यह सोच खामोश हो गए कि इन की शादी तो होने ही वाली है. पुनीत 2-4 दिन के बाद आया और फिर वही किस्सा दोहराया. फिर अचानक उस का आना कम हो गया.

"मेघना की मां, गजब हो गया. पुनीत ने शादी करने से इनकार कर दिया है. अब क्या होगा?" गंगादास ने एक दिन टूटे हुए स्वर में कहा.

"पर क्यों?"

"वह कहता है कि जो लड़की शादी से पहले मेरे साथ सब कर सकती है, वह न जाने कैसी है. उस का चरित्र कहां ठीक होगा."

मेघना समझ नहीं पा रही थी कि उस की गलती कहां थी. वह तो बस, इतना समझ चुकी थी कि उस की जिंदगी बरबाद हो चुकी है. उस के मातापिता की खोखली मानसिकता की भेंट चढ़ चुकी है.

"अब क्या होगा, बेटी?"

"कुछ नहीं होगा. अब आप अफसोस क्यों कर रहे हैं? बलात्कार ही तो हुआ है आप की बेटी के साथ, वह भी एक सजा[illegible] युवक के द्वारा. अगर दूसरे धर्म का लड़[illegible] होता तो दुख की बात होती. मुझे मेरे ह[illegible] पर छोड़ दीजिए," मेघना ने सिसकते [illegible] कहा.

"बेटी, हमें माफ कर दो. हम ना[illegible] ही झूठी मानसिकता के चक्र में फंस गए[illegible] हम तेरे कुसूरवार हैं...तू जो चाहे सजा[illegible] सकती है," गंगादास ने हाथ जोड़ते [illegible] कहा.

"पिताजी, अब इन बातों का कोई अ[illegible] नहीं है. किसी को कुसूरवार ठहरा कर [illegible] सजा दे कर मेरी इज्जत तो वापस नहीं [illegible] जाएगी, मेरा मानसम्मान नहीं लौट आए[illegible] मेरे लुटे हुए अरमानों का हिसाब नहीं च[illegible] जाएगा," मेघना सिसकती हुई बोली अ[illegible] अपने कमरे की ओर भाग गई.

वह जीभर कर रो लेना चाहती [illegible] वैसे भी रोना ही अब उस की नियति [illegible] गई थी. उस के प्यार को धर्म की खोख[illegible] दीवार ने अपने अंदर चिन लिया था अ[illegible] उस की इज्जत को पुनीत के छल ने कुच[illegible] दिया था.

मेघना ने तय कर लिया था कि अब [illegible] जिंदगी अपनी तरह से जीएगी. हालांकि [illegible] भीतर से पूरी तरह टूट चुकी थी और कि[illegible] भी तरह का फैसला करने की क्षमता ख[illegible] होती महसूस कर रही थी. लेकिन इनस[illegible] कब तक आंसू बहा सकता है. समय ए[illegible] ऐसा लेप होता है, जो घावों को सुखा दे[illegible] है, चाहे निशान बाकी रह जाएं, पर पी[illegible] निरंतर नहीं बनी रहती. बस, कभीकभी बी[illegible] बातों को याद कर चुभन जरूर होती [illegible] मेघना को रहरह कर यही लगता कि [illegible] 'अपवित्र' है, तब उसे अपने शरीर से घृ[illegible] होने लगती.

खालीपन से बचने के लिए उस[illegible] बच्चों के एक स्कूल में नौकरी कर [illegible] बच्चों की मीठी बातों और चंचलता के बी[illegible] वह सब कुछ भूल जाती. स्कूल से लौट[illegible] तो दोपहर में थोड़ी देर सुस्ता टाइपिंग अ[illegible]

शार्टहैंड सीखने चली जाती. छुट्टी के दिन उस ने चित्रकला सीखना शुरू कर दिया. व्यस्तता को उस ने अपने जीवन का साथी बना लिया था. मातापिता अपनेआप को अपराधी मानते थे. अतः सदा उसे सहयोग और खुशी देने की कोशिश करते.

एक दिन जब मेघना स्कूल से लौट रही थी, उसे खयाल आया कि पेंटिंग का कुछ सामान लेना है. अतः वह बाजार की ओर चल दी. एक बहुमंजिला इमारत के निचले तल में दुकान थी. वह सामान खरीद ही रही थी कि तभी उसे महसूस हुआ कि एक चिरपरिचित चेहरा पान वाले की दुकान पर खड़ा है. मन में एक तीव्र अनुभूति हुई और दिल की धड़कन तेज हो गई.

वह जल्दी से जाने को मुड़ी ही थी कि नजरें टकरा गईं. रहमान को पास आता देख वह जल्दीजल्दी बाहर निकलने को उतावली हो गई. पर उस समय लंच का समय होने के कारण भीड़ थी.

"मेघना, भाग क्यों रही हो?" रहमान के स्वर ने उसे जड़ कर दिया.

"अपरिचय की डोर अभी बनी कहां है, जो मुझ से मिलना नहीं चाहतीं. आओ, काफी हाउस में बैठते हैं."

मेघना यंत्रवत सी उस के पीछे चलती चली गई.

रहमान को सामने पा मेघना के सब्र का बांध टूटने लगा था, पलकों पर नमी छा गई थी.

"कितनी मुरझाई हुई लग रही हो. ऐसा लगता है, बरसने को भी तैयार हो?"

रहमान के सवाल से उस की सिसकी फूट पड़ी. फिर अपने को संभाल कर बोली, "तुम्हें क्या, तुम ने तो बड़ी आसानी से कह दिया था कि मांबाप की मरजी सर्वोपरि है, इसलिए मिलना तक छोड़ दिया. इस बीच तुम्हारी मेघ ने कैसेकैसे आंधीतूफान सह डाले."

"मैं मायूस हो कर कुछ समय के लिए अपनी आपा के पास मुरादाबाद चला गया था. चंद दिनों पहले लौटा. यहां 5वीं मंजिल पर स्थित एक प्राइवेट कंपनी में मैनेजर हूं, पर तुम?" रहमान के स्वर में जिज्ञासा थी.

उस की थाप पड़ते ही मेघना के दर्द के बंद कपाट खुलते गए और रहमान हैरानपरेशान हो सुनता रहा.

"मेघ, कहीं कुछ खत्म नहीं हुआ है. मेरा प्यार अब भी तुम्हारे लिए तड़पता है. तुम से दूर रह कर जाना कि तुम्हें भुला पाना या किसी और को तुम्हारी जगह दे पाना



"स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण की योजना बहुत सफल रही है. हमारे सारे कुशल एवं श्रेष्ठ कर्मचारी नौकरी छोड़ प्रतिस्पर्धी कंपनियों में चले गए हैं."

कितना मुश्किल है. तुम्हें मेरा प्रेम स्वीकार करना ही होगा. इस बार चाहे तुम्हारे मातापिता रोकें, मैं विद्रोह करूंगा."

"लेकिन रहमान, अब मैं तुम्हारे लायक नहीं रही हूं. अपने प्यार को अपवित्रता की ओढ़नी नहीं पहना सकती. मेरा शरीर ही नहीं, मेरी 'आत्मा' भी छलनी हो गई है. जूठी थाली को सामने देख तुम भी यों ही उठ जाओगे...अभी भावना में बह कर चाहे तुम मुझे अपना लो, पर बाद में मुझ से घृणा करोगे."

"वाह मेघ, क्या खूब समझा है अपने रहमान को. मेरे प्यार को इतना बौना और स्वार्थी बना दिया? क्या मैं एक हादसे को अपने ऊपर हावी होने दूंगा? पवित्रता, अपवित्रता सब शब्दों के छल हैं. क्या प्रेम का कोई मूल्य नहीं? जब दो लोग एकदूसरे को प्यार करते हैं तो बाकी बातें बेमानी हो जाती हैं.

"फिर जरा सोचो कि कोई विवाहित स्त्री अगर किसी परपुरुष से संबंध रखे और उस के पति को पता तक न चले तो इस का मूल्यांकन कैसे करेंगे? फिर शरीर की पवित्रता कैसे आंकी जाए? प्यार में विश्वास जरूरी है, आस्था जरूरी है और एकदूसरे का दुखदर्द समझने की भावना जरूरी है. यह मत सोचना कि मैं इस तरह तुम पर कोई एहसान कर रहा हूं...न ही मैं कोई देवता हूं. बस, तुम मेरी चाहत हो, यही बात मैं जानता हूं और समझता हूं."

रहमान अब मेघना की नजरों में बहुत ऊंचा उठ गया था.

"लेकिन चाहे तुम जिंदगी को जिस पहलू से देखो, मैं अपने से कैसे लड़ूं कड़वाहट को कैसे बाहर निकालूं जो अंदर जज्ब हो गई है...तुम मुझे मेरे हाल छोड़ दो," कहतेकहते मेघना उठने को तो रहमान के बलिष्ठ हाथों ने उसे बैठने मजबूर कर दिया, "मेघना, इतना जान कि मैं तुम्हीं से निकाह करूंगा क्योंकि सिर्फ तुम्हें प्यार करता हूं."

"पर लोग तुम्हें ताने कसेंगे... बदनामी के कारण तुम्हारी जिंदगी पर धब्बा लगेगा. फिर क्या तुम्हारे अम्मीअ मुझे अपना पाएंगे? यह समाज प्यार दलीलों को नहीं समझता है, यह तो कलंक के छींटों को गिनता है. पुनीत भी एक सार्थक व उज्ज्वल भविष्य को सकता है, पर मैं नहीं...असल में मुझे तो का अधिकार भी नहीं है..."

"बस, बहुत हुआ," रहमान के की कठोरता से मेघना बेचैन हो गई.

"चुपचाप मेरे साथ चलो, मैं आज तुम्हारे मातापिता को अपने विवाह की सू देना चाहता हूं."

रहमान का निर्णय सुन गंगादास हैरान गए, "तुम सचमुच महान हो, बेटा. हमें कर दो."

"नहींनहीं, आप मुझे शर्मिंदा न बस, हमें इजाजत दें..."

"पर पिताजी, आप का धर्म, आप समाज..." मेघना अभी भी अपने माता पर विश्वास नहीं कर पा रही थी.

"बस कर बेटी, आज तो हमें कर दे...इसी समाज और धर्म के आवरणों को ओढ़ कर हमें अपराधी ब पड़ा. अब तो इस केंचुल को उतार बेटी," गंगादास का दर्द आंखों में छ आया था.

"जा बेटी, तेरा सुखद भविष्य बुला रहा है, उसे समेट ले," मां के का स्पर्श पाते ही मेघना पिघल उठी सारी कड़वाहट आंसुओं के रास्ते बाहर लगी.

फर्क

गुलाम और आजाद में यही फर्क है कि गुलाम मरने के लिए जीता है मगर आजाद जीने के लिए मरता है, गुलाम की जिंदगी मौत के बराबर है मगर आजाद की मौत भी जिंदगी है.

—अज्ञात

पड़ोसी

कहानी ● डा. मंजु सिन्हा

अचानक देव साहब के घर से रोने की आवाज आने लगी. मेरा परिवार टीवी पर दिखाई जा रही फिल्म का आनंद ले रहा था.

मैं भी फिल्म के दृश्यों में खोई थी. ऐसा लग रहा था, जैसे रोने की आवाज नायक के छोटे भाईबहनों की है, जिन्हें वह पिछले दृश्य में शराब के नशे में रुई की तरह धुन चुका था.

अचानक मेरी बड़ी बेटी उठ कर खड़ी हो गई तो मैं ने उसे खा जाने वाली नजरों से देखा, 'नालायक कहीं की...टीवी पर



बिजली विभाग की मेहरबानी से शायद ही कभी कुछ देखने को मिलता है. चोरों की तरह आधी रात को बिजली आती है और 10-12 बजे दिन में गायब हो जाती है. कभी भूलेभटके रहे भी तो इन बच्चों की उठकबैठक के कारण कोई कार्यक्रम देखना मुश्किल हो जाता है,' मैं बुदबुदाने लगी.

"मां, देव फूफाजी रो रहे हैं, बूआ और स्वीटी दीदी भी...लगता है, फूफा के पिताजी की मृत्यु हो गई है, वह 'बाबूजीबाबूजी' कह रहे हैं," बेटी ने मेरे कान के पास मुंह ला कर कहा.

"क्या?" अनायास मेरे मुंह से निकला. इस 'क्या' में दुख, आश्चर्य तो था ही, साल भर से उस परिवार से चल रही हमारी कुट्टी का दंश भी सम्मिलित था.

पैरों में चप्पलें डालते हुए मैं ने इन से

ही तो पटना से आया, तब आप भलेचं
रात भर में ही कहर टूट पड़ा..."

मैं ने देव साहब के सिर पर हाथ
उन की पत्नी का सिर मैं ने अपने कं
रख कर कहा, "दीदी, धैर्य रखिए. स
मां बनने वाली है. आप लोगों को यों
देख वह भी बिलख रही है...इस से उस
सेहत पर बुरा असर पड़ेगा."

मेरी उंगलियों के स्पर्श ने शोक
में डूबे देव साहब को मानो पतवार
दी. उन्होंने जरा सा सिर उठा कर सि
देखा. पलभर के लिए उन की आंखें मेरे
से मिलीं और कितने ही संवादों की अद
उन्हीं पलों में संपन्न हो गई.

देव साहब ने हौले से कहा, "आप
गईं, भाभीजी...बहुत अच्छा किया. आप त
के रूठने से मानो खुशियां ही रूठ गई

सुमन दीदी की जलीकटी बातों ने अनु के दिल में ऐसे नश्त चुभाए थे जिस की कि वह उम्मीद भी नहीं कर सकती थी. इसी कारण अनु ने उन के घर कदम न रख का निर्णय लिया था. फिर भी वह मुसीबत के वक्त उन के दुख में शामिल हुए बिना न रह पाई. आखिर इ का क्या परिणाम सामने आया?

कहा, "आप भी चलिए, देव साहब के पिताजी गुजर गए हैं."

"मैं?" इन्होंने मेरी आंखों में आंखें डाल कर विस्मय से कहा.

"ऐसे समय दोस्त, दुश्मन सभी एक हो जाते हैं, फिर वे तो हमारे पड़ोसी हैं, स्थायी पड़ोसी, जिन के साथ जीनेमरने तक हर हाल में निभाना पड़ेगा. एक जगह घर बना लेने से यह कटुता आई है वरना आप तो उन पर जान छिड़कते थे. चलिए, अब उठिए," मैं ने इन की बांह पकड़ ली.

बैठक में देव साहब दीवान पर लेटे रोए जा रहे थे. 45 वर्षीय देव इस समय नन्हे बालक प्रतीत हो रहे थे, "बाबूजी...मुझे इसी उम्र में आप पितृहीन कर गए. हाय, मैं कल

आप की निकटता पाने के लिए ही तो
मुजफ्फरपुर में, आप के पड़ोस में घर ब
का निश्चय किया था वरना दिल्ली छोड़
उत्तर बिहार के इस छोटे से शहर में
आता?"

मेरी धमनियों में रक्त का प्रवाह
हो गया था. मैं एक दिन इसी कमरे से,
सोफे पर बैठी यह भीष्म प्रतिज्ञा ले कर त
थी कि 'मरती मर जाऊंगी, परंतु अब
सुमन दीदी के घर पांव नहीं रखूंगी.
सह लिया, इन का दिया अपमान, तिरस्
दिवंगत ननद की प्राणप्रिया सखी हैं, इस
इन में उन की झलक देखती रही, मगर
के मन में बैठा तक्षक मुझे रोज दंश म
है, तीव्र वेदना देता है. अपना अपमान

फिर भी सह लूं, परंतु कोई मेरे सामने मेरे पति का अपमान करे, यह मुझ से सहन नहीं होगा. और आज लग रहा है, सुमन दीदी की आंसुओं की धारा में मैं ही बही जा रही हूं.

अमित ने पानी का गिलास उठाया और देव साहब को बच्चे की तरह उठाते हुए कहा, "भाई साहब, पानी पी लीजिए और चलिए, पटना चलते हैं."

देव साहब उठे, फिर अमित को कस कर बांहों में भींचते हुए बोले, "अमितजी, बाबूजी मुझे छोड़ कर चले गए," अमित के कंधे पर सिर रख कर वह ऐसे रो रहे थे, जैसे कोई बेटी बरसों बाद मां से मिल रही हो.

अमित ने सब को पानी पिलाया. फिर मुझ से कहा, "पटना फोन लगाओ."

जब फोन लग गया तो इन्होंने अभिभावक की तरह कहा, "अब उठ कर सारी बात तय कर लीजिए कि आप लोग पटना जाएंगे या बाबूजी का पार्थिव शरीर मुजफ्फरपुर लाया जाएगा? रोने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है. जबजब बाबूजी की याद आएगी, हम रोएंगे ही...परंतु अभी मिट्टी को मिट्टी में मिलाने की तैयारी करनी है."

देव साहब फोन पर बातें करने लगे और अमित के संकेत पर मैं चाय लेने घर आ गई. दोनों मकानों के बीच 20 फुट चौड़ी एक सड़क ही थी. सड़क पार कर मैं अपनी रसोई में गई और फटाफट चाय तैयार की. फिर एक ट्रे में केतली और बिस्कुट रख तेजी से वापस सुमन दीदी के घर की ओर चल पड़ी.

दीदी और देव साहब दोनों ही मना करते रह गए, पर मैं ने आग्रहपूर्वक उन को चाय पिलाई.

अलका दीदी की मृत्यु के बाद सुमन दीदी ने उन के दाहसंस्कार में शामिल होना भी आवश्यक नहीं समझा था. तब अम्मां इन लोगों के व्यवहार से कितनी दुखी हुई थीं. लेकिन मैं ने सोचा, 'अब इस दुख की घड़ी

"इस शहर में तुम्हारे सिवा मेरा और कौन है?" सुमन दीदी ने अनु को बांहों में भरते हुए कहा.



में इन्हें सहारा व सांत्वना देना हमारा कर्तव्य है, हम क्यों प्रतिशोध की ज्वाला में जलते रहें.'

फोन पर बातें हो गईं तो देव साहब ने कहा, "साले बाबू, मैं सुमन के साथ पटना चला जाता हूं, स्वीटी सफर के लायक नहीं है...इस का..." कहते हुए उन का गला भर आया.

अमित ने उन के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "इस का खयाल रखना मामामामी का कर्तव्य है, आप बेफिक्र हो कर जाइए...और हां, ये पैसे भी रख लीजिए...जरूरत पड़ सकती है."

देव साहब पत्नी सहित पटना चले गए. स्वीटी को अपने साथ ले कर हम अपने घर में आ गए. रात को देव साहब के घर सोने के लिए मैं ने अपने भतीजे को भेज दिया.

अमित ने अपने दोस्तों से मशवरा किया और मुझ से कहा, "वह रमेश है न, कह रहा है, मुझे भी जाना चाहिए. अलका दीदी उन्हें अपना श्वसुर मानती थीं, उन के दाहसंस्कार में शामिल होना हमारा कर्तव्य है."

"तो देरी किस बात की, चले जाइए न," मैं ने कहा.

थोड़ी देर बाद स्वीटी उलटियां करने लगी तो मैं ने फौरन डाक्टर को बुलाया. उन्होंने देखते ही कहा, "इसे मेरे नर्सिंग होम में ले चलिए क्योंकि इसे तुरंत ग्लूकोस चढ़ाना होगा. घबराहट में इस का रक्तचाप बहुत गिर गया है."

घर को अच्छी तरह बंद कर, सोनी, मोनी को सारी हिदायतें दे कर मैं भागीभागी नर्सिंग होम गई. रातभर डाक्टरों और नर्सों की भागदौड़ होती रही, जिस से मैं सहज ही अनुमान लगा रही थी कि स्वीटी की स्थिति सामान्य नहीं है. 4 बजे सुबह डाक्टर ने मुझ से कहा, "स्वीटी का बच्चा आपरेशन कर के निकालना होगा वरना खतरा हो सकता है."

यह सुन कर मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई. मैं ने नर्सिंग होम से पटना
किया. काफी देर तक घंटी बजती रही
किसी ने अलसाई, उनींदी आवाज में
कहा.

मैं ने संयत स्वर में कहा, "कौन
रहे हैं?"

"मैं दीनेशर माली बोल रहा हूं,
लोग श्मशान घाट गए हैं."

उस से ज्यादा कुछ कहना बेका
सो मैं ने इतना ही कहा, "जैसे ही वे
घर आएं, उन से कहना, मुजफ्फरपु
अमितजी की पत्नी का फोन आया था...
की तबीयत बहुत खराब है...कृपया
फोन करें. तुम मेरा फोन नंबर लिखो."

थोड़ी देर बाद उस ने कहा, "ब
हुजूर, मैं कागज ले आया."

मैं ने उसे नर्सिंग होम का नंबर
करवा दिया.

"कृपया आपरेशन की औपचारिक
पूरी करें. यह रहा फार्म...इस के
जहांजहां निशान लगाए गए हैं, हस्ताक्षर
दें," डाक्टर ने कहा.

मैं ने फार्म लिया और हस्ताक्षर क
वापस कर दिया.

वह फार्म रहरह कर मेरी आंख
सामने घूम जाता. मैं सोचने लगी कि
डाक्टर को आपरेशन करने का अधिक
दे दिया, अगर कुछ गड़बड़ हो गई तो
होगा? दीदी और भाई साहब क्या मुझे
माफ कर पाएंगे? तब फिर क्या करती?
तमाशबीन की तरह उस मासूम को मरते
देखती रहती? भाई साहब उसे मेरे हवाले
के गए हैं, मेरे पास अमानत रख कर
हैं, फिर अमानत में खयानत कैसी?

तभी एक नौकर काफी ले आया. व
पीती हुई मैं उधेड़बुन में लगी रही. वि
के बाद ससुराल गई तो 2-2 ननदों को
कर बड़ा आश्चर्य हुआ था क्योंकि
कहती थीं कि 1 भाई, 1 बहन और मा
बस.

जब इन से पूछा तो बोले, कि ख

चक्कर...अलका दीदी की एकलौती ाणप्रिया सहेली हैं, सुमन दीदी. अम्मां और ाबूजी ने इन्हें भी अपनी बेटी मान लिया ...दोनों ऐसी हैं, जैसे चंदन और जल.

उस दिन से मैं ने भी इस भावना को ुरुमंत्र की तरह मन में धारण कर लिया. ालचक्र ऐसा चला कि अलका दीदी असमय ल बसीं. अम्मां और बाबूजी के साथ हम भी सुमन दीदी को मन के उस दोहरे ंहासन पर आसीन कर लिया, जहां पहले क पर अलका दीदी होती थीं.

देव भाई साहब का तबादला जब ुजफ्फरपुर हो गया, यह संबंध और भी ागाढ़ होता चला गया. साथसाथ जमीन ख़रीदी गई, साथसाथ एकजैसा नक्शा बना.

तब अमित के मन में कितना उत्साह था. कहते थे, 'वाह भई वाह, खिड़की खोलूं तो ामने एकलौती बहन और बहनोई की युगल ूर्ति हो, इस से बड़ा सुख और क्या हो सकता है भला?'

अमित को न धूप की परवाह थी, न ारिश की चिंता. रातदिन पसीना बहा कर न का मकान बनवाया.

कई बार मैं झल्लाती, 'क्यों दीवाने हुए ा रहे हो? कल को दीदी या भाई साहब ा कुछ उलटासीधा कह दिया तो मुझ से हन नहीं होगा. उन का मकान है, वे खुद नवाएं?'

अमित कहते, 'तुम स्त्रियों में यही बुराई ोती है. क्यों हमेशा शक से भरी रहती हो? ारी दीदी ऐसी नहीं और फिर मैं न सामान ख़रीदता हूं, न पैसे देता हूं. आर्थिक व्यवस्था न की है, मैं केवल शरीर से उन की मदद कर रहा हूं.'

दिन बीतते गए. पहला झटका तब ागा, जब दीदी ने मुझ से कहा, 'मकान का ानंद तब है जब स्वयं खड़ा हो कर बनवाया ाए. दूसरों की पसंद को अपनी पसंद बनाना ुखद होता है.'

मैं ने कातर स्वर में कहा, 'मिस्तरी ने ो गड़बड़ की, वह तो कोई भी सामने होता, हो ही जाती.'

एक दिन अमित दफ्तर से लौटे तो पसीनापसीना थे. मैं ने पूछा तो कहा, 'स्कूटर ठेलतेठेलते पस्त हो गया हूं. रास्ते में इंजन बैठ गया. विश्वकर्मा पूजा होने के कारण आज सभी गैरेज बंद हैं. आटा लाने के लिए तुम दीदी से स्कूटर मांग लो, भाई साहब दिल्ली गए हुए हैं.'

स्कूटर तो मिल गया, लेकिन आटा लाने में पेट्रोल समाप्त हो गया. ठीक गेट पर पहुंच कर अमित ने टंकी में झांक कर कहा, 'हद हो गई, 1 किलोमीटर जाने और 1 किलोमीटर आने में कितना पेट्रोल लगता है. टंकी खाली थी और हम ने ध्यान भी नहीं दिया.'

> **उद्वेग**
>
> *उद्वेग जरा भी न रखना चाहिए. 'जो होता है सो भले के लिए' ऐसा समझ कर धैर्य और शौर्य से संतोष का सेवन करना चाहिए इस से पहाड़ सरीखे संकट भी दूर हो जाते हैं.* –अज्ञात

रात में भाई साहब आ गए और सुबहसुबह उन का नौकर स्कूटर लेने आ गया. मैं ने उसे चाबी देते हुए कहा, 'पेट्रोल नहीं है...साहब सुबह ही सैर को गए हैं, आते हैं तो पेट्रोल...'

मेरी बात काटते हुए उस ने कहा, 'टंकी खाली ही थी, उस पर से 1 माह से स्कूटर बंद पड़ा था. इस में पेट्रोल देनेलेने की क्या बात है, मेम साहब?'

अमित स्नानघर में थे. फोन की घंटी बजी तो रिसीवर मैं ने उठा लिया. उधर से सुमन दीदी का कड़कता स्वर उभरा, 'आप लोग लाजशर्म बेच कर खा गए हो? आटा लाने के बहाने स्कूटर लिया और घुमाफिरा कर टंकी खाली कर के मेरे घर वापस भेज दिया...जरा सी भी तमीज है कि नहीं?'

मैं तो शर्म एवं ग्लानि से मरी जा रही

थी. बारबार स्वयं को कोसती कि क्यों मांगा मैं ने स्कूटर?

फिर आंसुओं को पीते हुए मैं ने कहा, 'अभी पेट्रोल मंगा देती हूं, दीदी. यह नहा रहे हैं, बस निकलने भर की देरी है...' आगे मैं बोल नहीं पाई. चोंगा रख कर आंचल में मुंह छिपा कर रो पड़ी.

'क्या हुआ?' अमित ने कंधे पर हाथ रख कर पूछा.

मैं चुप रही तो उन्होंने फिर पूछा, 'किस का फोन था?'

मैं ने अपराधियों की तरह नजरें झुका कर कहा, 'सुमन दीदी पेट्रोल के लिए नाराज हैं.'

अमित ने तौलिए से देह को रगड़ते हुए कहा, 'दीदी से ऐसी उम्मीद सपने में भी नहीं थी, खैर...'

गुस्से में भर कर अमित 5 लिटर पेट्रोल ले आए. सुमन दीदी ने गैलन हाथ से लेते हुए कहा, 'किसी का स्कूटर ले जाओ तो पेट्रोल भर कर वापस किया जाता है. पर तुम लोग तो...छिः...कैसे पड़ोसियों से पाला पड़ गया.'

थोड़े दिनों बाद ही महल्ले में एक जन्मदिन पार्टी थी. मैं भी गई थी और दीदी भी.

मेजबान योगेशजी ने कहा, 'देव साहब नहीं आए?'

दीदी ने मेरी ओर देख कर कहा, 'देव साहब किसी बैंक में क्लर्क नहीं, अफसर हैं. अफसरों को कितना व्यस्त रहना पड़ता है, यह कोई अफसर ही समझ सकता है.'

उन की बात सब को बुरी लगी, पर सभी जहर का घूंट पी कर चुप रह गए.

दीदी को इतने से भी संतोष नहीं हुआ तो कपड़े, गहनों की चर्चा छेड़ बैठीं. स्त्रियों का मनभावन विषय था. अतः जम कर बहस हुई. सूती साड़ी की प्रशंसा करते हुए चंचल ने कहा, 'अमितजी की पत्नी तो हमेशा सूती साड़ी ही पहनती हैं...'

झट बात को काटते हुए दीदी ने कहा, 'अनु की तरह मैं नहीं रह सकती. मैं त पहन लूं, पर बिना इस्तिरी की हुई साड़ी नहीं पहन सकती.'

मैं ने जल कर कहा, 'कौन नही सलीके से रहना, उठनाबैठना, पर चादर हो, उतने ही तो पांव पसारे ज हैं. मेरे पति क्लर्क हैं...नाज है मु पर...ईमानदारी की मुड़ीतुड़ी साड़ी एवं बेईमानी के जेवरों से मुझे ज्या है.'

उस दिन के बाद मैं उन के घ गई. उन के ताने, उलाहने मुझे डंक रहे. महल्ले की कोई भी औरत उन न जाती. सभी कहते, 'अफसर हैं तो बला से, इतना घमंड कौन सहेगा?'

पर मैं अपना अपमान भूल कर की तीमारदारी में नर्सिंग होम में बैठी

"मुबारक हो, लड़का हुआ है, और मां दोनों स्वस्थ हैं," डाक्टर की से मेरी तंद्रा भंग हुई. सवेरा हो चुक चिड़ियों की चहचहाहट से वातावरण रहा था. पृथ्वी पर रात की ओस बिख थी.

अचानक दनदनाती हुई सुमन दी और बिना कुछ बोले, मेरे गले ल फूटफूट कर रोती हुई बोलीं, "क्षमा क अनु."

मैं भी हंस पड़ी.

भाई साहब व अमित पीछे ख अमित ने उन्हें चुप कराते हुए कहा, " मत रोओ."

दीदी ने मुझे बांहों में भींचते हुए "इस शहर में तुम्हारे सिवा मेरा और है. मैं दौलत के नशे में सब भूल गई थी. स्वीटी की जान बचा कर तुम ने साबि दिया है कि तुम लोग कितने महान ह

"उंह...बिलकुल नहीं. हम केवल पड़ोसी हैं," अमित ने कहा तो मैं भी के उजास की तरह खिलखिला उठी.

फिर सब स्वीटी और उस के मु देखने की बेचैनी में तेजी से कमरे में द हो गए.

बोलते पत्थर

लेख ● डा. उषा अरोड़ा

ये आकर्षक डिजाइन मोहक ही नहीं जीवंत से लगते हैं.

जयपुरआगरा राजमार्ग पर महुआ से पहले सिकंदरा से मानपुर के बीच सड़क के दोनों किनारों पर बोलते पत्थर भागती गाड़ी को रुकने के लिए विवश



कर देते हैं. पेड़ की छाया के नीचे, खपरैल की छत के नीचे और अधिकतर खुले आकाश के तले सड़क की दोनों तरफ बैठे शिल्पकार ठकठक करते तल्लीनता के साथ पत्थर पर शिल्पकारी करते नजर आते हैं. आप देखेंगे कि अलगअलग उम्र के कारीगर अपने काम में जुटे हैं. सड़क पर पत्थर की बनी ढेर सारी चीजें–पत्थर की जाली, झरोखे, गमले, शेर, हाथी, घोड़े, बतख, मछली, मोर, मेहराब, तोते, चौखट, मंदिर, छतरी, गेट लैंप, झूले आदि चीजें राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं. एक साधारण पत्थर पर तराशे

यह पत्थर न तो संगमरमर का है और न इन पर सुनहरी काम है. पर इन की उच्च कोटि की कारीगरी खंभों, झूलों, मेज, झरोखों, मंदिरों पर बेलबूटे, फूलपत्ती, पशुपक्षी व तरहतरह के पात्र बने देख कर फारसी गलीचों की याद बरबस आ जाती हैं. गणेश, हनुमान की विशालकाय मूर्ति, दरवाजे, झरोखे, खिड़की की चित्रकारी स्थापत्यकला की दृष्टि से सुंदर और अद्वितीय हैं. बगीचे में बैठने के लिए झूला, जिस पर बारीक तराशी चित्रकारी हाथीदांत के काम को मात देती सी लगती है. गेट लैंप, छतरी

शिल्पकार की कल्पनाशक्ति और सधा हुआ हाथ हो तो बेजान पत्थर भी बोल उठते हैं. जी हां, कुछ ऐसा ही नजारा आप भी देख सकते हैं जयपुरआगरा राजमार्ग पर, जहां ये बोलते पत्थर बरबस ही लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं. इन में ऐसी क्या कशिश है, आइए जानें.

और मेहराब पर खिले फूलों की झालरें, ताजा फूलों सी बंदनवारें सहज ही आकर्षित कर लेती हैं.

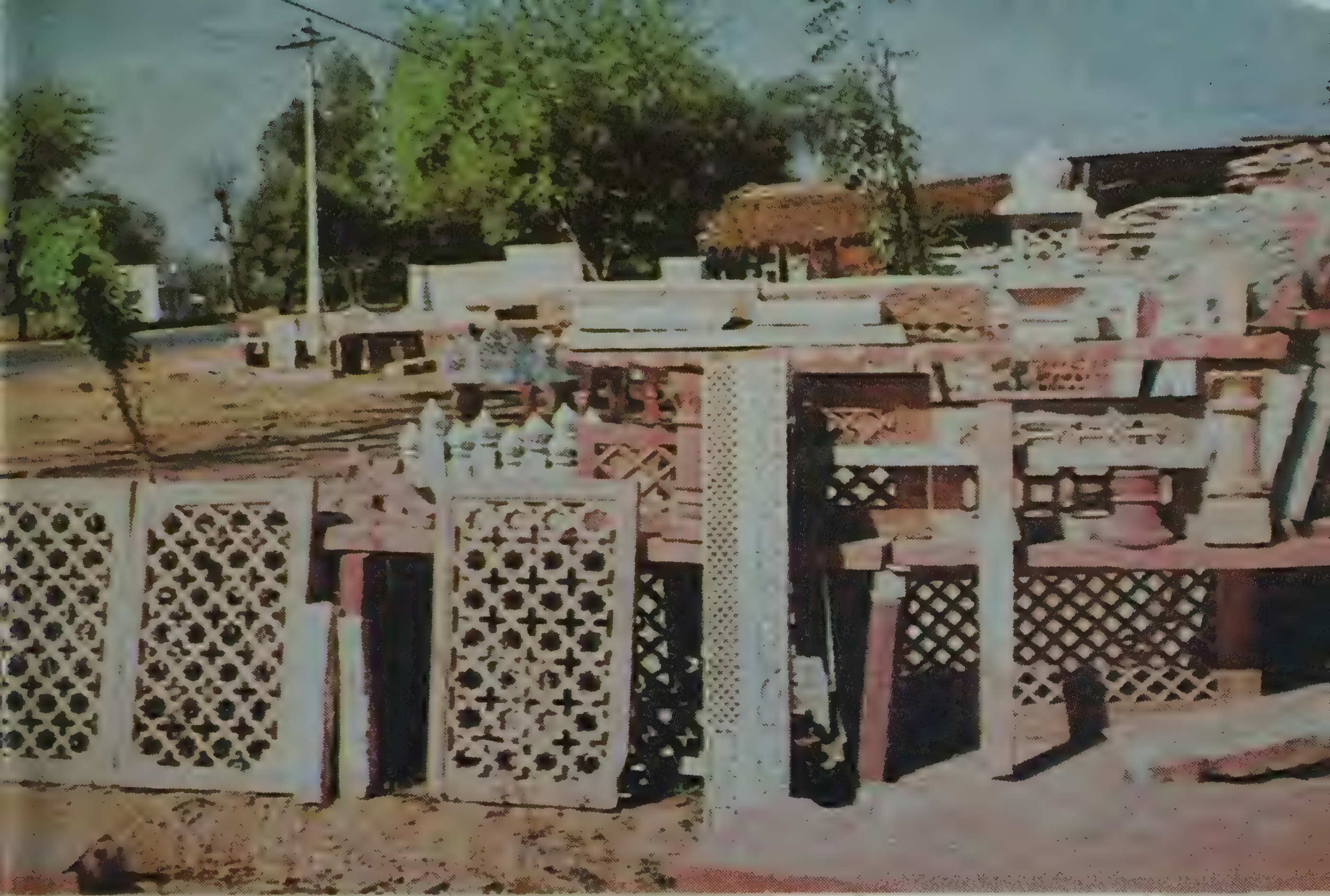
इन वस्तुओं को देखने और छूने के बाद लेखिका के मन में आकाश में तैरते पक्षियों की तरह ढेर सारे प्रश्न मंडराने लगे. कुछ तल्लीन शिल्पकार खोए थे अपनी ही

पत्थर पर चित्रकारी में तल्लीन एक शिल्पकार.

दुनिया में. उन की तन्मयता न टूटे इसलि पहले एक वृद्ध के पास गई जो पास ही बै हुक्का गुड़गुड़ा रहा था. 'बाबा' शब्द संबोधन सुन कर उस ने आप ही बहुत कु बताना शुरू किया. 2000-2500 लोग य इस काम में जुटे हैं. पत्थर यहां का नहीं दूर करौली, धौलपुर एवं बंशी पहाड़पुर आता है. एक जिज्ञासा हुई कि पत्थर इत दूर से आता है तो फिर काम यहीं पर व होता है? जिज्ञासा शांत करते हुए रामदय ने कहा कि काम करने वाले कारीगर य पर हैं. यह हमारा पैतृक काम है. यह 'बा यानी मेरे पिताजी करते थे, अब मैं और (की ओर इशारा करते हुए) यह, हरिमो करता है. इस काम को मैं ने अपने पिता और मेरे बेटे ने मुझ से सीख लिया है.

हरिमोहन ने, जो पत्थर को साफ क रहा था, बताया कि पहले बड़े पत्थरों काट कर, जो चीजें बनानी हैं उस नाप पत्थर काटते हैं, फिर उसे घिस कर सा करते हैं. पत्थर जब साफ हो जाता है सादे पत्थर पर कागज का फर्मा (फूलपत्त बेलबूटे) ले कर पत्थर पर डिजाइन उता हैं. फर्मा हटाने के बाद निशान वाली जग पर हथौड़ी और टांकी से खुदाई करते हथौड़ी और टांकी ही इस शिल्प का मु





पत्थर पर बना एक आकर्षक नमूना: शिल्पकार की मेहनत का नतीजा.

औजार है. टांकी पतली चौड़ी कई नाप की होती है. जब बारीक खुदाई करनी होती है तो पतली टांकी लेते हैं. हथौड़े से टांकी पर चोट करते हैं और पत्थर को तराशते जाते हैं. डिजाइन के अंदर का पत्थर निकालने में बहुत समय लगता है. एक पीस बनाने में 5-6 दिन लग जाते हैं. पूरा डिजाइन बना लेने के बाद एक दिन तो पत्थर की बट्टी ले कर बारबार पानी डाल कर घिसते हैं ताकि चमक आ जाए. घिसने यानी चमकाने के लिए जिस रंग के पत्थर पर काम हुआ है उसी पत्थर की सफेद या लाल बट्टी लेते हैं.

रामपाल ने, जो इसी साल इस काम से जुड़ा है, बताया कि पहले पत्थर सस्ता मिलता था. अब 60-70 रु. फुट से कम का पत्थर नहीं है, और अच्छा पत्थर 100 रु. फुट तक है. सफेद और लाल दोनों तरह के पत्थर पर काम करते हैं. इस में एक पीस में हमें 50 रु. से 80 रु. तक लाभ हो सकता है. पर अब यहां पर बहुत लोग इस काम में लग गए हैं, इसलिए प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है और लाभ कम होने लगा है. पहले कम लोग थे और इतनी सफाई भी शिल्प में नहीं थी. अब मेहनत भी अधिक करते हैं और पैसा भी कम मिलता है, पर रोजीरोटी आराम से चलती है. अब तो यहां इस काम को करने वालों की इतनी आबादी हो गई है कि स्कूल और अस्पताल भी खुल गया है. कुछ लोगों ने तो पत्थर काटने की मशीनें भी लगा ली हैं. पत्थर तो मशीन से कट जाता है पर उस के बाद पूरा काम हाथ से ही होता है.

सड़क के किनारेकिनारे 5-6 किलोमीटर की दूरी तक काम करते लोग दिखाई देते हैं और पत्थर काटती हुई मशीनों की आवाज भी आती है. आजकल यहां से पूरे भारत में माल बिकने के लिए जाता है. सब से ज्यादा थोक में माल जयपुर जाता है. रास्ते में राहगीर भी रुक कर चीजों को बड़े शौक से खरीद कर ले जाते हैं. पत्थर की जालियों की मांग सब से अधिक रहती है और अधिकतर कारीगर यही काम करते हैं.

पत्थर पर तराशी चित्रकारी, नक्काशी अपनी प्राचीन कला और संस्कृति को समेटे हुए आधुनिक जीवन में अपनी उपयोगिता बखूबी कायम किए हुए है. ●

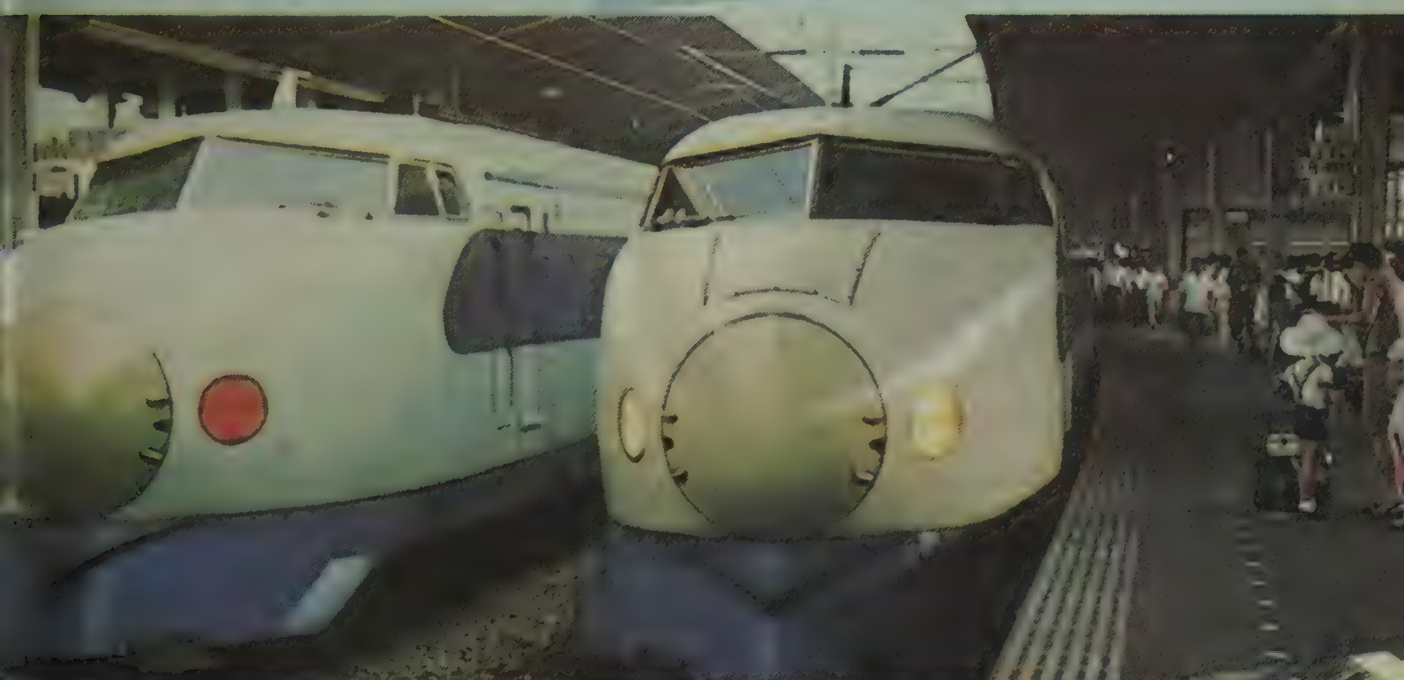
जापान : उगते सूरज का देश



टोकियो के 'नारीता' हवाई अड्डे पर पहुंचतेपहुंचते सिर काफी भारी हो गया था, पर एअरहोस्टेस से मिली सिरदर्द की गोली खाने से आराम था. विशाल नारीता हवाई अड्डे का भव्य टर्मिनल देख कर मुझे स्वयं अपनी क्षमता पर शक होने लगा कि फोन पर पति द्वारा बताया गया सूचना केंद्र ढूंढ़ पाऊंगी कि नहीं, जहां उन्हें मुझे मिलना था. हम जैसे विदेशी यात्रियों की लंबी कतार लगी थी इमिग्रेशन काउंटर के आगे.

मेरी परेशानी एक जापानी महिला ने भांप ली जो जहाज में मेरे







जापान में ट्रेनों की यह विशेषता है कि वे नियत समय से एक मिनट भी आगेपीछे नहीं होतीं : 250 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से चलने वाली 'बुलेट' ट्रेन (ऊपर), सुपरफास्ट ट्रेन 'स्काइलाइनर' (सब से ऊपर) तथा जापान का साफसुथरा वातानुकूलित रेलवे स्टेशन (दाएं).



टोकियो का सब से गहमागहमी वाला इलाका शिंजुकू रात में बिजली की रोशनी से जगमगा उठता है.

उगते सूरज का देश जापान एटम बम की त्रासदी झेलने के बाद समृद्धि का प्रतीक बन गया है. साथ ही वहां मानवीय भावनाओं का भी बहुत सम्मान किया जाता है. भारत व भारतीयों के लिए तो जापानियों के दिलों में खास जगह है, लेकिन क्या वास्तव में हम वैसे ही है जैसा वे सोचते हैं?

साथ ही थी. कस्टम वालों से छुट्टी पा क
वह देर तक मेरे लिए प्रतीक्षा करती रह
सामान पट्टी तक मेरे साथ जा कर उस
सामान उठवाया और एक ट्राली भी ढूंढ़ क
ले आई. बाहर रिसेप्शन तक वह मेरे सा
आई जहां मेरे पति व उस महिला के मातापि
हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे. 'सायूनारा' क
कर मुंबई आने का वादा कर के वह चल
गई, मेरे मन में जापानी सौहार्द की अमि
छाप छोड़ कर.

नारीता हवाई अड्डे पर मेरा स्वागत ए
गरीब देश के नागरिक की तरह नहीं, ए
आदरणीय मेहमान की तरह हुआ था. लेकि
यह तो जापानी मेजबानी व प्रेमभाव का ए
नमूना भर था. जापान में रहने व घूमने
पश्चात, यह जान कर सुखद आश्चर्य हुअ
कि यहां भारत व भारतीयों की इज्जत क
जाती है. लगभग हर जापानी, जीवन में ए
बार महात्मा बुद्ध के देश भारत आने क
इच्छा पाले रहता है. भारत उन के लि
गरीबी व कचरे का नहीं, शांति व सद्भा
का प्रतीक है.

टोकियो का रेलवे विभाग भी अद्‌भुत लगा. हवाई अड्डे के टर्मिनल के नीचे ही भूमिगत रेलवे स्टेशन था जिसे 'सबवे' कहा जाता है. 3-3 मंजिल के सबवे धरती के नीचे हैं. यहां कोई ट्रेन नियत समय से एक मिनट भी आगेपीछे नहीं होती. सभी स्टेशन, ट्रेनें वातानुकूलित, आरामदेह व साफसुथरी हैं. महंगी भी बहुत हैं. 'नारीता' से 'गिंजा होटल' तक पहुंचने में हमारा 2,000 रुपए से ऊपर खर्च हो चुका था. 'स्काइलाइनर' व 'बुलेट' जैसी ट्रेनें 'सुपरफास्ट' ही नहीं सुपर महंगी भी हैं.

टोकियो में सबवे स्टेशनों का जाल सा बिछा है. 'हिबिया', 'मारुनोची', 'गिंजा', 'तोजाई' और 'जे. आर.' जैसे नामों वाली कई रंगों की ट्रेनें हैं. कहीं भी पहुंचने के लिए, नक्शा देख कर स्टेशन पर जाइए, वेंडिंग मशीन से नियत दर का टिकट खरीदिए. अंदर जाने वाले गेट की रेलिंग से पंच करवाइए और स्टेशन से बाहर निकलते समय रेलिंग के खांचे में टिकट डाल दीजिए. कोई टिकट चेकर नहीं, कोई जुरमाना नहीं. सभी लोग ईमानदारी से सफर करते हैं.

'गिंजा' की गलियों में मैं अकेले घूमने चली जाती ताकि टोकियो के दिल की धड़कनें सुन सकूं. 'गिंजा' टोकियो का सब से शानदार व महंगा इलाका है. साफ, चौड़ी सड़कों के किनारे दुनिया भर के सामान से अटे विशाल 10 मंजिलों वाले फैशन स्टोर हैं. अकसर सामान से भरे काउंटरों पर कोई आदमी नहीं रहता परंतु कैमरे की आंख सब पर निगाह रखती है. यदि आप कुछ खरीदना चाहें तो अलादीन के जिन्न की तरह, अंगरेजी बोलने वाला सेल्समैन हाजिर हो जाता है.



सानकेई गार्डन : शहर से बाहर 47 एकड़ भूमि में फैले इस बाग की खूबसूरती देखने लायक है.

अकसर आतेजाते स्थानीय महिलाएं मुझे देख कर मुसकरा देतीं व बिंदी, सलवार कमीज व दुपट्टे की कढ़ाई को हैरानी से देखतीं. कई तो पूछ भी लेतीं कि क्या इस पहनावे का नाम साड़ी है. कभी घूमतेघामते मैं रास्ता भूल जाती तो कोई न कोई टूटीफूटी



टोकियो का डिजनीलैंड : सैलानियां के लिए आकर्षण का केंद्र.

अंगरेजी बोलने वाला जापानी मुझे होटल तक पहुंचा जाता तथा जाते समय झुकझुक कर मुसकराता 'अरिगतो गोजाइभस्त' (बहुतबहुत धन्यवाद) कह कर चला जाता और मैं सोचती रह जाती कि यह तो मुझे कहना चाहिए था.

महिलाओं के लिए 'द गिंजा' स्टोर में घूमना एक अद्भुत अनुभव है. विभिन्न प्रसाधन कंपनियों 'लानकोम', 'रैवलौन', 'क्रिश्चियन डायर', 'नीना रिकी', 'यू-सां-लारां', 'रीनोमा', 'चैनल' तथा जापान की 'शिशिदो' व 'कानेबो' के काउंटर

'खुशबुओं' तथा 'मेकअप'
सामान से अटे पड़े थे. यदि
से सामान खरीदा जाए तो वहां
सौंदर्य विशेषज्ञ आप की सेवा
हाजिर रहता है. स्टूल पर बैठ
मेकअप करवाती कई महिल
समय काट रही थीं. परंतु यही
की बिक्री कला है. 1,000-1,5
रुपए (3,000 येन) से कम की
भी चीज नहीं थी. यह कम से
कीमत थी (3 येन=1 रुपया).

'शिशिदो' काउंटर पर मैं
कम दाम की एक कोल्ड क्रीम
मांग कर बेचारी सेल्सगर्ल
परेशानी में डाल दिया. वह 2
काउंटरों पर घूम आई, फिर दु
हो कर बारबार झुक
'सुमासिन' (अफसोस है) कह
रही. भारतीय मेहमान की सेवा
कर पाने के कारण उस के
का कहीं अंत न था.

एक दिन मेरे पति के मित्र
अपनी निजी सहायिका को म
टोकियो घुमाने भेज दिया. प्य
सी 'कानी ज्हावा' अमेरिका में
कर आई थी क्योंकि जापान
शिक्षा बहुत महंगी है. मे
फरमाइश पर वह मुझे परंपरागत पुर
'आसाकूसा' शहर घुमाने ले गई जो 'सैन
जी' मंदिर के आसपास बसा हुआ है. य
टोकियो का सब से बड़ा बौद्ध मंदिर है. य
पर पेड़पौधों व घास की हरियाली के द
होते हैं. वरना टोकियो की सारी हरिया
सीमेंट स्थापत्य की भेंट हो चुकी है. आखि
समृद्धि की कीमत तो चुकानी ही पड़ती
मंदिर के बाहर 5 मंजिला पैगोडा बना हु
है जो प्राचीन भारतीय सिद्धांत के अनुस
जीवन के 5 तत्त्वों–जल, वायु, अग्नि, धर
व आकाश–का द्योतक है.

कानी ने मुझे 'शिंजुकू', 'रोपोंगी
'आकासाका', 'डायट' (पार्लियामेंट हाउस
'इंपीरियल पैलेस' व अंत में 'टोकियो टाव

दिखाया. नारंगी रंग का यह टावर जापान के दूरसंचार का सशक्त माध्यम है. इस के ऊपर की 'आब्जरवेटरी' से चारों ओर का दृश्य दूरदूर तक दिखता है. उन्नति व समृद्धि के प्रतीक, विशाल बहुमंजिले भवन शान से सिर उठाए खड़े हैं. कहीं एक छज्जा तक नहीं. केवल छतों पर एअर कंडीशनिंग प्लांट के बड़ेबड़े गोल चक्के घूमते दिखाई देते हैं. कहीं एक पेड़ की छाया नहीं, कहीं पंछियों का कलरव नहीं. केवल इंपीरियल पैलेस व 'डायट' के पास हरियाली के कुछ धब्बे से दिखाई देते हैं और जापान नेशनल बैंक के बाहर 'गिंका' पेड़.



जापान की परंपरागत इमारतों की अभी भी अपनी एक अलग शान देखने को मिलती है.

गिंका का अर्थ ही है धन, जिस की जापान के पास कमी नहीं. दुनिया भर के बाजार उस के कब्जे में हैं तथा क्वालिटी की भी धाक है. आश्चर्य की बात है कि दूसरे महायुद्ध के बाद मित्र देशों द्वारा अर्थव्यवस्था तहसनहस कर दिए जाने व एटम बम की त्रासदी झेलने के बाद भी आज जापान के लिए आकाश की सीमा दूर नहीं, जबकि हम भारतवासी मंदिर, मसजिद व मंडल के कीचड़ से ही निकल नहीं पा रहे हैं. भाषा व प्रांत के झगड़े हमें पतन के गड्ढे में धकेले दे रहे हैं.

भारतीय व जापानी सामाजिक ढांचा लगभग एक सा ही है (हमारी कुरीतियों को छोड़ कर). परिवार में स्त्री का वही स्थान है जो भारत में है परंतु वहां दहेज या जातिपांति व ऊंचनीच का भेदभाव नहीं है. विवाह व काकटेल पार्टी के लिए पोशाकें किराए पर ले कर काम चलाया जाता है. कियोनो आजकल कोई कम ही पहनता है.

हमें टोकियो के एक धनी औद्योगिक घराने के मालिक के परंपरागत घर में जा कर भोजन करने का सुअवसर मिला. टोकियो में इस तरह के अब 4-5 घर ही बचे हैं. यह घर उन के पूर्वजों की धरोहर है जिसे वे 500 सालों से बचा रहे हैं. हर सौ साल बाद इस की मरम्मत की जाती है तथा मरम्मत में 3 साल लग जाते हैं, खर्च का तो हिसाब ही नहीं. घर के बाहर जापानी परंपरागत पथरीले बाग बने हुए थे.

पीछे की ओर 2 तालाब थे और घर के पिछले बरामदे उन तालाबों के ऊपर खुलते थे. ऐसा लगता था जैसे घर पानी के ऊपर ही बना है. घर की मालकिन, श्रीमती कावा ने मुझे विशाल घर दिखाया जहां फर्श पर 'तातामी' (चटाई) बिछी थी और नीची खाने की मेज के अलावा कोई फर्नीचर नहीं था. सजावट के लिए कईकई दशक पुराने घने 'बोनसाई' रखे हुए थे. इन वामन वृक्षों की देखभाल वह स्वयं करती थीं. भोजन, 8-10 कोर्स का डिनर था जिस में 'सुशुयी', 'साशिमी', घर की बनी चावल की ठंडी शराब 'साके' के साथ परोसी गई. (वैसे जापानी भोजन हम भारतीयों को कम ही पसंद आता है. भारतीय भोजन के लिए गिंजा में 'महाराजा' रेस्तरां है परंतु एक व्यक्ति का खर्च 1,000-1,500 आ जाता है.)



जापान का खूबसूरत
मंदिर : संस्कृति व
का प्रतीक.

भोजन सुंदर व सजीधजी नौकरानियों द्वारा परोसा जा रहा था. शक्ल, बातचीत व पहनावे से वे नौकरानियां नहीं, धनी संभ्रांत महिलाएं लगती थीं. भोजन के उपरांत श्रीमती कावा ने हमें परंपरागत जापानी उपहार दिए. घर के भीतर जाने से पहले, रीति अनुसार हम ने बाहर चप्पलें उतार दी थीं. इस से पहले कि मैं मना कर पाती, श्रीमती कावा मेरी चप्पलें हाथ में उठा कर ले आई थीं. शर्मिंदा हो कर मैं ने उन से चप्पलें ले लीं. परंतु यह उन का अतिथि सत्कार का तरीका था. धन की बहुतायत व आधुनिकता के बावजूद जापानी अपनी परंपराओं से प्यार करते हैं तथा उन्हें बचाने की कोशिश में रहते हैं. पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव 'रोपोंगी' के 'डिस्को' व तलाक के बढ़ते चलन में दिखता है.

टोकियो कहां समाप्त होता है तथा 'योकोहामा' कहां प्रारंभ होता है, पता ही नहीं चलता. योकोहामा जापान का अति आधुनिक बंदरगाह है. यहां मेरा पथ प्रदर्शक, एक युवा अफसर 'मात्सय स्कूडा' था, जिसे लोग मासा कहते थे. 'साकूरा गा ची' स्टेशन के बाहर ही लैंडमार्क टावर नामक 296 मीटर ऊंची मीनार है जिस की 69 मंजिलें हैं तथा 4 मंजिला शापिंग प्लाजा धरती के भीतर बना हुआ है. यहीं पर दुनिया की सब से तेज चलने वाली लिफ्ट है जो ऊपर की 'स्काइ गार्डन' नामक आब्जरवेटरी तक 40 सेकंड में पहुंचाती है
न हो तो उत्तरपश्चि
फूजीयामा पर्वत
दिखाई दे जाता है
बंदरगाह के ऊपर
'बे ब्रिज' सफेद रेश
तारों से बना झूल
लगता है. जुलाई
में पर्यटकों के लिए
गए इस टावर को
तक 33 करोड़ से भी अधिक लोग देख
हैं. 'टावर' में प्रवेश शुल्क 300 रुपया है

टैक्सी ले कर हम 'यामाशिता'
होते हुए 'सानकेई' बाग में आए जो न
होनमोकू इलाके में, शहर से बाहर 47
भूमि में फैला हुआ है. बाग क्या हरि
का अथाह सागर है जो जंगल, झ
पहाड़ियां, पगडंडियां व 500 साल पु
इमारतें अपने अंक में समेटे है.

जापान केवल समृद्धि व उन्नति क
प्रतीक नहीं, यहां मानवीय भावनाओं
बहुत सम्मान है. जंगल में बाईं ओर जा
एक छोटी सी झोंपड़ी है जिसे 'प्यक
एन' का घर कहा जाता है. यह 800
पुरानी झोंपड़ी है जिस के साथ एक
की दुख भरी कहानी जुड़ी है. कहा जा
कि 'प्यकतुआ' महारानी की नौकरानी
जो 'शिशेमारी' भगवान के पुजारी 'टाकी
से प्रेम कर बैठी. रीति अनुसार पुजारी
विवाह संभव न था. समाज की प्रताड़न
भय से ठुकराए जाने पर वह महल छोड़
जंगल में आ बसी. दुखी 'प्यकतुआ' ने
प्रेमी का नाम जपतेजपते 8 साल बाद
अपने प्राण दे दिए. अब यह झोंपड़ी पुरा
विभाग की धरोहर है.

फूजी पर्वत

जापान आ कर यदि फूजी पर्व

देखा तो पर्यटन अधूरा ही समझो. 'शिनकासेन' लाइन की 'बुलेट' ट्रेन, जो 210 कि. मी. प्रति घंटा की गति से दौड़ती है, 'ओडोवारा' स्टेशन तक जाती है. वहां से आगे कार से जाना पड़ता है. दूरदूर तक पहाड़ियों की हरी शृंखलाएं फैली हुई हैं.

अचानक पहाड़ियों से अलगथलग फूजी पर्वत की ऊंची चोटी के दर्शन होते हैं, जैसे कोई साधु बाबा सिर मुड़ाए ध्यानमग्न बैठा हो. आसपास की झीलें व गरम पानी के चश्मे जैसे फूजी के पैर पखार रहे हों. 'हाकोन झील' शांत ज्वालामुखी के फटे हुए मुंह पर बनी है. कार 2,300 मीटर की ऊंचाई



फूजीयामा पर्वत : जापान के लोगों के लिए आदरणीय है.

पर बने 5वें स्टेशन तक जाती है. सर्दियों में बर्फ पड़ने पर वहां तक जाना भी कठिन हो जाता है. उत्तरी व मध्य जापान में शीत ऋतु में काफी हिमपात होता है.

फूजीयामा पर्वत जापान में सब से आदरणीय स्थान माना जाता है तथा पहाड़ की चोटी तक श्रद्धालु 2 घंटे की पैदल यात्रा कर के जाते हैं. 5वें स्टेशन पर ही, सुविनियर स्टोर के पीछे एक प्रसिद्ध 'शिंटो मंदिर' है जहां सफेद पोशाकें पहने पुजारी चुपचाप हाथ बांधे खड़े रहते हैं. लोग कागज या लकड़ी पर मन्नत लिख कर बाहर लटका देते हैं तथा पूरी होने पर दोबारा यहां धन्यवाद देने आते हैं. इस मामले में मूलभूत रूप से जापानी व भारतीय संस्कृतियों में काफी समानता है. धर्म उन के जीवन का आधार है परंतु यह उन के कार्य में आड़े नहीं आता, नितांत निजी मामला समझा जाता है. अधिकांश जापानी बौद्ध हैं या 'शिंटो' धर्म को मानते हैं. 'शिंटो' धर्म में प्रकृति के साधनों जैसे पर्वत, हवा, सूर्य को पूज्य माना जाता है. बहुत थोड़े से लोग ईसाई हैं.

जापान में प्रगति है पर महंगाई इतनी है कि फूलों का एक गुलदस्ता भी टोकियो में 4-5 हजार रुपए का मिलता है. परंतु वहां मुद्रास्फीति नहीं के बराबर है. पिछले 10 वर्षों से कीमतें स्थिर हैं. इसीलिए वहां के लोगों को हमारी तरह महंगाई का भूत नहीं सताता. 20 वर्ष के नागरिक को वोट देने का अधिकार है.

15 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य है. कहीं भी कोई बच्चा काम या नौकरी करता दिखाई नहीं देता.

भारत के प्रति उन के मन में बहुत श्रद्धा है. हर जापानी बुद्ध के भारत में एक बार अवश्य जाना चाहता है. इसीलिए हमारे मित्र हम से भारतीय अभिवादन के तरीके (नमस्ते) सीखते रहे. हम उन से 'कानीचिवा' कहते तो वे झुक कर नमस्ते में उत्तर देते थे. मेरे मन में अपने जापानी मित्रों के प्रेम, आदरसत्कार व नम्रता की मीठी यादें बसी हैं. आशा करती हूं कि अगर वे लोग भारत आएंगे तो उन के सपने भंग नहीं होंगे. काश! वे भारत को वैसा ही पाएं जैसा वे सोचते हैं. तब तक के लिए 'सायूनारा' मेरे जापानी मेजबानो. ●

वृद्धों की अवहेलना

लेख • रमाकांत 'कांत'

हमारे एक मित्र परिवार के मुखिया हैं 78 वर्षीय, सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त अध्यापक. जीवन भर ध्यापकी की है इसीलिए वे अब भी हाथ डंडा लिए उपदेशक की मुद्रा अपनाए रहते यह उन की जीवन शैली बन कर रह गई उन के दो बेटे हैं. बेटे पिता को साथ ना तो चाहते हैं मगर उन्हें हस्तक्षेप पसंद हीं है. उधर वृद्ध पिता आदत से मजबूर हैं. तक्षेप के विरुद्ध पुत्रों की नाराजगी को वे भिमान का हनन मानते हैं. सामंजस्य का व किसी भी पक्ष में दिखाई नहीं पड़ता.

इसीलिए सेवानिवृत्त अध्यापक महोदय यः पत्नी को अलग रहने के लिए प्रेरित रते रहते हैं. बेचारी वृद्ध पत्नी विवश है. ह शारीरिक रूप से अति रुग्ण व क्षीण है. ना सहारे के गुजरबसर नहीं हो सकती. धर पतिदेव पेंशन के भरोसे अलग होने की हते हैं. पत्नी कहती है, "सरकार पेंशन में रुपए देती है, रोटी बनाकर नहीं देती."

74 साल के एक विधुर के पास सब कुछ है पर बेटेबेटी विदेश में बस गए हैं और वे अकेले रह गए हैं. जब कभी कोई



उन के यहां जाता है, वे उसे रोक कर देर तक बतियाते रहना चाहते हैं. घर में एक नौकर है किंतु उस से बतियाने एवं अंतरंग बनाने में संदेह की दीवार खड़ी हो जाती है. अखबारों में नौकरों के हाथों मारे जाने की विभिन्न घटनाएं पढ़ कर उन का संदेह और भी पुख्ता हो जाता है. इस तरह उन का जीवन अत्यंत दूभर हो गया है.

एक परिवार में बढ़िया नस्ल का एक कुत्ता पाला गया. बीमार हो जाता तो घर भर में उदासी छा जाती. बच्चे खाना नहीं खाते. सेवाशुश्रूषा करते और समयसमय पर 'डाग क्लिनिक' में दिखाते. मगर उसी घर में मौजूद दादाजी की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता. जाहिर था कि उन की निगाहों में कुत्ते की अहमियत अधिक थी. वह खामोश बैठा रहता या उछलकूद करता. रात को चौकीदारी करता. कोई भाषण या नसीहत नहीं करता था. शायद यही कुत्ते की महत्ता का प्रमुख कारण था.

वहां दादाजी की कोई उपयोगिता नहीं थी. फलस्वरूप परिवारजनों के लिए उन की उपस्थिति दिनोंदिन असह्य होती जा रही थी. सो एक दिन बच्चों का पिता अपने लगभग नेत्रहीन पिता को चुपचाप एक 'ओल्डएज होम' में छोड़ आया. उसी पिता को जिस ने उसे अंगुली पकड़ कर कभी चलना सिखाया था.

ऐसा बेगानापन यदि वृद्ध, अशक्त मातापिता को अपनी ही संतति से भुगतने को मिले तो उन के लिए यह असह्य वेदनादायक स्थिति बन जाती है. संभवतः उन्हें दीर्घायु अभिशाप की तरह प्रतीत होती होगी और वे शीघ्र मृत्यु की कामना करने लगते होंगे.

वस्तुतः वृद्धजन, किसी भी सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की अमूल्य निधि निधि की उपेक्षा करना सर्वथा निं उन की स्थिति ऐसी क्यों है और कि उस का निराकरण कर पाना संभव पर विचार कर उपयुक्त कदम उठान आवश्यक है. यह परिवार, समाज एवं का नैतिक दायित्व है. आखिर इन ने अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर कर का सृजन किया है. उन के एहसानों कर नई पीढ़ी को किसी भी तरह कृत बनना चाहिए. सच तो यह है कि उन रोम को उन के प्रति कृतज्ञ होना चा निसंदेह, सर्वथा आदरणीय हैं, चाहे इस पड़ाव पर वे कितने ही बीमार, झक्की या उपदेशक क्यों न बन गए

हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति आम भारतीय की औसत आयु बहु थी. इन 50 वर्षों के अंतराल में यह 60 वर्षों के आसपास हो गई है. सेवानिवृत्ति की आयु भी 58-60 व अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण बहु वृद्धजन सेवानिवृत्ति के समय भी चुस्त दिखाई पड़ते हैं. उन की कार्यक्षमताएं भी घटी होतीं किंतु उन्हें एकाएक कार्यमुक्त घर बैठा दिया जाता है.

चूंकि उन की कार्यक्षमता तो वैस वैसी ही होती है सो वे घर बैठ कर भी बैठे रहना पसंद नहीं करते. वे घरपरिवा गतिविधियों, पुत्रपुत्री के व्यवसाय आ सहयोग करने की सोचते हैं. वे इस हव को भूल जाते हैं कि परिवार प्रमुख के में अब अगली पीढ़ी स्थान ग्रहण कर है. अब तक परिवार के केंद्र में रहा इस 'बायकाट' को अपमान समझता है

सेवानिवृत्ति के पश्चात वृद्ध व्यक्ति चाहता है परिवार वालों कुछ और अधिक प्यार व सम्मान. जबकि उन के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार अपनाया जाने लगता है. नई पीढ़ी अपने काम में उन की टोकाटोकी, सुझाव बरदाश्त तक नहीं करती. क्या वृद्धों के प्रति यह अवहेलना उचित



ड़े भी अगर अपना सुझाव आज के संदर्भ सोचते हुए दें तो छोटों के मन में उन के ति तनाव पनपने नहीं पाएगा.

सामंजस्य तो स्थापित करने को तैयार हो जाते हैं किंतु उपेक्षावश उन के साथ जाने को तैयार नहीं होते. यदि परिवारजन उन्हें पूर्ण आदर एवं अंतरंगता के प्रति आश्वस्त कर दें तो शायद वे उन के साथ जाने को तैयार भी हो जाएं.

वैसे समस्या का एक मुख्य कारण वृद्ध लोगों का खालीपन है. दिन भर खाली बैठे हुए वे कुछ न कुछ 'ऊलजलूल' ही सोचते रहते हैं. उधर वृद्धावस्थावश शारीरिक एवं आर्थिक क्षीणता व निर्भरता उन में असुरक्षा का भाव उत्पन्न कर देती है. वस्तुतः असुरक्षा का कारण उन का एक तरह से अनुत्पादक इकाई बन जाना व शारीरिक रूप से परावलंबी हो जाना है. यदि उन्हें किसी तरह स्वावलंबन की लकुटी थमा दी जाए तो वे अति सहज जीवन जी सकते हैं.

इस संबंध में पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश विधान सभा ने एक महत्त्वपूर्ण विधेयक पारित किया है. इस में प्रावधान किया गया है कि कमाने वाले व्यक्ति से परिवार का हर आश्रित उपेक्षा होने पर भरणपोषण का व्यय मांग सकता है. इस में पत्नी के अलावा अवयस्क बच्चे व बूढ़े मातापिता भी शामिल हैं. कानून का उद्देश्य मुख्य रूप से बूढ़े हो रहे मातापिता व दादादादी को संतानों की उपेक्षा और अपमान का शिकार होने से बचाना है.

यद्यपि इस कानून से वृद्धजनों को राहत मिलेगी पर फिर भी यह अपर्याप्त ही है. उन्हें खर्च की राशि ही नहीं वरन सेवा और सम्मान भी चाहिए. उम्र के अशक्ततापूर्ण पड़ाव पर जब उन्हें बीमारियां घेर लेती हैं तो उन्हें रुपयों से ज्यादा सेवा व सम्मान की जरूरत होती है. ●

स बात को स्वीकार नहीं कर पाता कि अब रिवार ने उस को 'आउट आफ डेट' करार कर 'शोपीस' की तरह बना दिया है. यद्यपि नों पक्षों के तर्क अपनीअपनी बातों के दर्भ में सही होते हैं मगर इन के कारण तीत और वर्तमान का संघर्ष तथा पारिवाक क्षोभ और भी अधिक पनपने लगता है.

दूसरी ओर पारिवारिक विघटन एवं ामकाजी स्थितियां भी इन्हें बीभत्स स्वरूप दान करने लगती हैं. जिस तरह दिनोंदिन ंयुक्त परिवार बिखर रहे हैं और छोटीछोटी काइयों के रूप में अलगअलग स्थानों को लायन कर रहे हैं, यह समस्या विकराल ोती चली जा रही है. जीवनपर्यंत भागदौड़ निवृत्त हो कर वृद्धजन एक जगह विराम ो उद्यत होते हैं तो उधर संतति नौकरी के क्कर में भटकने लगती है. वृद्धजन जाना हीं चाहते, संतति जाने को बाध्य होती है ौर उधर संयुक्त परिवार की जीवनशैली माप्त हो चुकी होती है. ऐसी द्वंद्वपूर्ण स्थिति ंघर्ष को और बढ़ा देती है. कुछ बुजुर्ग उक्त


रु. 10.00
जींस
फैशन
विशेषांक
हर मौसम की शान और पहचान जींस
आप पहनें और देखने वाला जिगर थाम ले
नए आकर्षक डिजाइन
व विविधता लिए मनभावन रंग
किसी भी मौके पर आप की अलग
पहचान बनाए और शान में चार चांद लगाए
इस के साथ कहानियां, लेख, फिल्म, फैशन,
रूपसज्जा और सभी स्थायी स्तंभ
अपनी
प्रति आज ही
सुरक्षित कराएं
अब और अधिक पृष्ठ और
अधिक जानकारी के साथ

यह भी खूब रही

हमारे एक पड़ोसी बहुत ही भुलक्कड़ स्वभाव के हैं. एक दिन जब वे पहली बार अपनी पत्नी को ले कर फिल्म देखने गए, तब मध्यांतर के समय लोगों को बाहर निकलता देख वह यह समझ कर कि फिल्म खत्म हो गई है, अपना स्कूटर ले घर आ गए.

घर पर जब उन के पुत्र ने पूछा, "पापा, मम्मी कहां हैं," तो उन्होंने कहा, "मुझे क्या मालूम."

पुत्र बोला, "आप ही के



साथ तो फिल्म देखने गई थीं."

तब कहीं जा कर उन्हें ध्यान आया और वे वापस सिनेमाघर जा कर अपनी पत्नी को ले कर आए.

—कृष्णकांत सिंह

*

एक बार मैं अपनी पत्नी के साथ फिल्म देखने गया. टिकट के लिए लाइन काफी लंबी लगी हुई थी. पत्नी को लाइन में लगा कर मैं किसी परिचित को खोजने लगा ताकि जल्दी टिकट मिल सके.

शीघ्र ही मुझे एक परिचित सज्जन मिल गए. मैं ने उन से आशानुरूप कहा, "भाईसाहब, 2 टिकट हमारे भी ले लें," शायद वह हमारी टिकट लेना नहीं चाहते थे इसलिए लाइन में सब से पीछे खड़ी मेरी पत्नी की ओर इशारा करते हुए कहने लगे "देखिए, मेरी पत्नी कितनी पीछे लाइन में लगी हुई है."

मैं ने उन से हंसते हुए कहा, "अरे यार, हमारी टिकट नहीं लेनी हो तो कोई बात नहीं पर कम से कम मेरी पत्नी को तो अपनी पत्नी मत बताओ," दरअसल वह मेरी पत्नी को पहचानता नहीं था. उस ने तो लाइन में पीछे खड़ी किसी भी औरत की तरफ इशारा कर के मुझे टालने की कोशिश की थी. सही बात पता चलने पर वह बुरी तरह से झेंप गया.

—राकेश माथुर

*

बात मेरे भैया की शादी की है. उन की साली ने उन के जूते चुरा लिए और 1 हजार रुपए की मांग करने लगी जबकि मेरे भैया 5 सौ रुपए देने को तैयार थे.

जब काफी देर तक समझाने के बाद भी वह न मानी तो मैं तपाक से बोला, "हम व्यापारी हैं. घाटे में नहीं जा सकते. जूते सिर्फ 4 सौ रुपए के हैं. हम नए ले आएंगे. इन्हें आप अपने पति के लिए रख लीजिए," इतना सुनते ही वहां खड़े सभी लोग ठहाका मार कर हंसने लगे. भैया की साली बुरी तरह झेंप कर रह गई.

—राकेश अग्रवाल

*

मेरा एक मित्र कुछ ज्यादा ही मनचला है. एक दिन हम दोनों एक गली से गुजर रहे थे. गली के नुक्कड़ पर एक मनिहार रंगबिरंगी सुंदर चूड़ियां बेच रहा था.

महल्ले की कुछ औरतें उस से चूड़ियां पहन भी रही थीं. मेरे मित्र ने आदतन उस से मजाक किया, "चूड़ियां कैसे दे रहे हो, लखेरा साहब?"



मनिहार ने झट से जवाब दिया "पहले आप अपनी कलाई के अनुसार रंग पसंद कर लो, भाव तो बाद में बतला दूंगा."

यह सुन कर मेरे मित्र का चेहरा देखने लायक था.

—अभिषेक शर्मा ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ही, इसी से लेट गई थ
गई, वक्त का पता नहीं च
वह रोने लगी.

मैं ने उसे हटा
जल्दीजल्दी सब्जी का
छौंकी और आटा सानने
उस की बेटी कमला अ
खड़ी हो गई तो मैं ने
"अम्मां बीमार है तो त
के लिए दो रोटी बना

सरस्वती बोली,



रामलखन की बहू सरस्वती मेरे पास बैठ कर रोने लगी. खाना न बन पाया था. खेत से लौट कर भूखाप्यासा रामलखन बिगड़ गया. मैं काकी के घर से लौट कर बाहर बालटी में रखे पानी से पैर धो रही थी कि रामलखन गुस्से में बाहर आया. अंदर गई तो देखा कि सरस्वती चूल्हा जलाने में लगी थी. पूछने पर बोली, "बूआजी, बड़ी जोर का बुखार आ गया, आप के जाते

घर की खुशहाली

सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल (द्वितीय) 1977

कहानी • ममता खरे

खाना पकाना आता कहां है? दिन भर खेलेगी, पढ़ेगी और जब भूख लगेगी तो दौड़ी

बड़ा आश्चर्य हुआ. सयानी 12 लड़की कमला कुछ नहीं करती है. स्वती को दोष देते हुए कहा, "यह बात है बहू. कमला और विमला इस लायक हैं कि तुम्हारे साथ काम कती हैं. अभी से काम न सिखाओगी



तो ये कब कुछ सीखेंगी. स्कूल जाती हैं तो क्या हुआ? सुबह 2 घंटे और शाम का कुछ समय काम सीखने के लिए बहुत है. इस उम्र की बेटियां मां के साथ काम करती हैं. पानी भरा करें, कपड़े साफ करें, सूखने डालें, उठा कर तह कर रखें, छोटे भाईबहनों को नहला दें, कपड़े पहनाएं, स्कूल के लिए तैयार करें. बिस्तर लगाना, उठाना, तुम्हारे साथ सब्जी काटना, आटा सानना, दालचावल साफ करना, मसाला पीसना, चटनी पीसना, यह सब तो कर ही सकती हैं. मिल कर काम करोगी तो जल्दी भी होगा और लड़कियां काम भी सीख जाएंगी."

"यही तो रोना है बूआजी. इन के बाप मना करते हैं," बहू की आवाज में शिकायत थी, "न खुद कुछ करना चाहते हैं, न बच्चों को कुछ करने देते हैं. देखिए न, लक्ष्मण इतना सयाना हो रहा है, स्कूल भी जाता है, पर इस से क्या हुआ? क्या उसे कभीकभी खेत पर नहीं जाना चाहिए? वह खेतीबारी के बारे में कुछ नहीं जानता है. आप के भतीजे से कहती हूं तो बिगड़ते हैं. न जाने कौन सा लाट साहब बनने वाला है उन का बेटा..."

"यह तो रामलखन की ज्यादती है, बहू. आजकल के समय में तो क्या, हमेशा ही खेत किसान की आत्मा रही है. उस की ओर से न खुद का, न बच्चों का जी हटना चाहिए. बच्चों का भी पूरा प्रेम अपनी जमीन के लिए होना चाहिए. तुम ठीक कहती हो, लक्ष्मण 14 साल का है, उसे 2-4 चक्कर रोज खेत के लगाने चाहिए. अरे, यही रामलखन आज भूल गया होगा, लेकिन अभी तो उस का

घर का ढेर काम और करने वाली अकेली सरस्वती. क्या क्या न करे, यही उस की परेशानी थी. परंतु जब उस ने बूआजी के सामने अपने मन की यह खीज उगली तो उन्होंने का रंग ही बदल डाला.

ज्यादातर समय खेतखलिहान में बीतता था. पर तुम्हें पता है? वह पढ़ाई में भी तेज था. इसी वजह से भैयाजी ने उसे हमारे पास शहर में पढ़ने भेज दिया था. एग्रीकल्चर में इंटर होते हुए भी रामलखन के ये लक्षण तो अच्छे नहीं."

जल्दीजल्दी रोटी सेंकती हुई मैं बोली, "अरे, हमेशा से ही हम लोगों में लड़कियां थोड़ी बड़ी हुईं नहीं कि घर का काम करनेकरवाने लगती हैं. तुम ने भी किया है, मैं ने भी किया है, और उसी में तुम ने तो बहू, हाईस्कूल भी पास किया है."

सरस्वती खाना तैयार होते ही सब्जीरोटी पति के लिए परोसने लगी. उस के बाद छोटे दोनों बच्चों को बुला कर खाने के लिए बैठाती हुई बोली, "बूआजी, महंगाई कितनी है इसे तो आप जानती ही हैं. खेतीबारी में जब से हिस्साबंटाई होने लगी है, 5 बच्चों के साथ मुश्किल से पूरा पड़ता है. ऊपर से मास्टर भी रखे हैं, इन दोनों के लिए."

"बहू, तुम को तो दोष न दूंगी, पर रामलखन को चाहिए कि अपने पढ़ेलिखे होने का फायदा उठाए. शाम को 2 घंटे बच्चों को आसानी से पढ़ा सकता है. इतने छोटे बच्चों की पढ़ाई में रखा ही क्या है? इस से फायदा भी है."

इतने में रामलखन खुद जूठे बरतन ले कर अंदर आया. आंगन के एक कोने में बरतन रख कर, हाथ धो कर वह आ कर चौके के सामने खड़ा हो गया, "बूआजी, आज बड़ा भाषण दे रही हो, मामला क्या है?"

मैं ने सोचा, 'यही मौका है रामलखन को समझाने का. कई दिनों से मैं कई तरह की फुजूलखर्ची देख रही थी, जो देहात के लिए कोई जरूरी नहीं था. फिर रामलखन तो पढ़ालिखा, समझदार जवान मर्द है,' मैं

बोली, "आओ, बैठो. बात तो तुम ... कर चल रही है. तुम्हें सुनना च... ठीक मालूम पड़े तो उस पर अमल ... चाहिए."

पास पड़ी मचिया पर ... रामलखन हंसा, "बताओ, ... शिकायत है तुम को मुझ से. अगर ... राय से मैं गलती पर हूं तो अपने ... सुधारूंगा."

"अभी मैं बहू से कह रही ... आजकल के जमाने में पढ़ेलिखे ... बच्चों के लिए मास्टर लगाने की ... है? तुम रोज शाम से रात तक ... दरवाजे पर जा बैठते हो. इस की, ... बुराई ही तो करतेसुनते हो. 3-4 ... बरबाद न कर के बच्चों के बीच ... बैठो, उन्हें खुद पढ़ाओ. दूसरेतीसरे ... पढ़ाई में रखा क्या है? तुम खुद पढ़... बच्चों की तरक्की कितनी हो रही ... चलता रहेगा और 20-25 रुपए ... भी हो जाएगी. बच्चों को अच्छा ल... पिताजी हमारा कितना खयाल करते ... उन्हें तुम से डर भी होगा."

"अरे, बूआ, तुम्हारा कहा मा... चलो, पहली से मास्टर की छुट्टी ... पर पढ़ाने को तो दूसरेतीसरे दरजे ... उन की मां भी पढ़ा सकती है."

"क्यों नहीं पढ़ा सकती है, ... अकेली जान 10 जनों का काम ... फिरेगी, सब के लिए पकापका धरे... में झाड़बुहार करेगी, सफाई करेगी, ... मांजेगी तब कैसे पढ़ाने के लिए ... निकालेगी, यह बताओ? तुम तो दोनों ... को कुछ करनेधरने नहीं देते हो. अ... भूल गए जब तुम जानवरों को चाराप...

थे, बाहर की पूरी सफाई करते थे, खलिहान ताकते थे. छुट्टी के दिन, रातदिन खेत पर रहते थे और तुम्हारी बहन तारा घर का सारा काम करती थी. 10-12 साल की लड़की घर लीपनापोतना, चौकाबरतन करना, रोटी पोना, दालसब्जी बनाना, कपड़े धोना, क्या



"बचवा, बहू की तरफ आंख उठा कर देखने की फुरसत है तुम को, अकेली जान क्याक्या करे, कैसे स्वस्थ रहे?" बूआजी रामलखन से बोलीं.

नहीं करती थी."

"हां, यह तो सही है. उस वक्त मेरी क्या उम्र होगी, बूआ. यही कोई 13 या 14 साल की न?"

"देखो बेटा, इस वक्त जितना कमाओ, बड़े परिवार में कम ही लगता है. उस पर अगर तुम 10 हिस्सेदार रखोगे तो क्या बचाओगे, क्या जोड़ोगे? खेत में मजदूर काम करने के लिए रखने ही पड़ते हैं. लेकिन उन की पहरेदारी के लिए एक और आदमी रखने की क्या जरूरत है? तुम को मैं देख रही हूं. 10-11 बजे तक बाहर बैठे किसी न किसी से बातें ही करते रहते हो. न तड़के उठ कर खुद खेत पर जाते हो न लक्ष्मण को भेजते हो, इस से मजदूर और रखवाला दोनों ही कामचोरी करते हैं. उन्होंने जान लिया है कि मालिक तो आता नहीं है, देर से पहुंचने पर जानेगा कौन? तुम मजदूरों की देखरेख खुद कर सकते हो. सुबह जल्दी उठ ही जाते हो. चाय पी कर सीधे खेत पर पहुंचो और वक्त से काम शुरू करवाओ. इस से कोई चोरीचकारी नहीं करेगा, कामचोरी भी नहीं कर सकेंगे, अपने देखनेसुनने से फसल भी अच्छी होगी. तुम्हारे 5 बच्चे हैं, तुम्हें तो इन बातों का ध्यान रखना चाहिए."

"बूआजी, अब आप ही समझाएं. देखिए न, पिछले साल इन की लापरवाही के कारण हमें साल के आखिर में गल्ला खरीद कर खाना पड़ा. इस साल पता नहीं क्या होगा? लक्ष्मण के जनेऊ में भी इतना खर्च हो गया. पिछले महीने दरजी ने ही ढेरों पैसा लूट लिया," सरस्वती घूंघट की ओट से बोली.

बूआजी बोलीं, "लेकिन, बहू, तुम तो सिल सकती हो, काढ़बुन सकती हो, फिर क्यों दरजी से कपड़े सिलवाए?"

"क्या करूं, बूआजी, मुझे वक्त ही नहीं मिला, घर में इतना काम था ही, ऊपर से दोनों छोटे लड़के बहुत बीमार पड़ गए."

"एक दिन में तो खैर न हो पाता, पर धीरेधीरे, महीने दो महीने पहले से करतीं तो हो ही जाता. तुम्हें अपने काम का ढर्रा बदलना चाहिए. जिस से 12 साढ़े 12 बजे तुम खाली हो जाओ. और दोपहर को 2-1 घंटे सुस्ता सको. इसी फुरसत के वक्त तुम सिलाई कर सकती थीं. दरजी को जो पैसे गए सो गए, जो कपड़े बचते वह भी उस ने मार लिए."

"बूआजी, एक समय तो तुम्हारी बहू बहुत काम कर लेती थी, पर इधर सुस्त पड़ती जा रही है, काम भी उतना नहीं कर पाती है, बीमार भी खूब रहने लगी है," रामलखन बोला.

मुझ से रहा न गया. मैं ने कहा, "बचवा, बहू की तरफ आंख उठा कर देखने की फुरसत है तुम को? 5-5 बच्चे पैदा कर के उन की परवरिश करना, सारा घर ताकनासंभालना, तुम्हारा भी काम, जानवर भी हैं उन्हें भी देखो, खलिहान भी ताको, खेत पर भी जाओ...अकेली जान कितना करे, कैसे स्वस्थ रहे? उस पर तुम्हारी शह पा कर बच्चे जिद्दी और ढीठ हो गए हैं."

"क्या करूं, बूआजी?" रामलखन सिर खुजलाने लगा.

"करोगे क्या, समय और जमाने के साथ कदम बढ़ाना सीखो. अब समय बरबाद
करने के दिन नहीं रहे, न ही हरामखो
तुम पढ़ेलिखे हो, स्वयं मेहनत करो
बचाओ और नएनए खेती के साधन
इस्तेमाल करो. अनाज भी ज्यादा पैदा
और बचत भी होगी. घर की ओर खु
ध्यान दो, बैठकबाजी कम कर दो, बच्च
समझा दो. अपने हाथों से जानवरो
चाराकुट्टी दो तो बहू का काम कुछ ह
हो जाएगा. बच्चे स्कूल चले जाएं तो
भी अपना खाना खेत में मंगवा लो. व
काम से फुरसत पा कर दो घड़ी आराम
ले. दोनों स्वस्थ रहोगे तभी बच्चे भी
रहेंगे, घर में खुशहाली रहेगी."

मेरी बात सुन कर मियांबीवी की
चार हुईं. मैं ने उन्हें मुसकराते देखा तो
गई दवा लग गई है.

"इधर 3-4 दिन से देख रही हूं,
की खांसीजुकाम के लिए एक आदमी
अस्पताल दौड़ रहा है. क्यों भई, घरेलू इ
क्यों नहीं करते हो? तुलसी की पत्ती, श
मुरैठी...कम खर्च और बढ़िया इलाज है.
के जमाने में छोटीमोटी बीमारी के लिए
इलाज होता था. तुम लोग डाक्टर पर बा
पर पैसे न्योछावर करते हो. यह बचत
सकते हो. बहू अकेली सब काम नहीं
सकती है. पर सब कोई जुटो और
लगाओ तो घर में और आसपास सफाई
देखो, अपनी, अपने आसपास की और
घर की सफाई करने में कोई शर्म नहीं
चाहिए," कहते हुए मैं हाथ धोने चली

रामलखन खड़ा होता हुआ ब
"देखना, बूआ, आज ही से मैं तुम्हारी एक
बात का पालन करूंगा और अगले
बचत कर के दिखाऊंगा. मैं बच्चों को
देखूंगा, खेत पर देखना, कल तड़के ही
जाऊंगा. और हां, कमलाविमला, तुम
कल से अपनी मां के साथ काम करवाओ

रामलखन के कहने में ऐसी दृढ़त
कि सरस्वती की आंखों में नया कुछ
की चमक झिलमिला उठी और मेरा मन
कर सकने की खुशी में भर आया.

मुट्ठी भर स्वाभिमान

कहानी • प्रमिला बहादुर

बंद कमरे में हुई बाबू दीनानाथजी की मृत्यु रिश्तेदारों एवं महल्ले वालों को आश्चर्य व सदमे की हालत में छोड़ गई थी. स्वभाव से ही हंसमुख व्यक्ति थे दीनानाथ. सुबहसुबह ही घर के सामने से निकलते हर जानपहचान वाले का हालचाल पूछना व एकाध को घर ले आ कर पत्नी को चाय के लिए आवाज देना उन की दिनचर्या में शामिल था. पैसे से भी संपन्न थे किंतु 2 वर्ष पूर्व पत्नी के निधन के बाद से



पत्नी की मृत्यु के बाद दीनानाथजी ने अपना दुख बेटे सुकांत औ बहू के साथ बांटना चाहा था. परंतु चाहते हुए भी सुकांत पिता का दर्द व एकाकीपन दूर करने में असफल रहा था. पर इ बात का एहसास आज उस का मन कचोट रहा था...

वह एकदम खामोश हो गए थे.

महल्ले वाले उन का आदर करते थे. अतः कोई न कोई आताजाता रहता. किंतु सभी महसूस करते थे कि बाबू दीनानाथजी ने अपनेआप को मानो अपने अंदर ही कैद कर लिया था. शायद पत्नी की असमय मृत्यु के दुख से उबर न पाए थे. 70 वर्ष की आयु में अपने जीवनसाथी से बिछुड़ना वेदनामय तो होता ही है, स्मृतियों की आंधी भी मन को मथती रहती है. सदा पीड़ा के दंश चुभते रहते हैं.

जब तक पत्नी जिंदा थी, बेटे के बुलाने पर वह अमेरिका भी जाते थे, किंतु वापस लौटते तो बुझेबुझे से होते थे. जिस माया नगरी की चमकदमक औरों के लिए जादू थी, वह उन्हें कभी रास न आई. वापस अपने देश पहुंच कर ही वह चैन की सांस लेते थे. अपने छोटे से शांत घर में पहुंच कर निश्‍िचत हो जाते. किंतु अब यों उन का आकस्मिक निधन, वह भी इस तरह अकेले बंद कमरे में, सभी अपनेअपने ढंग से सोच रहे थे. सब से अधिक दुखी थे योगेश साहब, जो दीनानाथजी के परम मित्र थे.

दीनानाथजी के छोटे भाई ने फोन पर यह दुखद समाचार अपने भतीजे को दिया. फिर मृत शरीर को बर्फ पर रखने की तैयारी शुरू कर दी. वह जानते थे कि उन के भतीजे सुकांत को तुरंत चल पड़ने पर भी आने में 2 दिन लगने ही थे.

हवाई अड्डे पर हाथ में एक छोटी अटैची थामे सुकांत इधरउधर देख रहा था कि शायद उस के घर का कोई लेने आया होगा, लेकिन किसी को न पा कर वह टैक्सी ले कर चल पड़ा. घर के सामने काफी लोग जमा थे. कुछ उसे पहचानते थे, कुछ न

आज 7 वर्ष बाद वह आया था. अंदर प

कर नम आंखों से उस ने चाचा के पांव छ

"बहू और बिटिया को नहीं ल

बेटा?" चाचा ने पूछा.

"जी, नहीं. इतनी जल्दी सब का अ

कठिन था," सुकांत ने संक्षिप्त सा उ

दिया.

आंखों से पल्लू लगाए रोने का अभि

सा करती चाची ने आगे आ कर सुकांत

गले लगाना चाहा, किंतु वह उन के पांव

कर पीछे हट गया. 15 वर्ष हो चुके थे

विदेश में रहते. इसलिए इन खोख

औपचारिकताओं से उसे सख्त परहेज

चाचा से मालूम हुआ कि अंतिम संस्कार

लिए रुपयों का प्रबंध भी करना

दीनानाथजी की जेब से कुल 270 रुपए मि

हैं और अलमारी में ताला बंद है, जि

खोलने का हक केवल सुकांत को है.

पड़ोस के घर से चाय बन कर आ

थी, किंतु सुकांत ने पीने से मना कर दि

अपने बाबूजी के मृत शरीर के पास खाम

बैठा उन्हें देखता रहा. उन के ढके चेहरे

खोलने का उस में साहस नहीं हो रहा

जिस जीवंत पुरुष को सदा हंसतेहंसाते

देखा हो, उस का भावहीन, स्पंदनहीन चे

देखने की कल्पना मर्मांतक थी. सुकांत

अपने बटुए से 200 डालर निकाल कर च

के हाथ में रखते हुए कहा, "इन्हें आप

से रुपयों में भुना कर सामान का इंत

कर लीजिए."

"तुम नहीं चलोगे सामान लेने?"

"आप ही ले आइए, चाचा,"

झुकाए धीमे स्वर में बोला सुकांत.

"ठीक है," कह कर चाचा पड़ोस के 2 व्यक्तियों को साथ ले कर चले गए.

घर में घुसने के बाद से ले कर अब तक पलपल सुकांत को मां का चेहरा हर ओर नजर आ रहा था. अपने बचपन को यहीं छोड़ कर वह जवानी की जिस अंधी दौड़ में शामिल हो विदेश जा बसा था, वह उसे बहुत महंगी पड़ी. लेकिन कभीकभी अपने ही किए फैसलों को बदलना कितना कठिन हो जाता है.

पास ही बैठी चाची बीचबीच में रो पड़ती थीं. किंतु सुकांत की आंखों में आंसू नहीं थे. वह एक सकते की सी हालत में था. 2 वर्ष पूर्व जब मां का देहांत हुआ था तो वह आ भी न पाया था. अंतिम बार मां का मुख न देख पाने की कसक अभी भी उस के हृदय में बाकी थी. उस समय वह ट्रेनिंग के सिलसिले में जरमनी गया हुआ था. पत्नी भी घूमने के लिए साथ ही चली गई थी. दीनानाथजी फोन पर फोन करते रहे. घंटी बजती रहती पर कोई न उठाता. खत और तार भी अनुत्तरित ही रहे. पत्नी के शव को बर्फ की सिल्लियों पर रखे 2 दिन तक दीनानाथजी प्रतीक्षा करते रहे कि शायद कहीं से सुकांत का कोई संदेश मिले. फिर निराश, निरुपाय दीनानाथजी ने अकेले ही पत्नी का दाहसंस्कार किया और खामोशी की एक चादर सी ओढ़ ली.



सुकांत से डायरी और अधिक न पढ़ी गई. आंखों में आंसुओं की बाढ़ जो आ गई थी.

जरमनी से वापस आ कर जब सुकांत को अपने बाबूजी का पत्र मिला तो वह दुख के आवेग में मानो पागल हो उठा कि यह क्या हो गया. कैसे हो गया. उस के दिमाग की नसें मानो झनझना उठीं. मां के प्रति अपना बेटा होने का फर्ज भी वह पूरा न कर पाया. उस का हताश मन रो उठा. किंतु अब भारत जाने का कोई अर्थ नहीं बनता था. अतः छुट्टी ले कर भारत गए हुए अपने एक मित्र को उस के घर पर फोन कर के सुकांत ने उस से आग्रह किया कि वह वापसी में बाबूजी को अपने साथ ले आए. न चाहते हुए भी दीनानाथजी चले गए. बेटे का आग्रह ठुकरा न सके. पत्नी के इस आकस्मिक निधन पर अपनेआप को बहुत असहाय सा पा रहे थे. बेटे के पास पहुंच उस की बांहों में मुंह छिपा कर रो लेने का मन था उन का. बेटे के सिवा और कौन बांट सकता था उन के इस दुख को?

चले तो गए, किंतु वहां अधिक दिन रह न सके. बुढ़ापे की कुछ अपनी समस्याएं होती हैं, जिस तरह बच्चों की होती हैं. पहले तो हमेशा पत्नी साथ होती थी, जो उन की हर जरूरत का ध्यान रखती थी. किंतु अब कौन रखता? सुबह 4 बजे जब आंख खुलती और चाय की तलब होती तो चुपचाप मुंह ढांप कर सोए रहते. पत्नी साथ आती थी तो बिना आहट किए दबे पांव जा कर रसोई से चाय बना कर ले आती थी. किंतु अब जब एक बार उन्होंने खुद सुबह चाय

बनाने की कोशिश की थी तो बरतनों की खटपट से बेटाबहू दोनों जाग कर उठ आए थे और दीनानाथजी संकुचित हो कर अपने कमरे में लौट गए थे. फिर दोपहर होते न होते बड़े तरीके से बहू ने उन्हें समझा भी दिया, "बाबूजी, मैं उठ कर चाय बना दिया करूंगी."

और उस के बाद दीनानाथजी ने दोबारा रसोई में पांव नहीं रखा. बहू कितनी भी देर से सो कर क्यों न उठे, वह अपने कमरे में ही चाय का इंतजार करते रहते थे.

सुकांत अपने काम में अत्यधिक व्यस्त रहता था. घर में दीनानाथजी बहू के साथ अकेले ही होते थे. उन की इच्छा होती कि बेटी समान बहू उन के पास बैठ कर 2 बातें करे क्योंकि पत्नी की मृत्यु का घाव अभी हरा था और उसे मरहम चाहिए था, किंतु ऐसा न हो पाता. 2-4 मिनट उन के पास बैठ कर ही बहू किसी न किसी बहाने से उठ जाती और दीनानाथजी अपनेआप को अखबार और किताबों में डुबो लेते. वह परिमार्जित रुचियों के व्यक्ति थे. बेटे ने भी उन से विरासत में शालीन संस्कार ही पाए थे. अतः किताबों से कितनी ही अलमारियां भरी पड़ी थीं.

अपने दफ्तर की ओर से सुकांत को फिर 1 महीना के लिए जरमनी जाना था और सदा की तरह इस बार भी उस की पत्नी शांता साथ जाना चाहती थी. वह सुकांत के बिना 1 महीना रहने को तैयार न थी. रात की निस्तब्धता में दीनानाथजी के कानों में बहू एवं सुकांत के बीच चल रही तकरार के कुछ शब्द पड़े, 'बाबूजी को इस अवस्था में यहां अकेले छोड़ना उचित है क्या?' सुकांत का स्वर था.

'तो मैं क्या करूं? मुझे भी तो घूमने के कभीकभी ही अवसर मिलते हैं,' शांता का रोषपूर्ण स्वर था.

और अधिक सुनने का साहस न था दीनानाथजी में. अतः कमरे का दरवाजा बंद कर हाथ की किताब रख दी और बत्ती बुझा कर सोने की चेष्टा करने लगे. किंतु थी नींद आंखों में? बंद भीगी पलकों सुनहरे छायाचित्र तैर रहे थे, जो पत साथ बिताए 40 वर्षों की देन थे. एकाकीपन आज उन्हें बुरी तरह झ गया. फिर भी स्वाभिमान के धनी थे. सुबह होते ही सुकांत से अपने वापस की इच्छा प्रकट की. किंतु सुकांत अट अपने निश्चय पर कि बाबूजी यहीं रहें वह वहीं रहे. सुकांत अकेला ही जरमनी सुकांत के बिना वह पूरा 1 महीना दीनान ने लगभग मौनव्रत रख कर ही काटा.

और फिर एक दिन उन के दांत में दर्द होने लगा. सारा दिन दर्द से तड़पते भारत में तो उन का अपना मित्र दंतचिकित्सक था, जो एक फोन करते उन्हें आ कर देख जाता था. दवा तक ख जाना नहीं पड़ता था. वही खरीद कर भि देता था. किंतु यहां? यहां तो वह अस से मफलर से मुंह लपेटे दफ्तर से सुकां घर लौटने का इंतजार करते रहे. यहां वह गाड़ी चला सकते थे और न ही किसी डाक्टर का पता मालूम था. शाम सुकांत लौटा तो बाबूजी का सूजा हुआ देख कर सब समझ गया. पिता को गाड़ बिठा कर तुरंत दंतचिकित्सक के पास गया. 80 डालर ले कर डाक्टर ने उन्हें और फिर आगे के स्थायी इलाज के लगभग 3,000 डालर का खर्चा सुना दवा आदि ले कर जब सुकांत बाबूजी साथ घर लौटा तो उस का चेहरा खिलारि सा था कि बाबूजी को अब आराम जाएगा.

किंतु रात को खाने की मेज पर दलिया खा रहे दीनानाथजी से शांता क उठी, "बाबूजी, आप को भारत से स्वा संबंधी बीमा पालिसी ले कर ही आना च था...अब देखिए न, अभी तो डाक्टर ने डालर सिर्फ जांच करने के ही ले इलाज में कितना खर्च होगा, कुछ पता न

"बस करो शांता," सुकांत कड़े

में बोला, "यह मत भूलो कि बाबूजी अपना टिकट खुद खरीद कर आए हैं, तुम से नहीं मांगा है..."

"तुम भी यह मत भूलो सुकांत कि जो पैसा बाबूजी पर खर्च हो रहा है, वह अंततः हमारा है," तलवार की धार जैसे इस एक ही वाक्य से दीनानाथजी का सीना चीर कर बहू उठ खड़ी हुई और अपने कमरे में जा कर झटके से दरवाजा बंद कर लिया.

सुकांत स्तब्ध रह गया. शांता के इस लज्जाजनक व्यवहार की तो उस ने कभी कल्पना भी न की थी. दीनानाथजी खामोश मुंह झुकाए अपमानित से बैठे रहे. बात का रुख यह मोड़ लेगा, उन्हें उम्मीद न थी.

दूसरे दिन सुकांत को अकेला पा कर दीनानाथजी ने उस से अपने वापस लौटने की इच्छा जाहिर की. न चाहते हुए भी सुकांत को उन के निश्चय के आगे झुकना पड़ा. अतः भारत जा रहे अपने एक मित्र के साथ उन के वापस लौटने का प्रबंध कर दिया.

70 वर्ष की आयु में दीनानाथजी ने अपने इस एकाकी जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया. घर में सब कुछ यथास्थान था. पत्नी घर को सदा ही सुव्यवस्थित रखती थी. बैंक में पैसा था और पेंशन भी आती थी. फिर किसी बात की दिक्कत क्यों होगी भला? यही सब सोचते हुए उन्होंने यारदोस्तों से एक छोटे नौकर के लिए भी कह छोड़ा. किंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था. 6 महीने भी न निकाल पाए वह अकेले. टूट से गए थे. बहुत सालता था यह एकाकी जीवन. पढ़नेलिखने के शौकीन थे सो कुछ समय कट जाता था. किंतु आखिर कोई बोलने वाला भी तो होना चाहिए घर में. अंततः उन्होंने डायरी लिखनी शुरू की और डायरी के मुखपृष्ठ पर लिखा, 'सुकांत व शांता के नाम.'

अंत्येष्टि के सारे कामों से फुरसत पाने के बाद सुकांत को ध्यान आया कि बैंक एवं घर के कागजों को भी संभालना है. सभी चीजें बड़ी वाली अलमारी में बंद होंगी, वह



अंधेरे

कलियों की गलियों में
भौंरों के फेरे,
जिंदगी में उजाला
तो बने क्यों अंधेरे.

–अनिल पुष्पकर 'कवींद्र'

जानता था. सारे कागज संभालना मां की जिम्मेदारी थी और बाबूजी उन के द्वारा रखी चीजों की जगह कभी नहीं बदलते थे, यह भी वह जानता था. अलमारी की चाबी उसे पहले की ही तरह एक कागज के लिफाफे में लिपटी मिली. 'कुछ भी तो नहीं बदला यहां,' सुकांत सोचता रहा कि सब कुछ वैसा ही है. उस की मां नहीं बदली, बाबूजी नहीं बदले. बदल गया तो केवल वह स्वयं. और अब पहली बार सुकांत अकेले में फूटफूट कर रोया. घर की सूनी दीवारों ने मानो उसे अपने सीने में समेट लिया.

दूसरे दिन सुबह शांता का फोन आ गया, "कैसे हो? सब ठीक तो है न? फोन भी नहीं किया तुम ने?"

"सब ठीक है," सुकांत का दो टूक जवाब था.

"अरे, बोल कैसे रहे हो?" आदत के मुताबिक झल्ला उठी शांता, "हुआ क्या है तुम्हें?"

"कुछ नहीं," सुकांत अपनेआप पर

नियंत्रण रखे था.

"तो फिर," शांता के स्वर में बेचैनी थी, "जल्दी ही सब काम निबटा कर वापस आने की कोशिश करो. बैंक के खाते और मकान के कागज तुम्हारे नाम हुए कि नहीं? बाबूजी की वसीयत तो होगी?"

सुकांत ने बिना उत्तर दिए फोन रख दिया. विरक्ति से भर उठा वह. उस का हृदय मानो हाहाकार कर रहा था कि कैसी है यह स्त्री, जिसे पैसे के सिवा कुछ और दिखाई ही नहीं देता और क्यों वह स्वयं इतना कमजोर बन गया कि उस ने कभी शांता के इन विचारों पर अंकुश नहीं लगाया. आज वह खुद को इस भयावह स्थिति का जिम्मेदार मान रहा था.

सुकांत का सिर दर्द से फट रहा था. रिश्तेदार सब अपनेअपने घर चले गए थे, बल्कि सच तो यह था कि सुकांत ने ही हाथ जोड़ कर उन से प्रार्थना की थी कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए. कुछ को बुरा भी लगा, किंतु विरोध नहीं किया किसी ने भी. विदेश में बसे लोगों की मानसिकता कुछ भिन्न हो जाती है और यदि साफ शब्दों में कहें तो कुछ ऐसा कि उन का खून सफेद हो जाता है, यही मान कर चुपचाप चले गए सब. जातेजाते चाची ने खाने के लिए भी पूछा था, किंतु सुकांत ने मना कर दिया. पर अब एक प्याला चाय या काफी चाहिए थी उसे, सो रसोई में चला गया. काफी तो थी ही नहीं, क्योंकि मांबाबूजी चाय ही पीते थे. चीनी व चाय की पत्ती 2 डब्बों में मिल गई. दूध नहीं था. अतः बिना दूध की चाय ही बना ली. फिर रसोई में पड़े स्टूल पर बैठ गया.

उसे अच्छी तरह याद था कि मां रसोई में काम करती रहती थीं और बाबूजी इसी स्टूल पर बैठे उन से बातें करते हुए उन का हाथ बंटाने की कोशिश करते रहते. एक हूक सी उठी सुकांत के हृदय में...कितने अच्छे थे वे दिन...अपनेआप में परिपूर्ण और जीवंत. उसे लगा कि अब वह एक बनावटी जिंदगी जी रहा है.

चाय पी कर सुकांत का म[illegible] हलका हुआ तो उस ने यह सोच कर अ[illegible] खोली कि आखिर कागजों का क[illegible] निबटाना ही होगा. बड़ीबड़ी 2 फा[illegible] बाबूजी ने सारे कागज सिलसिलेवा[illegible] रखे थे. उन्हीं कागजों में उन की वसी[illegible] थी. वैसे वसीयत की कोई खास आव[illegible] नहीं थी, क्योंकि सुकांत अपने मातापि[illegible] अकेली संतान था. किंतु दीनानाथ[illegible] आदत हर काम को पक्के तौर पर [illegible] की थी. आगेपीछे बहुत रिश्तेदार थे[illegible] सुकांत उतनी दूर विदेश में...किसी क[illegible] भरोसा?

सहसा सुकांत को फाइलों के नी[illegible] किताब सी नजर आई. खींच कर नि[illegible] तो देखा कि यह तो वही डायरी है ज[illegible] ने बाबूजी को वहां से आते समय [illegible] सुकांत अपनी उत्सुकता न रोक पाया. [illegible] अलमारी में वापस रख कर उस ने अ[illegible] बंद कर दी और डायरी हाथ में लिए[illegible] आ गया. लगभग आधी डायरी भरी हु[illegible] जिसे वह आराम से पढ़ना चाहता था. [illegible] का पहला पृष्ठ बाबूजी ने हवाई जह[illegible] ही लिखा था:

19 जनवरी : बेटे, सुकांत, मैं जान[illegible] तुम नहीं चाहते थे कि मैं अकेले रह[illegible] लिए भारत वापस जाऊं. लेकिन मेरे[illegible] तुम्हारा सुखी जीवन अधिक महत्त्वपूर्ण[illegible] तो बीता समय हूं, आने वाला कल तु[illegible] मेरे यहां होने से तुम्हारी गृहस्थी में जो[illegible] पड़ती जा रही थी, वह मेरे लिए श[illegible] बात थी. क्या मैं इतना अक्षम हूं कि [illegible] इस अकेले जीवन का बोझ भी नही[illegible] सकता?

22 जनवरी : वापस तो आ ग[illegible] सुकांत, लेकिन घर मानो काटने को [illegible] रहा है. तुम्हारी मां के बिना कुछ भी [illegible] नहीं लगता यहां. पड़ोस के योगेश सा[illegible] अपना नौकर भेज कर साफसफाई तो [illegible] दी है, खाना भी भिजवाया है, किंतु [illegible]

की आवश्यकताएं क्या केवल यही हैं?

25 जनवरी : सुकांत, बहुत याद आ रही है तुम्हारी. इस तरह अकेले रहना कितना कठिन है, यह रह कर ही जान सका हूं. इच्छा होती है वापस लौट जाऊं, किंतु शांता को मेरा वहां रहना पसंद नहीं. क्या करूं? कुछ सोच नहीं पाता. बहू में अपनी एक बेटी पाने का सपना था मेरा, जो नियति ने पूरा नहीं होने दिया.

26 जनवरी : आज सारा दिन योगेश साहब के साथ बैठ कर टीवी देखता रहा. 3 दिन बाद उन के बेटे की शादी है, बड़े खुश थे. पत्नी के निधन के बाद आज पहली बार उन्हें दिल खोल कर हंसते देखा.

2 फरवरी : यह 1 सप्ताह योगेश साहब के बेटे की शादी के हंगामे में कैसे बीत गया, पता भी न चला. पड़ोसी होने के नाते मेरा कर्तव्य भी था कि उन के कार्यों में हाथ बंटाऊं. वह भी तो हर समय मेरा ध्यान रखते हैं. लेकिन अब बड़ी थकान हो रही है. आज कहीं नहीं जाऊंगा.

4 फरवरी : अभीअभी मिठाई का डब्बा पकड़ा गए योगेश साहब. कहने लगे कि बहू के घर से आई है. बड़े ही खुश, खिलेखिले से दिखते हैं वह आजकल. पत्नी की मृत्यु उन्हें भी मेरी ही तरह अकेला कर गई थी. अब बहू ने आ कर घर में रौनक कर दी है. सचमुच सुशील लड़की है, सगे पिता जैसा प्यार देती है योगेशजी को.

5 फरवरी : अब मैं होटल का खाना खा कर ऊब गया हूं. घर का बना खाना खाने की इच्छा होती है. कहा तो है कई लोगों से, शायद कोई नौकर मिल जाए. कोई छोटा सा लड़का भी मिल जाए तो मैं सब संभाल लूंगा. कभी सोचा भी न था कि यों अकेले रहना पड़ेगा मुझे. अनुभा के बिना यह घर कितना बेरौनक है.

8 फरवरी : अभीअभी सुकांत ने फोन पर बताया कि मैं दादा बन गया हूं. अकेले संभाल ही नहीं पा रहा इतनी खुशी. काश, आज अनुभा जीवित होती तो दादी बनने पर कितनी खुश होती. सुकांत के बच्चों को गोद में खिलाने की अदम्य लालसा मन में लिए ही इस दुनिया से चली गई. प्रकृति की इच्छा के आगे हम कितने विवश हैं. अब मुझे ही देखो, मैं तो जीवित हूं, फिर भी कितनी दूर हूं अपनी पोती से. तड़प रहा हूं उस नन्ही गुड़िया को एक नजर देखने के लिए. किंतु नहीं, जब तक शांता स्वयं अपने मुंह से आने को न कहे, मुझे वहां नहीं जाना चाहिए. सब कुछ तो चला गया, केवल मुट्ठी भर स्वाभिमान ही तो शेष है. कैसे छोड़ दूं इसे भी?

11 फरवरी : अब रहा नहीं जाता, सुकांत की बच्ची को देखे बिना. कैसी होगी वह गुड़िया. जाने किस पर गई होगी. अनुभा का भी कोई गुण होगा उस में या नहीं? आज ही खत लिखता हूं सुकांत को कि आने के लिए छुट्टी का प्रबंध करे. मैं नहीं जा सकता वहां, लेकिन वे तो यहां आ कर रह सकते हैं न?

13 फरवरी : कल से लिफाफा ला कर रखा है, लेकिन सोच नहीं पा रहा कि



"बाबा कहते हैं...मायावती का जाप करने के बजाय राम का जाप करते तो कल्याण हो जाता..."

क्या सुकांत को आने के लिए कहना ठीक होगा? इतने छोटे बच्चे के साथ सफर करना क्या कोई समझदारी होगी भला? अनुभा भी सदा यही कहती थी कि मैं हर काम में जल्दबाजी करता हूं. उस की कही सब बातें, सारी नसीहतें याद आती रहती हैं. नहीं, मुझे सब्र करना ही होगा. अभी सुकांत को आने के लिए खत लिखना ठीक नहीं.

16 फरवरी : अनुभा, तुम नहीं हो इसीलिए इस डायरी का सहारा लेना पड़ता है. इस बार के अमेरिका प्रवास ने मेरे हृदय पर जो मोहर लगाई वह अमिट है. किंतु किस से कहूं यह सब? कैसे अपना मन हलका करूं? जो कुछ किसी से भी नहीं कह सकता, उसे कागज के इन कोरे पन्नों पर उतार कर मन को बड़ा चैन मिलता है. तुम होतीं तो...

अब सुकांत से और अधिक न पढ़ा गया. आंखों में आंसुओं की बाढ़ सी आ गई थी. अपने बड़ों के प्रति किया गया अपनी पीढ़ी का यह अन्याय उस के समक्ष एक चुनौती बन कर खड़ा हो गया कि क्या हक है उसे या उस की पीढ़ी को इस तरह अपने बुजुर्गों को बेसहारा छोड़ने का, उन के स्वाभिमान को ललकारने का, जिन के प्यार का खजाना अभी भी चुका नहीं है, जो बेचैन हैं किसी पर अपना प्यार लुटाने को. क्यों इस सच को उस की पीढ़ी स्वीकार करने से कतराती है कि यह लोग नहीं जी सकते अकेले? किसी छांह की तलाश अब इन्हें भी है, थके कदमों को किसी बांह का सहारा इन्हें भी चाहिए. कहां गए वे दिन, जब बच्चे अपने माता पिता की लंबी आयु की दुआएं मांगा करते थे?

और सहसा सुकांत को लगने लगा कि किसी को तो उदाहरण बनना ही है, तो फिर वही क्यों नहीं? क्या कमी है यहां उस के लिए? इस घर में रह कर तो उसे सदा यही लगेगा कि मां और बाबूजी अभी भी उस के साथ हैं...उन की निश्छल सांसों से महक रहा है सारा घर. आज तक वह कर ही क्या पाया है मां व बाबूजी के लिए? अब यदि वह उन के यत्न से बसाए इस घर को अ
संभाल लेगा तो क्या उन के मन को
नहीं मिलेगी? मरणोपरांत भी बाबूजी उ
लिए इतना पैसा बैंक में छोड़ गए है
थोड़ी सी लगन व मेहनत से वह यहां दे
जम सकता है, अपना नया कारोबार
कर सकता है. अच्छाभला घर है, पैस
है. फिर सोचना कैसा?

इन विचारों से प्रभावित होते ही वि
की उस मिट्टी से सुकांत को न जाने
वितृष्णा हो उठी. उसे लगा अपनी नन्ही ब
को जल्दी से जल्दी अपनी धरती पर ले आ
नहीं तो संबंधों की यह मधुरिमा उस के
में घुल नहीं सकेगी. उस पराए देश में पल
कर शायद वह भी सुकांत के साथ कल
करेगी, जो सुकांत ने अपने मातापिता
साथ किया. सुकांत कांप उठा कि नहीं,
अनर्थ नहीं होने देगा वह.

ऊपर जा कर सुकांत ने अलमारी ख
और बड़े यत्न से बाबूजी की डायरी सं
कर वापस उस में रख दी. यह उस के
अब बाबूजी की दी हुई वह अनमोल नि
थी जिस ने उस का सही मार्गदर्शन कि
कल को उस की अपनी बेटी बड़ी हो
अगर उस से यह सवाल करेगी कि
अमेरिका छोड़ कर भारत में रहने के
वापस क्यों आया, तो वह डायरी उसे
के लिए देगा. तब अपने दादादादी को
कर उस का बचपन अधूरा रह गया,
दुख उसे भी सालेगा और तब शायद सु
अपनी बेटी की बांहों में मुंह छिपा क
सकेगा. अपने हृदय पर सालोंसाल चढ़ती
की परतों को एकएक कर उतार फेंके

सुकांत जानता था कि उस के
फैसले को शांता आसानी से नहीं स्वी
करेगी, अपनी ताकत से पूरा विरोध क
किंतु सुकांत का निश्चय अब अटल
कि नहीं, वह नहीं बेचेगा इस मकान
यहीं वापस आएगा वह, जल्दी से ज
हमेशाहमेशा के लिए. यही सच्ची श्रद्धां
होगी उस की अपने मातापिता के प्रति.

पाठकों की समस्याएं



मैं एक 30 वर्षीय विवाहित युवक हूं और संयुक्त परिवार में रहता हूं. मैं अपने बड़े भाई की बहुत इज्जत करता हूं जिन्होंने पढ़ालिखा कर इस मुकाम तक पहुंचाया. हम दोनों भाई प्रेमपूर्वक रहते हैं व आर्थिक रूप से भी स्थिति अच्छी है. भाईभाभी कोई भी मुझ से अलग नहीं रहना चाहता पर पत्नी जिद करती है कि वह अलग रहेगी. उसे आजादी चाहिए. ऐसा न करने पर जान देने की धमकी देती है. मैं अपने परिवार से बेहद प्यार करता हूं, अलग रह ही नहीं सकता, पत्नी को भी खोना नहीं चाहता, क्या करूं?

दरअसल आप जिंदगी को अपने हिसाब से देख रहे हैं पत्नी की निगाह से नहीं. लगता है आप अपने परिवार के संयुक्त रूप की ओर ज्यादा ध्यान देते हैं और आप की पत्नी उपेक्षित महसूस करती है. आज जबकि संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, ऐसे में आप की पत्नी की अलग रहने की सोच बहुत अधिक नाजायज नहीं है. आप यह समझने की कोशिश करें कि वे कौन से कारण हैं जिन की वजह से पत्नी आजादी महसूस नहीं करती. हो सकता है आप उस के साथ एकांत में बहुत कम बैठ पाते हों या घुमाने भी न ले जा पाते हों. घर से अलग हट कर पत्नी को समय दीजिए, उस की रुचियों के अनुसार चलिए, तब कोई कारण नहीं कि वह अलग रहना चाहे. कोई तो ऐसा कारण अवश्य होगा जिस से वह आजादी महसूस नहीं कर पाती. ऐसे कारण दूर कीजिए, हो सकता है तब पत्नी को कोई शिकायत न रहे.

मैं एक विवाहिता हूं और 3 बच्चों की मां हूं. विवाह को 8 वर्ष हुए हैं. शादी के कुछ दिन बाद ही पता चला कि पतिदेव अन्य औरतों के पास जाते रहते हैं. मैं ने झगड़ा कर के यह सब छुड़वा दिया पर कुछ दिन बाद फिर वही शुरू हो गया, उन औरतों में से एक तलाकशुदा भी है जो अपने मायके में रहती है. मुझे उन के संबंध के विषय में संदेह बना रहता है. मैं स्वयं एक क्लर्क के पद पर हूं. मैं अपने पति को बेहद प्यार करती हूं और जब प्यार करती हूं तो वह चुप हो जाते हैं. मैं इस समस्या से बेहद दुखी हूं और आत्महत्या तक की सोच चुकी हूं, क्या करूं?

खेद की बात है कि विवाह के बाद भी कुछ लोग अन्य औरतों का साथ ढूंढ़ते हैं. मनोवैज्ञानिक तो पराई औरतों के पास जाने वाले लोगों को मानसिक रूप से बीमार तक मान लेते हैं. परंतु फिर भी उन के इस आचरण के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है. आप स्वयं कारणों को खोजिए. आमतौर पर होता यह है कि पराई औरतों में सुख देखने वाले पुरुषों की पत्नियां जब इस बात से क्षुब्ध हो कर क्लेश करती हैं तो वे बेशरम हो जाते हैं और उसी जिद के कारण और भी ज्यादा चिढ़ाना शुरू कर देते हैं. इसलिए पहले तो आप उन्हें डांटना व क्लेश करना बंद कर दें फिर उन्हें घर में अधिक प्रेम व सुख दें इस से पति बाहर पराई औरतों में भटकना छोड़ सकता है.

मैं एक 19 वर्षीय छात्रा खिलाड़ी हूं और मित्रता के मामले में बड़ी ही संवेदनशील हूं. जैसे, मेरी एक खिलाड़ी मित्र थी जो अब किसी और के साथ उठतीबैठती है, ऐसे में मेरा द्वेष होना स्वाभाविक है. वे दोनों लड़कियां घंटों बात करती हैं और मैं चिढ़ती रहती हूं. हालत यह है कि अब मैं किसी से बात ही नहीं करती हूं, अकेली ही बैठती हूं. क्या करूं कि मेरे अंदर खिलाड़ियों वाले गुण आ जाएं और स्पोर्ट्समैनशिप भी बरकरार रहे. इस ईर्ष्यालु स्वभाव से कैसे छुटकारा पाऊं?

आप की उम्र में इस प्रकार की बातें स्वाभाविक हैं. यह ईर्ष्यालु स्वभाव भी बहुधा महिलाओं में अधिक पाया जाता है पर अब इस प्रकार का स्वभाव इसलिए कम देखने में आता है क्योंकि महिलाओं ने बाहर निकल कर एक स्थान बनाया है. समय रहते आप भी यह बात समझ जाएंगी. आप तो एक खिलाड़ी हैं, मित्रता की कसौटी को समझ कर सब से एक सा व्यवहार करें. दरअसल, आप उस सहेली के दूसरी के साथ निकट होने से चिढ़ती हैं इसलिए हो सकता है वह और चिढ़ाती हों. ये सब साधारण बातें हैं, इन

बातों को नजरअंदाज कर देंगी तो सही खेल भावना उभर आएगी. अकेले बैठ कर कुढ़नेचिढ़ने से आप का खेल का उत्साह कम होगा और पढ़ाई पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, यह समझ कर आगे चलें.

मैं एक 38 वर्षीय शिक्षित विवाहिता हूं और 2 बेटों की मां हूं. मेरे पति अच्छे पद पर कार्यरत हैं. मेरे साससुसुर हम से अलग किराए के मकान में रहते हैं. मेरी सास शिक्षित हैं और हमारे घर 2-3 सप्ताह रहने भी आती हैं पर एक अजीब बात यह है कि जब भी मेरे पति कपड़े बदलते हैं मेरी सास उन के साथ कमरे में तब तक रहती हैं जब तक वे कपड़े नहीं बदल लेते. अब मेरे 13 वर्षीय बड़े बेटे के कपड़े बदलने के समय उस के साथ भी कमरे में रहती हैं. इस की पुनरावृत्ति ने मुझे बेहद परेशान कर दिया है. हमारा बाथरूम छोटा है इसलिए कपड़े शयनकक्ष में ही बदलते हैं. मैं पति से कहती हूं दरवाजा अंदर से बंद कर लो तो कहते हैं, ये सब तुम्हारा संदेह है. सास से कुछ कह नहीं सकती. क्या मेरी सास की समस्या मनोवैज्ञानिक है? डर है कि बात फैलने पर पति का गुस्सा न झेलना पड़े. क्या करूं?

आप की सास की समस्या दरअसल मनोवैज्ञानिक ही है. कुछ लोगों में इस प्रकार की प्रवृत्ति पाई जाती है और उम्र की सीमारेखा भी कोई नहीं होती. अब आप मनोवैज्ञानिक के पास ले जाएंगी तो हो सकता है पति चिढ़ जाएं. आप स्वयं शिक्षित हैं, समस्या को बिना किसी परेशानी के हल कर सकती हैं. एक तो अच्छी बात यह है कि आप के सासससुर अलग हैं तो समस्या हर समय की भी नहीं है. आप अपनी सास के साथ ससुर को भी बुलाया करें. दूसरे, सास को किसी काम में उलझा दें, बेटे के कपड़े बदलने के दौरान उसे तो आप दरवाजा बंद करने को कह ही सकती हैं. आप का गुसलखाना बेशक छोटा है फिर भी पति के कपड़े बदलने की व्यवस्था कर ही दें, इस से अंकुश लगेगा. आप की सास स्वयं शिक्षित हैं, उन्हें समझ में आ जाएगा कि यह गलत है. आप अपनी सूझबूझ से समस्या हल कर सकती हैं.

मैं एक 30 वर्षीय शिक्षित सर्वगुण संपन्न तलाकशुदा स्त्री हूं. शादी की प्रथम रात्रि से ही पति मांबहनों के कमरे में सोते रहे. साल में एकदो बार ही मेरे पास सोते थे, कहने को 3 बच्चे हो गए पर पति से विमुख हो मैं अकेलेपन की पीड़ा झेलने लगी. अपने साथ सोने को कहती तो सास और पति मुझे मेरे बाप के घर भेजने की धमकी देते. बात बढ़ती गई, मैं मानसिक संतुलन भी खो बैठी थी, परिणाम यही हुआ कि बच्चों को वहां छो[...] तलाक ले लिया. मैं ने अपनी सास को उस क[...] लौटा दिया. उस ने मेरे बच्चे वापस नहीं किए[...] वहां मैं पागल थी तो हर समय स्नान करत[...] और बच्चों को बेहद मारती थी. रिश्तेदार क[...] मैं ने तलाक ले कर गलत किया. आप की[...] मुझे बचा देंगी, क्या मैं ने गुनाह किया?

आप की एक समस्या ने जब इतना वि[...] रूप ले लिया तो तलाक में परिणति होनी ही थी. [...] तब आप का मानसिक संतुलन ठीक नहीं था. तभी [...] को शायद बच्चे नहीं मिले. जो भी हुआ उसे याद [...] से कोई लाभ नहीं है. अब आप अपने पैरों पर [...] हैं और बच्चों को रख सकती हैं.

बच्चों को वापस बुलाने के लिए कोर्ट की[...] मदद लेनी होगी. पहले आप स्वयं सोचिए कि [...] क्या चाहती हैं? आप के अकेलेपन को देखते हुए [...] को न्याय भी मिलेगा. फिलहाल तलाक के बाद [...] बच्चों से मिलने आप हर हफ्ते जा ही सकती हैं. [...] के अच्छे व्यवहार से स्थिति बदल सकती है.

मैं एक 27 वर्षीय अविवाहिता एक ल[...] से शारीरिक संबंध तक प्रेम कर रही हूं. उस[...] मांबाप ने उस की अन्यत्र शादी कर दी पर ह[...] संबंध बने रहे. उस की पत्नी से एक बेटी भी[...] मेरी वजह से उस के पत्नी से संबंध तलाक [...] पहुंच गए और वह 4-5 वर्षों से अपने मांबाप [...] घर है. पता नहीं तलाक क्यों नहीं हुआ. वह व्या[...] अपनी शादी को गलती मान कर मुझ से गुप्त वि[...] करना चाहता है. मैं सरकारी नौकर हूं. घर व[...] इस विवाह को राजी नहीं, क्या करूं?

आप का उस से प्रेम बरकरार रखना एक[...] गलत है. आश्चर्य तो यह है कि आप ने शारीरिक स[...] स्थापित कर लिए. उधर उस की पत्नी और बच्ची [...] पीड़ा को जरा भी नहीं सोचा? आप नारी हैं और [...] नारी दूसरी नारी के जीवन को अपने अनुचित कार्यो[...] कष्टपूर्ण बनाए, कितनी शर्म की बात है.

प्रेम तो बलिदान मांगता है. उस की पत्नी [...] बच्ची को उस के साथ रहने दीजिए, आप के अ[...] हटने से कुछ दिन अजीब लगेगा फिर सब सामान्य[...] जाएगा. आप अन्यत्र विवाह कर लें, इसी में सब [...] भला है.

–कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक [...] कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते[...] हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वार[...] अलग से उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याए[...] इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट [...] नई दिल्ली-110055.



सारी रात जगा करता हूं

सारी रात जगा करता हूं,
खुद से बात किया करता हूं.

अपने भीतर अकसर तेरी,
मैं आवाज सुना करता हूं.

पलकें तो मेरी हैं लेकिन,
तेरे ख्वाब बुना करता हूं.

तेरी तू जाने लेकिन मैं,
तेरे लिए दुआ करता हूं.

अपने मन की दीवारों पर,
तेरा नाम लिखा करता हूं.

कोई कुछ भी दे लेकिन मैं,
सब के साथ वफा करता हूं.

मुझ पर करो भरोसा तुम,
मैं कहता वही किया करता हूं.

–सुरेंद्र चतुर्वेदी

पुंड्रवर्धन की देवनर्तकी

गौड़ बंग की राजधानी पुंड्रबर्धन का विशाल कार्तिकेय मंदिर. मंदिर में कार्तिकेय की प्रस्तर मूर्ति, जो बहुमूल्य अलंकार व वस्त्रों से सुसज्जित थी. मयूर के पीठ पर कार्तिकेय आसीन तथा उन के दोनों तरफ 2 स्त्रियां, देवसेना और बल्ली. पुंड्रबर्धन का यह विशाल कार्तिकेय मंदिर स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना था.

मंदिर के सामने प्रशस्त प्रांगण. प्रांगण के शुरू में ही एक उच्च नृत्य बेदी थी. बेदी के एक तरफ वादकों का दल मृदंग, करताल, वीणा आदि लिए प्रस्तुत था. बेदी के सामने बैठे हुए थे पुंड्रबर्धन के कुलीन पुरुष. राज्य के कुछ उच्च अधिकारी तो थे ही, राज परिवार के 3-4 सजेधजे युवक आतुरता से किसी की प्रतीक्षा कर रहे थे.

तभी एक युवती ने वहां प्रवेश किया. उस ने उपस्थित पुरुषों को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया. फिर बेदी की ओर बढ़ी. युवती का शरीर सुडौल था, वह गौरवर्ण थी तथा केश पुष्पों से सजे थे. एक रेशमी वस्त्र से वक्ष कस कर बंधे, किंतु उन के उभार स्पष्टतः दृष्टिगोचर थे.

युवती रूपवती तो थी ही, गुणों में भी वह अतुलनीय थी. नृत्य, गीत की शिक्षा उस ने शैशव से ही कठोर नियमों का पालन करते हुए पाई थी. रूपवती, गुणवती वह युवती पुंड्रबर्धन की देवनर्तकी थी. उस का नाम कमला था.

कमला बेदी पर बैठ वादकों के दल को संकेत कर एक शास्त्रीय गीत गाने लगी. उपस्थित श्रोता उस मधुर आवाज में खो गए.

कहानी • विश्वनाथ या

सामने मंदिर का तोरणद्वा
कमला की दृष्टि एक युवा पुरुष पर
हो गई, जो मंदिर के तोरणद्वार से
कर रहा था. युवा पुरुष कुछ आ
आया था. धूलधूसरित शरीर,
चेहरा, वेशभूषा साधारण, क
तलवार, गौरवर्ण तथा रूपवान. श
कोई गहने दृष्टि में नहीं पड़े. सा
वेशभूषा वाला आगंतुक किसी र
का होना चाहिए और नहीं तो
अभिजातवंशीय.

आगंतुक पुरुष मुग्ध हो कम
देख रहा था. शास्त्रीय गायन में को
नहीं, कोकिल कंठी. गायिका का स्व
उस का रूप दोनों प्रीतिकर.

आगंतुक थका हुआ था. व
स्तंभ से सट कर बैठ गया तथा नि
उस रूपवती कोकिल कंठी गायि
देखता, सुनता रहा.

कमला ने दूसरा शास्त्रीय गी
किया. उस की दृष्टि रहरह कर अ
पुरुष पर जा टिकती. आगंतु
व्यक्तित्व उसे आकर्षित कर रहा थ
ने कुछ गीत गाए, फिर नृत्य करने

कमला नृत्य कर रही थी
आगंतुक मुग्ध हो उस का अंग संचाल
रहा था. वहां उपस्थित सभी व्यक्ति
चेहरे पर प्रशंसा के भाव थे.

गीत, नृत्य समाप्त हुआ तो उप
व्यक्ति बाहर जाने लगे. कमला ने
विश्वस्त दासी को संकेत से अपने पा
कर उसे कुछ कहा.

दासी ने उस आगंतुक के पास



उसे दोनों हाथ जोड़ नमस्कार कर विनीत स्वर में कहा, ''आर्य, मेरी स्वामिनी आप से भेंट करना चाहती हैं. कृपया मेरे संग चलें.''

"क्या नाम है तुम्हारी स्वामिनी का?"

''कमला, वह पुंड्रबर्धन की देवनर्तकी हैं.''

आगंतुक ने विस्मित हो कर दासी की तरफ देखा. फिर खड़ा हो उस के पीछे चल पड़ा.

तब तक मंदिर प्रांगण जनशून्य हो चुका था. प्रांगण से सटे एक कक्ष में दासी उसे ले कर गई. इस बीच कमला ने वस्त्र परिवर्तन कर लिया था. उस ने हाथ जोड़ आगंतुक का स्वागत और अभिवादन किया, ''आप मेरे नृत्य, गीत को मन लगा कर देखसुन रहे थे...''

''आप कोकिल कंठी हैं तथा आप का

कल्लाट को कमला अपने गृह
तथा उस का यथोचित सत्कार
कल्लाट थका हुआ था. आहार कर
शय्या पर लेटते ही वह निद्रा
आगोश में खो गया.

संध्या समय कल्लाट नगर भ्रमण
निकला था. सुखी नागरिकों तथ
स्थापत्य को देख वह मुग्ध हुआ थ

कार्तिकेय मंदिर से नृत्य कर
जब अपने गृह लौटी तो रात्रि हो चु
कल्लाट के अभी तक वापस नहीं लौ
वह उद्विग्न हो उस की प्रतीक्षा करन
थोड़ी देर बाद जब दासी ने कल
आगमन का समाचार दिया तो व
उस के पास पहुंच उस के दोनों हा
अपने हाथों में ले अधीर हो बोली,
सचमुच घबरा गई थी.''

पुंड्रबर्धन की देवनर्तकी कमला ने कश्मीरपति जयापीड़ को आ दे कर पुंड्रबर्धन की मानरक्षा की थी. इस के लिए राजा जयंत तो उस का आभारी था ही, स्वयं जयापीड़ भी उस का कृ था. इसलिए उस ने कमला की इच्छा पूर्ण करने का वचन दिया था, लेकिन राजप्रासाद में लौटने के बाद क्या अपना वचन याद रहा?

अंग संचालन प्रशंसनीय है. शास्त्रीय गायन व नृत्य में आप अद्वितीय हैं.''

कमला प्रशंसा सुन शर्म से सिर नीचा कर बोली, ''आप नवागत दिख रहे हैं?''

''देवी का अनुमान सत्य है. मैं एक विदेशी हूं.''

''आप का शुभ नाम?''

''कल्लाट.''

''आप विदेशी हैं तथा नवागत भी. आप को आपत्ति न हो तो मैं अपने गृह में आप को अतिथि बनने का निमंत्रण देना चाहूंगी.''

''देवी की इस कृपा के लिए आभारी हूं.''

''मैं भी कृतार्थ हुई.''

''नगर की शोभा देखतेदेख
आने में कुछ देर हो गई. क्या आप
विपत्ति की आशंका कर रही थीं?'

''आर्य, आप इस नगर में नवा
यहां के नागरिक एक सिंह के अत्या
उत्पीड़ित हैं. प्रतिदिन संध्या को न
समीप के अरण्य से निकल कर वह
हत्या किए जा रहा है. उस के
नगरवासी संध्या को ही सब का
अपनेअपने गृह में आश्रय लेते हैं.''

''पुंड्रबर्धन के अरण्य में सिंह
ने उस की अभी तक हत्या क्यों नहीं

''वह बड़ा भयंकर सिंह है. जि
उस का वध करने की चेष्टा की वह
ग्रास बना.''

कल्लाट ने कोई भी उत्तर न दिया. न के प्रशस्त ललाट की शिराएं तनीं. तु अपने मन के भावों को छिपा वह नर्तकी कमला के संग गृह के अंदर चला या.

सुबह कमला तैयार हो कर कुछ पहले मंदिर चली गई. कार्तिकेय मंदिर में य, गीत समाप्त कर काफी विलंब से वह ह लौटी. उस का गृह मंदिर के करीब ही .

शिविका से उतर कमला गृह प्रांगण आई. दासी उसी की प्रतीक्षा कर रही थी.

कमला ने उस से पूछा, "आर्य के सत्कार में कोई त्रुटि तो नहीं हुई?"

"देवी, क्या आर्य देव मंदिर नहीं गए?"

"नहीं तो, वह यहां से कब गए?" व्याकुल हो कमला ने पूछा.

"द्वार प्रहरी ने मुझे बताया कि वह तृतीय प्रहर यहां से गए हैं. देवी, क्षमा करें, मैं गृह के अन्य कार्यों में व्यस्त थी."

"आर्य के कक्ष में जा कर शीघ्रता से देख आओ. उन की पगड़ी व तलवार वहां है कि नहीं?"

मला नृत्य बेदी पर बैठ वादकों के दल को केत कर एक शास्त्रीय गीत गाने लगी.



दासी द्रुत वेग से गई तथा शीघ्र लौट कर सूचना दी, "देवी, आर्य के कटिबंध, पगड़ी व तलवार उन के शयनकक्ष में नहीं हैं."

आशंका से कमला कांप उठी.

"देवी, आप अपने कक्ष में चलें," दासी ने कहा.

किंतु दासी की बात न मान कमला सामने प्रस्तर बेदी पर जा बैठी. उस का चेहरा पीड़ा से पीला हो उठा.

रात्रि का प्रथम प्रहर समाप्त हो गया था. सिंह के अत्याचार से भयभीत नगर के मध्य सुरक्षित नागरिक भी भय से अपनेअपने घरों में दुबके हुए थे. ऐसे ही समय द्वार रक्षक ने कल्लाट को लौटते देखा. उस ने चिल्ला कर कल्लाट के आगमन की सूचना दी.

कमला प्रस्तर बेदी से उठ खड़ी हुई. तब तक कल्लाट उस के सम्मुख जा खड़ा हुआ. उस के चेहरे पर हास्य था, "देवी, चिंतित दिखाई दे रही हैं?"

कमला कल्लाट को सतर्क दृष्टि से देख रही थी. चांद आकाश के मध्य में हंस रहा था. कल्लाट के केश बिखरे हुए थे. तलवार कटिबंध में थी. कपाल पर श्वेत बिंदु और बाहु और कक्ष में क्षतचिन्ह. रक्त अभी भी टपक रहा था.

कमला कल्लाट के शरीर को स्पर्श कर चीखी, "आर्य, आप आहत हुए हैं? किस ने आप पर आक्रमण किया है?"

"देवी, यह राजा और राजा का युद्ध था. आप व्यर्थ चिंता मत करें. ये मामूली घाव हैं, भर जाएंगे."

"आर्य, आप अपने शयनकक्ष में चलें," कमला कल्लाट की कमर में अपने बाएं हाथ को लपेट उसे जबरन खींचने लगी.

फिर कुछ याद आते ही वह दासी को संबोधित कर बोली, "उपचार पेटिका तथा गरम जल ले कर जल्दी आओ."

कल्लाट को ले कर कमला शयनकक्ष में पहुंची. उस ने उसे शय्या पर बिठ[ा]... तब तक दासी गरम जल, स्वच्छ व... टुकड़े तथा उपचार पेटिका ले... उपस्थित हो गई. कमला ने विलंब... घायल स्थलों को स्वच्छ कपड़े से गर... में भिगो कर साफ किया तथा उ... पेटिका खोल कटे स्थलों पर औष... लेप लगाने लगी. कटे स्थलों को ए... गौर से देख हठात कमला ने कंपित ... पूछा, "आर्य,आहत स्थल तो पशु के ... बने लग रहे हैं?"

"हां, देवी."

"आर्य, आप कहां गए थे?" क... कल्लाट के नेत्रों में सीधे देखा.

कल्लाट ने मुसकरा कर उत्तर... "देवी, इस नगर के लोगों के भय को ... के लिए दूर करने अरण्य में..."

"आर्य, आप उस भयानक सिंह ... कर आए हैं," कमला ने आतंक से ... फाड़ कर कल्लाट की तरफ देखा.

"देवी, पुंड्रबर्धन नगरवासिय... सदैव के लिए त्रासमुक्त कर आया ह...

कल्लाट के दाईं बांह में लेप लगाते... कमला ने लक्ष्य किया कि वहां रत्न... नहीं है. उस की दृष्टि उस की बाईं ब... गई, वहां रत्न केयूर था. किंतु वह मौ...

कल्लाट नेत्र बंद किए सोच र... पुंड्रबर्धन की इस देवनर्तकी ने... अपरिचित विदेशी को आश्रय दिया... आभूषण दिए और आदर, सत्कार ... पर बदले में उस ने उसे क्या दिया?

कमला ने समझा कि कल्लाट स... है. उस ने झुक कर उस के दोनों चर... अपने कपोल रखे. फिर धीरे से उठ... शिखा को कम कर कक्ष से चली ग...

कल्लाट ने कमला के वापस ज... अपने नेत्रों को खोला. वह देर रात्रि त... निर्णय नहीं कर पाया कि इस देवनत... ऋृण से कैसे मुक्ति प्राप्त करेगा.

दिन का प्रथम प्रहर बीत चुक... अतिथि अभी सो रहे थे. कमला स्ना...

ंगार कर वस्त्र पहन चुकी थी. समय प्रतीत करने के लिए वह वातायन के सामने खड़ी हो राजपथ पर लोगों का आनाजाना देखने लगी. उसी समय एक घोषक आ बीच रास्ते में खड़ा हो डुगडुगी पीटने लगा. जब भीड़ इकट्ठी हो गई तो घोषक ने उच्च स्वर में कहना शुरू किया, "सुनो...सुनो...पुंड्रबर्धन के वासियो, सुनो. इस नगर के लोगों की नींद हराम करने वाले महासिंह का वध जिस पुरुष ने किया है, वह परमवीर इसी नगर में

कमला राजघोषक की घोषणा से कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गई. फिर अपना कर्तव्य स्थिर कर दासी को कुछ निर्देश दे राजमहल रवाना कर दिया. फिर वह कल्लाट के शयनकक्ष की ओर बढ़ी. कल्लाट उसी समय सो कर उठा था. उस के चेहरे पर ताजगी थी.

"देवी, आप की सेवाशुश्रूषा ने मुझे पूर्णतः स्वस्थ कर दिया है. अब कोई चिंता की बात नहीं."

"महाराज, आप ने अपना परिचय



"देवी, क्षणिक आवेग में कोई फैसला न करें. बाद में आप को दुख होगा," महाराज ने कल्याणी से कहा.

रहे हैं. वह और कोई नहीं, कशमीर अधिपति स्वयं महाराज विनयादित्य जयापीड़ हैं. जो व्यक्ति हमारे महाराज से उन की भेंट कराएगा, वह उस की हर इच्छा को पूर्ण करेंगे."

मुझ से गुप्त रखा?"

"महाराज? कौन... मैं?"

"हां, कशमीर अधिपति महाराज विनयादित्य जयापीड़."

"देवी, आप से किस ने यह कह दिया?"

"महाराज, आज सुबह सिंहबध का समाचार सुन शायद आप के खोए नामांकित रत्न केयूर को देख इस देवनर्तकी

के गृह महाराज जयंत स्वयं आप का स्वागत करने आ रहे हैं.''

जयापीड़ ने अपनी दाईं बांह की तरफ देखा. सत्य ही रत्न केयूर नहीं था. सिंह से लड़ते समय शायद वह वहीं टूट कर गिर गया था. उस ने एक दीर्घ निःश्वास ले कहा, ''देवी, परिचय गुप्त रखने के लिए क्षमा करें.''

''महाराज, अतिथि सत्कार में कोई त्रुटि रह गई हो तो इस दासी को क्षमा करें.''

''देवी, मुझे लज्जित न करें. कशमीर का यह राज्य हारा हुआ अधिपति आप का सदैव ऋणी रहेगा.''

''महाराज, मुझे क्षमा करें. राजघोषक कुछ क्षण पहले घोषणा कर गया है. आप का परिचय जान मैं ने अपनी दासी को भेज आप के यहां रहने की सूचना भिजवा दी है. महाराज जयंत अपने सभासदों के साथ आप को यहां से सादर ले जाने के लिए आने ही वाले हैं.''

''किंतु देवी...?''

''महाराज...?''

''50 वर्ष पूर्व मेरे पितामह कशमीर-पति ललितादित्य मुक्तापीड़ ने इस देश को जीता था. यहां के राजा को कशमीर निमंत्रण दे गुप्त घातकों द्वारा उन की हत्या करवा दी थी?''

''महाराज, अब पुंड्रबर्धन नगर में राजा से ले कर साधारण प्रजा तक आप का ऋणी है. आप ने उन के भय व त्रास, यानी महा सिंह का वध किया है. 50 वर्ष पूर्व की घटना के लिए वे आप से प्रतिशोध ले अपनी ही दृष्टि में गिरना नहीं चाहेंगे. महाराज, उलटे आज आप का अभूतपूर्व स्वागत होगा.''

जयापीड़ ने कमला के दोनों हाथों को अपने हाथों में ले कहा, ''देवी, कशमीर से मैं सैनिकों के साथ विजयमाला पहनने के लिए दक्षिण की ओर बढ़ा था. मेरे साले जंज ने विश्वासघात कर कशमीर का राजसिंहासन हथिया लिया. तब मैं ने सामंतों से
मांगी, किंतु किसी ने मेरा साथ न
मैं दक्षिणपूर्व की ओर बढ़ा. किंतु
में शत्रु के गुप्तचर अपना कार्य
रहे थे.

''सैनिक स्वदेश लौटने के लि
करने लगे. बाध्य हो कर मैं ने आ
फिर भी कुछ सैनिक मेरे साथ
प्रयाग पहुंच अपने बचे सैनिकों को
देव वर्मा के अधीन वहीं छोड़ सह
लिए छद्मवेश में पाटलिपुत्र हो
यहां पहुंचा हूं. आप ने मुझे आश्रय दि
ऋण मैं मृत्युपर्यंत नहीं भूल सकत

''महाराज, आप अपना राज्य
सब पुनः प्राप्त करेंगे. गौड़ बंग के म
निश्चय ही आप की सहायता करें

''देवी, आप का कथन सत्य ह

हठात कमला महाराज के दो
पर अपना सिर रख क्रंदन कर उठी.
ने उसे ऊपर उठा, उस के अश्रुओं
विह्वल हो पूछा, "देवी, क्या हुअ

''महाराज, राज्य व गौरव
प्राप्त कर आप फिर राजकार्य में व्य
जाएंगे. इस पर भी यह दासी कभी
स्मरण आ जाए तो मैं उसे ही चरम
समझूंगी.''

कमला के मनोभावों को
महाराज जयापीड़ ने गंभीर हो कहा,
मेरी मनोकामना पूर्ण होते ही
अभिलाषा भी अपूर्ण नहीं रहेगी.''

जयापीड़ ने कमला के सि
सहलाया. वहां काम नहीं, प्रेम था.

स्वयं गौड़ बंग के महाराज
(782-813 ई.) ने अपने सभासदों
देवनर्तकी कमला के गृह उपस्थित
कशमीर पति महाराज विनयादित्य ज
का स्वागत किया. उस दिन जयाप
कमला ने स्वयं अपने हाथों से सजा
महाराज जयंत उस के सौंदर्य, स
व्यक्तित्व से मुग्ध हुआ था. उस ने
स्वर में कहा, ''महाराज, वध कि

सिंह के मुख से एक रत्नजड़ित केयूर मिला है. उस पर सूर्य चिह्न अंकित था तथा विनयादित्य जयापीड़ नाम भी खुदा हुआ था. हमें मालूम है कि सूर्य कशमीर राजवंश का प्रतीक चिह्न है तथा विनयादित्य जयापीड़ गौड़ विजयी ललितादित्य के पौत्र. सिंह के मारने के हमारे सभी प्रयास विफल रहे हैं. आप ने उस की हत्या कर हमें उपकृत किया है. आप राज अतिथि हैं. कृपया हमें अतिथि सत्कार करने का अवसर दें."

जयापीड़ ने कमला की तरफ देखा तो महाराज जयंत ने अपनी त्रुटि अनुभव कर तुरंत कहा, "देवी कमला, आप ने कशमीरपति को अपने गृह में आश्रय दे तथा उन की सेवा, सत्कार कर पुंड्रबर्धन की मान रक्षा की है. हम आप के ऋणी हैं."

कमला ने उत्तर में महाराज जयंत को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया.

"देवी, मैं वचन देता हूं कि आप जो भी इच्छा करेंगी, उसे मैं पूर्ण करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध रहूंगा."

कमला हाथ जोड़े ही खड़ी रही. वह अपने आवेग पर काबू पाने की भरसक चेष्टा कर रही थी. महाराज जयंत कशमीरपति का हाथ पकड़े गृह के तोरण द्वार के सामने राजपथ पर खड़े 4 अश्वों वाले रथ की ओर बढ़ा. जयापीड़ ने जाते वक्त मुड़ कर एक बार कमला की तरफ देखा. कमला के नेत्र उस से मिले तथा संगसंग उस के नेत्रों से गंगायमुना बहने लगी.

रथ महाराज जयंत व कशमीरपति विनयादित्य जयापीड़ को ले कर राजपुरी की ओर बढ़ा. पीछेपीछे घोड़ों पर सवार अन्य सभासद तथा उन के पीछे सशस्त्र सैनिकों की घुड़सवार वाहिनी थीं. राजपथ के दोनों तरफ कशमीरपति के दर्शन के इच्छुक नरनारी जयजयकार कर रहे थे. जब रथ ने राजप्रासाद के विशाल द्वार में प्रवेश किया तो शंख बजने लगे और पुष्प



दोस्त

ऐ दोस्त! तू जिंदगी में क्या निकला,
समझा था हमदर्द
बड़ा ही बेदर्द निकला,
ऐ दोस्त! तू फिजाओं में क्या फिसला,
समझा था सागर
पानी का बुलबुला निकला.

–रेनू चौहान 'गुड़िया'

वर्षा होने लगी.

महल के एक वातायन के पास खड़ी एक अद्वितीय सुंदरी के नेत्र इस आकर्षक व्यक्तित्व वाले रूपवान अतिथि को देख रोमांचित हो उठे. वह पुंड्रबर्धन के महाराज जयंत की इकलौती पुत्री कल्याणी कुमारी थी.

जयापीड़ का महल में अपूर्व स्वागत हुआ. सभासदों के चेहरों पर उल्लास था. अपनी रानी से परामर्श कर सभासदों को विश्वास में ले महाराज जयंत ने महाराज जयापीड़ को अपनी कन्या से विवाह करने का अनुरोध किया तो उस ने उसे स्वीकार कर लिया.

3-4 दिनों में ही महल की अपूर्व सजावट कर दी गई. पुष्पमाला और दीपों के प्रकाश में वह अपनी भव्यता को प्रदर्शित कर रहा था. विवाह समारोह समाप्त होते ही वरवधू अंतःपुर में चले गए.

महाराज जयापीड़ ने अपनी नव-

विवाहिता पत्नी की तरफ देखा और उस के रूप, यौवन पर मुग्ध हो उठा.

नवविवाहित दंपती एक सज्जित बेदी पर बैठे हुए थे. हठात कल्याणी ने कहा, "हमारा विवाह तो हुआ, अंतरंग होना बाकी है."

महाराज जयापीड़ ने चौंक कर पत्नी की तरफ देख कहा, "मुझ से कोई त्रुटि हुई है, देवी?"

"महाराज, यही प्रश्न तो मैं आप से करना चाहती थी?"

"देवी, आप के समान राजलक्ष्मी पा कर मैं तो आनंदविभोर हो उठा हूं."

"नहीं महाराज, आप परेशान हैं और चिंतित भी."

"देवी, कहने को तो मैं महाराज हूं, किंतु मेरा अपना कोई राज्य नहीं है."

"गलत, महाराज. गौड़ बंग की राजकुमारी का पति बन आप अपने हारे हुए राज्य को पुनः प्राप्त कर लेंगे. यह तो अब राजधानी का साधारण बच्चा भी जानता है."

निरुपाय हो महाराज जयापीड़ ने अपनी पत्नी की तरफ देखा, फिर सिर नीचा कर उत्तर दिया, "देवी, आप को सुन कर कष्ट होगा."

"महाराज, पति की चिंता समाप्त होने पर ही मुझे सुख मिलेगा."

"देवी, मैं अपनी एक प्रतिज्ञा अभी तक पूरी नहीं कर पाया हूं और बिना आप के सहयोग के वह पूरी भी नहीं हो सकती."

"कहिए महाराज, दासी आप के किसी कार्य आ सकी तो वे क्षण उस के चरम आनंद के होंगे."

"देवी, मैं इस नगर में एक अपरिचित पथिक के रूप में आया था. निराश्रय, क्षुधा व तृष्णा से क्लांत. पुंड्रबर्धन की देवनर्तकी कमला ने मुझे आश्रय दिया और प्रेम भी. पर बदले में मैं उन को कुछ भी नहीं दे सका."

"जिन्होंने आप को आश्रय दिया, आप की सेवा की, उन की मैं भी तो ऋणी हूं. आप का मन जिस रूप में उस ऋण को चुकाने [के] लिए कहे, वैसा ही कीजिए."

"देवी, क्षणिक आवेग में कोई फैसल[ा] न करें. बाद में आप को दुख होगा, ईर्ष्[या] होगी?"

कल्याणी देवी ने मुसकराते हुए उत्त[र] दिया, "महाराज, मैं एक स्त्री हूं. किंतु राज[सी] परिवेश में मेरा लालनपालन हुआ है. पति के प्रेम में किसी दूसरे स्त्री की भागीदारी से मुझ में ईर्ष्या नहीं जागेगी. राजघराने में राजा की एकाधिक पत्नियां व उपपत्निया[ं] तो स्वाभाविक मानी जाती हैं. जन्म से तो मैं यही देखती आई हूं, अतः इसे भोगने में मुझे पीड़ा नहीं होगी."

"किंतु यह संभव कैसे होगा?"

"बहुत ही आसान है. अभी तक मेरे पिता ने आप को यौतुक (दहेज) नहीं दिया है. कल वह आप को यौतुक देंगे. आप जो मांगेंगे, वह आप को मिलेगा. आप देवनर्तकी कमला को मांग लीजिएगा, वह अस्वीकार नहीं करेंगे."

"किंतु कमला देवनर्तकी है? उस का विवाह 'देवता' से हो चुका है?"

"राजशक्ति के आगे पुरोहित तंत्र को झुकना ही पड़ता है. देवनर्तकी को पुरोहित से क्रय कर लिया जाएगा. आप को पत्नी मिल चुकी है, प्रेयसी बाकी है. उसे प्रेयसी के रूप में ही ग्रहण करें."

अपनी पत्नी की तरफ महाराज जयापीड़ ने प्रशंसा से देखा तथा प्रसन्न हो उसे अपने बाहुपाश में ले कहा, "देवी, आप की ही संतान मेरी उत्तराधिकारी होगी."

पुरोहित प्रथा भारतीय धर्म समाज की एक विशिष्ट अंग थी. राजा से भी ज्यादा पुरोहितों का समाज में मर्यादा व प्रतिष्ठा थी. राजसिंहासन सर्वदा एक वंश के अधिकार में नहीं भी रहता था, किंतु पुरोहित वंशानुक्रम से एक ही पद पर आसीन रहते थे. वे भोगविलास में रमे रहते. इस तरह पुरोहितों की सहायता से जिन समस्त घृणित प्रथाओं की सृष्टि हुई, उन में देवनर्तकी प्रथा भी है.

मंदिरों में देवदासियों की संख्या भरी-पूरी रहे, अतः कन्या होने पर उसे मंदिरों को देवार्पण करने की प्रथा पुरोहितों ने शुरू करवा दी. इस से कलंक के बजाय मातापिता की समाज में और भी प्रतिष्ठा बढ़ जाती. अतः प्रथा को एक धार्मिक अंग मान लिया गया था.

पुरोहित अपने कठोर शासन में देवदासियों को सख्त निगरानी में रखते थे. इस तरह देवदासियां सुरक्षित थीं, साधारण लोगों की पहुंच के बाहर.

वेश्यावृत्ति को स्वाधीन वृत्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने के पीछे देवदासी प्रथा के रूप में प्रथम प्रचेष्टा हुई. देवता तथा पुरोहितों का भोग समपर्याय होना चाहिए, यही धारणा इस प्रथा के जन्म का कारण बनी. बाद में इसी का अनुकरण कर राजा व राजपुरुषों ने राजनटी व नगरवधू प्रथा का प्रचलन किया. इस तरह मंदिरों में देवदासियों का कला समर्पण देह समर्पण में परिणत हुआ और निराकार देवताओं का स्थान साकार मनुष्यों ने ले लिया. मंदिर का प्रांगण नारी व्यापार के एक बड़े बाजार के रूप में परिवर्तित हो गया.

पुरोहित तंत्र ने धर्म की स्वतः व्याख्या व उस की शक्ति को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया. समाज में साधारण वारांगनाएं भी थीं, किंतु वे जनसाधारण के लिए थीं. देवनर्तकी थी सुरक्षिता, जन-साधारण के हाथ के बाहर, पुरोहितों व राजवंश के लोगों के भोग व मनोरंजन के लिए.

जैसा कल्याणी देवी ने कहा था, वैसा ही हुआ. महाराज जयंत ने यौतुक के रूप में देवनर्तकी कमला को अपने दामाद को देने की स्वीकृति दे दी तथा उसी दिन मंदिर के पुरोहित को प्रचुर धन दे कमला को मंदिर के देवता के सेवा कार्यभार से मुक्त होने की अनुमति ले ली गई.

कल्याणी देवी ने स्वयं जा कर यह समाचार कमला को देने के लिए पति को उस संध्या को उत्साहित किया. पत्नी से बिदा ले जब महाराज जयापीड़ रथ पर सवार हो कर चले गए तो अनायास ही कल्याणी देवी के नेत्रों से अश्रु के चंद बूंद टपक पड़ीं. आखिर वह भी तो एक स्त्री थी. अपने पति के जीवन में दूसरी नारी आने पर वह भी तो विचलित हो सकती थी. उस के मन में भी तो ईर्ष्या उठ सकती थी. उसे भी तो दुख, पीड़ा हो सकती थी. किंतु वह राज परिवार की कन्या थी. उन्हें सिखाया जाता था कि ऐसी अवस्था आने पर उन्हें अपने मन की भावनाओं को गोपनीय ही रख लेना चाहिए.

महाराज जयापीड़ रथ पर सवार हो कमला के गृह के सामने पहुंचे. वह रथ से नीचे उतरे तो कमला की एक दासी ने उन्हें देख पहचान लिया. दासी दौड़ती हुई अपनी मालकिन को खबर देने उस के कक्ष में गई. उस से महाराज जयापीड़ के अकस्मात आने



का समाचार पा कमला स्तंभित रह गई. उस के केश खुले व बिखरे हुए थे. उस ने प्रशाधन भी नहीं किया था तथा उस के शरीर के वस्त्र भी बेतरतीब थे. घबरा कर वह पलंग से नीचे उतरी तो जयापीड़ उस के कक्ष में प्रवेश कर चुका था. घबराई कमला के पास पहुंच महाराज जयापीड़ ने उसे अपने प्रगाढ़ आलिंगन में ले लिया.

कमला के नेत्रों से आनंद के अश्रु बहने लगे. उस ने सिर नीचा कर कहा, "महाराज, आप के आगमन के लिए मैं आप की कृतज्ञ हूं."

"देवी, मैं अपने राज्य के पुनः जीतने के लिए सेना सहित कशमीर के लिए रवाना होने वाला हूं."

"महाराज, अपने उद्देश्य में सफल हों."

"देवी, आप मेरी प्रेयसी हैं तथा मेरे साथ ही कशमीर जा रही हैं."

"महाराज, मैं कार्तिकेय मंदिर की देवनर्तकी हूं. मेरा देवता से विवाह हो चुका है."

कमला की दृष्टि में अविश्वास देख जयापीड़ ने मुसकराते हुए उत्तर दिया, "देवी, मैं ने गौड़ बंग के महाराज से यौतुक के रूप में आप को मांग लिया है. उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है. मंदिरों के पुरोहित ने भी अनुमति दे दी है."

"महारानी कल्याणी देवी ने कोई आपत्ति नहीं की?"

"देवी, उन्हीं के सहयोग से यह संभव हुआ है."

महाराज जयापीड़ ने वह रात्रि कमला के शयनकक्ष में ही गुजारी. एक देवनर्तकी का अपने वास्तविक देवता से मिलन की वह प्रथम रात्रि थी.

महाराज विनयादित्य जयापीड़ ने प्रयाग खबर भेज कशमीरी सैनिकों को पुंड्रबर्धन बुलवा लिया. फिर कशमीर व गौड़ की संयुक्त सेना के साथ अपने हारे हुए राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए कूच कर दिया. उन के साथ थी पत्नी कल्याणी देवी त[...] प्रेयसी कमला. गौड़ बंग महाराज जयंत[...] भीगे नेत्रों से पुत्री व दामाद को बिदाई [...] पुंड्रबर्धन के नागरिक भी शोकमग्न [...] महाराज जयंत ने दामाद को काफ[...] धनसंपत्ति, आभूषण, रत्न, घोड़े, हाथ[...] बिदाई में दिए.

महाराज जयापीड़ गौड़ व कशमी[...] की संयुक्त सेना के साथ पाटलिपुत्र हो क[...] कन्नौज की ओर बढ़ा. कन्नौज के राज[...] वक्रायुध ने उस का रास्ता रोकना चाह[...] किंतु वह पराजित हुआ. फिर जयापी[...] उत्तर की ओर बढ़ा तथा एक दिन सेन[...] समेत कशमीर की सीमा तक आ पहुंचा[...]

जयापीड़ का साला जंजु उस के कूच का समाचार पूर्व ही प्राप्त कर चुका था. व[...] अपनी सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार था[...] पुष्प क्षेत्र नामक ग्राम में दोनों तरफ की सेनाओं में प्रचंड युद्ध हुआ. इस युद्ध में जंज[...] घायल हो कर मारा गया. जयापीड़ ने विजय की माला पहनी.

3 वर्षों के बाद विनयादित्य जयापीड़ पुनः कशमीर के राजसिंहासन पर बैठा[...] जयापीड़ ने इस युद्ध की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए, उस का शत्र[...] साला जहां घायल हो कर मरा था, उस स्थान पर अपनी पत्नी महारानी कल्याणी देवी के नाम पर एक जनपद की स्थापना की. यह जनपद कल्याणपुर के नाम से ख्यात हुआ.

जयापीड़ अपनी पत्नी कल्याणी तथा प्रेयसी कमला दोनों के गुणों पर मुग्ध था तथा दोनों बंग ललनाओं को समान रूप से प्रेम करता था.

अब न पुंड्रबर्धन है और न उस का कार्तिकेय मंदिर, किंतु उस की नर्तकी कमला कशमीर में कमलापुर नामक एक जनपद के रूप में शताब्दियों तब अवश्य ही चर्चित रही.

आश्रयहीन उन के राजा को आश्रय व प्रेम दान कर उस ने संपूर्ण कशमीरवासियों का मन जीत लिया था. •

लेख • रिपुदमन जीत

युवक क्यों पसंद करते हैं घरजंवाई बनना?

समाज में घरजंवाइयों की स्थिति का अनुमान करने के लिए साक्षात्कार किया गया जिस में ऐसे कुछ युवकों से बातचीत की गई जो 'घरजंवाई' बन कर रह रहे हैं. ये युवक स्वेच्छा से घरजंवाई बने हैं या परिस्थितिवश? इस का अनुमान आप उन से हुई बातचीत से लगा सकेंगे. इस से यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि क्या आज के युवक सचमुच घरजंवाई बनना पसंद करते हैं?

कुछ माह पूर्व एक विवाह समारोह में नितिश तथा उस की पत्नी से मुलाकात हो गई. दोनों का प्रेमविवाह हुआ



था. जब पत्नी अपनी सहेलियों से बातें करने में व्यस्त हो गई तो मैं ने नितिश से पूछा, "क्यों भई, अब तो खूब चांदी हो रही होगी. खूब खातिर होती होगी ससुराल में घरजंवाई की?"

नितिश थोड़ा झेंप मिटाते हुए बोला, "नहीं आंटी, ऐसी तो कोई बात नहीं है. बहुत अच्छे लोग हैं मेरे ससुराल वाले, जान छिड़कते हैं मुझ पर. और शीना जैसी पत्नी तो किसी भाग्यवान को ही मिलती है."

मैं ने पूछा, "क्या तुम्हें कभी मातापिता की याद नहीं आती?"

नितिश बोला, "इतने वर्ष मातापिता के संग ही रहा, बाकी यहां बीत जाएगी."

घरजंवाई को हमारे समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता. इस शब्द को सुनते ही ऐसे कुटिल लालची युवक का चरित्र आंखों में घूमने लगता है जिसे अपने स्वाभिमान की भी परवाह नहीं होती. लेकिन फिर भी लोग घरजंवाई बनते हैं, क्यों?

उस के पिता चोटी के डाक्टर हैं, देश भर में उन का नाम है. मां भी डाक्टर हैं. दोनों बड़े भाई उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए विदेश गए तो वहीं के हो कर रह गए और तीसरा नितिश घरजंवाई बन बैठा.

मैं ने फिर पूछा, "तुम्हारे मातापिता, जो एकदम अकेले पड़ गए हैं उन का क्या होगा?"

उस का जवाब था, "मेरे और भी तो 2 भाई हैं. उन के साथ वह नहीं रह सकते क्या?"

नितिश के मांबाप को जहां यह शिकायत है कि उन्हें 3 बेटे होते हुए भी एक का भी सुख नहीं है, वहां नितिश अपनी पत्नी के साथ अत्यंत प्रसन्न है.

विकल्प भी घरजंवाई है. पत्नी ऊंचे पर कार्यरत है परंतु स्वयं मेधावी छात्र के बावजूद प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण कर पाया. अब पत्नी उस पर हुक्म चल है.

"सुनो, आज क्या काम पर नहीं ज है? कितने दिन हो गए घर पर बैठे? ही निठल्ले बैठे रहोगे तो खाएंगे क्य आखिर अकेले मेरे वेतन से तो घर नहीं च सकता."

वह उत्तर देता है, "अब हो तो रहा तैयार. कुछ समय तो लगेगा ही."

"जिन्हें कुछ काम करना होता है व सुबह ही निकल पड़ते हैं, तुम्हारी तरह बजे तक सोए नहीं रहते."

पत्नी की खरीखोटी सुन कर वह हंस रहता है और बहुत प्रसन्न रहता है. मेरे पूछ पर कि क्या पत्नी का ऐसा व्यवहार उ खलता नहीं है? वह जवाब देता है, "खल की क्या बात है? पतिपत्नी में तो यह स चलता ही है."

मैं ने कहा, "परंतु अपनी मां से त बहुत बुरी तरह से बोलते हो?"

जवाब मिला, "वह सदा ताने मारत हैं. मेरे साससुर को देखो, कितना प्य करते हैं."

यह है घरजंवाइयों का पहला व पत्नीप्रेम में अंधे हो कर या पत्नी के दबा में आ कर घरजंवाई बनते या फिर स्वाभिमा का अभाव होने के कारण नितिश औ विकल्प जैसे युवक घरजंवाई बनते हैं.

दूसरा वर्ग है ऐसे घरजंवाइयों का ज पारिवारिक प्रेम पाने के लिए घरजंवाई बन हैं. रजत से मुलाकात हुई. वह भी घरजंवा है. पूछने पर उस ने बताया कि बचपन कार दुर्घटना में उस के मातापिता, भाई औ बहन सब की मृत्यु हो गई, केवल वही जिं बचा. उस का जीवन मांबाप के वात्सल्य तथ भाईबहन के स्नेह से वंचित रहा. जब उ एक भरापूरा परिवार मिला तो वह घरजंवा बनने को भी तैयार हो गया. परंतु निले

नितांत एकाकी होते हुए भी घरजंवाई बनने को तैयार नहीं हुआ. उस के अनुसार घरजंवाई बनने से स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है.

तीसरा वर्ग ऐसे घरजंवाइयों का है जो अपने परिवार की शोचनीय आर्थिक स्थिति के कारण जीवन में छोटीबड़ी सुविधाओं से वंचित रहा है.

विकास ने बताया कि भले ही उस के मातापिता ने उसे किसी भी प्रकार का अभाव खटकने नहीं दिया, अपना पेट काट कर उसे उच्च शिक्षा दिलवाई, परंतु मित्रों का बड़ीबड़ी



युवक की स्वतंत्रता घरजंवाई बन कर भी बनी रहे, यह उस की ससुराल की स्थितियों पर निर्भर करती है.

चमकदार गाड़ियों में घूमना, पहाड़ी दर्शनीय स्थानों पर जाना, पानी की तरह पैसा बहाना देख कर वह अमीरी की चकाचौंध से सदा ही प्रभावित रहा. मेरे पूछने पर कि क्या मातापिता के प्रति अपने व्यवहार पर उसे अफसोस नहीं होता? विकास का जवाब था, "अफसोस कैसा, मांबाप ने तो अपना जीवन जी लिया, अब मुझे भी पूर्ण अधिकार है अपने ढंग से अपना जीवन जीने का! मैं तो बहुत प्रसन्न हूं."

चौथा वर्ग ऐसे घरजंवाइयों का है जो कामचोर हैं. वे धनवान परिवारों की लड़कियों को फंसाते ही इसलिए हैं कि बाद में घरजवांई बन कर ससुराल की दौलत पर ऐश कर सकें. जलज ऐसे ही घरजंवाइयों में से है जिन के लिए नैतिकता और चरित्र कुछ नहीं होते, सिर्फ पैसा ही सब कुछ होता है. जलज ने एक दिन तो सीमारेखा ही लांघ दी जब अपनी पत्नी से कहा कि वह उस के मित्रों के लिए साकी बने. जलज का यह व्यवहार उस की पत्नी की बरदाश्त से बाहर था.

मनु एक ऐसा युवक है जिस ने घरजंवाई होते हुए भी बेटे के अभाव को पूर्ण किया. मनु के साससुर का कहना है कि यदि उन का सगा बेटा भी होता तो उन के लिए इतना सब नहीं कर सकता जो मनु करता है. यह है 5वें वर्ग का घरजंवाई जो जंवाई कम बेटा अधिक है.

खन्ना परिवार में 3 जंवाई हैं. तीनों लड़कियां उच्चशिक्षा प्राप्त हैं तथा जंवाई भी. तीनों बेटियों को उन के सास‌ससुर से अलग कर अपने निकट घर ले दिए. संपत्ति के बंटवारे भी करा दिए. तीनों दामाद नितिन, निखिल और अरमान, इतने आज्ञाकारी कि आंधी हो या तूफान, वे दोनों समय हाजिरी देने पहुंच जाते हैं. लड़कियां तो रहती ही अकसर मैके में हैं. लड़कियों के मांबाप अपने भाग्य पर फूले नहीं समाते.

कुछ लोग सिद्धांतवादी भी होते हैं. सुकेश उन में से एक हैं. उन की इकलौती बेटी है. दामाद ने लाख कोशिश की घरजंवाई बनने की पर वह टस से मस नहीं हुए. उन का कहना है कि घरजंवाई से अपनी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है. दूसरे, दामाद स्वयं भी कामचोर और निठल्ला बन जाता है और परिवार का दायित्व नहीं समझता. दामाद बेटी को तंग भी करने लगा परंतु उन्होंने अपना सिद्धांत नहीं छोड़ा. ●

बच्चों के मुख से

मैं अपने बेटे को बता रही थी कि मधुमक्खी को मधुमक्खी इसलिए कहते हैं क्योंकि वह मधु यानी शहद खाती है. इस पर वह तुरंत बोला, "अच्छा, तितली 'बटर' खाती होगी, इसलिए उसे बटरफ्लाई कहते हैं."

उस की इस मासूमियत भरी बात को सुन कर मैं हंसे बिना न रह सकी.

—समीरा

*

एक दिन मेरे 4 वर्षीय चचेरे भाई गुंजन को मेरी चाची स्कूल जाने के लिए तैयार कर



रही थी. तभी वह बोला, "मां, मुझे कम कपड़े पहनाया करो."

सरदी का मौसम होने के कारण चाची ने पूछा, "क्यों, तुम्हें गरमी लगती है क्या?"

इस पर वह बोला, "नहीं मां, स्कूल में मुरगा बनने में दिक्कत होती है."

उस की इस बात पर हम सभी ठहाका लगा कर हंस पड़े.

—नारायण लाल

*

एक बार की बात है. हमारे यहां कुछ मेहमान आए हुए थे. माताजी उन से बात करने लगीं.

तब उन्होंने मेरे 7 वर्षीय भाई इलू से कहा, "तुम 7 कप चाय का पानी गैस पर चढ़ा दो."

इलू रसोईघर में चाय का पानी चढ़ाने चला गया. कुछ देर बाद माताजी ने सोचा कि चाय का पानी उबल रहा होगा तो वह उठ कर रसोईघर में चली गईं. वहां जा कर उन्होंने देखा कि इलू अपनी 6 अंगुलियों में 6 कप चढ़ाए हुए बहुत परेशानी में है.

माताजी ने पूछा, "इलू, पानी क्यों नहीं चढ़ाया तुम ने अभी तक?"

इलू ने बहुत ही भोलेपन से जवाब दिया, "मां, यहां तो 6 कप ही हैं. मैं ने काफी ढूंढ़ा किंतु 7वां कप मिल ही नहीं रहा. अब आप ही बताइए कि मैं 7 कप पानी कैसे चढ़ाता."

उस की इस बात पर हम सब के साथसाथ मेहमान भी काफी हंसे.

—सुबेदार बनवारी लाल शर्मा

*

एक बार मैं ने अपने छोटे भाई राजेश को रुपए दे कर पिपरमेंट लाने के लिए भेजा. थोड़ी देर बाद वह खाली हाथ ही लौट आया और रोंआसे स्वर में मुझ से बोला, "भैया, दुकानदार मुझे दे ही नहीं रहा है."

मैं उसे ले कर दुकानदार के पास गया और उस से बोला, "क्यों भई, इसे पिपरमेंट क्यों नहीं दे रहे हो?"

मेरी बात सुन दुकानदार हैरानी से बो "लेकिन यह तो 2 रुपए गवर्नमेंट मांग रहा था."

उस की यह बात सुन मेरे साथसाथ वहां खड़े अ लोग भी हंसतेहंसते लोटपोट गए.

—उमेश प्रस

*

हमारी आंटी की 4 वर्षीय बे बहुत ही शैतान और नटख है. हमारे अंकल जब भी कहीं आते हैं तो आंटी को इस प्रक



बुलाते हैं, 'अजी सुनती हो.'

इसी बात को ध्यान मे रखते हुए एक दिन उन की बेटी आंटी से बोली, "अजी सुनती हो, आप को पापा बुला रहे हैं."

उस का यह अंदाज देखसुन कर हम सब हंस पड़े.

—राजकुमार विश्वास ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

नौकरी बच्चों के बड़े होने पर ही

लेख ● शशांक अत्रे

पिछले दिनों एक शाम कार्यालय से लौट रहा था कि रास्ते में मेरी मुलाकात एक महिला मित्र उर्मिला से हुई. उर्मिला एक सरकारी कार्यालय में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं. उम्र है यही कोई 32 वर्ष. कुशलक्षेम की औपचारिकता के बाद वह बताने लगीं, "पिछले मंगलवार को तो मैं बहुत बुरी फंसी. संसद सत्र चल रहा था. संसद प्रश्न वाले दिन अकसर देर रात गए तक कार्यालय में रुक कर काम करना पड़ता है. प्रायः मेरे अनुभाग के और पुरुष कर्मचारी रात को रुक कर काम पूरा कर देते हैं और मैं उन्हें 'ओवरटाइम' दिला देती हूं. कभी कुछ 'महसूस' नहीं हुआ.

"परंतु उस दिन अनुभाग के कुल 3 पुरुष सहायक कर्मचारियों में से 2 कार्यालय नहीं आए. एक वरिष्ठ सहायक भी महिला है, जिस का अभी 6 माह का छोटा बच्चा है और मेरे बारे में तो आप जानते ही हैं, तनु अभी 2 साल की ही है. जो पुरुष सहायक कर्मचारी आया था, उस की पत्नी



महिलाओं की अकसर यह समस्या होती है कि उन्हें नौकरी साथसाथ घर की जिम्मेदारियां भी निभानी होती हैं, और इस के लिए चाहिए उन्हें अतिरिक्त सुविधाएं लेकिन क्या समस का यह समाधान उचित है?

भी नौकरी करती है. वह कभी ओवरटाइम नहीं करता और रोज शाम 5.30 बजे अपनी पत्नी को स्कूटर पर बिठा कर घर ले जाता है.

"अब समस्या यह आ गई कि रात को कार्यालय में कौन रुके. मैं रुकना नहीं चाहती थी क्योंकि मैं महिला हूं, रातबिरात कुछ हो गया तो...? दूसरे, मुझे नियमानुसार ओवरटाइम भत्ता भी नहीं मिलता. दूसरी सहायक महिला कर्मचारी भी किसी कीमत पर रुकना नहीं चाहती थी. जो पुरुष कर्मचारी था वह हेलमेट उठा कर सवा 5 बजे तैयार हो गया. आखिर उस की पत्नी इंतजार तो नहीं कर सकती. आपस में कहासुनी की नौबत आ गई.

"मैं ने वरिष्ठ अधिकारियों को यह समस्या बताई, पर किसी ने न सुनी. अंत में झख मार कर मुझे रुकना ही पड़ा. रात के 12 बज गए. डरतेडरते किसी तरह घर पहुंची. अलबत्ता कोई गड़बड़ नहीं हुई वरना..."

यह समस्या अब आम हो चली है. हालांकि भारत में महिलाओं को पूर्ण वेतन सहित प्रसूति अवकाश की सुविधा उपलब्ध है जबकि कई विकसित देशों, यहां तक कि अमेरिका में भी महिलाओं को यह सुविधा उपलब्ध नहीं है. पर अब भारत में कामकाजी महिलाएं बच्चों की देखभाल के नाम पर कुछ अतिरिक्त सुविधाएं चाहती हैं, जैसे कार्यालय में उन्हें देर रात गए तक न रोका जाए या छुट्टियों में न बुलाया जाए. सामान्यतः ऐसा होता नहीं परंतु कुछ परिस्थितियों में कर्मचारियों के लिए यह सब करना अनिवार्य सा हो जाता है. ऐसे में महिला कर्मचारी अपने ऊपर ज्यादती किए जाने का रोना रोती हैं.

वास्तविकता तो यही है कि महिलाओं के नौकरी करने से कई प्रकार की समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं. एक तरफ तो वे घ कामों के लिए समय नहीं निकाल पातीं पति उपेक्षित सा रहता है. बच्चों की देखभ में तो कोताही होती ही है, दूसरी त कार्यालयों में भी कार्यसंस्कृति का लोप चला है. महिला कर्मचारी, चाहे वे सरक नौकरी में हों या प्राइवेट (अगर नौकरी जाने का डर न हो तो) कार्यालय देर आना अपना अधिकार समझती हैं और को समय से पहले ही बैग लटका कर जाना चाहती हैं. अगर किसी ने कुछ क तो उन का सीधा सा जवाब होता है, ' घर का भी काम करना होता है.'

ऐसे में सीधा सा सवाल है कि अ घर का काम करने का इतना शौक है फिर नौकरी करने की क्या जरूरत? वे तो आप पुरुषों के बराबर लेती हैं, फिर क क्यों नहीं करना चाहतीं? क्या वेतन आप घर का काम करने के लिए मिलता है?

इस का एक दुष्प्रभाव पुरुष सहकर्मि पर भी पड़ता है. वे एक तरह की कुंठा शिकार हो जाते हैं. कुछ तो मुखर हो विरोध भी करते हैं कि हमें भी इसी प्र आनेजाने की छूट मिलनी चाहिए. सम तब और गंभीर हो जाती है जब कार्या में देर रात गए तक रुकना पड़े या छुट्टि में कार्यालय आना पड़े. कामकाजी महिल के पति अपनी पत्नी से यही अपेक्षा करते कि वह छुट्टी के दिनों में साथ रहे त आराम से बातचीत, मौजमस्ती की जा स इन परिस्थितियों में कामकाजी महिलाएं चाहती हैं कि उन के पुरुष सहकर्मी सह करें और इन जिम्मेदारियों को निभाएं.

परंतु अब यह भी देखने में आ रह कि कई पुरुष सहकर्मियों की पत्नियां नौकरी करती हैं, वे भी पत्नी के काम

हाथ बंटाना चाहते हैं या उस के साथ छुट्टियां बिताना चाहते हैं. ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि महिला कर्मचारी भी काम नहीं करेगी और पुरुष भी, तो आखिर काम करेगा कौन?

नारी मुक्ति के हिमायतियों की तरफ से इस संबंध में यह सुझाव आया है कि महिला कर्मचारियों के काम के घंटे पुरुषों की तुलना में कम होने चाहिए. अर्थात यदि पुरुष कर्मचारी 8 घंटे की ड्यूटी करता है तो महिलाओं के लिए 4 घंटे की ड्यूटी ही होनी चाहिए, ताकि वे बच्चों की देखभाल और घर के कामकाज निबटा सकें.



घरेलू कामों के बहाने महिलाएं अपनी जिम्मेदारी पुरुष सहकर्मियों पर डालना अपना अधिकार समझती हैं.

यदि इस मांग को स्वीकार कर लिया जाए तो कई और समस्याएं उठ खड़ी होंगी. जैसे, जो कर्मचारी 8 घंटे काम करता है, उस की तुलना में 4 घंटे काम करने वाले को आधा वेतन ही मिलना चाहिए. क्या महिला कर्मचारी इसे स्वीकार करेंगी?

दूसरी समस्या पदोन्नति में आएगी. 8 घंटे काम करने वाले का अनुभव निश्चित ही 4 घंटे काम करने वाले की तुलना में दुगुना होगा. अर्थात यदि पुरुष सहकर्मी को 8 वर्ष में पदोन्नति मिलेगी तो उसी पद पर काम करने वाली महिला सहकर्मी को 16 वर्ष में पदोन्नति मिलेगी. क्या महिला कर्मचारी इसे स्वीकार करेंगी?

यदि यह शर्त लगा दी जाए कि महिलाएं कार्यालय आ कर अपना काम निबटा कर घर जा सकती हैं अर्थात यदि कोई महिला अपना दिन भर का काम 4 घंटे में पूरा कर लेती है तो उसे घर जाने की अनुमति होनी चाहिए. फिर कई और प्रश्न उठ खड़े होंगे कि अगर वही काम कोई महिला कर्मचारी 4 घंटे में निबटा लेती है तो उस के पुरुष सहकर्मी उस काम को 8 घंटे में क्यों कर रहे हैं? अगर काम पूरा करने की ही शर्त है तो यह सुविधा पुरुष कर्मचारियों को भी देने में क्या हर्ज है?

फिर कई नौकरियां ऐसी हैं जो 24 घंटे की हैं जैसे पुलिस, नर्स आदि. इन सेवाओं में महिला कर्मचारियों के लिए काम के घंटे कैसे कम किए जा सकते हैं?

यड़ि इन सभी प्रश्नों का उत्तर तलाश भी लिया जाए तो भी देर रात गए तक

कार्यालय में रुकने की या छुट्टियों में कार्यालय आने की अनिवार्यता का प्रश्न तो बना ही रहेगा. क्यों पुरुष कर्मचारी ही इन जिम्मेदारियों को ढोएं? आखिर वेतन तो उन्हें महिला सहकर्मियों के बराबर ही मिलता है. जहां तक 'ओवरटाइम' का सवाल है अगर कोई पुरुष कर्मचारी ओवरटाइम नहीं करना चाहता तो उसे केवल पुरुष होने के नाते जबरन ओवरटाइम पर क्यों बिठाया जाना चाहिए?

इस संबंध में एक उपाय यह हो सकता है कि महिलाओं के लिए नौकरी में प्रवेश की अधिकतम आयु सीमा, चाहे वह सरकारी क्षेत्र हो या प्राइवेट, 35 वर्ष तक बढ़ा दी जाए. आजकल 1-2 बच्चों का जमाना है.

आदमी

हर आदमी अपने मत को सच्चा और अपने बच्चे को अच्छा समझता है लेकिन इसलिए दूसरे के मत या बच्चे को बुरा कहना उचित नहीं है. –सादी

लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम उम्र सीमा है 18 साल. यदि कोई लड़की 20 वर्ष की आयु में भी विवाह करे तो 35 वर्ष की आयु तक अपने बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी से आसानी से मुक्त हो सकती है. क्योंकि बच्चों के लिए आमतौर पर 5-6 वर्ष तक ही मां की देखभाल जरूरी होती है.

यह भी व्यवस्था की जा सकती है कि अगर कोई लड़की नौकरी कर रही है और वह शादी कर अपनी घरगृहस्थी बसाना चाहती है तथा यदि वह समझती है कि नौकरी करते हुए वह बच्चों की देखभाल नहीं कर पाएगी तो उस के आवेदन पर 35 वर्ष की उम्र सीमा तक कभी भी जब भी वह अपने को नौकरी करने में समर्थ समझे पुनः कार्यभार ग्रहण करने की अनुमति होनी चाहिए और उस के द्वारा आवेदित छुट्टी दे देनी चाहिए.

इसी प्रकार कोई अविवाहित लड़की यदि नौकरी प्राप्त करने में सफल हो [...] है परंतु उस की प्राथमिकता शादी कर[...] बसाने की है और वह पद ग्रहण नहीं क[...] चाहती तो उस की नौकरी उस के द्वारा [...] गए समय या 35 वर्ष की उम्र तक जो [...] पहले हो, सुरक्षित रखी जानी चाहिए [...] इस दौरान महिलाओं को किसी भी प्र[...] का आंशिक या पूर्ण वेतन नहीं दिया ज[...] चाहिए, क्योंकि ऐसा करना नियोक्ताओं [...] अतिरिक्त 'भार' बढ़ाएगा.

चूंकि अभी तक ऐसी व्यवस्था नहीं [...] है इसलिए यह कह पाना तो संभव नहीं [...] कि 35 वर्ष की उम्र के बाद महिला कर्मच[...] नौकरी ठीक से कर पाएंगी या नहीं, [...] व्यवसाय और निजी रोजगार के क्षेत्र में [...] बहुत सी महिलाएं हैं जिन्होंने 35 वर्ष [...] उम्र के बाद काम करना शुरू किया [...] आज सफलता की बुलंदियों पर हैं.

ऐसी ही एक महिला हैं, निर्मल आहू[...] लगभग 4 वर्ष पूर्व वह मेरे साथ एक संस्[...] से पत्रकारिता का पाठ्यक्रम कर रही [...] उन की उम्र तब 45 के लगभग थी. उन[...] पति नौकरी में थे और पुत्र विज्ञापन एजे[...] चलाता है. सहपाठीगण अकसर उन [...] मजाक उड़ाया करते थे. परंतु वही महि[...] आज दिल्ली में एक स्थानीय पत्रि[...] अकेले अपने बलबूते पर प्रकाशित कर [...] हैं.

दूसरी महिला हैं निर्मल खन्ना. विव[...] से पूर्व उन्होंने अर्थशास्त्र से स्नातकोत्तर उप[...] प्राप्त की थी. विवाह पश्चात पढ़ाई ठप [...] गई. बालबच्चों में उलझ गईं, पति का [...] जनरल स्टोर था. आज उन के 3 बच्चे [...] बड़ा लड़का 11वीं में पढ़ रहा है. नीलम [...] भी 40 के आसपास उम्र है. परंतु आज [...] लगभग 2 वर्ष पूर्व उन्होंने अपने भरोसे 'ख[...] लेडीज टेलर्स' की दुकान खोली, बाद [...] बूटीक भी खोल लिया और आज [...] अच्छाखासा कमा रही हैं. इसलिए यह [...] नहीं ही माना जा सकता कि महिलाओं [...] लिए 35 वर्ष की उम्र के बाद भी काम [...] पाना संभव नहीं होगा.

मन बहलाइए अपनों के बीच

लेख • मंजु नागोरी

रमा के अपने 4 बच्चे हैं व 1 भतीजी भी है जो उसी के पास रह कर पढ़ रही है. घरेलू काम व बच्चों के तमाम कामों में घिरी रमा अकसर यह कह कर झींखती रहती है कि यह भी कोई जिंदगी है? न कहीं आना न जाना, बस मैं भली और घर भला.'

बच्चे दोपहर में कभी ताश या लूडो खेलते हों और रमा को खाली बैठे देख लें तो कहेंगे, "मम्मी, हमारे संग खेलो न." लेकिन रमा तुनक जाएगी, झुंझला कर कहेगी, "नहीं, और तुम लोग यहां नहीं दूसरे कमरे में खेलो, मुझे चैन से दो घड़ी आराम करने दो." बच्चे खिसिया कर सामान समेटने लगेंगे.

एक दिन चारों बच्चे किसी के घर जन्मदिन की पार्टी में गए थे. घर पर केवल रमा व भतीजी ही थीं. काम से फुरसत पा रमा ने कमर सीधी करतेकरते अपनेआप से कहा, 'बदन थक कर चूर हो गया पर काम है कि खत्म ही नहीं होता.' भतीजी अकेली बैठी ताश के पत्ते फेंट रही थी, झट रमा के पास आ कर बोली, "बूआजी, चलो 7, 8 खेलते हैं, बड़ा मजा आएगा," उस ने पत्ते बांट कर कहा, "ट्रंप बोलो बूआजी, आप के पास बढ़िया पत्ते हैं," रमा ने हाथ बढ़ा पत्ते उठाए और यूं ही लेटेलेटे पत्ते देखे. वाकई बढ़िया थे. रमा उठ कर बैठ गई, ट्रंप बोली व मजे लेले कर खेलने लगी. शाम ढलने पर बच्चे लौटे. मां को बहन के साथ ताश खेलते देखा तो देखते रह गए. छोटे ने तो रमा की कमर पर झूल कर कहा, "अब



मम्मी हमारे साथ भी खेलो." रमा का मन कुछ हलका लग रहा था. बच्चों के संग खेलना, हंसना, बचकानी हरकतें करना, यूं लग रहा था जैसे वह भी बच्चों में बच्चा ही हो गई है.

"कल खेलूंगी, अभी रसोई का काम देख लूं, पापा आते ही होंगे," कह कर रमा उठ गई पर उस का मन बच्चों के संग खेलने की उत्तेजना से भरा था.

एकदूसरे की रुचियां जानें

अपने परिवार के संग अपनी दिनचर्या के बीच आनंददायक समय बिताना सच में अपनेआप में अद्‌भुत अनुभूति है. प्रायः सभी अपने परिवार के बीच ही रहते हैं पर आपसदारी में हंसीमजाक करने, कुछ सुनने-सुनाने की फुरसत ही नहीं निकाल पाते. अधिकतर घरों में गंभीर चर्चाएं तो खूब होती हैं पर मन बहलाव की बातें, खेलकूद, तमाशे प्रायः होते ही नहीं. यदि ध्यान से देखा व सोचा जाए तो पता लगेगा कि ये उन्मुक्त मनबहलाव के क्षण पूरे परिवार को एक सूत्र में बांध कर पहले से भी ज्यादा मजबूती से जोड़ते हैं और मधुर यादों का एक हिस्सा ही बन जाते हैं.

कई घरों में प्रायः रात के खाने के वक्त जब पूरा परिवार जमा होता है तब भी हंसीमजाक नहीं होता बल्कि दिनभर किस ने क्या किया, क्या करना चाहिए, फलां काम क्यों नहीं किया जैसी गंभीर चर्चाएं ही होती हैं, और उस के बाद सभी अपनेअपने बिस्तरों में चले जाते हैं. अगले दिन नई गतिविधियों के साथ फिर नई समस्याएं ले कर सब उठते हैं और अपनीअपनी व्यस्तताओं में रम जाते हैं. हंसीमजाक, ठहाकों, रुचि और पसंद के लिए कहीं कोई स्थान ही होता.

मुझे याद है, बहुत बरस पहले शाम, पतिदेव ताश की गड्डी खरीद लाए रात को सोने से पहले बोले, "चलो खेलें," मैं अचकचा गई. रात को 11 ताश खेलने की भला क्या तुक है? फिर उठना है. मैं ने नानुकुर की पर जिद पर ही अड़ गए. बोले, "चलो 5 ब खेलो, बस." मैं ने शर्त रखी, "जीत गई रुपए रखवा लूंगी." हम ने हर बाजी जीत के 2 रुपए तय किए. पहली बाजी जीती और उत्साहित हो पत्ते बांटने ल उस रात हम ने 5 नहीं 10 बाजी खे और मैं कुल 12 रुपए जीती. मन में सो 'चलो जी, क्या बुरा है, कल सब्जी जाएगी.'

अब हर रात हम पतिपत्नी ताश खे और मैं अकसर सब्जी के पैसे निकाल लेती. मजा तो आता ही, हार व जीत उत्तेजना भी रहती. रात को घंटे सवा हम दोनों खूब मजे से खेलते. आज भी न कुछ करने को हो, न कहनेसुनने को पति कहते हैं, "ताश खेलोगी? कल स आ जाएगी." मैं तुरंत तैयार हो जाती हूं

बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाएं

वास्तव में मानसिक स्वास्थ्य मन खुशी व प्रसन्नता पर ही निर्भर करता है अ मन को हलकाफुलका बनाए रखने के लि खेल, मनबहलाव आदि जरूरी है. बच्चों साथ बच्चा बन कर खेलना जहां बच्चों आनंद देता है वहीं बड़ों को भी तनाव, चि

परिवार के साथ आनंददायक समय बिताना अपनेआप में एक अद्‌भुत अनुभूति है. इन हलकेफुलके क्षणों से तनाव से तो मुक्ति मिलती ही है, परिवार को भी ये एक सूत्र में मजबूती से बांधते हैं. इसलिए मन बहलाइए अपनों के बीच.



घर में गंभीर चर्चाओं के तो दौर बहुत आएंगे परंतु ये मधुर क्षण यादों का हिस्सा बन जाएंगे.

आदि से मुक्त करता है. बच्चों के साथ बाल खेलना, बागीचे में तितली पकड़ना जहां खुद को बचपन के दिनों में लौटा देता है वहीं बच्चे भी बड़ों के बीच अपनेआप को ज्यादा मस्त महसूस कर पाते हैं. उन्हें बेहद अच्छा लगता है जब बड़े उन के खेलों में शामिल होते हैं. इस से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और समानता की भावना को बल मिलता है. मातापिता भी जब अपने बच्चों को मनोरंजन के नएनए तरीकों से परिचित कराते हैं तो बच्चे ऐसी गतिविधियों की तरफ उन्मुख होते हैं जो उन्हें जीवन भर आनंद दे पाती हैं. बच्चे का जीवन की हर गतिविधि के प्रति उत्साह बना रहता है. विनिता अपने बच्चों से कहती है, "स्कूल का काम पूरा कर लो फिर लूडो या कैरम खेलेंगे. मम्मी साथ खेलेंगी, हम मम्मी को हराएंगे." 'हम जीतेंगे' का एहसास ही बच्चों को पुलका देता है और तब वे दत्तचित्त हो पहले पढ़ाई कर लेना ज्यादा ठीक समझते हैं और अपना कार्य जिम्मेदारी से कर भी लेते हैं.

मनबहलाव आवश्यक है

परिवार के साथ मनबहलाव के लिए समय निकालना व साधन ढूंढ़ना वास्तव में परिवार के संग जुड़ाव की भावना को बल देता है. बच्चों के खेलों में बच्चा बन कर ही रम जाना खुद को कई तरह के तनावों से तो छुटकारा दिलाएगा ही, नई ऊर्जा भी देगा व मन हलकाफुलका हो जाएगा. मन बहलाव के लिए जब कभी भी जरूरत पड़े तो बच्चों का सहयोग लिया जा सकता है. मन बहलाव चाहे जैसे करें, भले ही छत पर घूम कर, गाने सुन कर या चुटकुले सुना कर, पर इतना तय है कि इस का सुखद परिणाम ये खुद ही सामने ले आते हैं और यह परिणाम सामने आता है मातापिता और बच्चों के बीच स्नेह व लगाव के जरिए प्रसन्नता और आनंद के रूप में. ●

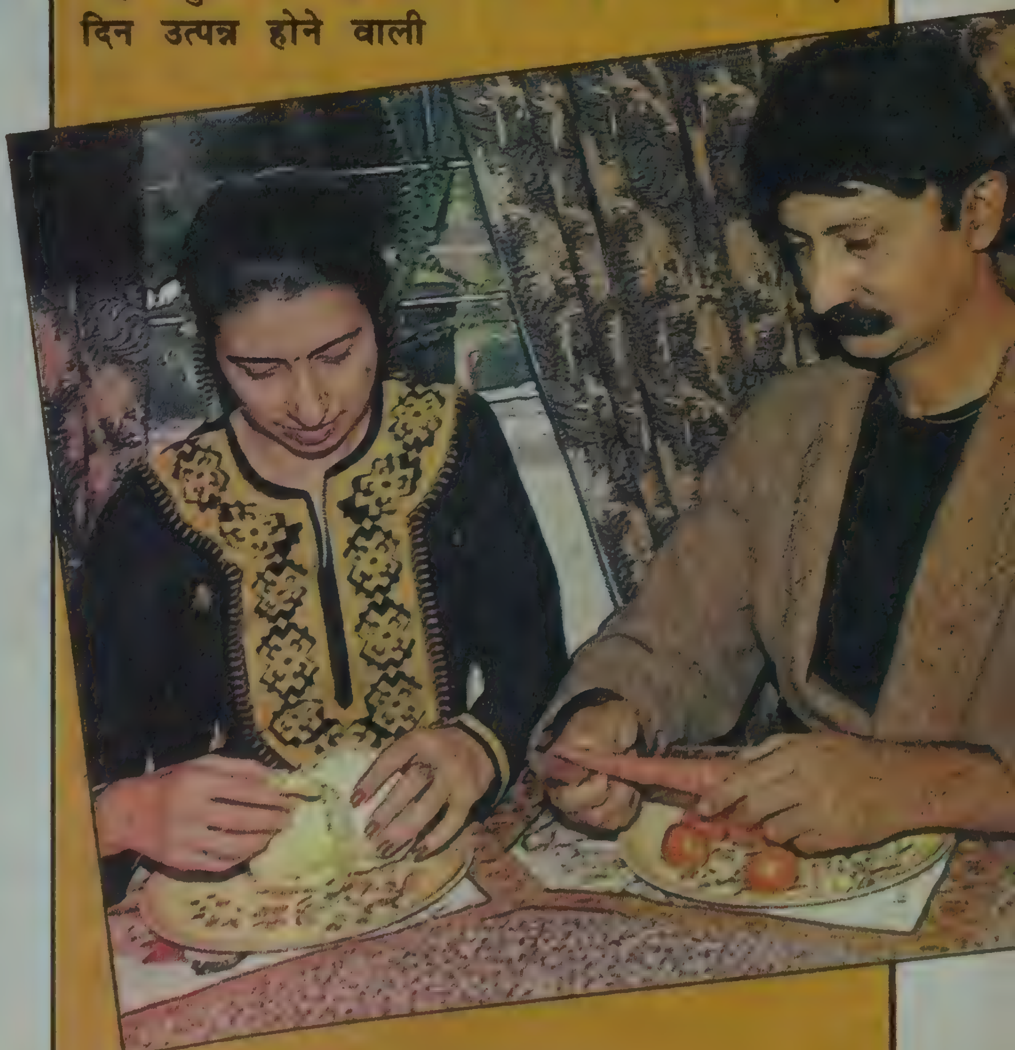
एकाकी परिवारों की समस्याएं

लेख • डा. गुलशन कुमार

जैसेजैसे समाज में परिवर्तन हो रहे हैं, वैसेवैसे परिवार की इकाइयां भी सिकुड़ती जा रही हैं. परिवर्तन की यही गति जारी रही तो लगता है भारतीय समाज में संयुक्त परिवार शायद ही कहीं नजर आएं. वस्तुतः इस तरह के छोटे, एकाकी परिवार जहां परिस्थितियों की मांग हैं वहीं यह भी सच है कि ऐसी पारिवारिक इकाइयों को अनेक प्रकार की समस्याओं से रूबरू होना पड़ रहा है.

यदि पतिपत्नी दोनों कार्यरत हैं तो घर का खाली पड़ा रहना जहां हर पल धुकधुकी बढ़ाता रहता है वहीं कई बार उन को पंजीकृतपत्र/पार्सल आदि प्राप्त करने में अत्यंत असुविधा का सामना करना पड़ता है. इसी प्रकार, किसी आनेजाने वाले से मिल पाना अथवा उसे अपने घर में ठहराना भी या तो अत्यंत सीमित हो जाता है या फिर जी का जंजाल बन जाता है. ऐसे परिवारों की सामाजिक गतिविधियां काफी सिमट जाती हैं.

यदि परिवार में कभी कोई सदस्य बीमार पड़ जाता है तो गिनेचुने सदस्य तनावपूर्ण स्थिति में स्वयं को बोझिल महसूस करते हैं. क्योंकि ऐसे में घरेलू कार्य करने का उन्हें अनुभव ही नहीं होता और न ही जीवन में आए दिन उत्पन्न होने वाली



बदलते सामाजिक परिवेश में जब हर व्यक्ति अपने-अपने दायरे में सिमट रहा है तो रिश्तों में भी पहले जैसी मिठास नहीं रह गई है. इन परिस्थितियों में एकाकी परिवारों का बनना स्वाभाविक है. हालांकि ये वक्त की उपज हैं लेकिन फिर भी इन की समस्याएं कुछ कम नहीं हैं. इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है, मगर कैसे?

समस्याओं से निबटने के लिए उन्हें बचपन में इस तरह की कोई शिक्षा ही दी जाती है. इसलिए यदि स्कूल जाने वाले कम उम्र के बच्चे हों तब तो समस्या और भी जटिल हो जाती है. उन्हें नहलानाधुलाना, उन का नाश्तापानी तैयार करना, उन का होमवर्क करवाना, उन की देखभाल, अपने भोजनपानी की व्यवस्था जैसे कार्य थका कर रख देते हैं. कदाचित ऐसे ही वक्त एकाकी परिवारों को संयुक्त परिवारों का महत्त्व समझ में आता है, उन की याद सताने लगती है.

जानेअनजाने में ऐसे परिवार यदि कुछ सुविधाएं प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं यथा झाड़ूपोचा लगाने वाली रखना, बच्चों को बालवाड़ी में छोड़ना आदि खर्चे तो इतने बढ़ जाते हैं कि न चाहते हुए भी पैर चादर के बाहर निकल जाते हैं. उलटे, कई बार ऐसे घर के भेदी ही चोरी, डकैती, हत्या कुकृत्य कर डालते हैं. उधर, बच्चे पारिवारिक सुखसान्निध्य से वंचित र जिस की उन्हें जीवन के आरंभिक व अनिवार्य रूप से जरूरत होती है.

संयुक्त परिवार होने पर बड़ेबूढ़े अनुभवों से बच्चों के अनेक रोगों का इ कर देते हैं जबकि आज की पीढ़ी के स सिवाय डाक्टरों की शरण में जाने के कोई विकल्प नहीं है.

गंभीरता से विचार किया जाए लगता है कि समस्याएं चाहे जितनी हों, प्रकार के एकाकी परिवार परिस्थितियों उपज हैं. पारिवारिक सदस्यों में पहले सौमनस्य आज दुर्लभ हो चुका है. यह कर चलना कि पुत्र मातापिता के अनु चलेगा अथवा बहू सास को अपनी ही म के समान मान कर आचरण करेगी, स



एकाकी परिवार में यदि कोई बीमार पड़ जाए तो स्थिति बड़ी नाजुक हो जाती है.

के सच होने जैसा कठिन है. रिश्ते आज अवमूल्यित हो चुके हैं. भाभी और साले जैसे रिश्ते अब मजाक का विषय हैं. यान



आसपड़ोस से मेलजोल बढ़ाने से परिवार विशेष का अकेलापन कुछ कम हो जाता है.

संयुक्त परिवार के घटक अब स्वार्थ और अविश्वसनीयता की बलि चढ़ चुके हैं. ऐसी हालत में संयुक्त परिवार के अस्तित्व की कल्पना करना ही व्यर्थ है. बेहतर यही होगा कि उपलब्ध सुविधाओं के अनुरूप एक ऐसी जीवनपद्धति खोजी जाए जो एकाकी परिवारों के लिए अनुकूल हो और जिसे अपना कर वे आराम से रह सकें.

मसलन, आज मांबाप को चाहिए कि वे लड़केलड़की की जीवनपद्धति में भेदभाव समाप्त कर के उन्हें बचपन से ही गृहकार्यों में दक्ष करने का प्रयास करें ताकि भविष्य में किसी सदस्य को अलगथलग पड़ जाने की अवस्था में जिंदगी बोझ न लगने लगे.

दूसरे, बच्चों को आरंभ से ही सामाजिक मेलजोल के संस्कार देने का प्रयत्न किया जाए. आसपड़ोस के सुखदुख में शामिल होने के संस्कार यदि बचपन से ही डाल दिए जाएं तो संयुक्त परिवार से छिटकने पर परिवारविशेष को उतना अकेलापन महसूस नहीं होगा. वह जहां रहेगा, वहीं घुलमिल कर रहने का प्रयास करेगा और इस प्रकार कई समस्याओं से सहज ही छुटकारा पा लेगा. अफसोस कि आज बच्चों को ऐसे संस्कार प्रायः दिए ही नहीं जाते और उन्हें आत्मकेंद्रित बना दिया जाता है. परिणामतः बड़े होने पर उन के लिए किसी के साथ घुलनामिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है.

इस प्रसंग में, इस तथ्य को भी नहीं भूलना चाहिए कि इस तरह के छोटे परिवार ऐसे अनावश्यक खिंचावतनाव से बचे रहते हैं जो संयुक्त परिवारों को अकसर सहने पड़ते हैं. हर पल टोकाटोकी, अंकुश, सदस्यसदस्य में भेदभाव, तुलना, किसी का बिलकुल निठल्ला बैठना तो किसी का हाड़तोड़ मेहनत करना आदि ऐसी बातें हैं जो अच्छेभले आदमी को पागल कर सकती हैं. अतः परिवार का अलगअलग इकाइयों में जीना कोई बुरी बात नहीं है.

यदि ऐसे अलगथलग पड़े हुए परिवारों को अन्य परिवारीजन वक्तजरूरत पर अपेक्षित सहयोग देने के लिए आगे आते रहें तो कोई कारण नहीं है कि ऐसे परिवार आने वाले संकटों का सामना सहजता से न कर सकें. जरूरत ऐसे परिवारों को कोसने की नहीं, उन की समस्याओं को समझ कर, उन्हें मार्गदर्शन और सहयोग देने की है. ●

लेख ● डा. कीर्ति पाठक

अधेड़ पति : अच्छा जीवन-साथी

दुनिया भर में, अधिकतर विवाह हमउम्र जोड़ों के बीच ही होते हैं. जिस युवती का विवाह कालिज छोड़ने के तुरंत बाद होता है, वह प्राय: पति से 1-2 वर्ष ही छोटी होती है. प्रेम विवाह या प्रथम विवाह में भी पतिपत्नी में उम्र का अंतर अधिक नहीं होता.

आमतौर पर माना तो यही जाता है कि सफल विवाह के लिए उम्र में तालमेल होना बहुत आवश्यक है लेकिन फिर भी, पत्नी की तुलना में पति का कहीं अधिक उम्र का होना बिलकुल विचित्र बात भी नहीं है. कभीकभी, किन्हीं कारणों से पतिपत्नी की उम्र में बहुत अधिक अंतर हो जाता है. पारिवारिक कारणों या जिम्मेदारियों की वजह से, उम्र रहते शादी न कर पाने वाली महिला जब अंततः विवाह के लिए राजी होती है, तो



प्रायः यह माना जाता है कि सुखी वैवाहिक जीवन के लिए पतिप
की उम्र में तालमेल होना आवश्यक है लेकिन फिर भी
यदि परिस्थितिवश पति उम्र में अधिक बड़ा भी हो तो क
बुरा नहीं है. क्योंकि ऐसे रिश्ते में केवल प्यार
व मधुरता होती है, कलह बिलकुल नहीं.

अधिक उम्र वाला व्यक्ति ही उस से शादी करना स्वीकार करता है. विधवा या परित्यक्ता स्त्री को भी दूसरा, अपने से उम्र में काफी बड़े पुरुष के साथ विवाह करना होता है.

दिलचस्प बात यह है कि ऐसे विवाह काफी सफल होते देखने में आए हैं जहां पति पत्नी की उम्र से कहीं अधिक बड़ा होता है. पति का उम्र में काफी बड़ा होना पत्नी के लिए अकसर सुखद सिद्ध होता है; विशेषकर उन स्त्रियों के लिए, जो अपने मांबाप की इकलौती संतान रही हों, जिन का पालनपोषण हमेशा वयस्कों के बीच हुआ हो, या फिर उन के लिए, जिन्हें बचपन में मातापिता का प्यार न मिला हो. अकसर ऐसा होता है कि ऐसे माहौल में पली स्त्रियां पति या प्रेमी में अपने पिता का सा प्यार ढूंढ़ती हैं. ऐसी स्त्रियों को अपने से काफी अधिक उम्र के व्यक्ति से शादी कर के जीवन में पर्याप्त सुख और संतोष प्राप्त हो सकता है.

यह सच है कि अधेड़ पति नौजवानों सा फुर्तीला नहीं हो सकता, वह देर रात की पार्टियों में शामिल होना पसंद नहीं करता, नए गानों की जगह पुराने गाने सुनना पसंद करता है, होटल में खाने की अपेक्षा घर की दालरोटी अधिक पसंद करता है. इन सब बातों के बावजूद उस में परिपक्वता होती है. वह जीवन का अनुभव बटोरे हुए होता है. वह जीवन में सुखदुख इतने करीब से देख चुका होता है कि उस उम्र तक आतेआते उस की कोशिश होती है कि जीवन का हर दिन पूरी तरह जिया जाए.

ऐसा पति जीवन में अब तक एकदूसरे से भिन्न इतने लोगों के संपर्क में आ चुकता है कि वह किसी भी स्वभाव के व्यक्ति को सहज ही स्वीकार कर लेता है. अलगअलग प्रकार के जीवनस्तरों के भी सहनशील हो जाता है. वह समझने ल है कि कोई भी, फिर चाहे उस की पत्न क्यों न हो, परिपूर्ण नहीं है और उस में के साथ अवगुण होना स्वाभाविक है. की सारी आशाएं, आकांक्षाएं और पत्नी तक ही सीमित नहीं होते.

अनुभव के फलस्वरूप उस की सं और प्रसन्नता का दायित्व पत्नी के कंधों नहीं होता और न ही पत्नी के कार्यों किसी प्रकार का हस्तक्षेप होता है. इसी दोनों जीवन के उतारचढ़ावों को आसानी और प्रेमपूर्वक तय कर लेते हैं. उस के में आदर्श पत्नी का जो रूप कभी युवाव में उभरा होगा, बढ़ती उम्र के साथसाथ उस के मानस पटल पर से मिट जात क्योंकि वह समझ जाता है कि कल और यथार्थ में जमीनआसमान का अंतर ह है.

इसलिए, अधिक उम्र के पति की प भले ही बहुत रूपवान या गुणवान न वह फिर भी उसे बहुत प्रिय होती है. उस मित्रों का दायरा और उस की मनप गतिविधियां विवाह से काफी पहले निश्चित हो चुकी होती हैं, इसलिए पत्नी भी अपने शौक पूरे करने की आजादी ह है. उम्र के इतने अधिक अंतर के कारण व के बीच हलका सा फासला अ औपचारिकता बरकरार रहती है, इसी दोनों एकदूसरे से सभ्यता से पेश आते और एकदूसरे की जरूरतों के प्रति सजग रहते हैं.

जीवन के प्रति अधेड़ पति के

नजरिए से विवाह के कुछ समय बाद ही उस की पत्नी भी प्रभावित हो जाती है और उस के जीवन में भी नए आयाम जुड़ जाते हैं. वह भी दूसरे लोगों के नजरिए के प्रति उदार हो जाती है और उन की मनोस्थिति को सही ढंग से समझने लगती है. वह भी इनसानी रिश्तों और प्रेम को सांसारिक उपलब्धियों से



उम्र में अधिक बड़ा पति पत्नी के लिए अकसर सुखद सिद्ध होता है.

अधिक महत्त्व देने लगती है. भौतिकता पीछे रह जाती है, जिंदगी की सार्थकता सर्वोपरि हो जाती है.

अधिक उम्र के पति को अनुभव से ज्ञान हो जाता है कि नारी के कोमल मन की क्या जरूरतें होती हैं. चूंकि ऐसा पति अपने कैरियर के सही पायदान पर पहुंच चुका होता है इसलिए उस की गृहस्थी जमीजमाई होती है. वह पत्नी के लिए समयसमय पर खर्च करने की हैसियत रखता है तो रूठने पर पत्नी को उपहार दे कर या फिर अपने ही तरीके से बच्चे की तरह मनाना भी जानता है.

उम्र के साथ जीवन में सहनशीलता, सेवा और त्याग की भावना भी आ जाती है और स्थायित्व भी. इसलिए पति अपनी नौकरीपेशा पत्नी के काम में भी सहयोग देता है और महत्त्वपूर्ण सलाह भी. पत्नी की उद्विग्नता या चिड़चिड़ाहट को वह धैर्य से शांत कर देता है. वह उस की कामयाबी पर एक पिता की भांति गर्व करता है क्योंकि उन के बीच किसी प्रकार की स्पर्धा नहीं होती. वह अपनी कम उम्र की पत्नी के नएनए विचार और कार्यों को सहर्ष स्वीकार कर लेता है, क्योंकि यह विवाह उस ने सोचसमझ कर ही किया होता है, किसी दबाव में आ कर नहीं.

अधिक उम्र के व्यक्ति के साथ पत्नी भी सुरक्षित महसूस करती है. आर्थिक सुरक्षा के साथसाथ वह मनोवैज्ञानिक सुरक्षा भी महसूस करती है, क्योंकि पति का वही व्यक्तित्व बरकरार रहता है जो पत्नी ने शुरू में ही देखा होता है, और जिसे वह समझती और जानती है. उस के इस उम्र में बदल जाने की आशंका नहीं होती. अगर अब तक वह चरित्रवान रहा है तो उस के अचानक परस्त्रीगमन की आशंका क्षीण होती है, न ही वह अचानक किसी मादक वस्तु का आदी हो सकता है. अपनी पत्नी के साथ वह उपलब्धियों और खुशियों के नए आयाम ढूंढ़ता रहता है और उन के आपसी संबंध मजबूत और दृढ़ हो जाते हैं. सब से अहम बात तो यह होती है कि पति की नजरों में पत्नी हमेशा युवा रहती है और पत्नी पति की इज्जत करती है, क्योंकि वह उम्र में उस से इतना बड़ा होता है कि पिता का सा प्यार देता है.

आयु में अधिक बड़े पति और छोटी उम्र की पत्नी के संबंधों में सिर्फ प्यार, मधुरता और गहराई होती है, वे एकदूसरे के लिए जीते हैं. यही उन के जीवन का अहम सत्य होता है. ●

ननमुन...

— पंकज गोस्वामी



हमें ऐसे व्यक्ति अकसर देखने को मिल जाते हैं जिन में सब गुण होते हुए भी चंद्रमा में दाग के समान तुनकमिजाजी का दुर्गुण भी मिल जाएगा.

अकसर कहा जाता है सिद्धांतप्रिय व्यक्ति तुनकमिजाज हो जाता है. लेकिन यह तुनकमिजाजी कभीकभी उसे परेशानी में डाल देती है. इसी तुनकमिजाजी के चलते पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने हमारे देश की न्यायप्रणाली पर प्रतिकूल टिप्पणी कर दी थी जिस से सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें अपना मुंह बंद रखने की चेतावनी दी थी, बाद में उन्हें कोर्ट से माफी भी मांगनी पड़ी थी.

खेल जगत में देशविदेश के कई खिलाड़ी अपनी तुनकमिजाजी के कारण या तो खेल से ही बाहर हो गए या भारी जुर्माने के शिकार हुए. आज से कुछ साल पहले तक अपनी तुनकमिजाजी के लिए अमेरिका का विंबलडन खिलाड़ी जान मैकेनरो बदनाम था. 1991 में उसे इस की बदौलत 10 हजार डालर का जुर्माना भी देना पड़ा था. लेकिन 2 साल पहले ब्रिटेन में संपन्न हुई विंबलडन प्रतियोगिता में अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी जेफ तारांगो अपनी तुनकमिजाजी में मैकेनरो को भी पीछे छोड़ गया. तारांगो ने अपनी तुनकमिजाजी की कीमत साढ़े 15 हजार डालर के जुर्माने के रूप में दी.

हमारे बालीवुड यानी फिल्मी जगत में तो सितारों की तुनकमिजाजी सर्वविदित है.

लेख ● शांता ग्रोवर

वाह री तुनकमिजाजी



यह बीमारी स्टार पुत्रपुत्रियों में कुछ ज्यादा ही पाई जाती है, जिस का खमियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है. सिने तारिका करिश्मा कपूर अपनी तुनकमिजाजी के कारण कभी रवीना टंडन से तो कभी काजोल से झगड़ा मोल ले लेती है, जिस का असर उस के फिल्मी कैरियर पर पड़ रहा है.

दरअसल हमारे शरीर के भीतर कुछ ग्रंथियां हैं, जिन से निकले हुए रस हमारे शरीर और मन की रचना और कार्य पर गहरा असर डालते हैं. ये रस सीधे रक्त में मिल कर शरीर के हर भाग में पहुंच जाते हैं और वहां के अंगों की क्रिया को प्रभावित करते हैं. व्यक्ति का मिजाज उन्हीं रसों की कमीबेशी के कारण बदलता रहता है. जरूरी नहीं कि तुनकमिजाज व्यक्ति गरम स्वभाव का ही हो. वह अत्यंत हंसमुख, कार्यकुशल होते हुए भी

यह बता रहे थे कि उन की कार्यालय चलती भी बहुत है. तुम उन से जरा पदोन्न के लिए कह दो. यह बेचारे कई बरसों इसी पद पर अटके हुए हैं, इन के बाद अ लोग तरक्की पा गए हैं. यह अपनी झल्लाह मुझ पर उतारते हैं जिस से घर का वातावर भी बोझिल बना रहता है."

मैं ने कभी इन के कार्यालयी कामों दखल नहीं दिया था लेकिन उस की व्य देखसुन कर मैं ने उसे सांत्वना दी और क कि मैं पति से बात करूंगी. शाम को ज यह कार्यालय से लौटे तो चाय पीते हुए ने शीला की बात उन्हें कह सुनाई. मेरी बा सुन कर यह सोच में पड़ गए और बोले "वैसे तो देवराज का और मेरा विभा अलगअलग है लेकिन उन के विभागाध्य से कई बार सुनने में आया कि वह देवरा

प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव दूसरे से भिन्न होता है. पर यदि कहीं तुनकमिजाज व्यक्ति से पाला पड़ जाए तो वह कई हालातों में सिरदर्द तक बन जाता है. लेकिन कुछ बातों का ध्यान रखें तो ऐसे तुनकमिजाजों से निभाना भी कोई मुश्किल नहीं.

इस प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकता है. व्यक्ति अपने स्वभाव को नहीं बदल सकता लेकिन परिस्थितिवश उत्पन्न मनोवेगों पर वह आत्मनिरीक्षण के द्वारा काबू पा सकता है. अन्यथा ये मनोवेग उस पर हावी हो जाएंगे.

व्यवसाय में तुनकमिजाजी बहुत घातक होती है. व्यवसाय में तुनकमिजाजी या बड़बोलापन हानि पहुंचाता है. और जब 2-3 व्यक्ति साथ मिल कर कोई व्यापार करते हैं, वहां तो तुनकमिजाजी बहुत ही हानिकर होती है. ऐसे तुनकमिजाज व्यक्तियों की साझेदारी जल्द ही खत्म हो जाती है जिस से बाजार में उस व्यक्ति की साख गिर जाती है और वह खूब घाटा उठाता है.

देवराज मेरे पति के दफ्तर में हेड क्लर्क हैं. उन की पत्नी शीला मेरी सहपाठिन रह चुकी है. एक दिन वह मेरे पास आई और कहने लगी, "तुम्हारे पति मैनेजर हैं और

की तुनकमिजाजी से बहुत परेशान हैं छोटीछोटी बात पर बिदक कर फाइलों क अंबार लगा लेते हैं. ऐसे में तुम ही बताओ कि उन की पदोन्नति कैसे हो सकती है."

पति की बात सुन कर मैं चुप हो गइ और सोचने लगी, 'न जाने देवराज जैसे कितने लोग हैं जो अपनी तुनकमिजाजी की वजह से खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेते हैं.'

मुझे याद हो आया, जब मेरी नईनइ शादी हुई थी. मेरी ननद कालिज में पढ़ने जाती थी. मनोवैज्ञानिक एडलर फ्रायड क यह कथन कि हमारा सारा व्यवहार दूसरों पर अधिकार जमाने की इच्छा से प्रेरित होत है, उस पर पूर्णतया सही बैठता था.

घर में सब सीमा की तुनकमिजाजी से घबराते थे. कोई उसे टोकता नहीं था क्योंकि सब को लगता था कि कब वह पलट कर



तुनकमिजाज व्यक्ति अपनेआप को सर्वश्रेष्ठ दिखाने के लिए दूसरे को अपने तर्कों द्वारा दबाने की कोशिश करता है.

किसी को क्या जवाब दे दे. सीमा की शादी हो गई. ससुराल में भी सीमा का वही रवैया था. किसी ने उसे कुछ नहीं कहा लेकिन धीरेधीरे सब उस से कटने लगे. जब वह बिलकुल अकेली पड़ गई तब उसे अपनी गलती समझ में आई. उस ने अपनी तुनकमिजाजी को कम किया. सब उस के पास फिर से आने लगे. धीरेधीरे तुनकमिजाजी उस के स्वभाव से गायब हो गई.

इस तरह व्यक्ति यदि चाहे तो अपने स्वभाव में आए दोषों को आत्मनिरीक्षण कर दूर करने की कोशिश कर सकता है. कई बार मन के कुछ विकार या दोष अनजाने में ही पैदा हो जाते हैं. तब हमें मालूम भी नहीं होता कि हम उन से ग्रस्त हैं. मेरी सहेली के भाई का स्वभाव बहुत अजीब किस्म का था. बाहर मित्रों व रिश्तेदारों में तो वह बहुत ही विनोदप्रिय और मिलनसार था लेकिन घर में घुसते ही उस का विनोदी स्वभाव कहीं दुबक जाता था और वह छोटीछोटी बात पर दूसरे से उलझ जाता था. सभी भाईबहन और मातापिता भी उस की तुनकमिजाजी से आतंकित रहते थे. उस की शादी हुई. पत्नी ने आते ही पति के स्वभाव की तुनकमिजाजी को भांप लिया और उसे इस कमजोरी से अवगत कराया. पत्नी द्वारा बताए जाने पर उस ने इस दोष को दूर कर लिया.

तुनकमिजाज व्यक्ति अकसर बहुत खरे और स्पष्टवादी होते हैं. वे अपने मन में कोई बात नहीं रख पाते. ज्यों ही उन्हें कुछ कहा जाता है, वे पलट कर झट उस का जवाब दे देते हैं. वे खुद किसी से दबते नहीं और हमेशा अपनेआप को सर्वश्रेष्ठ दिखाने के लिए दूसरों को अपने तर्कों द्वारा दबाने की कोशिश करते हैं.

मेरी एक सहेली है. वह कई बार इस बात को स्वीकार कर चुकी है कि जब उसे कोई किसी बात पर टोक दे तो वह सहन नहीं कर पाती और जब तक उस व्यक्ति को दोचार सुना न दे, उसे चैन नहीं पड़ता. उस समय उसे यह भी ध्यान नहीं रहता कि वह व्यक्ति उस से बड़ा है या छोटा.

यदि तुनकमिजाजी किसी व्यक्ति के स्वभाव में घुल गई हो और उस के साथ संबंध निभाना आप की मजबूरी हो तो आप को कुछ बातों का ध्यान रखना होगा, जैसेः

● ऐसे व्यक्तियों से जहां तक संभव हो, उलझें नहीं.

● उन से सहनशीलता से काम लें.

● वह व्यक्ति जिस बात या व्यवहार से चिढ़ जाता हो उस का ध्यान रखें.

● वह व्यक्ति जब अच्छे मूड में हो तब बातोंबातों में उसे उस के द्वारा किए गए गलत व्यवहार के बारे में बताएं.

● कभीकभी परिस्थितिवश हताशा, तनाव, असफलता से व्यक्ति के स्वभाव में तुनकमिजाजी आ जाती है. आप उस का ध्यान सकारात्मक पक्ष की ओर मोड़ें और उसे उस हताशा या तनाव से धीरेधीरे बाहर लाएं. ●

सफर के कुछ स्वादिष्ट पकवान

लोबिया का परांठा

सामग्री : 1½ कटोरी लोबिया, ½ क
बेसन, ½ कटोरी गेहूं का आटा, 2 हरी मि
½ छोटा चम्मच जीरा, थोड़ी सी बारीक क
हरी धनिया, ¼ छोटा चम्मच नमक, 1 छो
चम्मच सफेद तिल.

कितने व्यक्तियों के लिए : 2-3.

बनाने में लगने वाला समय : 15 मिनट

विधि : लोबिया गला कर मिक्सी में दर
पीस लें. फिर उस में बेसन, आटा, जीरा, ति
कटी हरी मिर्च, हरी धनिया, नमक मिला
गूंध लें. 2-3 बार तेल लगा कर परांठा बेल
धीमी आंच पर परांठा सेंकें. अचार, हरी मि
और प्याज के साथ खाएं.

मूंगफली के बैगन

सामग्री : 250 ग्राम बैगन, ½ कटोरी भु
हुई मूंगफली, 1 बड़ा चम्मच सूखा धनिया,
छोटा चम्मच अमचूर, ½ छोटा चम्मच चीनी
हरी मिर्च, 1 छोटा चम्मच जीरा, थोड़ा सा ते
1 बड़ा चम्मच हरी धनिया.

कितने व्यक्तियों के लिए : 2-3.

लोबिया का परांठा



बनाने में लगने वाला समय : 15 मिनट.

विधि : मूंगफली को सेंक कर छिलके उतार लें. मिक्सी में चूरा कर लें. इस में सूखा धनिया, अमचूर, नमक, मिर्च, चीनी, ¼ छोटा चम्मच तेल, कटी हरी धनिया व कटी हरी मिर्चें डाल कर मिला लें. बैगन को बीच में से काट कर मसाला भर लें. लोहे की कड़ाही में तेल गरम कर के बैगन डालें व गलने तक धीमी गैस पर पकाएं. पूरी या परांठे के साथ परोसें.

–रमा भमोरिया

आलू हरी धनिया व हरी मिर्च में

सामग्री : 500 ग्राम आलू, 100 ग्राम धनिया, 50 ग्राम पुदीना, 2 नीबू, 4 हरी मिर्च, तेल या घी तलने के लिए (पर्याप्त मात्रा में), ¼ चम्मच (छोटा) नमक, ¼ चम्मच (छोटा) काली मिर्च, ¼ चम्मच (छोटा) चाट मसाला.

कितने व्यक्तियों के लिए : 2-3.

बनाने में लगने वाला समय : 20 मिनट.

विधि : आलू को थोड़ा सख्त उबाल कर ठंडे होने पर छील लें. हरी धनिया, पुदीना व हरी मिर्च को पीस लें. फ्राईंगपैन में घी को खूब गरम कर लें और फिर आंच मद्धिम कर के इस में आलू के टुकड़े काट कर एकदम से लाल सुर्ख तल लें. इसे एक बड़ी थाली में पेपर नैपकिन पर निकाल कर रखें.

सफर में ले कर जाने के लिए एक डब्बे में डाल लें और अलग से बारीक पिसी हरी धनिया मिश्रण बिना नमकमिर्च के ही एक चौड़े मुंह की शीशी में भर लें या फिर डब्बी में डाल लें. एक छोटी प्लास्टिक की थैली में नमकमिर्च, चाट मसाला डाल लें, एक थैली में नीबू काट कर डाल लें. फिर उसे जब भी खाना हो तो तले आलू में ऊपर से पिसा धनिया मिश्रण डाल दें व नमकमिर्च, चाट मसाला व नीबू निचोड़ कर अच्छी तरह से मिला लें.

तेल के छौंक में उड़द की दाल

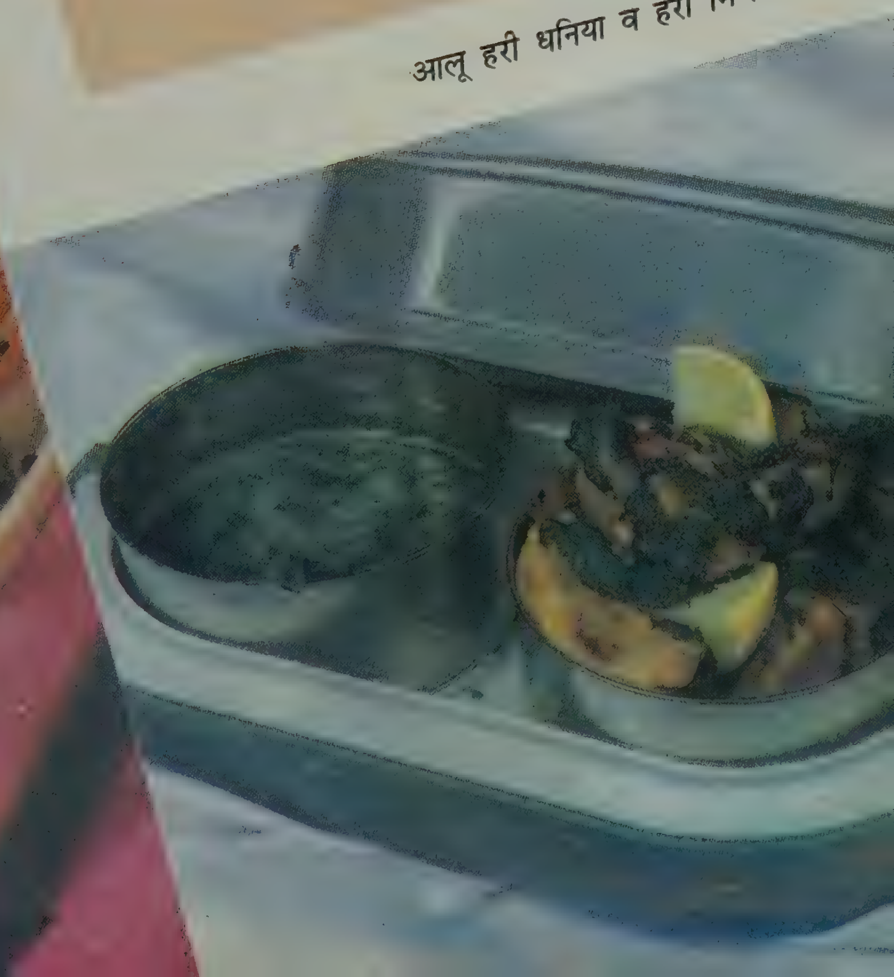
सामग्री : 250 ग्राम उड़द की दाल, 50 ग्राम सरसों का तेल, 1 प्याज, 1 टमाटर, 2 हरी मिर्च कटी, 1 नीबू, थोड़ी हींग.

विधि : उड़द की दाल को चुन कर धो कर पानी में भिगो दें. तेल को गरम कर के ठंडा करने के लिए रख दें. प्याज को बारीकबारीक

मूंगफली के बैगन



आलू हरी धनिया व हरी मिर्च में



काट लें. टमाटर के भी छोटेछोटे टुकड़े कर लें.

कुकर में गरम तेल डाल कर उसे आंच पर रख दें और बारीक कटा प्याज उस में छौंक दें. फिर टमाटर के टुकड़े भी डाल दें. इसी के साथ थोड़ी हींग, कटी हरी मिर्च व धनिया भी छौंक में मिला दें और फिर भीगी हुई दाल को तेल के मिलेजुले छौंक में पकने के लिए रख दें. कुकर बंद नहीं करेंगे. ढक कर ऐसे ही पकाएंगे दाल का दाना गलने तक. ध्यान रहे कि पानी इतना डालें कि दाल गलतेगलते सूख जाए.

इस दाल को जब सफर में ले जाना हो तो इस में खटाई के लिए नीबू का प्रयोग खाते समय कर सकते हैं. यदि यह घर में बैठ कर खानी हो तो इस में सिरका भी डाल सकते हैं. इस दाल को सफर में परांठे के साथ ठंडी ही खा सकते हैं.

भें और हरी मिर्च बेसन में

सामग्री : 500 ग्राम भें, 10 हरी मिर्चें, 200 ग्राम बेसन, सरसों का तेल (पर्याप्त मात्रा में) थोड़ी सी हींग, ¼ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा प्याज, 3-4 तुरियां लहसुन, ¼ छोटा चम्मच अमचूर, थोड़ी बारीक कटी हरी धनिया, 1 टुकड़ा अदरक, ¼ छोटा चम्मच हलदी, ¼ चम्मच लाल मिर्च, ¼ छोटा चम्मच काली

कितने व्यक्तियों के लिए : 3-4.

बनाने में लगने वाला समय : 30 मिन

विधि : नमक डाल कर बेसन का तैयार कर लें. भें को धो कर छील लें फिर के तिरछे टुकड़े काटें और साफ पानी में कर उबाल लें.

लहसुन व अदरक को पीस कर महीन लें. उबली हुई भें व चीरा लगी मिर्चों अदरकलहसुन के पेस्ट का थोड़ाथोड़ा लेप दें और आधा घंटा ऐसे ही रहने दें.

अब कड़ाही में सरसों का तेल गरम लें और अदरकलहसुन लगी भें व मिर्चों को हुए बेसन में डुबोडुबो कर पकौड़े की तरह लें.

भगोने में 1 बड़ा चम्मच तेल गरम के कद्दूकस हुआ प्याज डाल कर अच्छी भून लें. फिर इस में थोड़ी हलदी, हींग व अम डालें व भूनें. तली हुई भें व मिर्च इस में दें. ऊपर से लाल मिर्च व काली मिर्च भी दें और ढक कर रख दें. 5 या 7 मिनट तक



तेल के छौंक में उड़द की दाल

मसाले के छौंक में मिल जाने दें. फिर आंच बंद कर दें. ऊपर से हरी धनिया बुरक दें.

–उर्मिल कपूर

केले का भरता

सामग्री : 500 ग्राम कच्चा केला, 500 ग्राम खट्टा दही, 1 छोटा चम्मच हलदी पाउडर, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 2 छोटे चम्मच धनिया पाउडर, 1 छोटा चम्मच पिसा गरम मसाला, 1 छोटा चम्मच पिसा नमक, ½ कटोरी तेल या घी, सरसों भर हींग, ½ छोटा चम्मच राई, थोड़ी सी हरी धनिया बारीक कटी.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4-5.

बनाने में लगने वाला समय : 30 मिनट.

विधि : केलों को धो कर उबाल लें और छिलका उतार कर गूदे को आलू की भांति हाथ से मसल लें.

दही को मथानी से अच्छी तरह मथ लें. गरम कड़ाही में तेल गरम कर के राई व हींग का तड़का लगा कर सभी मसाले भूनें. मसाला भुनने पर केला मिला दें तथा धीमी आंच पर भूनें. सोंधी गंध आने लगे तो 1 कटोरी पानी मिला कर चलाएं. केला पानी के साथ खौलने लगे तो मथा हुआ दही डाल कर बराबर चलाते रहें और 15-20 मिनट तक पकाते रहें. जब पक कर मिश्रण सूख जाए और केलों से लिपट जाए तब आंच से उतार कर गरम मसाला बुरक दें व हरा धनिया डाल कर सफर के लिए पैक करें तथा 24 घंटे से अधिक इस (सब्जी) भरते का स्वाद लें. खट्टे दही के कारण यह जल्दी खराब नहीं होता.

भुने चने की चटनी

सामग्री : ½ कटोरी भुना चना, ½ छोटी कटोरी इमली का गूदा, ½ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 2 बड़े चम्मच घी या तेल, 1 छोटा चम्मच जीरा, 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर, 1 छोटी कटोरी पानी, 1 छोटा चम्मच गरम मसाला पाउडर.

कितने व्यक्तियों हेतु : 3-4.

बनाने में लगने वाला समय : 20-25 मिनट.

विधि : भुने चने का छिलका उतार कर साफ कर लें और मिक्सी में बारीक पीस कर पाउडर बना लें.

घी या तेल को भारी पेंदे के बरतन में गरम कर के जीरे का तड़का लगा कर पाउडर

में और हरी मिर्च बेसन में



केले का भरता



को धीमी आंच पर करारा भूनें और इमली का गूदा मिला कर एकसार कर लें. पानी डाल कर 5 मिनट पका कर पानी सुखा कर गाढ़ा पेस्ट बना लें. ऊपर से सभी मसाले बुरक कर मिला लें और ठंडा होने पर शीशी में भर कर स्वादानुसार पूरी, परांठे व चावल के साथ खाएं.

चने की करी

सामग्री : 100 ग्राम भुना चना, 1 बड़ा चम्मच तेल, ½ छोटा चम्मच नमक, 4 छोटे चम्मच धनिया पाउडर, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 कटोरी इमली का गूदा, 2 छोटे चम्मच हलदी पाउडर, 1 छोटा चम्मच जीरा, 1 कटोरी खट्टा दही, 2 छोटी कटोरी पानी व कुछ करी पत्ता.

कितने व्यक्तियों हेतु : 6-7.

बनाने में लगने वाला समय : 20-25 मि

विधि : चनों को छील कर साफ क व मिक्सी में बारीक पीस कर पाउडर बन तेल गरम कर के उस में जीरे का तड़का ल व सभी मसाले डाल कर भूनें.

पिसा चना भी हलका भून लें और इ का गूदा मिला कर चलाएं. सभी सामग्री एक हो जाए तब पानी डाल कर खौलाएं.

खौलने पर ही दही मथ कर मिला दें. 5-10 मिनट धीरेधीरे पकने दें. करी पत्ता कर उतार लें. ठंडा कर के शीशी या जार मे कर रख लें.

सफर में चावल के साथ इस करी आनंद लें. भुने चने की करी, कढ़ी जैसे की जायकेदार होती है और जल्दी खराब होती.

–सर्वेश मिश्र

भुने चने की चटनी



चने की करी



उदित नारायण की कहानी दीपा की जबानी

यदि किसी के मन में कुछ हासिल करने का सच्चा संकल्प हो, अथक परिश्रम की क्षमता और लगन हो तो बड़ी से बड़ी दीवारें उस का रास्ता नहीं रोक सकतीं. सफलताएं एक कदम आगे बढ़ कर ही उस का स्वागत करती हैं. 12 वर्षों की लंबी प्रतीक्षा के बाद आज उदित नारायण की शोहरत का डंका चारों तरफ बज रहा है. स्क्रीन अवार्ड स्वीकारते वक्त उन्होंने खुले दिल से माना था कि उन की हर सफलता में उन की पत्नी का बराबर का हिस्सा है.

आज की तारीख में भारतीय फिल्म जगत का अव्वल नंबर का यह गायक अपनी पत्नी की नजरों में क्या स्थान रखता है? संघर्ष के दिनों में पतिपत्नी ने किस तरह मुसीबतों का सामना किया? उदित अपनी पत्नी दीपा के सान्निध्य में कब व कैसे आए? आइए सुनें स्वयं दीपा की जबानीः

लेख • प्र. मंजरी

लगभग 15 साल पहले मैं एअर होस्टेस बनने की चाहत लिए मुंबई आई. थोड़ी सी औपचारिकताओं के बाद ही मुझे एअर होस्टेस का काम मिल गया. मै एअर इंडिया में कार्यरत हो गई. उन दिनों मैं दीपा भारद्वाज थी. एअर होस्टेस बनने के साथसाथ गायन के क्षेत्र में भी मेरी खासी दिलचस्पी थी.

मैं अकसर नेपाली संगीतकार रणजीत बजमेर के घर पर रिकार्डिंग अथवा मंच कार्यक्रम के सिलसिले में जाती थी. वहीं पर उदित से मेरी पहली मुलाकात हुई. उदित एक छरहरे बदन के, समझदार और सरल व्यक्तित्व के धनी थे. इन 3 बातों ने मुझे उन की तरफ आकर्षित किया. मगर संकोच और शर्म के कारण मैं कभी दिल की बात उदित से नहीं कह सकी.



अकसर कहा जाता है कि आदमी की कामयाबी के पीछे एक औरत का हाथ जरूर होता है. यह बात सफलता की बुलंदियों को छूने में कामयाब उदित नारायण पर सटीक बैठती है. इन की पत्नी दीपा नारायण इस से कितनी इत्तफाक रखती हैं, आइए जानें.

एक दिन रणजीत ने कहा कि इस नेपाली लड़के (उदित) के साथ कुछ ड्यूट (दो गाने) अपने अलबम में डालो. प्रतिभावान लड़का है, अच्छा गाता है. और सच हमारा अलबम बहुत पसंद किया गया. सभी ने एक स्वर में उदित के गायन की गहराई की तारीफ की. हमारा अलबम 'आमरो गीत' इतना लोकप्रिय हुआ कि कई नेपाली प्रोड्यूसर हमें साथ ले कर फिल्म बनाने का प्रस्ताव ले आए.

उन दिनों गिनती की ही नेपाली फिल्में बनती थीं. हम अकसर साथ में रिकार्डिंग करते. कई बार मैं ने महसूस किया कि उदित मुझे पसंद करते हैं. एकांत पा कर वह अकसर छेड़छाड़ करते. बेस्टर्न आउटडोर स्टूडियो में 2 साल तक हमारा रोमांस चलता रहा. अरे हां, यह तो मैं बताना भूल ही गई कि पहल उदित ने ही एक दिन बड़े ही रोमांटिक मूड में 'आई लव यू दीपा' कह कर की थी.

मुझे याद आता है, हम एक चायनीज रेस्तरां में बैठे हुए थे. मेरी खामोशी को मेरी स्वीकृति समझते हुए उन्होंने अपने दिल की पूरी बात कह दी, 'दीपा, तुम्हारा सहयोग पा कर ही मेरा जीवन और कैरियर सफल हो सकेगा. तुम्हें मेरी तरफ से कोई तकलीफ नहीं होगी. शादी के बाद भी तुम अपना जौब (एअर होस्टेस का) जारी रख सकती हो.' लेकिन तमाम वादों के बावजूद मैं अपनी स्वीकृति नहीं दे पा रही थी.

अंततः 17 जून 1985 के दिन हम ने शादी कर ली. यह शादी मैं ने कलकत्ता में रह रहे अपनी मम्मीपापा की स्वीकृति मिलने के बाद ही की. मेरे पिता वहां डी.आई.ज थे. उदित को देख कर मेरे भाईबहन भी खु थे. उदित ने कई एक नेपाली फिल्मों एक्टिंग भी की थी. हम लोगों ने बाद शक्ति सामंत की 'आराधना' पर आधारि एक नेपाली फिल्म 'पीरती' भी बनाई थ अंतर बस इतना था कि पीरती का नायव गायक था, और यह पूरी तरह संगीत प्रधा फिल्म थी. इस के बाद हम ने 'संजन नामक फिल्म में एकसाथ काम किया.

शादी के 2 साल बाद यानी 1987 आदित्य पैदा हुआ. उन दिनों तक उदित व्यस होने लगे थे. एक तरफ उदित की व्यस्तत दूसरी तरफ आदित्य के प्रति मेरी जिम्मेदार मेरे लिए एअर होस्टेस का जौब जारी र पाना संभव नहीं था और मैं ने उस से इस्तीफ दे दिया.

अकसर लोग सवाल करते कि आदित की परवरिश के लिए मैं ने बाई (आया क्यों नहीं रख ली, इतना अच्छा जौब क्य छोड़ा? मगर मैं उन्हें नपातुला जवाब दे देत कि बच्चे की सही परवरिश मां ही बेहत ढंग से कर सकती है. मेरा फैसला गलत नह था. उदित को घर के तनाव से मुक्ति दिला के बाद ही वह एकाग्रचित्त हो कर अप कैरियर के प्रति गंभीर हो सके. आ परिणाम सामने है. आज आदित्य अपने स्कूल में पढ़ाई के मामले में किसी से भी पी नहीं है. साथ ही वह गाने के प्रति अपन शौक भी पूरा कर रहा है. पिछले कुछ दिन से उसे दोहरी प्रतिभा वाला 'चाइल्ड स्टा के खिताब से सुशोभित किया जा रहा है इतनी छोटी सी उम्र में इतनी बड़ी सफलत

हासिल करते देख कौन मां अपने बेटे के प्रति गौरवान्वित नहीं होगी.

उदित कैरियर की शुरुआत से ही निराशा से ग्रस्त रहा करते थे. वह इतना तो जानते थे कि वह गृहस्थी चलाने लायक कमा लेंगे मगर नंबर वन गायक बनने की कल्पना उन्होंने कभी की ही नहीं थी. मैं उन्हें बारबार प्रोत्साहित करती. वैसे श्रेष्ठ गायक का फिल्म फेयर अवार्ड उन्हें 2 साल पहले ही मिल जाना चाहिए था मगर ऐसा नहीं हो सका. मैं अकसर उन से कहती कि कभी तो बेईमानी खत्म होगी और तब आप ही क्षितिज पर नजर आएंगे. शायद इसी प्रोत्साहन से प्रभावित हो कर उदित ने अवार्ड हासिल करते वक्त सार्वजनिक रूप से मेरा नाम लिया होगा. मैं आज भी कहती हूं कि उदित ने जो भी हासिल किया है उस में उन की कड़ी मेहनत शामिल है. मैं ने जो कुछ किया वह तो हर पत्नी को करना चाहिए.

उदित आज स्टार बनने के बाद भी बिलकुल नहीं बदले हैं. आज भी वह अपनी पसंदीदा खिचड़ी बनवाने की फरमाइश गाहेबगाहे कर ही बैठते हैं. खाने के मामले में हम लोग पूरी तरह से पूरबपश्चिम हैं. उन्हें देहात वाले खाने बेहद पसंद हैं, जबकि मैं सदैव शाही व्यंजनों की हिमायती रही हूं. हालांकि कभी भी इस मामले में कोई विद्रोह जैसी बात नहीं हुई.

उदित और मैं जिन दिनों संपर्क में आए थे उन दिनों उन में भोलापन तो था ही, मगर जिम्मेदारी उठाने का सर्वथा अभाव था. उन की बातों से बचपना टपकता था. मगर कैरियर के इस मोड़ पर आज वह मुझ से ज्यादा जिम्मेदार हो गए हैं. पहले उन के खानेपहरावे तथा रियाज का मैं ध्यान रखती थी मगर आज वह अपनी देखभाल खुद करते हैं.



दीपा नारायण और उदित नारायण एकसाथ गाना गाते हुए : एक ही पसंद और शौक ने जिंदगी की राहें भी एक कर दीं.

पिछले दिनों उन के प्रतिद्वंद्वी गायक कुमार सानू ने उन पर लांछन लगाया था कि उदित उन की पत्नी के घर पर जाते हैं, उन के खिलाफ भड़काते हैं. कुमार सानू इन दिनों अपनी पत्नी से तलाक लेने की तैयारी

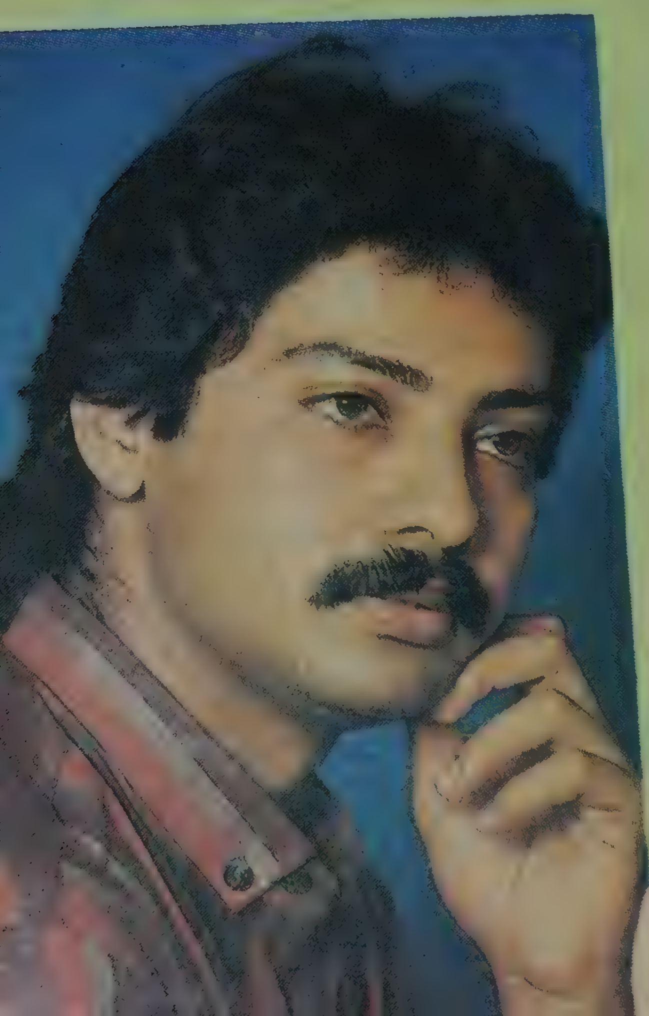
कर रहे हैं. जब इनसान लोकप्रिय होता है तो उस के विरोध में आए दिन कुछ न कुछ सुर्खियां तो तैयार की ही जाती हैं. उदित को मुझ से बेहतर कौन जानता होगा और फिर उन के पास वक्त ही कहां है जो व्यर्थ के चक्करों में पड़ें.

जब उदित को अवार्ड मिला था तो सानू की पत्नी ने बधाईस्वरूप बुके जरूर भेजा था, जिस का जवाब उदित ने केवल इसलिए नहीं दिया था क्योंकि वे दोनों पतिपत्नी अलगअलग रह रहे हैं. ऐसे में वहां न जाने या जवाब न देने में ही समझदारी थी. सानू ने भी इसी सिलसिले में एक पार्टी मुंबई के होटल सेंटोर में रखी थी. हम उस में केवल इसीलिए नहीं गए क्योंकि बुलाया ही 'इस तरह' गया था. कुछ भी कहिए उदित सानू से सीनियर हैं. यदि सानू हमारे यहां आते तो हम सगर्व जाते. उन्होंने तो ड्राइवर के हाथों निमंत्रणपत्र भिजवाया था. मुझे यह भी पता चला कि बाकी लोगों को उन्होंने खुद जा कर निमंत्रणपत्र दिया था. खैर, हम सीधेसादे लोग फालतू चक्करों में नहीं पड़ना चाहते.

एक और महत्त्वपूर्ण बात बतला
पहले हम लोग विदेशों में शो करने जा
तो किसी और के कांट्रैक्ट पर जाते
लेकिन पिछले दिनों 15 दिवसीय टूर में उ
व कविता ने व्यक्तिगत शो आयोजित कि
जो अत्यधिक सफल रहा.

इस शो में मैं ने व आदित्य ने भी हि
लिया था. हालांकि आदित्य 2 शो के
भारत आ गया था, उस के स्कूल की परी
होने वाली थी. मैं कभी नहीं चाहूंगी
पढ़ाई की बलि चढ़ा कर कैरियर या
के प्रति गंभीर रहूं.

मैं आदित्य के कैरियर में रोड़ा
बनना चाहती मगर पहले उसे ग्रेजुएशन
करना ही होगा. यह अलग बात है कि प
से मिले थोड़े से समय में आदित्य ने सफल
के उस शिखर को छू लिया है कि आज
अपने पिता का ही प्रतिद्वंद्वी बन गया है.
हां, इस बार के फिल्म फेयर अवार्ड
उदित के मुकाबले आदित्य ही आने वा
है. यह मेरा विश्वास है.



सजा पाता रहा

न रोशन जहां
न चांदनी का समां,
खौफजदा अंधेरों का रहा सामना,
जिंदगी का साथ फिर भी निभाता रहा.

राह कांटों भरी
दूर होती रही मंजिलें,
हवा के रुखों से पड़ा जूझना,
था वादा वफा का, निभाता रहा.

बहारों के नगमे
न खुशनुमा कोई मंजर,
आहों और आंसुओं के तूफां मुसलसल,
बिन खता के सजा मैं पाता रहा.

—निर्मला जौहरी

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★★ तमन्ना

निर्मात्री : पूजा भट्ट.
निर्देशक : महेश भट्ट.
संगीत : अनु मलिक.
मुख्य कलाकार : परेश रावल, पूजा भट्ट, शरद कपूर, मनोज बाजपेयी, अक्षय आनंद और कमल चोपड़ा.

हमारे फिल्म उद्योग में बासु भट्टाचार्य, गोविंद निहलानी, अमोल पालेकर, कल्पना लाजमी जैसे कुछ ऐसे निर्माता भी हैं जो आम फिल्मों से हट कर फिल्में बनाते हैं. पूजा भट्ट भी अब ऐसे निर्माताओं की लाइन में लग गई है. 'तमन्ना' उस की पहली फिल्म है जिस का निर्माण उस ने स्वयं किया है. अभिनय भी उस ने स्वयं किया है. 'तमन्ना' का विषय एकदम अलग है. इसी विषय से मिलतेजुलते विषय पर अमोल पालेकर ने भी 'दायरा' बनाई है. पिछले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'दायरा' को प्रदर्शित करने की अनुमति नहीं मिली. परंतु 'तमन्ना' को अनुमति मिल गई. तभी से 'तमन्ना' के विषय की चर्चाएं होने लगीं.

हमारे समाज में आज भी कई स्थानों पर बेटियों को बोझ समझा जाता है, बेटी के पैदा होने पर उस से नफरत की जाती है, वंश चलाने के लिए बेटों को जरूरी समझा जाता है, क्रियाकर्म के लिए भी बेटों की आवश्यकता महसूस की जाती है. यहां तक कि बेटियों को पैदा होते ही खत्म भी कर दिया जाता है. इसी विषय पर पूजा भट्ट ने करारी चोट की है. फिल्म एक संदेश भी देती है कि बेटियां बेटों से कम नहीं होती हैं.



फिल्म 'तमन्ना' में पूजा भट्ट : ठीकठाक अभिनय.



यह फिल्म बेकार की मारधाड़ और खूनखराबे से कोसों दूर है, अतः परिवार के साथ बैठ कर देखी जा सकती है. परेश रावल का अभिनय इस फिल्म का सब से सबल पक्ष है. अब तक दर्शक उसे एक खलनायक, गैंग लीडर के रूप में देखते आए हैं, इस फिल्म में वह एक सहृदय हिजड़ा (टीकू) बना है, जो अपनी जरूरतों को नजरअंदाज कर उस बच्ची का पालनपोषण करता है जिसे उस के पिता ने बोझ समझ कर पैदा होते ही कचरे के डब्बे में फिंकवा दिया था. यह बच्ची है तमन्ना (बड़ी हो कर पूजा भट्ट). बड़े होने पर जब तमन्ना को पता चलता है कि टीकू उस का पिता नहीं है तो वह अपने पिता की खोज करती है और उस के काले कारनामों का भांडा फोड़ देती है. अंत में वह टीकू हिजड़े के साथ ही रहने का फैसला कर लेती है.

फिल्म का निर्देशन काफी अच्छा है, संवाद भी प्रभावशाली हैं, बीचबीच में फिल्म की गति कुछ धीमी जरूर पड़ जाती है परंतु निर्देशक महेश भट्ट ने फिल्म को संभाल लिया है.

फिल्म 'सलमा पे दिल आ गया' के एक दृश्य में राधिका : अच्छा अभिनय.

अभिनय की दृष्टि से पूजा भट्ट ने अच अभिनय कर लिया है. कठोर पिता की भूमि में कमल चोपड़ा ने भी ठीकठाक अभिनय क लिया है.

अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गी चलने वाले नहीं हैं, परंतु संगीत अच्छा छायांकन भी अच्छा है.

★सलमा पे दिल आ गया

निर्मातानिर्देशक : सावन कुमार
संगीत : आदेश श्रीवास्तव
मुख्य कलाकार : अयूब खान, साधिका, किर कुमार, मिलिंद गुनाजी, मोहन जोशी, मुके खन्ना, टीकू तलसानिया, कनू गिल आदि.

सावन कुमार का फिल्म बनाने का अप अलग अंदाज है. वह कहानी से ज्यादा तड़कभड़

पर ध्यान देते हैं. 'सलमा पे दिल आ गया' में भी उन का ध्यान खूबसूरती पर ही रहा. आजकल इस तरह की फिल्में नहीं चल पातीं.

'सलमा पे दिल आ गया' फिल्म का विषय घिसापिटा व पुराना है. फिल्म की कहानी साधारण दर्जे की प्रेम कहानी है. सलमा (साधिका) और सलीम (अयूब खान) दोनों एकदूसरे से प्रेम करते हैं परंतु दोनों के पठान पिता एकदूसरे से नफरत करते हैं और खून के प्यासे हैं. अंततः प्यार की जीत होती है और नफरत प्रेम में बदल जाती है.

इस फिल्म में अगर कुछ विशेषता है तो वह है इस का गीतसंगीत, फोटोग्राफी, भव्य सेट. मध्यांतर तक निर्देशक प्रेमकहानी को उभारने में लगा रहा है. इस भाग में फिल्म शिथिल पड़ गई है. मध्यांतर के बाद दो कबीलों के सरदारों की लड़ाई है. फिल्म के इस भाग में कुछ तेजी आ गई है.

फिल्म का निर्देशन साधारण है. निर्देशक ने नायकनायिका को सुंदरसुंदर ड्रेसें पहना कर उन्हें आकर्षक दिखाने की कोशिश की है. संवाद ठीकठाक हैं, व्यर्थ का कचरा नहीं ठूंसा गया है. हां, गाने कुछ ज्यादा हो गए हैं. इन्हें कम किया जा सकता था.

अभिनय की दृष्टि से साधिका ने अच्छा काम किया है. उस की यह पहली फिल्म है. वह सुंदर भी बहुत लगी है. अयूब खान साधारण रहा है. सब से ज्यादा प्रभावित मिलिंद गुनाजी ने किया है. प्राण और शशिकला जैसे पुराने कलाकारों को देख कर अच्छा लगा. फिल्म का छायांकन काफी अच्छा है.

○ लहू के दो रंग

निर्माता : ए.जी. नाडियाडवाला
निर्देशक : मेहुल कुमार
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : नसीरुद्दीन शाह, अक्षय कुमार, करिश्मा कपूर, फरहा, सुरेश ओबराय, मुकेश ऋषि, फरीदा जलाल और शीबा (विशेष भूमिका में).

किसी माफिया गिरोह द्वारा पुलिस अफसर के परिवार को खत्म करने और फिर उस पुलिस अफसर द्वारा गिरोह से टक्कर लेने की कहानी हिंदी फिल्मों में सैकड़ों बार दोहराई जा चुकी है, 'लहू के दो रंग' की भी यही कहानी है. फिल्म उद्देश्यहीन है, सिर्फ अक्षय कुमार की मारधाड़ को ध्यान में रख कर ही इस का निर्माण किया गया है.

इस के अलावा करिश्मा कपूर की उत्तेजक अदाएं, नृत्य और शीबा पर फिल्माया गया एक सैक्सी नृत्य भी फिल्म के सी ग्रेड होने की गवाही देते हैं.

शिकारी ब्रदर्स जुर्म की दुनिया के बादशाह हैं और भरत श्रीवास्तव (नसीरुद्दीन शाह) एक ईमानदार कस्टम अफसर. वह पप्पू शिकारी को तस्करी के आरोप में अदालत में पेश करता है. परंतु पप्पू शिकारी सिकंदर (अक्षय कुमार) की झूठी गवाही से बच जाता है. पप्पू शिकारी के आदमी भरत श्रीवास्तव के परिवार को खत्म कर देते हैं. वे भरत श्रीवास्तव को मारने के लिए सिकंदर को पैसे भी देते हैं. सिकंदर भरत श्रीवास्तव को मार देता है. उस के बाद शुरू होता है शिकारी ब्रदर्स के आदमियों की एक के बाद एक मौतों का सिलसिला. यह काम सिकंदर ही करता है, जब उसे पता चलता है कि उस के मांबाप की हत्या भी इन्हीं शिकारी ब्रदर्स के आदमियों ने ही कराई थी.

अंत में वह सभी को खत्म कर हिना (करिश्मा कपूर) का हाथ थाम लेता है.

मध्यांतर तक फिल्म की कहानी घिसटती सी चलती है. निर्देशक अपनी राह पर भटकता हुआ सा प्रतीत होता है. फिल्म में संपादन दोष साफ झलकता है.

निर्देशक नसीरुद्दीन शाह जैसे कलाकार को उभारने में असफल रहा है. उस का पूरा ध्यान अक्षय कुमार पर ही रहा है. अक्षय कुमार ने अच्छीखासी मारपिटाई कर ली है परंतु अभिनय के मामले में वह बेकार साबित हुआ है. करिश्मा कपूर सिर्फ नाचगानों तक ही सीमित रही है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

फिल्म के गीत समीर ने लिखे हैं. नदीम श्रवण ने कुछ अच्छी धुनें बनाई हैं. दो गीत 'हसीनों को आते हैं क्याक्या बहाने...' और 'सागर में तरंग है...' अच्छे बन पड़े हैं. शीबा पर फिल्माया गया गीत 'सास सोए अंगना, ससुरजी द्वारे, गजब सीटी मारे सैयां पिछवाड़े...' अग्रिम पंक्ति के दर्शकों को लुभाने वाला है.

फिल्म का छायांकन अच्छा है. शारजाह में फिल्माए गए फिल्म के अंश आकर्षक बन पड़े हैं. ●

टी.वी. दर्शन

नरम गरम मसाला

छोटे परदे के निर्माताओं के लिए अमिताभ बच्चन माने जाने वाले अभिनेता शेखर सुमन का भी अब दिमाग खराब हो गया है. उस ने भी गोविंदा वाला रवैया अपना लिया है. जब काम हासिल करना होता है तो गोविंदा की भांति वह भी निर्मातानिर्देशक की चमचागीरी करता रहता है और मतलब निकलने के बाद अपना रंग दिखाना शुरू कर देता है. सेट पर देर से आना और स्टार जैसे नखरे दिखाना. इतना ही नहीं, अचानक वह अपनी कीमत भी बढ़ा देता है. और अब तो वह प्रति एपीसोड एक लाख रुपए मांगने लगा है. ऊपर से कहता है कि मेरी बीबी यदि बंगले में रहना चाहती है तो मेरा काम है कि मैं उस के लिए बंगला बनवाऊं और बंगला बनवाने के लिए पैसे चाहिए.

*

इंसान बातें बहुत बड़ीबड़ी करता है, चोरी करने के बावजूद सब के सामने अपने निर्दोष होने का दावा भी करता रहता है. पिछले दिनों निर्देशक इकबाल दुर्रानी ने भी यही किया. इकबाल ने एक धारावाहिक





'पाकीजा' का लेखन व निर्देशन किया है, जिस का जी टीवी पर प्रसारण हो रहा है. दुर्रानी ने कुछ समय पहले कहा था, "मैं 'पाकीजा' के जरिए पाकिस्तानियों को दिखा देना चाहता हूं कि भारत में भी मुस्लिम समाज पर अच्छे धारावाहिक बन सकते हैं. मैं ने एक ऐसा धारावाहिक बनाया है

जिसे देख कर लोग पाकिस्तानी धारावाहिकों को भूल जाएंगे." मगर अफसोस 'पाकीजा' देखने के बाद पता चला कि इकबाल दुर्रानी की हालत तो 'उलटा चोर कोतवाल को डांटे' वाली है, क्योंकि पाकीजा देख कर पाकिस्तानी धारावाहिक 'धूप किनारे' की याद आ जाती है. यही नहीं, 'धूप किनारे' के पात्रों के नामों को भी ज्यों का त्यों अपने धारावाहिक में रख लिया है. यानी कि कलाकार और धारावाहिक





का नाम बदल कर इकबाल दुर्रानी सिर्फ नकल ही तो परोस रहा है.

*

अन्नू कपूर का भी जवाब नहीं. जब से उस का जी टीवी पर 'अंत्याक्षरी' कार्यक्रम लोकप्रिय हुआ है, तब से उसे लगता है कि उस से बेहतर अभिनेता और निर्देशक कोई हो ही नहीं सकता. यही नहीं, वह तो जी टीवी को भी अपनी ही जागीर समझने लगा था, पर अब उसे अपनी औकात का पता चल गया है. पिछले दिनों उस ने बतौर निर्माता, निर्देशक व अभिनेता एक धारावाहिक बनाया और उसे जी टीवी में जमा किया, पर जी टीवी ने उस के इस धारावाहिक को अस्वीकृत कर दिया. अन्नू को गुस्सा आ गया. वह पहुंच गया जी टीवी के चेयरमैन सुभाष गोयल के पास, पर वहां से वह खाली हाथ लौट आया. अब उसे समझ में आ गया कि दूसरों के बनते कामों को बिगाड़ने और अपने आप को ही तोप समझने की भूल कभी भी नहीं करनी चाहिए.

*

सुरेंद्र पाल उत्कृष्ट अभिनेता है. वह अपने गम को पीना और उसे हंसी का रंग देना भी जानता है. यह सर्वविदित है कि उस के रोमांसों से तंग आ कर उस की पत्नी ने उसे तीन साल पहले गुड बाइ कह दिया था, वैसे सुरेंद्र पाल की पत्नी भी कोई दूध की धुली हुई नहीं है. उस ने सुरेंद्र पाल से दूसरा ब्याह रचाया था. इस से पहले वह एक पति को दगा दे कर आई थी और अब सुरेंद्र को छोड़ कर अपनी उम्र से काफी कम उम्र के व्यक्ति के साथ घूमती नजर आ रही है.

बहरहाल, बात सुरेंद्र पाल की हो रही है. सुरेंद्र पाल ने अपनी पत्नी के गम को भुलाने के लिए अब लोगों को एक नई कहानी सुनानी शुरू कर दी है. सुरेंद्र कहता है, "सब से पहले मुकेश खन्ना ने 'महाभारत' में भीष्म का किरदार निभाया और आजीवन कुंआरा रहने की कसम खाई तो बेचारे की आज तक शादी नहीं हो पाई. और आज से ढाई साल पहले मैं ने धारावाहिक 'मृत्युंजय' में भीष्म का किरदार निभाना शुरू किया तो मेरी पत्नी भी मुझे छोड़ कर चली गई. लगता है कि भीष्म के किरदार को निभाने वाले अभिनेता को जीवन में वैवाहिक सुख नहीं मिलता." अब इसे क्या कहें? जो सुरेंद्र पाल ऊपर से सभी को जोक्स सुना कर हंसाने का प्रयास करता है, वह अंदर से कितना दुखी है, इस का अंदाजा कौन लगाएगा! ●

गाने कैसेकैसे

इन दिनों फिल्म 'बार्डर' अपने एक गाने के कारण चर्चा में है. गाना है, 'संदेशे आते हैं, चिट्ठी आती है, हमें तड़फाती है कि घर कब आओगे...' यह एक भावना प्रधान गाना है, जिस का एकएक शब्द दिल को छू लेता है. इस में सीमा पर पहरा दे रहे 2 सैनिक अपने घर की तरफ से आ रही पुकारों का वर्णन करते हैं. कुछ समय पहले फिल्म 'नाम' में पंकज उधास ने एक ऐसा ही गाना 'चिट्ठी आई है...' गाया था जिसे सुन कर विदेश में बसे भारतीयों की आंखें डबडबाने लगती थीं. यह गाना रूप कुमार राठौर और नवोदित गायक सोनू निगम ने गाया है. इस में रूप कुमार की आवाज बहुत कर्णप्रिय है. यदि वह गजलें छोड़ कर पूरी तरह फिल्मों में गाए तो निश्चित ही यह मुंबइया सिनेमा जगत की एक और बहुमूल्य खोज होगी. गाने में शब्दों और गायिकी को ही केंद्र में रखा गया है, संगीत का शोर कम है. इसे हम अनु मलिक जैसे संगीतकार की उपलब्धि कह सकते हैं. गीतकारी में जावेद अख्तर ने दिखा दिया है कि मुंबइया सिनेमा के मोरचे पर वह ही आज सब से सशक्त योद्धा हैं.

बहरहाल, गाना देश के अलावा 'बार्डर' (सीमा) के उस पार भी लोकप्रिय होगा.

*

आजकल मुंबइया सिनेमा में हर चीज की 'नकल' जम कर हो रही है. यहां तक कि अब गायकों की आवाजों की भी नकलें बाजार में आ रही हैं और नाम भी कमा रही हैं.

इस क्रम में हाल ही में फिल्म 'जब दिल किसी पे आता है' का एक गाना 'आ जा ना यह दिल है तेरा दीवाना...' फिल्म को पहचान दिलाने में जुटा है. इसे संजीव वाधवानी और सुजाता ने गाया है. इस गाने के चलने का खास कारण संजीव की आवाज है. गाने की कंपोजिंग रैमो फर्नांडिस की कंपोजिंग जैसी है. उस ने गाने को रैमो की हूबहू आवाज और भावों में गा दिया है. उस





की कापी करना इस हद तक है कि भविष्य में जब कभी रैमो की आवाज का गाना बजेगा तो सोचना पड़ेगा कि कहीं यह आवाज संजीव वाधवानी की तो नहीं है? देखना है कि यह 'कापी' कहां तक रंग लाएगी. फिलहाल तो श्रोताओं का गाने पर दिल आ रहा है. सुजाता की आवाज में बहुत कशिश है. उस से आशा भौंसले के छोटे रूप की अपेक्षा की जा सकती है. गाने में मिक्सिंग लाजवाब है. ड्रम बीट का जाल पूरे गाने में है.

संगीतकार जोड़ी दिलीपसमीर सेन अब व्यस्त हो गए हैं. उन की अगली फिल्म



'जालसाज' का एक 'सेंसुअस' गाना है, 'आ जा दिलवर न न कर...' इसे श्वेता शेट्टी ने गाया है. फिल्म 'जिद्दी' में श्वेता ने एक गाना 'कालेकाले बाल...' गाया है जो बहुत लोकप्रिय हो रहा है. लगता है, इसीलिए सेनबंधुओं ने पूर्णिमा के हिस्से का यह गाना उस से गवा दिया है. लेकिन बात बन नहीं पाई. उस की आवाज दब सी गई है. चूंकि सेनबंधुओं का रिदम पर अच्छा कमांड रहता



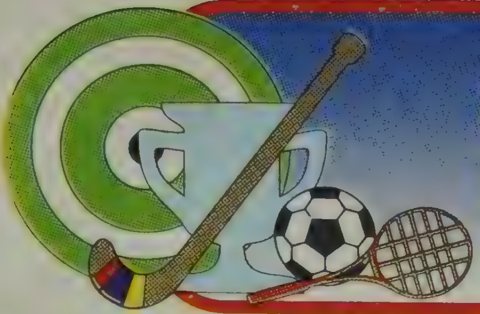
है. उन के इस कमांड के कारण गान 'मैलोडियस' लगता है. कुल मिला कर गान दौड़ में 'फुदक' सकता है.

*

आजकल फिल्म 'विरासत' का एक गान 'ढोल बजने लगा...' जोरों से उठान प है. इसे कविता कृष्णमूर्ति ने गाया है. मजे की बात यह है कि यह गाना अनु मलिक ने फिल्म 'जांबाज' से ('प्यार दो प्या लो...') जस का तस उठा लिया है. मुखड़ तो हूबहू वैसा ही है. वही बीट और लगभग साज भी वही.

गाने की खास बात बीच में अफ्रीकी लोकगीतों की आवाजें... 'गिललललल...' क प्रयोग अनु मलिक ने अपने इस गाने में भी कर दिया है. 'जांबाज' का वह गाना अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुआ था और आज तक मंच से आर्केस्ट्रा के जरिए बजाया जात है. इसलिए समझदार श्रोता को यह नकल पकड़ने में देर नहीं लगेगी. मुखड़े को छोड़ कर बाकी गाने को लोकगीत जैसा बनाय गया है. कविता ने मन से गाया है. बावजू इस सब के यह गाना बढ़ता जा रहा है.

–आरती जैन



खेलों की खिलाड़ियों की

● जसदेव सिंह

मार्च के अंतिम सप्ताह में पुष्कर जाना हुआ. अजमेर के निकट स्थित राजस्थान का यह पावन तीर्थ विश्व के एकमात्र ब्रह्मा मंदिर के लिए तो प्रसिद्ध है ही, साथ ही हर दिन हजारों यात्री यहां के पवित्र सरोवर में स्नान कर पुण्य प्राप्त करने भी आते हैं. देशीविदेशी पर्यटकों के लिए पुष्कर का वार्षिक पशु मेला विशेष आकर्षण रखता है. यह मेला कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित किया जाता है. इस दिन देशविदेश के हिंदू धर्मावलंबी यहां तीर्थाटन के लिए आते हैं. लगभग साढ़े 11 हजार की आबादी वाले इस कसबे में मेले के अवसर पर 1-1½ लाख लोग पहुंच जाते हैं. पशु मेले के 4-5 दिनों में वहां आयोजित अनेक देशी खेलों की प्रतियोगिताएं भी आकर्षण का विषय होती हैं.

मेरा वहां जाना हुआ था 19वीं राष्ट्रीय जूनियर और 17वीं सब जूनियर तीरंदाजी प्रतियोगिता के सिलसिले में. 4 दिन तक देश के 14 प्रदेशों से लगभग 250 बालकबालिकाओं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया. पुष्कर और अजमेरवासियों के लिए इस अनूठी प्रतियोगिता में विशेष आकर्षण रहा.

राजस्थान तीरंदाजी संघ बधाई का पात्र है कि उस ने पुष्कर जैसे छोटे से कसबे को इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चुना जहां स्टेडियम तो दूर, कोई ढंग का खेल मैदान भी नहीं है. मैं इतना जानता हूं कि बड़ेबड़े नगरों में आयोजित कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में दर्शक तक जुटाना मुश्किल हो जाता है.

क्रिकेट, फुटबाल, हाकी जैसे खेलों की बात मैं नहीं करता, पर तीरंदाजी, निशानेबाजी, खोखो, जूडो आदि की प्रतियोगिताएं बड़े शहरों में कोई विशेष आकर्षण नहीं रखतीं. इसलिए मुझे अच्छा लगा कि पुष्कर जैसे छोटे स्थान पर इस बाल प्रतियोगिता ने बच्चों और युवकों के अतिरिक्त बड़ों को भी आकर्षित किया. यदि इस प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं बड़े शहरों के बजाय छोटे नगरों और कसबों में आयोजित की जाएं तो उन से न केवल बच्चों में बल्कि उन के मातापिताओं में भी खेलों के प्रति दिलचस्पी बढ़ेगी. वहां अच्छे भावी खिलाड़ी भी मिल सकते हैं.

दूसरी बात जो इस प्रतियोगिता में सामने आई वह यह थी कि देश में तीरंदाजी के लिए प्रतिभाओं की कमी नहीं है. बशर्ते उन प्रतिभाओं को वहां सही ढंग से तलाश किया जाए, जहां वे स्वतः पनपती और विकसित होती हैं. मेरा तात्पर्य राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों तथा असम और नागालैंड से है, जहां तीरंदाजी बच्चों को विरासत में मिलती है. यों तो देश के लगभग हर प्रदेश के बालकबालिकाएं इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए पहुंचे थे, पर सफलता अधिकतर उन्हें ही मिली जिन्हें तीरंदाजी का खेल और कला घुट्टी में मिली है.

पुष्कर में विशेष रूप से आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाज लिंबाराम, संजीव सिंह आदि मौजूद थे.

चूंकि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिताएं अब बाकायदा बनाए गए नियमों के अधीन होती हैं, साथ ही हमारे पारंपरिक धनुषबाण उन में इस्तेमाल नहीं हो सकते (इन प्रतियोगिताओं में आधुनिक ढंग के तीर कमानों का उपयोग होता है) इसलिए

आवश्यक है कि नियमों के अनुसार स्वीकृत धनुषबाणों से हमारे तीरंदाज खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाए.

भारतीय तीरंदाजी संघ 1973 में अपनी स्थापना के बाद इस दिशा में काफी कुछ कर रहा है. उस का परिणाम है कि लिंबाराम जैसे अनेक धनुर्धर अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में देश का नाम रोशन कर सके.

यदि इस प्रकार के राष्ट्रीय तीरंदाजी



मुकाबलों के आयोजन को राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के आदिवासी इलाकों या असम, सिक्किम, नागालैंड आदि में कहीं आयोजित किया जाए तो निश्चित रूप से हम अच्छी प्रतिभाएं प्राप्त कर सकेंगे. पुष्कर में बाल तीरंदाजों के प्रदर्शन को देख कर मेरा यह विश्वास और भी मजबूत हुआ.

दूसरे, यदि हमारी प्रस्तावित खेल नीति में इस खेल को प्राथमिकता दी जाए तो इ में कोई शक नहीं कि तीरंदाजी की अंतर्राष्ट्री स्पर्धाओं में अच्छे परिणाम मिल सकेंगे. इ प्रतियोगिता में मिलने वाले पदकों की संख्य भी ज्यादा है. यदि जीते जा सकें तो पद तालिकाओं में ऊंचा स्थान भी मिल सकत है.

इसी संदर्भ में एक उल्लेखनीय बात य है कि पुष्कर में इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता क आयोजन वहां के रेतीले पशु मेला मैदान मे किया गया था. हां, दर्शकों के बैठने के लिए 3 ओर सीढ़ीनुमा दीर्घाएं अवश्य बनी हुई थीं क्या ही अच्छा हो यदि पुष्कर जैसे कसबे में कम से कम एक खेल मैदान बनवा दिय जाए, जिस के चारों ओर मिट्टी की दीवार बना कर उस पर बाड़ लगवा दी जाए. इस से न तो मैदान के बीच से लोग रास्ता बन सकेंगे और न ही वह पशुओं का आश्रय स्थल बन सकेगा. (ऐसा मैं ने कई स्थानो पर देखा है. झांसी में हीरोज क्लब के जिस मैदान में दिवं. मेजर ध्यानचंद की प्रतिमा लगी हुई है वहां पिछली झांसी यात्रा पर मैं ने देखा था उस मैदान में से आम रास्ता बना हुआ है और भले ही वहां घास नहीं है, फिर भी वह मैदान आवारा पशुओं के विश्रामस्थल का रूप ले चुका है).

पुष्कर में भी कुछ खेल प्रेमियों ने इच्छा प्रकट की कि वहां स्टेडियम बन सके तो बहुत अच्छा रहे. मेरी समझ में इन छोटे, कम आबादी वाले नगरों और कसबों में यदि वह की नगरपालिकाएं या शिक्षा संस्थान मिलजुल कर संबंधित राज्य सरकार की सहायता से एक खेल मैदान ही बनवा लें तो काफी रहेगा उस मैदान में हाकी, फुटबाल, कबड्डी दौड़कूद, क्रिकेट आदि जैसे लोकप्रिय खेल तो खेले ही जा सकते हैं.

*

अजमेर में अपनी इसी यात्रा के दौरान मैं ने खिलाड़ियों के हित में एक ऐसी योजना की शुरुआत होते देखी, जो पूरी होने पर न केवल देश में बल्कि शायद सारी दुनिया में अपने ढंग की एक ही होगी. यह

योजना है प्रदेश के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिए एक नगरी के निर्माण की. इस का श्रेय जाता है अजमेर नगर विकास न्यास को.

इतिहास पुरुष, योद्धा और धनुर्धर सम्राट पृथ्वीराज चौहान के सैकड़ों वर्ष पुराने किले तारागढ़ की तलहटी में पृथ्वीराज चौहान खेल नगर का गत 29 मार्च को शिलान्यास किया गया. एक विशाल भूखंड पर राजस्थान के अर्जुन पुरस्कार और देश के लिए उल्लेखनीय प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को वहां बहुत ही रिआयती दर पर प्लाट आवंटित किए जाएंगे.

इसी बस्ती में विभिन्न खेलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मैदान और तरणताल बनाने का प्रावधान भी है. जब कभी (कुछ वर्ष तो लगेंगे ही) यह योजना पूरी हो जाएगी तो यह अजमेरवासियों की अपने प्रदेश के प्रतिष्ठित खिलाड़ियों के लिए एक अनुपम भेंट होगी और सम्मान होगा. लेकिन ऐसी योजनाओं में राजनीतिबाजों, धनवानों और अपनेआप को गलत तरीकों से योग्य खिलाड़ी साबित कर के घुसपैठ करने का खतरा भी रहता है. समारोह के दौरान न्यास के अधिकारियों को इस 'खतरे' से आगाह किया गया क्योंकि इस प्रकार के आवास व्यापार के साधन भी बन सकते हैं. आज जो प्लाट रिआयती दर पर खिलाड़ियों को दिए गए, कहीं पैसे के लोभ में वे उन्हें अच्छी कीमत पर किसी अन्य को न बेच दें? इस प्रकार के खतरों से बचने के लिए कुछ ऐसे नियम बनाए जाने चाहिए जिन से कि जिस खिलाड़ी को जमीन का टुकड़ा दिया गया है केवल वही उस का उपयोग करे. योजना केवल खिलाड़ियों के लिए है, इसलिए अजमेर विकास न्यास और राजस्थान सरकार का यह दायित्व हो जाता है कि उस का लाभ उन्हें ही मिले जिन के लिए वह बनाई गई है.

दिल्ली में 1982 के एशियाई खेलों के अवसर पर विदेशों से आए मेहमान खिलाड़ी दलों के लिए एशियाई खेल गांव बसाया गया. खेल समाप्त होने के बाद कितना अच्छा होता यदि बनाए गए फ्लैट उचित दामों पर देश के प्रतिष्ठित खिलाड़ियों को बेचे जाते. आज उस का नाम वही है एशियाई खेल गांव, लेकिन वे फ्लैट जिन के पास हैं उन में कोई नामी खिलाड़ी तो शायद रहता ही नहीं. न सही सभी फ्लैट पर उन में से कुछ प्रतिशत तो ऐसे खिलाड़ियों को बेचे ही जा सकते थे, जो उन का मूल्य अदा करने की स्थिति में थे. हां, वहां जितने मार्ग और सड़कें हैं वे अवश्य ही देश के नामी और विख्यात खिलाड़ियों के नाम पर हैं. खिलाड़ियों को और चाहिए भी क्या? उन्हें अमर तो कर ही दिया.

*

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट कानफरेंस के अध्यक्ष पद पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सचिव जगमोहन डालमिया का चयन भारतीय खेल जगत के लिए अपनेआप में एक ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण घटना है. डालमिया एक लंबे समय से बोर्ड के सचिव हैं. इस से पहले वह बंगाल क्रिकेट संघ से संबद्ध रहे और आज भी उस के प्रमुख हैं. डालमिया ने अपने क्रिकेट प्रशासन की क्षमता अनेक अवसरों पर, विशेषकर 1987 के विश्व कप और उस के बाद 1996 के विश्व कप के दौरान सिद्ध की है. इस की मेजबानी भारत और पाकिस्तान ने संयुक्त रूप से की थी.

डालमिया ने एक खेल प्रशासक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट जगत में अपना एक प्रमुख स्थान तो बहुत पहले से बना रखा है, पर इस बार उन्हें अपना अध्यक्ष चुन कर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट जगत ने उन्हें ही नहीं बल्कि एशियाई क्रिकेट जगत को भी सम्मानित किया है.

यह पहला अवसर है जब किसी एशियाई देश का व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट कानफरेंस के अध्यक्ष पद पर चुना गया है. इस की विधिवत घोषणा मार्च में कुआलालमपुर में सम्मेलन के दौरान की गई. डालमिया आगामी जून में सर क्लाइड वाल्काट से यह पदभार ग्रहण करेंगे. ●

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

जायसवाल, 27, 150, 3,000/-, एम.ए., बी.एड., कंप्यूटर डिप्लोमा, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पिता उच्चाधिकारी, कन्यार्थ वर. वि.नं. 2216, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयसवाल, 22, 5'3", स्नातक, कानवेंट शिक्षित, सुंदर, गृहकार्य, पेंटिंग, सिलाईदक्ष कन्यार्थ हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, एम.बी.ए./सी.ए., प्रथम श्रेणी अधिकारी वर चाहिए. पिता इंजीनियर, उच्च अधिकारी. वि.नं. 2217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी कुर्मि, क्षत्रिय, अविवाहिता, 29, 150, एम.ए. हिंदी, सिलाई, कढ़ाई, गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ, शिक्षित, कार्यरत/ व्यवसायी वर चाहिए. वि.नं. 2219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 24, 5'4", एम.ए., बी.एड., आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, कन्यार्थ सरकारी सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 2221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27, 5', कंप्यूटर इंजीनियर, अति सुंदर, सरकारी सेवारत दिल्ली, द्वितीय श्रेणी अधिकारी, कन्यार्थ सरकारी सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 2222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 24, 156, एम.एससी. (बाटनी), सर्वदा प्रथम, बी.एड., सुंदर, स्लिम, गोरी, उत्तर प्रदेशीय, संभ्रांत परिवारीय हेतु सजातीय, उच्च सेवारत अथवा व्यावसायिक वर चाहिए. वि.नं. 2223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), 5', 23 वर्ष, बी.काम. (आनर्स), आई.सी.डब्ल्यू.ए.आई., माध्यमिक अध्ययनरत, सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता एवं भाई इंजीनियर. वि.नं. 2224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार बाथम), 24 वर्षीया, 5'2", ग्रेजुएट, रंग गोरा, गेहुआं, सर्वगुणसंपन्न, मध्यमवर्गीय संपन्न परिवार की कन्या हेतु वर की तलाश, उपजातियां स्वीकार्य, शीघ्र विवाह. वि.नं. 2225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गेहुआं रंग, 26, 5'4", अग्रवाल सिघल, बी.काम., कंप्यूटर डिप्लोमा, सी.ए. (फाइनल) अध्ययनरत कन्या हेतु सुशिक्षित, शाकाहारी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. संपूर्ण विवरण दें. वि.नं. 2226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 24, 5'2", 4,000/-, एम.एससी., गेहुआं वर्ण, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, रेल मंत्रालय दिल्ली में कार्यरत हेतु सुशिक्षित एवं सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 2227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहु (तेली), 26, 155, गोरी, सुंदर, स्नातकोत्तर प्रशिक्षित अध्यापिका, 4,700/-, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 2228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तलाकशुदा, 27 वर्ष, 152, 4,000/-, स्नातकोत्तर रसायन एवं अंगरेजी, शिक्षिका मध्य प्रदेश, भार्गव ब्राह्मण, गृहकार्यनिपुण, गेहुआं रंग, कन्या (दहेज के कारण बिना वैवाहिक जीवन प्रारंभ किए दूसरे वर्ष तलाक हुआ) हेतु व्यवसायी सरकारी सेवारत, अविवाहित अथवा निसंतान विधुर व तलाकशुदा वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव आमंत्रित. लिखें : वि.नं. 2229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 26, 158, एम.ए., ब्यूटीशियन/सिलाई में डिप्लोमा, प्रतिष्ठित परिवार, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष हेतु सजातीय इंजीनियर/सरकारी सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. विवाह शीघ्र. वि.नं. 2230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य (कुशवाहा), जीवन बीमा निगम में चयनित, 27½, 157, गोरी, बी.एससी., एम.ए., बी.एड., संभ्रांत परिवार की लड़की हेतु लिखें. वि.नं. 2238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू धोबी, 22½, 5'4", एम.एससी., बी.एड., अति सुंदर, गोरी कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, बैंक अधिकारी, एम.बी.ए. तथा प्रथम श्रेणी अधिकारी वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी. वि.नं. 2239, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, 27, 5'2", पी.जी. (स्त्री रोग) डाक्टर हेतु वर चाहिए. प्राथमिकता मेडिको, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 24, 5'4", गोरी, अति आकर्षक, स्लिम, घरेलू, एम.ए., बी.एड., जयपुर निवासी कन्या जिस के हाथपांव में मामूली सफेद दाग हैं (चेहरे पर नहीं) हेतु सुयोग्य वर चाहिए. बंधन नहीं. वि.नं. 2241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रोटेस्टेंट क्रिश्चियन, 25, 5'2", गेहुआं रंग, स्लिम, स्टाफ नर्स हेतु सेवारत/व्यवसायी, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम एवं शीघ्र विवाह. वि.नं. 2349, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोटा निवासी जाटव, दो पुत्रियां 21, 19 वर्षीया, 5', गेहुआं रंग, स्नातक, द्वितीय सीनियर हायर सेकेंडरी हेतु सेवारत वर. पिता रेलवे कार्यरत. वि.नं. 2350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई कन्या, 29, 160, बी.ए., सुंदर; केवल पैरों पर आंशिक सफेद दाग, अच्छी शादी, पिता सेवानिवृत्त राजपत्रित अधिकारी, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 2351, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कार्यपालक अभियंता, विश्वकर्मा (भारद्वाज), की दो कन्याएं 5'2", 22 एवं 5'5", 21, दोनों बी.ए. (आनर्स), गोरी, स्लिम, आकर्षक हेतु सेवारत, सुयोग्य वर. पूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 2352, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण 23, 5'3", एम.ए., बी.एड., कान्यकुब्ज,

कष्यप गोत्रीय, कन्यार्थ उत्तर भारतीय, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 2353, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेशीय प्रतिष्ठित जाटव परिवारीय 22½ वर्षीया, 5'2", एम.ए. द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कन्या हेतु आई.ए.एस./प्रथम श्रेणी अधिकारी/पी.सी.एस., लंबा, स्मार्ट, सजातीय वर चाहिए. पिता/भाई प्रथम श्रेणी अधिकारी. कृपया प्रतिष्ठित परिवार ही संपर्क करें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 2354, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान निवासी, प्रतिष्ठित परिवार की दो कन्याओं हेतु 1. आयु 25, कद 5'1", स्लिम, मैट्रिक पास, ब्यूटीशियन, 2. आयु 35, कद 4'9", डबल एम.ए., बी. एससी., बी.एड., राजस्थान सरकाराधीन अध्यापिका हेतु योग्य, निर्व्यसनी, उच्च व्यवसायी अथवा सरकाराधीन नौकरी वाला सच्चा जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 2355, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (कनौजिया), 26 वर्ष, 167 सें.मी., मैट्रिक, ब्यूटीशियन, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, श्यामवर्ण कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायरत, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 2356, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 160, 25, गौरवर्ण, आकर्षक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, बहुराष्ट्रीय कंपनी कार्यरत हेतु सुयोग्य, सरकारी अधिकारी/व्यवसायी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय कलार (राय-जायसवाल), 25, 150, इंजीनियर (बी.ई.) सेवारत, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, उच्चाधिकारी की कन्यार्थ सजातीय, इंजीनियर, उच्च सेवारत वर चाहिए. पूर्ण बायोडाटा, कुंडली सहित लिखें. वि.नं. 2358, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहौर कोली, 24, 5 फीट, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, रंग गोरा, सुडौल, आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. वि.नं. 2359, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, 27, 150, 4,000/-, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय में अध्यापिका, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि. नं. 2360, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी., एम.एड., केंद्रीय सेवारत (शिक्षा), 6,000/-, 5'2", सुंदर, गोरी, आकर्षक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, जाटव कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत अधिकारी/समकक्ष, दहेजविरोधी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें. वि. नं. 2361, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खत्री, सुंदर, सुशिक्षित एवं गोरी कन्याओं हेतु डाक्टर, इंजीनियर अथवा आफीसर वर चाहिए. 1. 5'1", 27, एम.ए. (मनोविज्ञान प्रथम). 2. 5'1", 25, बी.एससी. (आनर्स प्रथम) एवं बी.आई.टी. सिंदरी से 'ओ' लेबल कंप्यूटर साफ्टवेयर. पिता बैंक अधिकारी. वि.नं. 2362, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 27, 5'2", एम.ए. फाइनल, लाइब्रेरी डिप्लोमा, शार्टहैंड, टाइपिस्ट, कंप्यूटर कोर्स, कार्यरत, गेहुआं रंग, सुंदर, गृहकार्यदक्ष हेतु सजातीय वर. दिल्लीवा[...] को वरीयता. वि.नं. 2363, सरिता, नई दिल्ली-11005[...]

रजक कनौजिया, 25, 5'5", 5,000/-, एम.[...] (अध्ययनरत), सेवारत (दिल्ली प्रशासन), सुंदर, सुशील[...] गृहकार्यनिपुण, संभ्रांत परिवारीय कन्यार्थ सुयोग्य, तकनीक[...] शिक्षित अधिकारी, सुस्थापित वर. दिल्लीवासी [...] प्राथमिकता. विवाह उत्तम व शीघ्र. वि.नं. 2364, सरित[...] नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 32, 40, 42 वर्ष, सुंदर, सुशील[...] संपन्न, गृहकार्यदक्ष, लेक्चरार, डाक्टर, जज, हेतु शिक्षि[...] वर. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2365, सरिता, नई दिल्ली-11005[...]

जायसवाल, 28, 25, 22, 20 वर्ष, सुंदर, सुशील[...] संपन्न, गृहकार्यदक्ष, वकील, एम.ए., एलएल.बी., इंट[...] हेतु शिक्षित वर. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2366, सरिता, न[...] दिल्ली-110055.

जायसवाल, 46, 44, 36 वर्ष, सुशील, संपन्न[...] टीचर, गृहकार्यदक्ष हेतु शिक्षित, विधुर वर. शीघ्र विवाह[...] वि.नं. 2367, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 25, 5'4", एम.बी.बी.एस., गेहुआं रंग[...] स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु डाक्टर/इंजीनियर[...] सुयोग्य वर चाहिए. पिता एवं माता डाक्टर और सरकार[...] अस्पताल में वरिष्ठ अधिकारी. प्रथम बार में जन्म कुंडल[...] एवं संपूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 2368, सरिता, न[...] दिल्ली-110055.

पंजाबी निसंतान, तलाकशुदा, 30 वर्षीया, निज[...] आय एवं कलकत्ते में अपना मकान, हेतु दयालु वर चाहिए[...] वि.नं. 2369, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 40, 155, एम.ए., 35, 155, एम.ए[...] अविवाहित, गौरवर्ण, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हे[...] सुयोग्य, आत्मनिर्भर वर चाहिए. शीघ्र विवाह. जातिबंध[...] नहीं. वि.नं. 2370, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 24½, 158, पोस्ट ग्रेजुएट, सुंदर, गोरी[...] गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, दहेजविरोधी वर चाहिए. वि[...] नं. 2371, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (सरनिहा), 22, 5'3", आकर्षक, स्लिम[...] एम.ए., बी.एड., शोधरत, बिहार निवासी, कलकत्ता [...] कालिज में अध्यापनरत कन्या के लिए सेवारत, सजाती[...] वर चाहिए. वि.नं. 2372, सरिता, नई दिल्ली-11005[...]

अग्रवाल, 26 वर्षीया, 5', सुंदर, सुशील[...] गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा (3 वर्षीया पुत्री) हेतु सुयोग[...] वर चाहिए. तलाकशुदा, विधुर विचारणीय. कुंडली विवरण[...] सहित लिखें. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2373, सरिता, न[...] दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (धीवर), प्रतिष्ठित परिवार, 26[...] 165, सुंदर, लंबी, गौरवर्ण, एम.ए. (अंगरेजी), पोस[...] ग्रेजुएट डिप्लोमाधारी, कानवेंट एकेडमी कार्यरत कन्या[...] सुयोग्य, सरकारी सेवारत, उत्तम व्यवसायी वर चाहिए[...] वरीयता पंजाबी परिवार. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 2375[...] सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर तेली, 24, 150, स्नातकोत्तर, सुंद[...]

गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, उपजातीय वर चाहिए. वि.नं. 2376, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भारतीय नेपाली ब्राह्मण पौडेल, 21,154 सें.मी., बी.ए. फाइनल, सुंदर, सुशील, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु शासकीय/अर्धशासकीय, सेवारत, सजातीय वर चाहिए. कुंडली पारिवारिक विवरण सहित भेजें. वि.नं. 2377, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्ष की स्वस्थ, सुंदर, धार्मिक, पंजाबी, निर्दोष तलाकशुदा महिला (एक चार साल की बेटी) के लिए 35 वर्ष तक का स्वावलंबी जीवनसाथी चाहिए, (एक पुत्र वाला विधुर भी मान्य). दिल्ली वाले को प्राथमिकता. संपर्क करें : 3278990. वि.नं. 2378, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप कहार, 22, 155 सें.मी., बी.ए., डिप्लोमा टूर एंड ट्रैवल मैनेजमेंट, सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्यदक्ष, उच्च आय वर्ग, परिवार की कन्या हेतु सुशिक्षित, स्वावलंबी, व्यवसायी/सेवारत वर चाहिए. शुद्ध शाकाहारी, धूम्रपान, मदिरापानरहित प्रतिष्ठित परिवार ही स्वीकार्य, दहेजलोलुप नहीं चाहिए. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2379, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (मौर्य), 24, 157, एम.एससी., सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2380, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण धीमान, 29, 152, गोरी, एम.ए., बी.एड., विधवा, एक पुत्री, हेतु अविवाहित/विधुर, सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर पति की सड़क दुर्घटना में मृत्यु. वि.नं. 2381, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26 वर्षीया, 170 सें.मी., गोरी, एम. ए. (हिंदी), बी.एड., उच्च शिक्षित परिवार की कन्या हेतु स्वावलंबी, शिक्षित वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 2382, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, गोरी कन्या, 28, 5'3", एम.ए., बी. एड. डिप्लोमा, हेतु सेवारत, सजातीय वर शीघ्र चाहिए. लिखें : वि.नं. 2383, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय कन्याओं के लिए सुशिक्षित, स्वावलंबी, सजातीय वर चाहिए. प्रथम 5'2", एम.एससी. प्रथम श्रेणी, रंग गेहुआं, 26 वर्ष, द्वितीय 5'2" एम.ए., रंग गोरा, 24 वर्ष. वि.नं. 2384, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चंद्रवंशी (कहार), 35 वर्षीया, अविवाहित, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, बिहार निवासी हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 2385, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 27, 168, 12,000/-, एम.बी.ए., रंग गेहुआं, आकर्षक कन्यार्थ सुयोग्य, उच्चशिक्षित वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. पिता वरिष्ठ रक्षा वैज्ञानिक. वि.नं. 2386, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 23, 163 सें.मी., गोरी, सुंदर, बंगला भाषा से नान मैट्रिक के लिए सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 2387, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, गर्ग, 5'3", गौरवर्ण, अति सुंदर, एम.ए., एलएल.बी., कुकिंग, निटिंग, हैंडीक्राफ्ट डिप्लोमा, कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. उत्तम विवाह, दहेजाकांक्षी अविचारणीय, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. कुंडली आय सहित भेजें. वि.नं. 2388, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 26, 160, बी.ए., सुशील, सुंदर, गोरी, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी, उत्तम विवाह. वि.नं. 2389, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 160, सी.ए., देहली, गोरी, सुंदर, अति स्मार्ट कन्या हेतु सजातीय, सी.ए. वर चाहिए. वि. नं. 2390, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा झा ब्राह्मण, 22, 158, एम.एससी., राजपत्रित अधिकारी अविवाहित कन्या हेतु सेवारत वर. वि.नं. 2391, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (कनौजिया), 23, 5'4", एम.एस. प्रथम वर्ष, रंग साफ, आकर्षक कन्या हेतु एम.डी./एम.एस./आई. ए.एस., सुयोग्य, सजातीय वर वांछित. पूर्ण बायोडाटा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि सहित लिखें. वि.नं. 2392, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (मांगलिक), 23, 5'1", गोरी, बी.ई. (इलेक्ट्रिकल), एम.बी.ए. (अध्ययनरत), ग्वालियर निवासी, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 2393, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 32, 5'6", एम.एससी., प्रतिष्ठित परिवारीय, व्यवसायरत, तलाकशुदा, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 2394, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 22, 5'1", एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, डिप्लोमा जी.टी.आई. स्टेनोग्राफर, कार्यरत इफको, कांट्रैक्ट बेस, गेहुआं, आकर्षक कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. उत्तम शादी. वि.नं. 2395, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 25½, 5', बी.ए., रंग गेहुआं (पिता राजपत्रित अधिकारी), कन्यार्थ सरकारी/बैंक अधिकारी/इंजीनियर/ डाक्टर, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 2396, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दुसाध (पासवान), 23, 5'3", कला स्नातक, एम. बी.ए. अध्ययनरत कन्यार्थ सजातीय, सरकारी सेवारत वर चाहिए. पिता बिहार सरकार में वरिष्ठ अभियंता, तीन भाई अभियंता, उपसमाहर्ता एवं डाक्टर. वि.नं. 2397, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 22, 5'3", बी.एससी. (बायो.), कन्यार्थ सजातीय, बैंक अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, उच्च व्यवसायी वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 2398, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल गोयल, 26, 159, गेहुआं, साधारण, एम.बी.बी.एस., एम.डी. में अध्ययनरत कन्या हेतु समकक्ष डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर अधिकारी, अग्रवाल जैन माहेश्वरी. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2399, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 24, 165, फैशन डिजाइनिंग डिप्लोमा, एम.ए. (हिंदी) प्रथम वर्ष, गेहुआं रंग, स्मार्ट, स्लिम कन्या हेतु कार्यरत, ब्राह्मण वर चाहिए. वि.नं. 2400, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 24, 152, एम.बी.बी.एस., पी.जी. करने की इच्छुक, सुंदर, स्वस्थ, सुशील, कानवेंट शिक्षित, उच्च शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार, पिता सीनियर अधिकारी, हेतु एम.एस./एम.डी./एम.बी.ए., इंजीनियर वर. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2401, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 24, 160, बी.ए. (प्रथम श्रेणी), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, कंप्यूटर कार्यरत, सुंदर, सुशिक्षित परिवार, हेतु संपन्न वर चाहिए. वि.नं. 2402, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24, 5'2", एम.एससी. (कैमिस्ट्री), कानवेंट, कन्या हेतु उद्योगपति, गजटेड, सजातीय वर. वि.नं. 2403, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भारतीय नेपाली, 35, 150, युवती स्नातक, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, अध्यापिका हेतु शिक्षित, सरकारी, गैरसरकारी, सेवारत या सामान्य निजी व्यवसायी वर चाहिए. भाई राष्ट्रीयकृत बैंककर्मी. शीघ्र शादी, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2404, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, 23, 170, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, कानवेंट शिक्षित, इंटरमीडिएट गणित साइंस से, एम.काम., कंप्यूटर डिप्लोमा, संभ्रांत एवं सुशिक्षित परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., पब्लिक सेक्टर अथवा अन्य सेवारत अधिकारी वर चाहिए. पिता सेवानिवृत्त केंद्रीय सरकार एवं प्रतिष्ठित पब्लिक सेक्टर अधिकारी. वि.नं. 2405, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., 23, 165, स्वस्थ, सुंदर, सांवली, सुयोग्य कन्यार्थ सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 2406, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 26, 158, 8,500/-, स्नातकोत्तर, प्रतिष्ठित फर्म कार्यरत, सुंदर, स्लिम, कानवेंटेड कन्यार्थ वर. पिताभाई सेना अधिकारी, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2407, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दहेज उत्पीड़न से तलाकशुदा संतानरहित कन्या, 24, 154, बी.ए., डी.टी.पी., प्राइवेट टीचर हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2408, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

कुर्मी क्षत्रिय, केंद्रीय प्रतिष्ठान इंजीनियर 30, 179, 9,600/-, हेतु गोरी, सुंदर, सुशिक्षित, जातिबंधनरहित वधू. वि.नं. 2284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, सुंदर, सुशील, ग्रेजुएट, ब्राह्मण युवक, व्यवसायरत को सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित एवं संपन्नशील परिवार की कन्या चाहिए. मासिक आय 10,000/-, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, 24, 182 सें.मी., 5,000/-, बी. काम., कंपनी सेक्रेटरी कोर्स (अध्ययनरत), निजी व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशील, कार्यरत को प्राथमिकता, दहेज, जातिबं नहीं. वि.नं. 2286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी तेली, व्यवसायी युवक 32 के लिए शिक्षि ज्योतिष, आयुर्वेद ज्ञाता कन्या चाहिए. वि.नं. 2287, सरि नई दिल्ली-110055.

साहू, 28 वर्ष, छोटा कद, एम.काम. सरक सेवारत, विकलांग (पोलियो), चलनेफिरने में सक्ष स्वावलंबी, लखनऊ निवासी, सुंदर युवक के लिए यो वधू चाहिए. शिक्षित, अल्पविकलांग कन्या विचारणी उपजाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 2288, सरिता, दिल्ली-110055.

कश्यप धींवर कहार, 25, 5,000/-, नि व्यवसाय, मकान, मांगलिक युवकार्थ वधू. वि.नं. 228 सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 55, 5'4", 4,000/-, निजी मका व्यवसाय, बच्चे पूर्णतया आत्मनिर्भर, कोई जिम्मेदारी न मध्यम वर्गीय के लिए तलाकशुदा, बांझ, विधवा, क बंधन नहीं, जीवनसंगिनी चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लि वि.नं. 2290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 26, 5'9", ग्रेजुएट, स्मार्ट, उत्त निजी व्यवसाय हेतु सुंदर एवं सुशिक्षित, घरेलू, सजाती वधू चाहिए. वि.नं. 2291, सरिता, नई दिल्ली-11005

विजयवर्गीय, 25, 5'9", भारतीय इंजीनियरि सेवा, बी.ई., इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर, प्रतिष्ठित व्यवसा के पुत्र हेतु सजातीय, जैन, अग्रवाल या माहेश्वरी परिव की रूपवती, गोरी कन्या चाहिए. बायोडाटा, जन्मकुंड भेजें. वि.नं. 2293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, निर्दोष, तलाकशुदा, 36 वर्षीय, राउरके (उड़ीसा) निवासी, स्वस्थ युवक बी.एससी., 5'6", नि व्यवसाय हेतु सजातीय (मालानी सोमानी छोड़ कर) व चाहिए. वि.नं. 2294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जादौं राजपूत, 25, 5'3", एम.काम. अध्ययनर निजी संस्थान में सेवारत, स्मार्ट युवक हेतु ग्रेजुएट, सु वधू चाहिए. वि.नं. 2295, सरिता, नई दिल्ली-11005

उत्तर प्रदेशीय अग्रवाल सिंघल, 25, 5'7 6,000/-, सुंदर, एम.काम. एवं कोस्टिंग (इंटर), पि की आय पांच अंकों में, कलकत्ता स्थित इकलौते पुत्र हे मधु स्वभाव कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. संपूर्ण विवर दें. वि.नं. 2296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कनौजिया, धोबी, 28, 166, 7,500/-, बैं कार्यरत हेतु वधू चाहिए. अध्यापिका/बैंक/सरकारी, केव दिल्लीवासी. वि.नं. 2297, सरिता, नई दिल्ली-11005

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 165, 5,000/-, इंटरमीडिए थोक व्यवसाय, स्वस्थ, गोरा, आकर्षक युवक हेतु सुंद सजातीय, गोरी, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2298, सरित नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26, 5'8", मेडिकल रिप्रजेंटेटिव, ब एससी., अच्छी आय, प्रतिष्ठित संपन्न परिवार हेतु सुंद गोरी, राजपूत वधू चाहिए. ग्रेजुएट. बी.फार्मा को प्राथमिक वि.नं. 2299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45, 173, 18,000/-, इंजीनियर, एम.बी.ए., एक्जीक्यूटिव, तलाकशुदा हेतु लंबी, गोरी, सुंदर, सुशिक्षित, सौम्य, संभ्रांत परिवारीय, 30 के लगभग कन्या चाहिए. निसंतान, तलाकशुदा, विधवा, स्वजातीय, जातिबंधन नहीं, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 44, 160, 8,000/-, समाजसेवी, दहेजविरोधी, दायित्वमुक्त, आत्मनिर्भर एकाकी, निसंतान, तलाकशुदा, सुशिक्षित, जमींदार को सुशील जीवनसाथी चाहिए. गरीब, बेसहारा, निसंतान, विधवा को वरीयता. वि.नं. 2301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, बौद्ध उपासक, 25, 167, 7,000/-, सुंदर, स्मार्ट, पब्लिक स्कूल, बी.ई. प्रथम श्रेणी, मास्टर आफ एक्सपोर्ट, एक्सपोर्ट अधिकारी, चुनित लड़के को सुयोग्य, सुशील, स्मार्ट, स्लिम, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. पिता और भाई अच्छी पोजीशन, शिक्षित, छोटा वेस्ट यू.पी. परिवार, अभी दिल्लीवासी. शादी बौद्ध धर्म के अनुसार. वि.नं. 2302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 165, 9,000/-, आत्मनिर्भर, सेवारत हेतु पीएच.डी./बी.एड., रिश्ता चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 2312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल समृद्धशाली, सामाजिक, प्रतिष्ठित, स्थापित व्यवसायी, उच्च रहनसहन, संस्कारी परिवारीय, खूबसूरत, 23 वर्ष, 167 सें.मी., ग्रेजुएशन को तत्पर, उच्च पांच अंकीय मासिक आय, परिवारीय प्रतिष्ठान का स्वतंत्र प्रबंधन संभाले हुए ओजस्वी एवं आत्मविश्वासी युवक हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, शिक्षित, मृदुभाषी, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू, जो भारतीय संस्कारों को आधुनिकता के साथ समाहित कर सके, के बाबत पूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव आमंत्रित. उपवर्ग एवं दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन श्रेष्ठ चयनार्थ. लिखें : वि.नं. 2315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोस्वामी, 24, 4'3", 4,000/-, बी.ए., केंद्रीय सरकार में सेवारत, स्मार्ट, निजी मकान (दिल्ली), संपन्न परिवारीय युवक हेतु सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेज नहीं. वि.नं. 2419, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, इकलौता, 26, 5'11", बी.एससी., एम.बी.ए., व्यवसाय (मार्केटिंग फर्म), मासिक आय पांच अंकीय, मकान, दुकान, कृषिफार्म, हैंडसम, स्मार्ट, पिता आफिसर, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2420, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तीस वर्षीय उद्योगपति से पुनर्प्रेमविवाहेच्छु लिखें. वि.नं. 2421, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 5'10", कंप्यूटर इंजीनियर, वैष्णव स्वामी, अमेरिका कार्यरत हेतु सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि. नं. 2422, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एन.आर.आई., कनाडियन नागरिक, कंप्यूटर प्रोफेशनल, यू.एस.ए., फोरच्यून कंपनी, ग्रीन कार्ड अंडर प्रोसेस, उत्तर भारतीय ब्राह्मण वर, 29, 178 हेतु ब्राह्मण हिंदीभाषी, लगभग 23, 163, शिक्षित, सुंदर वधू. शीघ्र विवाह, पूर्ण विवरण सहित आवेदन करें. वि.नं. 2423, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, स्नातक, डिप्लोमा कंप्यूटर, 26, 165, स्मार्ट, रक्षा मंत्रालय में कार्यरत, आय रु. 5,500/-, अपना मकान हेतु स्नातक, गोरी, सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2424, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी अनुसूचित जाति, इंजीनियर, 31, 170, 5,300/-, रक्षा मंत्रालय में कार्यरत, दिल्ली में निवास, पिता अध्यापक, भाई इंजीनियर, जातिबंधन नहीं. लिखें : पोस्ट बाक्स 9292, दिल्ली-110092.

नाई, 25, 165, अधिवक्ता, पिता राजपत्रित अधिकारी, छोटा शिक्षित परिवार, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2425, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोई बंधन नहीं, सिंधी, स्लिम, शाकाहारी, सादा शांत जीवन, धार्मिक, अविवाहित, 51, 3,500-4,000/- (इनवेस्टमेंट), 163, अलग फ्लैट, नोएडा (अकेला), चश्मा, मैट्रिक, संभ्रांत परिवारीय हेतु अनुकूल अविवाहित, निसंतान प्राथमिकता. बेसहारा/गरीब, जीवनसाथी, सेवारत, लघुकार्य सहायक, पूर्ण विवरण, जन्मपत्री भेजें. वि.नं. 2426, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 26, 5'6", सरकारी सेवारत, सहायक अभियंता (सिविल) हेतु संभ्रांत परिवार से सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2427, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 23½, 170, ग्रेजुएट, इकलौता, आकर्षक, गोरा, मध्यम श्रेणी उद्योगपति, उच्च आय युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. बायोडाटा, कुंडली सहित लिखें. वि.नं. 2428, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय कलार (राय-जायसवाल), 28, 5'6", इंजीनियर (बी.ई.), सेवारत, आय पांच अंकीय, सुंदर, गौरवर्ण, स्मार्ट, प्रथम श्रेणी अधिकारी के पुत्र हेतु गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यनिपुण, उच्चशिक्षा प्राप्त (बी.ई. को प्राथमिकता), प्रतिष्ठित परिवार की कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण. बायोडाटा, जन्मकुंडली सविवरण लिखें. वि.नं. 2429, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया (जायसवाल), 30, 172, इंटर साइंस, स्वव्यवसाय हेतु लंबी, स्लिम, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2430, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी (कोली), 26, 5'6", 5,500/-, स्मार्ट, सरकारी सेवारत, सब. इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशील, ग्रेजुएट, सजातीय कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 2431, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आकर्षक, 26, 5'10", कंप्यूटर इंजीनियर, मुंबई में स्वव्यापाररत, उच्च स्तरीय, उ.प्र. कुर्मी क्षत्रिय परिवार, पिता प्रतिष्ठित कंपनी में मुख्य कार्यकारी, एकमात्र पुत्र हेतु सुशिक्षित कन्या, पूर्ण विवरण सहित. वि.नं. 2432, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा क्षत्रीय, 30 वर्षीय, 5'4", एम.एससी. (गणित), सरकारी सेवारत, उत्तम परिवार हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं, प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 2433, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25, 178, अति सुंदर, स्मार्ट, प्रथम श्रेणी एअरफोर्स अधिकारी (पायलट) युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, सविवरण लिखें. वि.नं. 2434, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, कानपुर निवासी, अविवाहित, ग्रेजुएट आफिसर हेतु जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 2435, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी अग्रवाल, 28 वर्षीय, एम.ए.(अंगरेजी), एलएल.बी., एडवोकेट, कलकत्ता निवासी, कलकत्ते में 2 बहुमंजिला मकान, स्मार्ट हेतु वधू चाहिए. कृपया लिखें. वि.नं. 2436, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उम्र 28, एम.एससी. (गणित), पी.जी.डी., एम. एम. सर्विस, आई.वी.पी. कंपनी लिमिटेड, लखनऊ, भारत सरकार का प्राधिकरण, वेतन 8,500/- प्रतिमाह, पिता एअरफोर्स में मास्टर वारंट आफीसर, गुप्ता (वैश्य), उत्तर प्रदेशीय निवासी एकमात्र पुत्र हेतु गवर्नमेंट सर्विस, क्लास वर्ग की पुत्रवधू की आवश्यकता है. एक बड़ी बहिन केंद्रीय विद्यालय में साइंस टीचर जैन परिवार में विवाहित है. वि.नं. 2437, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर तेली, 28, 168, स्नातकोत्तर, व्यवसायरत युवक हेतु सुंदर, सजातीय, उपजातीय वधू चाहिए. वि. नं. 2438, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन युवक, 30, 165, एम.काम. हेतु जो लड़के को सुस्थापित करने में सहयोग दे सके, कोई बंधन नहीं. प्रत्येक प्रस्ताव विचारणीय, आयुबंधन नहीं, निसंकोच लिखें. वि.नं. 2439, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहु वैश्य (तेली), 30, 5'3", 6,000/-, बी. काम., आई.सी.डब्ल्यू.ए. (प्रथम पार्ट), अंगरेजी माध्यम शिक्षित, गेहुआं रंग, स्मार्ट, कलकत्ता में सेल्स आफीसर पोस्ट पर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार, पिता दुर्गापुर स्टील प्लांट में डिप्टी चीफ इंजीनियर, इकलौते लड़के हेतु सुशील, सुंदर, जातिबंधन नहीं, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या चाहिए. पूरा विवरण के साथ. वि.नं. 2440, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन युवक, 31, 165, एम.काम., व्यवसाय, धार्मिक स्वभाव हेतु धार्मिक स्वभाव वाली वधू चाहिए. प्रत्येक प्रस्ताव विचारणीय, आयुबंधन नहीं. वि.नं. 2441, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी युवक, 25, 5'-5½", ग्रेजुएट, व्यवसायी हेतु सुंदर वधू. वि. नं. 2442, सरिता, नई दिल्ली –110055

राजस्थानी बंसल, अविवाहित, 34, 5'8", सुंदर, स्वस्थ, आकर्षक युवक, पब्लिक लिमिटेड कंपनी में कार्यरत, 6,000/- मासिक, हेतु सुंदर, शिक्षित, घरेलू कन्या चाहिए. कोई मांग नहीं, दहेजरहित शीघ्र विवाह (स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता). पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2443, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 32, 4,000/-, बी.ए., युवक हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. जाति/दहेजबंधन नहीं. सहारनपुर. वि.नं. 2444, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, बी.ई., 25, 5'7", हरदोई निवा आंशिक मांगलिक, बी.एच.ई.एल. में इलेक्ट्रानि इंजीनियर, वेतन पांच अंकों में, लखनऊ में अपना बंग और फार्म हेतु सुयोग्य, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 244 सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, असिस्टेंट कमांडेंट बी.एस.एफ., 2 168, 6,500/-, संभ्रांत परिवारीय स्मार्ट युवक हेतु सुं सुशिक्षित, सहयोगी स्वभाव, मृदुभाषी वधू चाहिए. पि प्रथम श्रेणी अधिकारी (केंद्रीय सरकार), दहेज, जातिबं नहीं. वि.नं. 2446, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा सम्मानित परिवारीय, 31, 5'10", स्नात व्यवसायरत युवक हेतु लंबी (5'4" से अधिक), सुं गौरवर्ण, शिक्षित वधू. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 244 सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 5'9", 3,500/-, बी.काम., लिमि ट्रांसपोर्ट (दिल्ली) सेवारत, निजी मकान, प्रतिष्ठित संभ्र परिवार, स्मार्ट हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 244 सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 165 सें.मी., 27 वर्ष, भारत सरक के उपक्रम में प्रथम श्रेणी अधिकारी हेतु सुंदर, गो सुशिक्षित वधू चाहिए. प्रोफेशनल शिक्षा वाले को वरीय वि.नं. 2449, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 5'10", 7,000/-, भा सरकार उपक्रम में इंजीनियर हेतु शाकाहारी, गोरी, लं सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2450, सरिता, दिल्ली-110055.

वैश्य जायसवाल, 31, 168, हैंडसम, स्नातकोत्त तलाकशुदा, पुत्र 7 वर्ष, अकेला, 20,000/- मासिव युवक हेतु स्वस्थ, गोरी, लंबी, वधू चाहिए. बांझ व प्राथमिकता, अंतर्जातीय मान्य, तीन कपड़ों में शीघ्र विवा वि.नं. 2451, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तलाकशुदा, 28, 5'10", बी.काम., दो वर्षीय पु निजी व्यवसाय युवक हेतु सुशिक्षित, घरेलू, गृहकार्य दक्ष, महेश्वरी, अग्रवाल कन्या या निसंतान विधवा चाहि वि.नं. 2452, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 25, 180, कानवेंटेड, एम.बी.बी.एस सरकारी सेवारत, गोरा, सुंदर, स्मार्ट, प्रतिष्ठित परिवार लड़के के लिए लंबी, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहि जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2453, सरिता, नई दिल्ली-11005

28, 5'7", रंग गोरा, एम.बी.बी.एस., कोल इंडि मेडिकल आफीसर हेतु गोरी, एम.बी.बी.एस. लड़ चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2454, सरिता, दिल्ली-110055.

सक्सैना कायस्थ, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, 4 167, 25,000/-, देहली स्थित अपना मकान कामर्शियल प्रापर्टी, निसंतान, तलाकशुदा, संपन्न बंधनमुक्त, सेक्सुअल कमजोरी, किंतु संतानोत्पत्ति में पूर्ण सक्षम. जातिबंधन नहीं. केवल घरेलू, हंसमुख, मृदुभा संतानरहित महिला स्वीकार्य. आयु एवं दहेजबंधन न

साधारण विवाह. वि.नं. 2455, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पार्शली ब्लाइंड स्कूल अध्यापक, आकर्षक व्यक्तित्व, आयु 30, मासिक वेतन 6,000/-, हेतु नेत्रवान, पार्शली हैंडीकेप वधू स्वीकार्य. फोन: 3364705. वि.नं. 2456, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हावर्ड, एम.बी.ए., बी.टेक., आर.ई.सी., एम.एस./सी.ए.एल., आंध्रावासी, हिंदू बीसी, 28, 5'8", खूबसूरत एवं स्मार्ट, मीडियम कंपलेक्शन, वर्तमान में यू.एस. नागरिक हेतु स्मार्ट, गोरी एवं खूबसूरत, इंजीनियर/प्रोफेशनल, उच्चशिक्षित परिवारीय वधू. विवाह मईजून 97 तक निश्चित, पिता उच्च पदीय पी.एस.यू./हैद्रा, जाति धर्मबंधन नहीं, यू.एस.ए. में भारतीय स्नातक विद्यार्थी/प्रोफेशनल्स को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2457, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 28, 5'5", एम.ए., बी.एड., सरकारी स्कूल में अध्यापक, 8,000/-+, दिल्ली में निजी मकान हेतु शिक्षित गृहिणी चाहिए. आंशिक विकलांग को वरीयता. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 2458, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य मध्य देशीय, 24, 172, बी.ए., एलएल.बी. अंतिम वर्ष, सुशील, ज्येष्ठ पुत्र, पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, उच्च परिवारीय कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 2459, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, गर्ग गोत्र, बिहारवासी, बी.काम. (आनर्स), कंप्यूटर हार्डवेयर इंजीनियर, गौरवर्ण, 28, 180, 5,000/- हेतु सुंदर वधू चाहिए. कुंडली सहित लिखें. वि.नं. 2460, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 180 सें.मी., हिंदू पंजाबी, अमेरिका स्थित स्वतंत्र व्यवसाय, जातिबंधन और उम्र नहीं. शीघ्र विवाह, वधू अमेरिका में रहेगी. फोटो सहित लिखें. Ram Kumar, 39639, Lesliest. Apt # 269, Fremont California, 94538, USA, Tel.: 510-668-0801.

उच्चशिक्षित वृहद यात्रा, 65 वर्षीय विधुर अकेला, सेवानिवृत्त, शिक्षाशास्त्री, आरामदायक आय, मध्यम ऊंचाई, गेहुआं रंग, अनुकूल स्वभाव, हंसमुख, मजाकिया एवं समझदार, जिम्मेदारीमुक्त हेतु सुयोग्य महिलाओं से पत्राचार आमंत्रित, बंधन नहीं. वि.नं. 2462, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी नाई, डाक्टर, 29 वर्ष, सेवारत, 6,000/-, जातिबंधन नहीं, शीघ्र विवाह इच्छुक. लिखें : वि.नं. 2463, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय स्वायत्त संस्थान कनिष्ठ अधिकारी, सर्वभारतीय सेवा, मध्यमवर्गीय गौड़, उड़ियावासी, ग्रेजुएट, अविवाहित, 34, 155, 6,300/- हेतु ग्रेजुएट, गोरी, सुशील, मिलनसार, सजातीय वधू आवश्यक. भाषा, प्रांत बंधन नहीं. अभिभावक/कन्या लिखें. वि.नं. 2464, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्रिटिश नागरिक हिंदू पंजाबी, 56, 5'7", आकर्षक, सुशील, दयालु, निसंतान, तलाकशुदा, आर्थिक संपन्न, निजी संपत्ति, दिल्ली एवं लंदन में, हेतु निसंतान, सुंदर व्यक्तित्ववान महिला से पत्राचार आमंत्रित, बंधन नहीं. ताजा फोटाग्राफ सहित लिखें. P.O. BOX-108, HOUNSLOW MIDDLESEX, GREAT BRITAIN, TW3-4PT.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 167, भारत सरकार के सुप्रतिष्ठित उपक्रम में उच्च पद पर कार्यरत इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2465, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (पेशा नहीं), 28, 5'6", 7,000/- मासिक, इंटरमीडिएट, उ.प्र. कार्यरत, सुंदर, आकर्षक युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, स्वस्थ वधू चाहिए. वि.नं. 2466, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय वंशीय क्षत्रिय (कसेरा/कांस्यकार), सरकारी बैंक में कार्यरत, 25, 5'8", 8,700/- मासिक वेतन, अपना मकान, बी.एससी., सी.ए., आई.आई.बी., गोरा, सुंदर, एकलौता लड़का हेतु दुधिया गोरी, लंबी, अति सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं (कश्मीरी ब्राह्मण या मैथिल ब्राह्मण या सजातीय वधू को प्राथमिकता). वि. नं. 2467, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

सैनी, राज्य सेवारत, बी.एड., 25, 160, युवक एवं बी.ए., 20, 145, कन्या हेतु राज्य केंद्र सेवारत वधू वर चाहिए. वि.नं. 2330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 28, 173, 5,000/-, केंद्रीय सेवारत हेतु सुंदर, गोरी, लंबी, सुशिक्षित, स्वजातीय वधू एवं 21, 153, स्नातक, सुंदर, गोरी कन्यार्थ सेवारत, सुयोग्य, स्वजातीय वर चाहिए. पिता वरीय अधिकारी. बिहार, उत्तर प्रदेश को प्राथमिकता. वि.नं. 2331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 27/165, बी.ए.एम.एस., डाक्टर हेतु मेडिको, सुंदर वधू, 23/155, एम.एससी., कन्या हेतु डाक्टर/राजपत्रित वर चाहिए. वि.नं. 2332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सैना, 32, 5'2", 10,000/-, एम.काम. (प्रथम श्रेणी), सी.ए., आई.आई.बी., आई.सी.डब्ल्यू.ए. (उत्तरार्ध), प्रोबेशन अधिकारी ग्रामीण बैंक, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यनिपुण कन्यार्थ उच्चशिक्षित वर एवं भाई 29, 5'4", 10,000/-, मैकेनिकल इंजीनियर, सेवारत हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24+, 165, कंप्यूटर प्रोग्रामर, सेवारत, स्लिम, सुंदर, स्वस्थ, दिल्लीवासी धीवर कन्या हेतु वर एवं 27+, 180, स्वव्यवसाय हेतु वधू चाहिए. पिता, भाई केंद्र सरकार अधिकारी, बंधन नहीं. वि.नं. 2334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, प्रतिष्ठित, शिक्षित परिवारीय, 26 वर्षीय, 5'6", पश्चिमी रेलवे सेवारत, चार अंकों में मासिक आय, गौरवर्ण, स्मार्ट युवक हेतु सुयोग्य वधू, 22 वर्षीया, 5'2", गौरवर्ण, सुंदर, एम.काम. कन्या हेतु सुयोग्य वर.

विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 2474, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण (कात्यान), दो कन्याएं 26, 165, एम.बी.ए., 24, 158, विधि स्नातक, सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित परिवारीय हेतु सेवारत, व्यवसायरत, सुयोग्य वर. वि.नं. 2475, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, कानवेंट एजूकेटेड, 29, 5'3", मांगलिक, एम.बी.बी.एस., गेहुआं, सुंदर, कन्या हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, कार्यरत, सुयोग्य वर एवं 27, 5'9", जेभियर एजूकेटेड बी.टेक. सिविल कार्यरत युवक हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, सुशिक्षित, सुंदर, प्रोफेशनल कन्या चाहिए. वि.नं. 2477, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

शिशु (कन्या), गोद लेने के इच्छुक दंपती लिखें. वि.नं. 2335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नवजात शिशु, सुंदर, स्वस्थ लड़का गोद लेना है. वि.नं. 2478, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शोध कार्यरत वैज्ञानिक अमेरिका निवासी, संपन्न बंसल दंपती नवजात से एक वर्ष तक का गौरवर्ण बच्चा गोद लेने के इच्छुक. संस्थाएं भी विचारणीय. वि.नं. 2479, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नवजात शिशु गोद लेना है, मिलें: गोद सलाहकार फोन: 6117355, एफ-2, चरक अस्पताल, दिल्ली-110021.

रिक्त स्थान

अधेड़ उम्र के ब्राह्मण भावुक वार्षिक आय 5 लाख, 37-47 के मध्य आयु की सुंदर, मृदुभाषी, परिपक्व महिला गृहप्रबंध सहायक चाहिए. शादी की संभावना. वि.नं. 2481, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आवश्यकता है दो अनुभवी महिलाओं की, एक नोएडा, एक स्पेन हेतु, जो घरेलू कार्य तथा भारतीय भोजन बनाने में दक्ष हो, उम्र 20 से 45 वर्ष. उचित वेतन, खाना तथा आवास की सुविधा. ए-52, सेक्टर-57, नोएडा-201301, 8-524039, 8-550315.

45 वर्षीय, एकाकी संतानरहित इंजीनियर को गृहकार्य हेतु शिक्षित एवं शालीन महिला चाहिए. सभी सुखसुविधाएं, आजीवन पूर्ण सम्मान, विवाह संभावित. फोन: (011) 5593959. वि.नं. 2483, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शीघ्रताशीघ्र बिजनेसमैन गृहस्थी को घर प्रबंध हेतु महिला चाहिए. बेसहारा, अकेली, अनाथ, तलाकशुदा तथा बंधनमुक्त हो. उम्र 30-40 वर्ष. सब सुविधा, सम्मान एवं अच्छा वेतन. पत्नी कार्य करने में असमर्थ है. पूर्ण विवरण सहित मिलें या लिखें : ए.के. जैन, 40, सद्भावना अपार्टमेंट, प्लाट नं. 13, पटपड़गंज, दिल्ली-110092, फोन : 6842610, 6847692.

क्रेच

पंचशील रात और दिन क्रेच सेवासाधनगर गली 23, दिल्ली-110045, फोन : 5544961, पे 9628017635.

शिक्षा

प्रवेश आरंभ महिलाएं/पुरुषों हेतु फैशन डिजाइ ड्रेस डिजाइनिंग, कटिंग, टेलरिंग, एंब्राइडरी, ब्यूटी कल पर्सनल ग्रूमिंग, मेहंदी, हेयर स्टाइल, पर्सनेल्टी डेवलप एटीकेट एंड मैनर्स, आफिस मैनेजमेंट, पर्सनल सेक्रे एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी, इंगलिश स्पीकिंग, कंप्यू साफ्टटायज, गिफ्ट पैकिंग, कैंडिल मेकिंग, होम मैने टैक्सटायल डिजाइनिंग, बाटिक एंड टाई एंड डाई, नो पेंटिंग, पेंटिंग कोर्सेज (रेगूलर/पत्राचार) आई.आई.सी. 3721/1, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली-35, फो 7189591, 7180749, फैक्स : 7192814 (रे माध्यम केवल महिलाओं हेतु).

पत्रकारिता और संपादन, पत्रिका संचालन, ले फीचर, कहानी व पटकथा लेखन के पत्राचार कोर्स विवरणी मंगाएं. कहानी लेखन महाविद्यालय (स), अंब छावनी, हरियाणा.

पूरे भारत में सरकारी मान्य एम.बी.बी. बी.ए.एम.एस., बी.एच.एम.एस., फार्मासिस्ट कालिज पते, टेस्ट अथवा डोनेशन से भी एडमीशन, गाइडेंस पुस् मूल्य 65/-, वी.पी. तुरंत मंगाएं. दिव्य आयुर्वेदा (पुस्तक विभाग), पनगरा, बांदा-210129.

जासूसी सेवा

अपने शक/धोखे, तलाक, चरित्र, अवैध सं (कोर्टसबूत), विवाह, पीछा संबंधी जांच/तहकीक पूर्णतः गुप्त कराएं : इंटेलिजेंस डिटेक्टिव एजेंसी, 55570 5510065, 9811019744, फैक्स : 011-55296

तलाक, कोर्ट केस, फंसा पैसा, ब्लैक मेलि शादी, व्यापार की गुप्त प्रामाणिक जांच, दनाना, डिटेक्टिव 011-3548155/7772177/98110-43051.

स्पोंसर चाहिए

गरीब/योग्य एवं वृद्ध व्यक्तियों के रहनस (बोर्डिंगलौजिंग) का खर्च वहन करने तथा मानसि रोगियों एवं प्रशिक्षण केंद्र हेतु स्पोंसर चाहिए. संपर्क निदेशक अनुराग ह्यूमन सर्विसेज, 8-1-363/1, सूर्यन कालोनी (सामने ग्लेक्सी थिएटर), हैदराबाद-5000

सेरोगेट मदर

निसंतान दंपती को कृत्रिम गर्भाधान हेतु एक स्व महिला चाहिए. अति उत्तम इनाम. गोपनीयता आश्व वि.नं. 2485, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसाय

अमेरिकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उ क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 80/- वी.पी.पी. द्वारा (ड खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32 दी माल अमृतसर-1430

सुरुचिपूर्ण व मनमोहक पत्रिकाएं

जो हर आयु वर्ग के लाखों पाठकों द्वारा पसंद की जाती हैं. शायद ही कोई विषय हो जो इन पत्रिकाओं की संपादकीय सूझबूझ से अछूता रहता हो.

सभी तो इन्हें पढ़ते, पसंद करते व चाहते हैं.



भारत की सब से अधिक बिकने वाली अंगरेजी पाक्षिक पत्रिका जो परिवार की सच्ची सहेली व शुभचिंतक होने के साथसाथ मनोरंजन भी करती है. महिला उपयोगी लेखों, कहानियों, स्वादिष्ट व्यंजन विधियों, नवीनतम फैशन तथा फिल्मों संबंधी रोचक सामग्री से भरपूर.



अंगरेजी की ज्ञानवर्द्धक, प्रेरक तथा समीक्षात्मक मासिक पत्रिका जो महत्वाकांक्षी पाठकों को सफलता की राह दिखाती है. नवप्रकाशित एवं बहुचर्चित पुस्तकों की विशद समीक्षा इस का विशेष आकर्षण है.



सामाजिक क्रांति की उद्देश्यपूर्ण पत्रिका जो हृदयस्पर्शी कहानियों, विचारोत्तेजक लेखों, ज्वलंत विषयों तथा फिल्म समीक्षाओं द्वारा पूरे परिवार को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करती है.



युवाओं के लिए हिंदी में एकमात्र मासिक पत्रिका जो कहानियों के साथसाथ व्यक्तित्व विकास, कैरियर संबंधी मार्गदर्शन, उद्योग, फैशन तथा फिल्म विषयक लेख एवं अन्य सामग्री के लिए लोकप्रिय है.



हिंदी, अंगरेजी, मराठी, गुजराती तथा कन्नड़ में 4 से 10 वर्ष के आयु वर्ग के नन्हेमुन्नों की रंगबिरंगी पाक्षिक पत्रिका



हिंदी, गुजराती, मराठी और कन्नड़ में प्रकाशित युवा महिलाओं की चहेती मासिक पत्रिका जो उन की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करती है. गृहशोभा के विशेष आकर्षण हैं नएनए व्यंजन, आधुनिकतम फैशन, रोचक कहानियां तथा व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने वाली रचनाएं.



आगे बढ़ते किशोरों के लिए हिंदी की लोकप्रिय मासिक पत्रिका, जिस की शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं चरित्रनिर्माण में सहायक कहानियां युवा पाठकों को सार्थक ज्ञान प्रदान करती है.



जनसामान्य के लिए हिंदी की लोकप्रिय पाक्षिक पत्रिका, एक प्रति की कीमत सिर्फ रुपए 2.50. इस में विशेष रूप से चुनी हुई ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाती है जो मनोरंजक होने के साथसाथ ज्ञानवर्द्धक भी होती है और पाठकों को जीवन में आगे बढ़ने में सहायता देती है.

दिल्ली प्रेस पत्र समूह

ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 (भारत)


कितने अज़ीज़ हैं आपके मेहमान.
बेहद
बहुत
कुछ कुछ
पियें और पिलायें, शान से.
रसना इन्टरनेशनल, प्रिमियम इन्स्टंट ड्रिंक असली फ्रूट पावडर के साथ.
तीन फ्लेवर्स (ऑरेन्ज, मैंगो और पाइनेपल) में और तीन साइज़ों (500 ग्राम, 250 ग्राम और सिंगल सर्व सॅचेट) में उप